1940

युद्ध और शान्ति

उपन्यास

युद्ध और शान्ति

(टॉल्सटॉय की जगत्प्रसिद्ध रचना War & Peace का हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक

("Illustrated India" के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक, और "Advance" और "National Herald" के भूतपूर्व सहायक सम्पादक)

रुद्रनारायण अग्रवाल

प्रकाशक
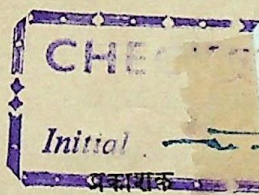
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

प्रथम बार] १९४० [मूल्य ४)

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.
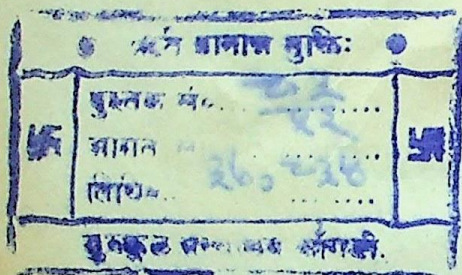
Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

अनुवाद और अनुवादक के विषय में सम्मतियाँ

"......इनसे अच्छा अनुवादक अन्यत्र न मिलेगा......।"

—(स्वर्गीय) प्रेमचन्द

"......अनुवादक महोदय निस्सन्देह विद्वान् हैं। उन्हें इस योग्यता पर बधाई......।"

—(स्वर्गीय) गणेशशङ्कर विद्यार्थी

"......इससे अच्छा अनुवाद करना किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन होगा......।"

—अवध उपाध्याय

"......बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस महान् पुस्तक का अनुवाद हो गया है और इसका श्रेय हमारे मित्र श्री रुद्रनारायण जी अग्रवाल को प्राप्त है। अनुवाद की भाषा अत्यन्त सरल और मुहावरेदार है। आशा है, इस पुस्तक का हिन्दी में समुचित आदर होगा......।"

—"माधुरी"

प्राक्कथन

'युद्ध और शान्ति' का अनुवाद अब से कई वर्ष पहले किया गया था। मूल पुस्तक लगभग दो हजार पृष्ठ की थी और अनुवाद में मूल पुस्तक का कोई भी अंश नहीं छोड़ा गया था। यह बृहद् ग्रन्थ एक के बाद दूसरे प्रकाशक की अल्मारियों की शोभा बढ़ाता रहा, पर मैं अनुवाद को संक्षिप्त रूप देने को राजी न होता था और हिन्दी के प्रकाशक इतनी बड़ी पुस्तक निकालने में अपनी असमर्थता प्रकट करते थे।

अब यह बात स्पष्ट होती जाती है कि अभी हिन्दी में बृहद् ग्रन्थों की खपत नहीं है—कम से कम टॉल्स्टॉय और ह्यूगो के ग्रन्थों की खपत नहीं है। अनुवाद को और अधिक दिनों तक डाले रखना निरर्थक था, क्योंकि हिन्दी-जगत् में बड़े ग्रन्थों के सहसा प्रचार की कोई सम्भावना न थी। अतएव मैंने इसे संक्षिप्त रूप देने का निश्चय किया। पुस्तक को संक्षिप्त रूप देने में मेरा एकमात्र लक्ष्य यही रहा है कि संसार के इस परम प्रसिद्ध उपन्यास की कथा-वस्तु विकृत या पंगु न होने पाये और साथ ही घटनाओं को अनावश्यक विस्तार भी न दिया जाये। 'युद्ध और शान्ति' में मेरे विचार से नैपोलियन का मास्को पर धावा करना और तज्जन्य देश-व्यापी क्षोभ और उत्तेजन सबसे अधिक

आवश्यक घटनाएँ हैं। रूसी सैनिकों के रहन-सहन, अफ़सरों की विलासप्रियता और लोमड़ी के शिकार में जो सैकड़ों पृष्ठ रँग डाले गये थे उन्हें अब मैंने निकाल दिया है। आस्ट्रेलिज़ के युद्ध का वर्णन भी मैंने बड़े संक्षेप के साथ दिया है। उस ज़माने के ज़ार के दरबार का रहन-सहन रोचक हो सकता था, पर पुस्तक में उससे कहीं अधिक आवश्यक घटनाएँ थीं। टॉल्स्टॉय के युद्ध-सम्बन्धी विचारों को मैंने तद्वत रहने दिया है, क्योंकि वही सारी पुस्तक की सारवस्तु है।

पुस्तक में पीरी, प्रिंस एण्ड्र्यू, वृद्ध प्रिंस, नटाशा और प्रिंसेज़ मेरी मुख्य पात्र हैं। मैंने यथासम्भव सबके साथ न्याय किया है। पीरी के फ़्रीमेसन सम्प्रदाय में प्रवेश करने के अरोचक और विशद वर्णन को मैंने निकाल दिया है, हाँ; उसके मानसिक अवसाद और उद्वेलन को मैंने तद्वत् रखने की चेष्टा की है। वृद्ध प्रिंस निकोलस और उनकी पुत्री मेरी का प्रसङ्ग बड़ा ही रोचक है। मैंने पुस्तक के इस अंश को जैसे का तैसा रहने दिया है। प्रिंस एण्ड्र्यू और नटाशा की प्रेमकथा, फिर नटाशा का पतित अनातोले से प्रेम करना, प्रिंस एण्ड्र्यू का संसार से विरक्त होना आदि ऐसी घटनाएँ हैं, जिन्हें मैंने पुस्तक में पूरे रङ्ग और रोचकता के साथ बनाये रक्खा है। पर मैंने बोरिस के प्रसङ्ग को संक्षिप्त रूप दे दिया है और बर्ग के प्रसङ्ग को निकाल दिया है क्योंकि इनका मूल कथा-वस्तु से कोई गहरा सम्बन्ध न था। इन प्रसङ्गों के सम्बन्ध में कई अँगरेज़ आलोचकों की भी सम्मति है कि उन्हें

पुस्तक में स्थान न दिया जाता तो उसकी सुन्दरता में कोई
ी न आती।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ, पुस्तक भर में नैपोलियन का मास्को
धावा करना सबसे अधिक आवश्यक प्रसंग है। कहना
हिए, कि पुस्तक इसी धावे का वर्णन करने के लिए लिखी गई
। टॉल्स्टॉय पुस्तक के इस अंश में अपने निजी ढंग से सिद्ध
ते हैं कि नैपोलियन की मास्को-विजय ही उसके पराभव का
रण हुई क्योंकि रूस का हृदय इस अपमान की आग से जल
ा और रूस की अशिक्षित जनता ने न केवल आक्रमणकारी से
सहयोग ही किया, बल्कि दल बना-बनाकर सुशिक्षित फ्रेंच सेना
ा नाश कर दिया। अब सवा सौ वर्ष के बाद इतिहास अपने
ाप को दुहरा रहा है। इस बात का निर्णय तो भावी इतिहास-
र करेंगे कि स्टेलिन और हिटलर नैपोलियन का पार्ट कर रहे हैं
ा एलेक्जेण्डर का, पर इसमें सन्देह नहीं कि जिस अपमान की
ाग से रूस का राष्ट्रीय हृदय दग्ध हो रहा था वही ज्वाला फ़िन-
ण्ड, पोलैण्ड और अन्य देशों के राष्ट्रीय हृदयों में धधक रही है।
ाठकों को यह अंश इस पुस्तक में तद्वत् मिलेगा।

मेरी बड़ी इच्छा थी कि पुस्तक पूरी छपे, और इसी लिए मैंने
से अब तक डाले रक्खा था। पर आज-कल हिन्दी में जैसी
र चल रही है—मूल पुस्तक के कान-पूँछ काटकर केवल
ालाप और घटनाओं की छाप डालना—उसे देखते हुए मुझे
नी इच्छा-पूर्ति असम्भव-सी प्रतीत हुई। अब—इस शक्ल में—

पुस्तक जैसी कुछ है, आपके सामने है। पर मेरा विश्वास है कि मैंने टॉल्स्टॉय के साथ अन्याय नहीं होने दिया है। अन्याय कैसे होने देता ?—मैंने भी उनके दृष्टिकोण से घटनाओं पर विचार करना सीखा है।

विनत

कलकत्ता,
२५-७-४०

रुद्रनारायण अग्रवाल

युद्ध और शान्ति

पहला खंड

पहला परिच्छेद
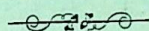
१८०५ के जून के महीने की बात थी। सम्राज्ञी मेरी फैडोरोव्ना की मुँहचढ़ी मेड आफ आनर अन्ना पैवलाव्ना शैरर को कुछ दिनों से खाँसी हो गइ थी। उस दिन सारे पीटर्सबर्ग में उसका लाल वर्दीवाला चपरासी निम्नलिखित नोट बाँटता फिरा :

'काउण्ट (या प्रिंस) अगर आपको कुछ और काम करना न हो, और अगर आप एक निरीह रोगिणी के साथ सन्ध्याकाल बिताना अधिक भयानक न समझते हों, तो मैं आपसे सात और दस के बीच में भेंट करके बड़ी प्रसन्न होऊँगी—अन्ना शैरर'।

प्रिंस वैसिली भी उन्हीं में से था। वह आकर सोफ़ा पर बैठ गया और बोला—"सबसे पहले तो आप यह बताइए कि आपका जी कैसा है जिससे आपके इस हितचिन्तक की चिन्ता भी दूर हो।" उसका स्वर पहले ही जैसा था जिसमें कृत्रिम सहानुभूति

और विनयशीलता के प्रच्छन्न आवरण के पीछे उपेक्षा और व्यंग्य तक का भाव स्पष्ट दिखाई पड़ता था।

इस पर अन्ना पैवलोव्ना ने उत्तर दिया : 'जिसके कलेजे में आग लग रही हो वह कोई अच्छे भले आदमियों में है ?'

इसके बाद उसने कहना आरम्भ किया :—'अच्छा, अब तुम्हारे परिवार के सम्बन्ध में बातचीत होनी चाहिए। तुम्हें मालूम है न कि जब से तुम्हारी कन्या ने घर से बाहर निकलना शुरू कर दिया है, हर एक उस पर मुग्ध सा हो गया है ? लोग कहते हैं कि वह अलौकिक सुन्दरी है। भाग्य ने तुम्हें ही ऐसे दो सुन्दर बच्चे क्यों दिये ?'

प्रिंस बोला :—"ये बच्चे मेरे लिए शनिश्चर का अवतार हैं।"

वह बोली : 'तुमने अपने शाह-ख़र्च लड़के अनातोले का ब्याह करने के बारें में भी कभी सोचा है ? मैं एक ऐसी नन्ही सी स्त्री को जानती हूँ जो अपने बाप के साथ बड़े दुःख के दिन काट रही है। वह तुम्हारी रिश्तेदार भी है; प्रिंसेज़ मेरिया बोल्कोंसकिया।'

प्रिंस वैसिली ने कहा :—'तुम्हें मालूम है, अनातोले की बदौलत मुझे चालीस हज़ार रूबल हर साल ख़र्च करने पड़ते हैं ? अच्छा, तुम्हारी प्रिंसेज़ वैसे मालदार तो है ?'

'उसका बाप बड़ा मालदार और कन्जूस है। वह देहात में रहता है। वही प्रसिद्ध प्रिंस बोल्कोन्स्की, जिसे मृत सम्राट् की अधीनस्थ सेना को छोड़ना पड़ा था, और जिसका उपनाम "प्रूशिया-राज" पड़ गया था। बड़ा तीक्ष्ण-बुद्धि है, पर कुछ

विचित्र ही प्रकृति का है, और दूसरों को दिक़ कर मारता है। बेचारी लड़की बड़े दुःख में है। उसका एक भाइ भी है। तुम तो उसे जानते ही होगे। हाल ही में उसने लीसा मेनेन से व्याह किया है। वह कूटूज़ोव का एडीकांग है। आज यहाँ आयेगा।'

अकस्मात् प्रिंस ने अन्ना पैवलोव्ना का हाथ पकड़कर कहा—'देखो प्रिय अनेटे, यह सम्बन्ध किसी तरह पक्का कर दो, और मैं तुम्हारा वेदामों का ग़ुलाम हो जाऊँगा। वह मालदार है और अच्छे ख़ान्दान की है, और मैं इतना ही चाहता हूँ।'

अन्ना पैवलोव्ना का ड्रायंग रूम धीरे-धीरे भरना शुरू हो गया। पीटर्सबर्ग के उच्चतम समाज के लोग एकत्र हो रहे थे। प्रिंस वैसिली की सुन्दरी कन्या हैलेन भी अपने पिता को राजदूत के सहभोज में ले चलने के लिए आई थी। वह नाच की पोशाक पहने हुए थी, और मेड आफ आनर का तमग़ा लगाये हुए थी। नन्हीं सी प्रिंसेज़ बोल्कोन्सकिया भी, जो 'पीटर्सबर्ग की परम सुन्दरी महिला' के नाम से प्रसिद्ध थी, मौजूद थी। उसका विवाह पिछले जाड़ों में हुआ था; और गर्भिणी होने के कारण वह बड़े-बड़े सहभोजों में न जाती थी; हाँ छोटे सहभोजों में अवश्य सम्मिलित हो जाती थी। प्रिंस वैसिली का पुत्र हिप्पोलाइट भी आया था।

इसके बाद जो लोग आये उनमें एक मोटा-ताज़ा युवक भी आया। इसके बाल कटे हुए थे। चश्मा, हल्के रङ्ग की ब्रिजिस, ऊँचे कालर की कमीज़, और एक भूरे रङ्ग का कोट। यह मोटा

युवक काउंट बेज़ूखोव का हरामी लड़का था। काउंट बेज़ूखोव कैथेरीन के समय का एक प्रसिद्ध संभ्रान्त व्यक्ति था, और उस समय मास्को में मृत्यु-शय्या पर पड़ा था। उक्त युवक अभी सैनिक या नागरिक किसी सर्विस में—दाख़िल नहीं हुआ था क्योंकि वह अभी हाल ही में विदेश से—जहाँ उसने शिक्षा प्राप्त की थी—वापस लौटा था।

इसी समय ड्रायंग रूम में एक और अतिथि आया। यह प्रिंस एण्ड्रयू बोल्कोन्स्की—नन्हीं प्रिंसेज़ का पति—था। यह युवक बड़ा सुन्दर था, मझला क़द और कठोर परिष्कृत अवयव। उसकी हर एक चीज़—उसकी उकताई हुई मुद्रा से लेकर उसके शांत संयत रंग-ढंग तक—उसकी सजीव नन्हीं पत्नी से पूरी तरह विभिन्नता स्थापित करती थी। उसके रंग-ढंग से स्पष्ट था कि वह ड्रायंग रूम में मौजूद लोगों को न सिर्फ अच्छी तरह जानता ही था, बल्कि उनसे इतना उकता गया था कि उसे उनकी ओर देखना या उनसे बात करना भी भार मालूम पड़ता था। पर इन सारी सूरतों में उसे इतनी उकतानेवाली सूरत किसी की न मालूम पड़ी जितनी स्वयं अपनी सुन्दर स्त्री की। वह उसके पास से मुँह बनाकर हट आया—जिससे उसका सुन्दर चेहरा विकृत हो गया—और अन्ना पैवलोव्ना का हाथ चूमने के बाद अपनी आँखें सिकोड़कर उपस्थित जन-समुदाय की ओर देखने लगा।

अन्ना पैवलोव्ना ने पूछा: 'तुम तो युद्ध में जा रहे हो न, प्रिंस?'

वोल्कोन्स्की ने फ्रेंच में बोलते हुए कहा 'जनरल कुटूज़ोव ने मुझे अपना एडीकांग बनाने की कृपा की है।'

'और तुम्हारी स्त्री लीसा ?'

'वह देहात में जायगी।'

'और हमें अपनी सुन्दर स्त्री से वंचित करते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती ?'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने अपने नेत्र सिकोड़े और पीठ फेर ली। जिस समय से वह कमरे में घुसा था, पीरी उसकी ओर उल्लसित और प्रेम-पूर्ण दृष्टि से देख रहा था। अब उसने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। पीठ फेरने से पहले, एण्ड्र्यू ने एक बार फिर अपनी भवें सिकोड़ीं। पर जब उसने पीरी का खिला हुआ चेहरा देखा तो उसका मुख मण्डल भी सुस्मित और प्रफुल्लित हो उठा।

उसने पीरी से कहा 'अच्छा! तुम भी यहीं मौजूद हो ? दुनिया गोल है न ?'

पीरी ने धीमे स्वर में कहा—'मैंने सुना था कि तुम यहाँ आओगे। मैं तुम्हारे साथ खाना खाने आऊँगा। आऊँ न ?'

प्रिंस ने हँसते हुए कहा 'नहीं, हर्गिज़ नहीं!' और उसका हाथ पकड़कर दबाया जिससे प्रकट हुआ कि उसका ऐसा प्रश्न करना अनावश्यक था। वह कुछ और भी कहना चाहता था, पर इसी समय प्रिंस वैसिली और उसकी कन्या जाने के लिए उठे और दोनों नवयुवकों ने उनके जाने के लिए मार्ग छोड़ दिया।

उसकी कन्या अपनी पोशाक के पर्त सँभाले कुर्सियों के बीच में से होकर गुज़री और उसका सुन्दर चेहरा मुस्कराहट से और भी सजीव हो उठा। जब वह गुज़री तो पीरी उसकी ओर अति आनन्दित दृष्टि से देखता रहा।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा 'बड़ी सुन्दर है।'

पीरी ने उत्तर दिया 'बड़ी।'

जाते समय प्रिंस वैसिली ने पीरी का हाथ पकड़ा और अन्ना पैवलोव्ना से कहा 'इस रीछ को मेरे कहने से साधो। इसे मेरे साथ रहते हुए पूरा एक महीना हो गया और आज पहला मौक़ा है जो मैं इसे समाज में देखता हूँ।'

अन्ना पैवलोव्ना मुस्कराई और उसने पीरी को अपने हाथ में लेने का वादा किया। वह जानती थी कि पीरी के पिता का प्रिंस वैसिली के साथ कुछ रिश्ता है। एक वयस्क महिला झपटकर प्रिंस वैसिली के पास बाहरी कमरे में पहुँच गई। वह प्रिंस वैसिली के साथ बाहरी कमरे में दौड़ती हुई बोली -'प्रिंस, मेरे बेटे बोरिस के संबंध में क्या तय किया ? मैं पीटर्सबर्ग में अधिक दिनों तक नहीं ठहर सकती। बताओ, मैं यहाँ से जाकर अपने निरीह बच्चे को क्या ख़बर दूँ।'

यद्यपि प्रिंस वैसिली उसकी बात चीत अनिच्छा और कुछ-कुछ अभद्रता के साथ सुन रहा था—जिससे कुछ असन्तोष भी प्रकट होता था—फिर भी वह उसी प्रकार उसकी ओर देख-देखकर प्रेम-

स्निग्ध-करुण मुस्कराहट से मुस्कराती रही। उसने प्रिंस का हाथ पकड़ लिया कि कहीं वह चला न जाय।

उसने कहा—'सम्राट् से एक शब्द कहने में तुम्हारा क्या ख़र्च हो जायगा ?—और सिर्फ़ इतने ही से वह गार्ड्स सेना में बदल दिया जायगा।'

प्रिंस वैसिली ने उत्तर दिया 'प्रिंसेज़, विश्वास रक्खो, मैं जो कुछ कर सकता हूँ करने को तैयार हूँ। पर सम्राट् से कुछ कहना मेरे लिए बड़ा कठिन काम है। मैं तो तुम्हें सलाह दूँगा कि तुम प्रिंस गैलिट्सिन के द्वारा रुक्यान्टसेव से कहो। यही सबसे अच्छा रहेगा।'

उक्त वयस्क महिला प्रिंसेज़ ड्रूबैट्स्काया थी जो रूस के एक परम सम्भ्रान्त परिवार से सम्बन्ध रखती थी। पर वह निर्धन थी, और सोसायटी से बहुत दिन पहले सम्बन्ध तोड़ने के कारण उसका उससे पहले जैसा प्रभावशाली सम्बन्ध नहीं रहा था। अब वह पीटर्सबर्ग में अपने एक मात्र पुत्र को गार्ड्स में जगह दिलाने के लिए आई थी। वास्तव में वह प्रिंस वैसिली के द्वारा ही अन्ना पैवलोव्ना के समारोह में प्रविष्ट हो सकी थी। उसने कहा—'देखो प्रिंस, सुनो, मैंने अब तक तुमसे किसी चीज़ का सवाल नहीं किया है, और फिर कभी करूँगी भी नहीं। न मैंने तुम्हें तुम्हारे साथ अपने पिता की मैत्री का ही स्मरण कराया है। पर अब मैं ईश्वर के नाम पर तुम्हारे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ कि मेरे पुत्र के लिए केवल इतना काम कर दो, और मैं तुम्हें हमेशा अपना दाता समझूँगी।'

प्रिंसेज़ हेलेन ने अपना सिर घुमाकर साँचे में ढले हुए कंधों पर से देखते हुए दरवाज़े पर से कहा 'पापा, हमें देर हो जायगी।'

पर सोसायटी में किसी व्यक्ति का प्रभाव भी एक पूँजी है, जिसमें किफ़ायतशारी से काम लेना पड़ता है; तभी वह बनी रह सकती है। प्रिंस वैसिली यह जानता था; और एक बार समझ लेने के बाद कि यदि वह हर किसी की प्रार्थना पर उसके लिए कुछ न कुछ माँगता रहेगा, तो शीघ्र ही वह अपने लिए कुछ माँग सकने में असमर्थ हो जायगा, वह अपने प्रभाव को काम में लाने से भरसक बचाव करता था। पर प्रिंसेज़ ड्रुबैट्स्काया के दूसरी बार प्रार्थना करने पर उसके हृदय में कुछ अशांति सी उठी। उसने उसे उस बात की याद दिलाई थी जो बिल्कुल ठीक थी। वह अपनी प्रगति के आरम्भ में पहला क़दम उसके पिता की कृपा से ही बढ़ा पाया था। इसके अतिरिक्त प्रिंस ने उसके रङ्ग-ढङ्ग से यह भी ताड़ लिया था कि वह उन स्त्रियों में से है—और अधिकांश माताएँ ऐसी होती हैं—जो एक बार किसी बात का निश्चय करने के बाद, जब तक अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेतीं, चैन नहीं लेतीं; और यदि आवश्यक हो तो, रात दिन, चौबीस घण्टे, आग्रह करती रहती हैं। बस इस आख़िरी बात से उसका हृदय पिघल गया।

उसने अपनी स्वाभाविक आत्मीयता और उकताये हुए स्वर से कहा 'जो तुम कह रही हो वैसा करना यद्यपि मेरे लिए असम्भव सा है; पर यह दिखाने के लिए कि मैं तुम्हारा कितना सगा हूँ

और तुम्हारे पिता की स्मृति का कितना आदर करता हूँ, मैं वही असम्भव सम्भव कर दिखाऊँगा। तुम्हारा लड़का गार्ड्स में तब्दील कर दिया जायगा।'

प्रिंसेज़ बोली :—'मेरे दाता, मेरे दाता !'

प्रिंस ने जाने के लिए पीठ फेरी।

—

दूसरा परिच्छेद

अन्ना पैवलोव्ना को धन्यवाद देने के बाद अतिथि बिदा होने लगे। पीरी को एक बार फिर असुविधा का सामना करना पड़ा। मोटा, असाधारणतया लम्बा, चौड़ा—लम्बे-लम्बे लाल हाथ—वह यही नहीं जानता था कि ड्रायङ्ग रूम में किस तरह प्रवेश किया जाता है और क़िस तरह उससे बिदा हुआ जाता है; अर्थात् बिदा होने से पहले किस प्रकार कोई असाधारणतया सहृदयता-पूर्ण बात कही जाती है। इसके अलावा उसका ध्यान कहीं का कहीं रहता था। जब वह जाने लगा तो उसने अपने टोप की बजाय एक जनरल की तिकोनी टोपी उठा ली।

प्रिंस एण्ड्रथ्यू ने अपनी स्त्री से, उसके परली तरफ़ देखते हुए, कहा 'तैयार हो?'

प्रिंस हिप्पोलाइट ने शीघ्रता के साथ अपना ओवरकोट पहना जो नये फ़ैशन के अनुसार एड़ियों तक पहुँचता था; और उसमें लड़खड़ाता हुआ सहन की ओर भागा जहाँ अर्दली प्रिंसेज़ को गाड़ी में सवार करा रहा था।

उसने पैरों की तरह ज़ुबान से भी लड़खड़ाते हुए कहा—'प्रिंसेज़, सलाम।'

प्रिंसेज़ अपनी पोशाक समेटती हुई अँधेरी गाड़ी में बैठने को तैयारी कर रही थी; उसका पति अपनी तलवार ठीक ढङ्ग से

बाँध रहा था; प्रिंस हिप्पोलाइट सहायता देने के बहाने हर एक के काम में रुकावट डाल रहा था।

प्रिंस एण्ड्रयू ने प्रिंस हिप्पोलाइट से, जो उसका रास्ता रोके खड़ा था, रूसी भाषा में शुष्क स्वर में कहा 'रास्ता छोड़िए महोदय।'

और उसी आवाज़ में फिर पुकारकर कहा—'पीरी, मैं तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ।' पर यह स्वर मीठा और प्रेम भरा था।

गाड़ी चल दी। प्रिंस हिप्पोलाइट सहन में खड़ा-खड़ा ज़ोर-ज़ोर से हँसता रहा।

× × × ×

पीरी औरों से पहले पहुँच गया और एण्ड्रयू की अध्ययन-शाला में पहुँचकर बड़ी बेतकल्लुफ़ी के साथ सोफ़ा पर लेट गया और अल्मारी में से कोई सी एक पुस्तक—जो संयोग से हाथ में आ गई (वह सीज़र की टिप्पणियाँ थीं)—निकालकर बीच में से कुहनियाँ टेककर, पढ़ने लगा।

प्रिंस एण्ड्रयू ने अपने श्वेत हाथ मलते हुए अध्ययन-शाला में प्रवेश किया और पूछा—'कहो, तुम्हारी मेडम शेरर कहाँ है? वह तो अब बीमार हो गई होगी।'

पीरी ने अपना शरीर घुमाया जिससे सोफ़ा आवाज़ कर उठा। उसने अपना सजीव मुखमण्डल प्रिंस एण्ड्रयू की ओर उठाया और मुस्कराते हुए हाथ हिलाया।

एण्ड्र्यू फिर बोला—अच्छा, बताओ, तुमने अपने बारे में क्या तय किया ? गाड्‌र्समैन बनोगे या राजनीतिज्ञ ?

पीरी सोफ़ा पर पालथी मारकर बैठ गया। बोला 'भई, अभी मैंने कुछ तय नहीं किया। न मुझे गाड्‌र्समैन बनना अच्छा लगता है, न राजनीतिज्ञ बनना।'

'पर तुम्हें कुछ न कुछ तो तय करना ही पड़ेगा। तुम्हारे पिता भी यही चाहते हैं।'

पीरी दस वर्ष की आयु में एक शिक्षक के साथ विदेश में शिक्षा ग्रहण करने भेज दिया गया था और बीस वर्ष की आयु में घर वापस लौटा था। जब वह घर वापस आया तो उसके पिता ने शिक्षक को बर्ख़ास्त कर दिया और युवक से कहा : 'अब तुम पीटर्सबर्ग जाओ, देखो भालो, और अपनी पसन्द लायक़ काम ढूँढ़ निकालो। जो पसन्द करोगे मैं उसी पर राज़ी हो जाऊँगा। यह लो, प्रिंस वैसिली के लिए एक ख़त, और यह लो रुपया। मुझे सब हाल लिखते रहना और मैं तुम्हारी हर तरह से मदद करूँगा।' पीरी अपने मन लायक़ काम पिछले तीन महीने से बराबर ढूँढ़ रहा था, पर अभी तक कोई निश्चय न कर सका था। प्रिंस एण्ड्र्यू इसी के बारे में बात कर रहा था। पीरी ने अपना माथा रगड़ा।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने फिर दख़ल दिया। बोला—'बोलो, तुम हार्स गार्ड्स की ओर गये थे ?'

'नहीं, मैं नहीं गया। और मैं तुम्हें यही बतानेवाला था, और यही मैंने सोच रक्खा है। आजकल नैपोलियन के साथ

युद्ध हो रहा है। अगर स्वतन्त्रता के लिए युद्ध होने लगे तो मैं भी उसे समझ सकूँ, और उसमें भर्ती होने के लिए सबसे आगे बढ़ूँ। पर इँगलेंड और आस्ट्रिया को संसार के सबसे बड़े पुरुष के विरुद्ध सहायता देना ठीक नहीं है।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने पीरी की इन बालकों जैसी बातों पर कन्धे हिलाये, उसने ऐसा भाव बनाया कि ऐसी निरर्थक बात का उत्तर देना असम्भव है; पर वास्तव में इस सरल प्रश्न के उत्तर में, उसके अतिरिक्त जो प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा, और कुछ कहना आसान न था।

उसने कहा—'अगर सब अपने ही विचारों के अनुसार युद्ध करने लगें तो संसार में युद्ध का नाम ही न रहे।'

पीरी बोला—'और यह बड़ा अच्छा हो।'

प्रिंस एण्ड्र्यू मुस्कराया। 'सम्भव है यह बड़ा अच्छा हो। पर यह हो कभी नहीं सकता।'

पीरी ने पूछा—'अच्छा, यह तो बताओ कि तुम लड़ाई में क्यों जा रहे हो?'

एण्ड्र्यू ने उत्तर दिया 'क्यों जा रहा हूँ? यह मैं नहीं जानता। पर मुझे जाना अवश्य चाहिए।' इसके बाद उसने कुछ रुककर कहा 'मैं इसलिए जा रहा हूँ कि मैं अपने दिन जिस ढङ्ग से यहाँ बिता रहा हूँ, वह मुझे अच्छा नहीं लगता।'

इतने ही में प्रिंसेज़ भी आ गई। पीरी ने पूछा 'अच्छा, तुम कब रवाना होगे?'

'ओह ! इनके जाने की चर्चा मत चलाओ। मैं उसे न सुन सकूँगी।' प्रिंसेज़ बोली,—'आज मुझे ध्यान आया कि इन सारे सुन्दर मेल-मिलापों को छोड़ देना पड़ेगा...और फिर, एण्ड्रे, तुम जानते ही हो...(उसने अपने पति की ओर देखकर भेद के साथ पलक मारा) मुझे बड़ा भय लगता है, मुझे बड़ा भय लगता है !' उसने फुसफुसाकर कहा, और उसका शरीर काँप उठा।

उसके पति ने उसकी ओर इस दृष्टि से देखा मानो वह पीरी और अपने सिवाय किसी तीसरे व्यक्ति को देखकर आश्चर्य में आ गया हो, और उससे नीरस विनीत स्वर में पूछा—'लीसा, तुम्हें किस बात से इतना डर लगता है ? मेरी समझ ही में नहीं आता।'

'यह देखो, पुरुष कैसे स्वार्थी होते हैं; एक सिरे से सब स्वार्थी होते हैं ! सिर्फ़ अपने वहम की वजह से, ईश्वर जाने क्यों, यह मुझे अकेली छोड़े जाते हैं और देहात में फेंके जाते हैं।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने सहृदयता के साथ कहा—पर इसे मत भूलो कि देहात में मेरे पिता और बहन भी रहेंगे।

'फिर भी मैं तो अकेली ही रही। मेरे मेल-जोल का तो वहाँ कोई न होगा। और फिर भी यह कहते हैं कि मुझे किस बात से इतना भय है।'

'लीसे !' प्रिंस एण्ड्र्यू ने केवल इतना ही कहा। पर इसी एक शब्द में एक प्रार्थना, एक धमकी और—सबसे अधिक—एक दृढ़ निश्चय निहित था कि उसे अपने इन शब्दों पर बाद को क्षोभ करना पड़ेगा। पर प्रिंसेज़ ने शीघ्रता के साथ कहना जारी रखा :

'तुम मुझसे ऐसा व्यवहार करते हो मानों मैं एक रोगी हूँ, या बच्चा हूँ। मैं यह सब साफ़ देख रही हूँ। क्या तुम इसी तरह का बर्ताव छः महीने पहले भी करते थे?'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने पहले से भी अधिक दृढ निश्चय के साथ कहा 'लीसे, बस, बहुत हुआ।'

पीरी इस सारे वार्तालाप को ज्यों-ज्यों सुनता गया, उसकी उद्विग्नता बढ़ती गई। अब वह उठा और प्रिंसेज़ के पास पहुँचा। शायद वह आँसुओं को देख कर शांत नहीं रह सकता था, और ख़ुद भी चीख़न-चिल्लाने की तैयारी में था।

'प्रिंसेज़, इतनी उद्विग्न मत होओ। यह तुम्हें ऐसा इसलिए मालूम पड़ता है कि .... मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि ख़ुद मुझे भी ऐसी अनुभूति हुई है......और इसलिए कि......नहीं, मुझे क्षमा करो! एक अजनबी को यहाँ इस तरह जमकर नहीं बैठ जाना चाहिए।......नहीं, उद्विग्न मत होओ।......अच्छा, सलाम!'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोला—'नहीं, पीरी रुको। प्रिंसेज़ बड़ी दयालु हैं, इसलिए वह यह कभी न चाहेंगी कि मैं तुम्हारे संसर्ग के आनन्द से वञ्चित हो जाऊँ।'

प्रिंसेज़ ने अपने क्रुद्ध आँसुओं को रोकने का कोई प्रयत्न न करते हुए बड़बड़ाकर कहा—'नहीं, नहीं, उन्हें तो सिर्फ़ अपने ही आराम की फ़िक्र रहती है।'

'लीसे !' प्रिंस एड्रयू ने अपने स्वर को इतना चढ़ाकर कहा जिससे प्रकट होता था कि, बस, अब संतोष नष्ट हो चला है।

अकस्मात् प्रिंसेज़ के सुन्दर चेहरे की क्रुद्ध और पाशविक मुद्रा एक मनोहारिणी, कातर-मुद्रा में परिणत हो गई। उसके सुन्दर नेत्रों ने अपने पति के चेहरे की ओर कनखियों से देखा, और उसकी आकृति उस कुत्ते की आकृति जैसी विनीत और संतप्त हो गई जो अपनी गिरती हुई दुम को शीघ्रता के साथ पर हल्के-हल्के हिलाता है।

उसने बड़बड़ाकर कहा 'मेरे भगवान्! मेरे भगवान्!' और अपनी पोशाक उठाकर वह अपने पति के पास पहुँची और उसका माथा चूमा।

प्रिंस ने उठकर विनीत स्वर में उसका हाथ चूमते हुए—जिस प्रकार एक अपरिचित का हाथ चूमते हैं—कहा 'सलाम लीसे।'

दोनों मित्र चुप रहे। दोनों में से किसी ने बोलना शुरू नहीं किया। पीरी लगातार प्रिंस एण्ड्रयू की ओर देखता रहा। प्रिंस एण्ड्रयू ने अपने लम्बे-लम्बे हाथों से अपना माथा रगड़ा और बोला—दोस्त, कभी भूलकर भी व्याह मत करना! बस, मेरी यही नसीहत है। उस समय तक कभी व्याह न करना जब तक तुम यह न कह सको कि जो कुछ तुम्हें करना था, उसे समाप्त कर चुके, और जब तक तुमने अपने पसन्द की स्त्री से प्रेम करना बन्द न कर दिया हो और उसका असली स्वरूप अच्छी तरह न जान लिया हो।

पीरी ने अपना चश्मा उतार लिया, जिसके बिना उसका चेहरा बिल्कुल दूसरा ही दिखाई देने लगा। अब उसकी सहृदयता की मुद्रा पहले से भी अधिक स्पष्टता के साथ दिखाई देने लगी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहना जारी रक्खा : 'मेरी स्त्री असाधारण महिला है; वह उन साध्वी स्त्रियों में से है जिनके कारण पुरुष का मान बना रह सकता है। पर, हे भगवान्! मैं अविवाहित होने के लिए अब क्या न कुछ दे डालने को तैयार हूँ! सिर्फ़ तुम्हीं एक ऐसे आदमी हो जिससे मैं यह बात कह रहा हूँ, क्योंकि मैं तुमसे स्नेह करता हूँ।'

पीरी बोला 'कैसे आश्चर्य की बात है कि तुम, तुम अपनी ज़िन्दगी को बर्बाद हुआ समझते हो; तुम अपने आपको अयोग्य समझते हो। तुम्हारे लिए सब रास्ते खुले हुए हैं। और तुम...।'

उसने अपना वाक्य समाप्त नहीं किया, पर उसके स्वर से साफ़ ज़ाहिर था कि वह अपने मित्र की कितनी क़दर करता था और उससे भविष्य में क्या कुछ आशाएँ रखता था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा 'मेरा काम तो ख़तम हो चुका। मेरे बारे में बात करने से क्या फ़ायदा?' इसके बाद उसने अपने दिलासा देनेवाले विचारों पर कुछ मुस्कराते हुए कहा 'आओ, अब अपने बारे में बातें करो।'

और उसी प्रकार की मुस्कराहट पीरी के चेहरे पर भी पैदा हो गई। उसने लापरवाही के साथ उल्लासपूर्ण ढङ्ग से मुस्कराते हुए कहा 'पर मेरे बारे में कुछ कहने लायक़ बात ही कौन सी है?

२

मैं हूँ ही क्या ?—एक हरामी लड़का !' अकस्मात् उसका चेहरा लाल हो गया, और यह साफ़ ज़ाहिर था कि उसे यह बात कहने में ख़ासा प्रयत्न करना पड़ा था। 'न कोई नाम, न कुछ धन दौलत। और सचमुच...।' पर उसने यह नहीं कहा कि 'सचमुच' क्या था। 'फ़िलहाल मैं स्वतन्त्र हूँ और भला चङ्गा हूँ। हाँ, इसका मुझे तनिक भी ध्यान नहीं है कि मुझे क्या करना है। मैं इस बारे में तुमसे मश्वरा लेनेवाला था।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसकी ओर सहृदयता के साथ देखा, पर उसकी दृष्टि प्रेम-स्निग्ध और मित्रता-पूर्ण होते हुए भी उसकी निजी उच्चता के भाव प्रकट करती थी।

'तुम मुझे बड़े अच्छे लगते हो, ख़ासकर इसलिए कि इस सारी मूर्ख-मण्डली में तुम्हीं एक ज़िन्दादिल आदमी हो। हाँ, तुम बिल्कुल बेफ़िक्र हो ! जो चाहो करो; तुम्हारे लिए सब ठीक है। तुम हर जगह मौज में रहोगे। पर देखो, प्रिंस वैसिली के यहाँ जाना और उनके जैसी ज़िन्दगी बिताना छोड़ दो। यह सारी बदचलनी--व्यभिचार और दुश्चरित्र-पूर्ण जीवन--तुम्हें शोभा नहीं देते !'

पीरी ने कन्धे हिलाते हुए कहा 'मेरे मित्र, क्या पूछते हो ? औरत ! औरत !'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उत्तर दिया 'मैं समझ नहीं सका। अगर औरतें खुल्लमखुल्ला बदचलन हों, तो दूसरी बात है; पर कुरागिन के मेल की औरतें। "औरत और शराब।" उनसे भगवान् बचाये !'

पीरी प्रिंस वैसिली के घर ठहरा हुआ था और उसके लड़के अनातोले कुरागिन के साथ--जिसका विवाह प्रिंस एण्ड्र्यू की बहिन के साथ करके उसका सुधार करने की तजवीज़ हो रही थी--उसके जैसी ही बदचलनी की ज़िन्दगी बिता रहा था।

पीरी बोला, मानो उसे एकाएक कोई सुन्दर बात याद आ गई हो, 'तुम जानते हो? सचमुच, मैं ख़ुद इस पर विचार कर रहा हूँ। इस तरह की ज़िन्दगी बिताना, सचमुच, कुछ समझ में नहीं आता। सिर दुखने लगता है, और जेब ख़ाली हो जाती है सो अलग। आज उसने मुझसे रात को चलने को कहा था, पर मैं नहीं जाऊँगा।'

'अच्छा, अपने सम्मान की शपथ खाओ।'

'अपने सम्मान की शपथ।'

तीसरा परिच्छेद

जिस समय पीरी अपने मित्र से विदा हुआ, तो नौ बज चुके थे। ग्रीष्म ऋतु की उजाली रात थी।

उसने सोचा 'अनातोले कुरागिन के यहाँ चलना तो चाहिए।'

पर उसी समय उसे प्रिंस एण्ड्रयू को दिया हुआ अपना वचन याद आया। इस पर—जैसा उन लोगों के लिए स्वाभाविक सा है जिन्हें लोग-बाग दुर्बल चरित्रवाले कहा करते हैं—उसे इस सुपरिचित भ्रष्ट जीवन का स्वाद एक बार और चखने की ऐसी उत्कट इच्छा हुई कि अन्त में उसने जाने का निश्चय कर ही लिया। उसे सूझा कि उसने प्रिंस एण्ड्रयू को जो वचन दिया था उसका कोई महत्त्व नहीं था, क्योंकि वह उससे पहले ही अनातोले से वादा कर चुका था कि वह उसकी मण्डली में आकर शरीक होगा।

अनातोले हार्स गार्ड बैरकों के पास एक बड़े से मकान में रहता था। पीरी वहाँ पहुँचकर सहन में गया और सीढ़ियों पर चढ़कर खुले दरवाज़े से मकान के भीतर दाख़िल हुआ। बाहरी कमरा ख़ाली पड़ा हुआ था; ख़ाली बोतलें, चोग़े, और जूते वग़ैरह चारों ओर बिखरे पड़े थे। शराब की बू आ रही थी, और कुछ दूर से कोलाहल सुनाई पड़ रहा था।

एक ने चिल्लाकर कहा 'मैं स्टीवेंस पर सौ इम्पीरियल लगाता हूँ।'

दूसरे ने चिल्लाकर कहा 'देखो।'

तीसरा बोला—'मैं डोलोखोव पर शर्त लगाता हूँ।। कुरागिन, हमारे हाथ अलग करो*।'

चौथा चिल्लाया 'एक घूँट में, वरना वह हार जायगा!'

अनातोले--एक लम्बे क़द का सुन्दर युवक, कोट उतारे हुए और बढ़िया कमीज़ के बटन खोले हुए--कमरे के बीच में खड़ा था। उसने चिल्लाकर कहा 'जैकोब, एक बोतल ले आ। भई रुको तो। लो पीरिया भी आ पहुँचा! बहुत ठीक!' उसने पीरी को आते हुए देखकर कहा।

एक और आदमी ने---मझोला क़द, नीली आँखें, गम्भीर स्वर--खिड़की पर से चिल्लाकर कहा: 'अच्छा, यहाँ आओ, हाथ अलग करो!' यह डोलोखोव था--सैमियोनोव रेजीमेंट का एक अफ़सर, छटा हुआ जुआरी और लड़ाका--जो अनातोले के साथ रहता था। पीरी ने अपने चारों ओर देखते हुए उल्लासपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा 'कुछ समझ में नहीं आता। क्या मामला है?'

---

* रूस में रिवाज है कि जब दो आदमी शर्तें बदते हैं तो एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं, और एक तीसरा आदमी गवाह बनकर उनके हाथ अलग करता है।

अनातोले बोला 'अच्छा रुको, इसने अभी शराब नहीं पी है। बोतल लाओ।' और इतना कहकर उसने मेज़ पर से गिलास उठाया और पीरी के पास पहुँचा।

'सबसे पहले, पियो!'

पीरी एक के बाद दूसरा गिलास—अपनी भवों के नीचे से सारे उन्मत्त अतिथियों की ओर देखता हुआ, जो अब खिड़की के पास जमकर गपशप कर रहे थे—पीता गया। अनातोले गिलास पर गिलास भरता गया और साथ ही साथ समझाता गया कि डोलोखोव ने स्टीवेंस नामक एक अँगरेज़ नौसेना के अफ़सर से शर्त बदी है कि वह तीसरी मंज़िल की खिड़की के बाहर के लोहे पर पैर फैलाये बैठकर रम की एक बोतल ख़ाली कर देगा।

अनातोले ने पीरी को आख़िरी गिलास पकड़ाते हुए कहा 'पिये जाओ। तुम्हें यह भी ख़ाली करना पड़ेगा। मैं ऐसे तुम्हें नहीं जाने दूँगा।'

पर पीरी ने उसे अलग हटाते हुए कहा 'नहीं, मैं नहीं पीऊँगा।' और इतना कहकर वह खिड़की के पास चला गया।

उसने लोहे की छड़ें पकड़ीं, ज़ोर लगाया, और एक आवाज़ के साथ चौखटा बाहर निकल आया।

डोलोखोव ने कहा 'इसे बिलकुल बाहर निकाल लो, नहीं तो ये लोग समझेंगे कि मैं सहारा ले रहा था।'

इसके बाद उसने बोतल हाथ में पकड़ी और खिड़की की सिल पर खड़े होकर पुकारकर कहा 'सुनो।' सब चुप हो गये।

उसने फ्रेंच में बोलना शुरू किया, जिससे उसकी बातचीत अँगरेज़ भी समझ सके : 'मैं पचास इम्पीरियल लगाता हूँ; या सौ; बोलो ।'

अँगरेज़ ने कहा 'नहीं, पचास ।'

'अच्छी बात है ; पचास ही सही । मैं खिड़की से बाहर इस जगह पर बैठकर बिना मुँह से हटाये सारी बोतल खाली कर दूँगा ।' और इतना कहकर उसने झुककर वह लोहे की ढलवाँ छड़ दिखाई । 'और किसी चीज़ का सहारा नहीं लूँगा । बोलो, ठीक है न ?'

अँगरेज़ बोला 'बिलकुल ठीक' ।

वह बोतल को खिड़की की सिल पर रखकर बाहर की छड़ पर धीरे धीरे चढ़ गया और अपने पैर लटका दिये । अनातोले ने दो क़न्दील लाकर दोनों ओर रख दिये—यद्यपि दिन निकल आया था—डोलोखोव की कमर की कमीज़ और उसके घुँघराले बाल प्रकाशित हो उठे । सब के सब खिड़की पर आकर जमा हो गये और सबसे आगे वह अँगरेज़ था । पीरी चुपचाप खड़ा हुआ मुस्करा रहा था ।

डोलोखोव ने बोतल उठा ली और ओठों से लगाई, अपनी गर्दन पीछे की ओर झुका ली, और अपना बोझ ठीक रखने के लिए खाली हाथ ऊपर को उठा लिया । एक अर्दली टूटे हुए शीशे उठाने के लिए झुका था, वह खिड़की और डोलोखोव की कमर की ओर आँख गड़ाये वैसा ही रह गया । अनातोले

सीधा खड़ा हुआ ताकता रहा। अँगरेज़ अपने ओठ फुलाये इधर-उधर देखने लगा। पीरी ने सोचा 'इतनी देर क्यों हो रही है?' उसे ऐसा भास हुआ मानो आधा घंटा बीत गया हो। अकस्मात् डोलोखोव हाथ में बोतल लिये पीछे की ओर झुका, और उसके हाथ शीघ्रता के साथ काँपने लगे। बस, नीचे की ओर खिसक पड़ने का सारा सामान हो गया था; और ज्यों-ज्यों वह नीचे की ओर खिसकता गया, उसके हाथ और सिर अधिकाधिक काँपते गये। एक हाथ आगे को बढ़ा, मानो वह खिड़की की सिल पकड़ना चाहता हो; पर वह पकड़ नहीं सका। पीरी ने अपनी आँखें फिर ढक लीं और उसे ऐसा मालूम पड़ा मानो उसकी आँखें फिर कभी न खुलेंगी। इसी समय उसने अपने चारों ओर स्पन्दन सुना। उसने हाथ हटाकर देखा: डोलोखोव खिड़की की सिल पर पीली, पर उल्लसित मुद्रा के साथ खड़ा था।

उसने कहा 'यह ख़ाली बोतल पकड़ो।' इतना कहकर उसने उसे अँगरेज़ की ओर फेंक दिया जिसने उसे फ़ुर्ती के साथ बीच ही में पकड़ लिया। डोलोखोव कूद पड़ा। उसके मुँह से रम की तेज़ बदबू आ रही थी।

चारों ओर से आवाज़ें आ रही थीं, 'शाबाश पट्ठे! क्या कहने हैं! तुझे शैतान ले जाय!'

अँगरेज़ ने अपनी जेब से थैली निकाल ली और सिक्के गिनना शुरू किया। डोलोखोव भवें चढ़ाये चुपचाप खड़ा था। पीरी खिड़की की सिल पर जा चढ़ा और चिल्लाकर कहा—'सज्जनो, मेरे

साथ शर्त लगाने को कौन तैयार है ? मैं भी यही सब करने को तैयार हूँ । शर्त की भी कोई ज़रूरत नहीं है । बोतल मँगाओ । मैं भी यही करता हूँ । बोतल ले आओ ।'

डोलोखोव ने मुस्कराते हुए कहा 'उसे करने दो, उसे करने दो ।'

चारों ओर से आवाज़ें आने लगीं 'क्या तुम पागल हो गये हो ? क्या इसे कोई न रोकेगा ? इसका तो सीढ़ियों पर भी सिर चकराने लगता है ।'

पीरी ने मेज़ पर ज़ोर से, दृढ़, किन्तु नशीली मुद्रा के साथ चिल्लाकर कहा 'एक बोतल मँगाओ ! मैं पिऊँगा ।' और वह खिड़की से बाहर कूदने की तैयारी करने लगा ।

लोगों ने उसकी बाँहें पकड़ने की चेष्टा की । पर वह इतना मज़बूत था कि जो कोई उसके पास आया, दूर जाकर गिर पड़ा ।

अनातोले बोला 'नहीं, तुम लोग इसे इस तरह बस में नहीं कर सकोगे । रुको, मैं अभी उसे रास्ते पर लाता हूँ । पीरी ! देखो, सुनो ! कल को हमारी तुम्हारी शर्त रहेगी; पर अब हम लोग उसी के यहाँ जा रहे हैं ।'

पीरी ने चिल्लाकर कहा 'चलो फिर ! चलो ! और हम ब्रुइन को अपने साथ ले चलेंगे ।' ब्रुइन रीछ का नाम था ।

उसने रीछ को पकड़कर हाथों में उठा लिया और उसे लेकर कमरे में नाचने लगा ।

चौथा परिच्छेद

प्रिंस वैसिली ने अन्ना पैवलोव्ना के निमन्त्रण के दिन प्रिंसेज़ ड्रबैट्स्काया से उसके एकमात्र लड़के बोरिस की सिफ़ारिश करने के बारे में जो वादा किया था, उसे पूरा किया। सम्राट् से ज़िक्र किया गया और बोरिस को सेमियोनोव गार्ड्स में बदल दिया गया। पर अन्ना मिखायलोव्ना (प्रिंसेज़ ड्रबैट्स्काया) के अनेक प्रयत्न करने पर भी वह कुटूज़ोव के अमले में शरीक न हो सका। अन्ना पैवलोव्ना के निमन्त्रण के थोड़े ही दिन बाद अन्ना मिखायलोव्ना मास्को में वापस आ गई और सीधी अपने सम्पन्न सम्बन्धी रोस्टोव-परिवार के यहाँ गई। वह जब मास्को में रहती तो इन्हीं रोस्टोव सम्बन्धियों के यहाँ टिकती। उसके प्यारे लड़के बोरिस की शिक्षा दीक्षा भी बचपन से इसी घराने में हुई थी और वह यहाँ कभी कभी वर्षों लगातार रह जाता था। गार्ड्स सेना पीटर्सबर्ग से रवाना हो चुकी थी, पर बोरिस मास्को में अपने फ़ौजी साज सामान के लिए ठहर गया था।

उस दिन सेंट नैटाली का दिन था और साथ ही रोस्टोव परिवार के दो सदस्यों का भी नामकरण दिवस था। माँ और सबसे छोटी लड़की दोनों का नाम नैटाली था। सुबह तड़के से ही छः घोड़ों की गाड़ियाँ रोस्टोव-परिवार के सुविशाल भवन के

आगे लग रही थीं जिनमें से उतर उतरकर मुलाक़ाती लोग माँ बेटी को उनके नामकरण दिन के उत्सव पर बधाई देते थे। काउण्टेस रोस्टोव अपनी सबसे बड़ी सुन्दरी लड़की के साथ ड्रायंग-रूम में मुलाक़ातियों की आवभगत कर रही थीं।

काउण्टेस की उम्र कोई पैंतालीस वर्ष की होगी। चेहरा दुबला-पतला था। सौन्दर्य्य सन्तानोत्पत्ति से नष्ट सा हो गया। उनके बारह बच्चे हुए थे। उनकी बातचीत और हिलने-डुलने में एक प्रकार की निर्जीवता रहती थी जो दुर्बलता के कारण थी और जिससे प्रेरित होकर दूसरे लोग उनका मान करते थे। प्रिंसेज़ अन्ना मिखायलोव्ना डुबेट्स्काया भी—एक घर के आदमी की तरह ड्रायंग रूम में बैठी हुई मुलाक़ातियों की अगवानी कर रही थी। युवासमाज पीछे के कमरों में था और अतिथियों को आवभगत में ख़ुद शरीक होना अनावश्यक समझता था। काउण्ट मेहमानों से भेंट करते और भोजन का निमंत्रण देकर विदा कर देते। कभी वह अपने चंदुले सिर के गिने चुने भूरे बालों के झव्वे थपथपाते; कभी ड्रायंग रूम की ओर वापस आते हुए पाकशाला में से होते हुए लम्बे चौड़े संगमर्मर के भोजनालय में पहुँचते, जहाँ अस्सी आदमियों के लिए मेज़ें लगाई जा रही थीं।

काउण्टेस के दीर्घकाय अर्दली ने आकर अपनी गूँजती हुई आवाज़ में कहा : 'मेरी लोव्ना कैरेगिना और उनकी पुत्री आई हैं।'

काउण्टेस ने कुछ देर सोचा, और अपने सोने के सुँघनीदान में से—जिस पर काउण्ट का चित्र अंकित था—सुँघनी निकालकर

लेते हुए कहा, मैं तो इन मुलाक़ातों से बिल्कुल थक गई। .ख़ैर, मैं इनसे मिलकर और किसी से न मिलूँगी। यह क़ायदे क़ानून की बड़ी पाबन्द हैं। अच्छा, भीतर भेज दे।'

एक लम्बी चौड़ी गर्विणी सी स्त्री ने अपनी गोल मुँहवाली लड़की के साथ कमरे में प्रवेश किया। अब महिलाओं ने उल्लास-पूर्ण स्वर में कहना आरम्भ किया 'प्रिय काउण्टेस, तुमसे मिले कितना समय हो गया......। मुझे बड़ी .ख़ुशी हुई।' इसके बाद महिलाओं में उस ढंग का वार्तालाप आरम्भ हुआ जो कुछ देर तक जमता है। वार्तालाप कैथेरीन के समय के सम्पन्न और प्रसिद्ध छैल काउण्ट बैज़ूखोव और उनके हरामी लड़के पीरी के विषय में था। वह उस समय लोगों की एक प्रधान चर्चा बन गया था।

आगन्तुका ने कहा 'मुझे काउण्ट की दशा पर बड़ी दया आती है। उनका स्वास्थ्य आज कल इतना बिगड़ा हुआ है, और तिस पर अपने लड़के की चिन्ता से तो वह मरे जा रहे हैं!'

काउण्टेस ने पूछा 'क्यों, क्या बात है?' मानो उन्हें उसका कोई पता नहीं हो, यद्यपि उन्होंने काउण्ट बैज़ूखोव की परेशानी का कारण कम से कम पन्द्रह बार सुना होगा।

आगन्तुका ने कहा 'आजकल की शिक्षा का यही फल निकलता है। मालूम पड़ता है कि जब यह लड़का विदेश में था, तो उसे मनमानी करने का .खूब मौक़ा मिला था। पीटर्सबर्ग में आकर उसने ऐसे ऊधम मचाये कि उसे पुलिस को शहर से बाहर निकाल देना पड़ा।'

काउण्टेस बोली 'नहीं जी, ऐसा भी कहीं होता है ?'

अन्ना मिखायलोव्ना ने कहा 'उसे सङ्गति अच्छी नहीं मिली। कहते हैं कि उसने, प्रिंस वैसिली के एक लड़के ने और किसी डोलोखोव ने, ईश्वर जाने, क्या क्या उत्पात मचा डाले! और इसका उन्हें फल भी भोगना पड़ा। डोलोखोव को सिपाहियों में बदल दिया गया है और बैजूखोव के लड़के को मास्को वापस भेज दिया गया है। अनातोले के पिता ने अपने लड़के का मामला किसी न किसी तरह दब्बो दब्बो कर लिया; पर फिर भी उसे पीटर्सबर्ग से तो निकाल ही दिया गया।'

काउण्टेस ने पूछा 'फिर भी बात क्या थी ?'

आगन्तुका ने कहा 'वे तो--और विशेषकर डोलोखोव—छटे हुए आवारा लोग हैं। डोलोखोव मेरी इवानोव्ना डोलोखोव जैसी भलीमानस स्त्री का लड़का है; पर इन सबकी करतूतें सुनो तो कलेजा काँप जाता है! तीनों ने कहीं से एक रीछ पकड़ा, उसे गाड़ी में सवार कराया और सब किन्हीं नाचनेवालियों से मिलने भेंटने चल पड़े! पुलिसमैन ने रोकना चाहा; और तब इन सबने क्या उत्पात किया ?—पुलिसमैन की कमर रीछ की कमर से बाँध दी और रीछ को मोकिया नहर में छोड़ दिया। रीछ अपनी पीठ पर बँधे हुए पुलिसमैन के साथ नहर में छपाके लगाता फिरा!'

काउण्ट का चेहरा हँसते हँसते लाल हो गया। उन्होंने कहा 'आहा! उस हालत में पुलिसमैन भी कैसा भला जँचता होगा!'

'अजी, बड़ी भयानक बात है! काउण्ट, आपको इस बात पर न मालूम किस तरह हँसी आती है।'

पर स्वयं महिलाएँ भी अपनी हँसी न रोक सकीं।

काउण्टेस ने कहा 'साल ही भर हुआ, काउण्ट कैसे सुन्दर लगते थे! मैंने ऐसा सुन्दर आदमी दूसरा कोई नहीं देखा।'

अन्ना मिखायलोव्ना बोली 'अब वह बहुत बदल गये हैं। तो काउण्ट की जायदाद का उत्तराधिकारी अपनी स्त्री की ओर से प्रिंस वैसिली भी है। पर काउण्ट पीरी को बहुत प्यार करते हैं। उन्होंने उसे पढ़ाया लिखाया, उसके बारे में सम्राट् को पत्र लिखा; इसलिए अगर वह मर गये (और उनकी दशा इतनी नाजुक है कि किस समय उनके प्राण निकल जायँ, यह नहीं कहा जा सकता।) तो कहा नहीं जा सकता, कौन उत्तराधिकारी बनेगा, पीरी, या प्रिंस वैसिली। और, चालीस हज़ार रैयत और करोड़ों रूबल! भला कहीं ठीक है! मुझे सब बातों का राई-रत्ती पता है। मुझे प्रिंस वैसिली ने ही सब कुछ बता दिया था। इसके अलावा सिरिल वैजूखोव मेरी माँ के रिश्ते में चचेरे भाई भी लगते हैं। साथ ही वह मेरे बोरिस के धर्म पिता भी हैं।' आखिरी बात उसने इतनी लापरवाही के साथ कही माना उसका उसकी दृष्टि में कोई महत्त्व ही न हो।

इसके बाद कुछ देर तक निस्तब्धता रही। काउण्टेस ने अपने मुलाक़ातियों की ओर देखा—मुस्कराते हुए, पर साथ ही यह भाव भी छिपाने की चेष्टा न करते हुए कि अब अगर वे चली जायँ तो

उन्हें दुःख न होगा। आगन्तुका की कन्या ने अपनी पोशाक़ की सिल्वटें निकालना शुरू भी कर दिया था। इसी समय पास के कमरे से लड़कों और लड़कियों के दौड़कर आते हुए पैरों की आवाज़ सुनाई पड़ी। एक कुर्सी गिरी, और तेरह वर्ष की एक लड़की अपने मलमल के छोटे फ्राक में कोई चीज़ छिपाये दौड़ती हुई कमरे के बीच में आकर एकाएक रुक गई। यह साफ़ ज़ाहिर था कि उसने शुरू में यहाँ तक भागकर आने का इरादा नहीं किया था। उसके पीछे, दरवाज़े पर एक युवक सैनिक अफ़सर, एक विद्यार्थी, एक पन्द्रह वर्ष की लड़की और छोटी जाकट पहने एक मोटा-ताजा गुलाबी गालोंवाला लड़का—दिखाई पड़े।

काउण्ट कूदकर उठ खड़े हुए और इधर-उधर झूम-झामकर भागकर भीतर आनेवाली लड़की को अपने फैले हुए हाथों में लपेट-कर हँसते हुए बोले: "लो, यह आ गई! यही मेरी लाड़ली दुलारी लड़की है जिसका आज हम नामकरण दिन मना रहे हैं! मेरी बेटी!"

काउण्टेस ने बनावटी क्रोध के साथ कहा 'अजी, हरएक काम का भी समय होता है। तुम इस तरह इसे बिगाड़कर दम लोगे।'

आगन्तुका ने कहा 'कहो लल्ली, अच्छी तो हो। ईश्वर करे तुम हमेशा सुखी रहो।' इसके बाद उसने काउण्टेस की ओर मुड़कर कहा 'कैसी सुन्दर बच्ची है!'

यह काली आँखों और लम्बे मुँहवाली लड़की सुन्दर तो न थी, हाँ, सजीवता से अवश्य भरी हुई थी—उसके बच्चों जैसे लम्बे

पतले और नंगे कन्धे भागकर आने से साँस चढ़ जाने के कारण उछल रहे थे। वह इस समय उस अवस्था में थी जब कोई बालिका बच्ची नहीं रहती, यद्यपि बच्ची युवती स्त्री कहलाने की अधिकारिणी भी नहीं होती। अपने पिता से छुटकारा पाकर वह अपना रक्त-वर्ण मुखमण्डल अपनी माँ के चोग़े की लेस में छिपाने को दौड़ी। उसने उनके शुष्क शब्दों की ओर कुछ ध्यान न दिया और मुँह छिपाकर हँसने लगी। इस प्रकार हँसते-हँसते बीच-बीच में बोलने की कोशिश करते हुए उसने एक गुड़िया के बारे में—जिसे उसने अपने फ्राक में से निकाल मौजूद किया—कहना आरम्भ किया: 'माँ, देखो न!......यह गुड़िया......मिमी......!' बस, वह केवल इतना ही कह सकी (उसे सारी बातें कौतूहलप्रद लगती थीं)। वह अपनी माता के सहारे झुककर इतनी ज़ोर से लगातार हँसने लगी कि वह क़ायदे क़ानून की पाबन्द आगन्तुका भी हँसे बिना न रह सकी।

माँ ने बनावटी क्रोध के साथ उसे ढकेलते हुए कहा 'अच्छा, अब जा, यहाँ से भाग जा, और साथ ही अपने सिंदारे को भी ले जा।' इसके बाद उन्होंने आगन्तुका की ओर फिरकर कहा 'यह मेरी सबसे छोटी लड़की है।'

इस बीच में युवा समाज: बोरिस—सैनिक अफ़सर—अन्ना मिखायलोव्ना का पुत्र; निकोलस—अण्डर ग्रेजुएट और काउण्ट का ज्येष्ठ पुत्र; सोनिया—काउण्ट की पन्द्रह वर्ष की भतीजी; और नन्हा पीटिया—ये सब ड्रायंग रूम में आ पहुँचे थे और अपनी

स्फूर्ति और उल्लास को—जिससे उनके चेहरे प्रफुल्लित हो उठे थे—औचित्य की सीमा के भीतर रखने की कोशिश कर रहे थे।

अब काउण्ट ने आगन्तुका को मुखातिब करके और निकोलस की ओर देखते हुए कहा 'देखिए इसका दोस्त बोरिस अब अफ़सर हो गया है, इसलिए यह भी दोस्ती का हक़ निबाहने के लिए यूनिवर्सिटी और मुझ बूढ़े बाप को छोड़कर सेना में भर्ती हो रहा है। कहो, है न दोस्ती ?'

आगन्तुका ने कहा 'कहते हैं कि युद्ध की घोषणा हो गई है।'

काउण्ट ने कहा 'यह तो बहुत दिनों से कहा जा रहा है। और हमारे कानों में यही आवाज़ आती रहेगी, और इसी तरह सब कुछ ख़तम भी हो जायगा। पर दोस्ती भी तो कोई चीज़ होती ही है ! यह हुसार सेना में भर्ती हो रहा है।'

उक्त महिला को कुछ न सूझ पड़ा कि वह क्या कहे। अतः उसने केवल सिर हिलाया।

निकोलस ने उत्तेजित होकर इस लज्जाजनक दोषारोपण का निराकरण करते हुए कहा 'मैं क्या वहाँ सिर्फ़ दोस्ती के लिए जा रहा हूँ ?—ज़रा भी नहीं। मुझे यक़ीन है कि लड़ाई ही मेरा ठीक पेशा है।'

इतना कहकर उसने अपनी सोनिया और आगन्तुका की युवती कन्या की ओर देखा; दोनों के चेहरों पर प्रशंसा-सूचक मुस्कराहट थिरक रही थी।

३

वृद्ध काउण्ट बोले 'अच्छी बात है, अच्छी बात है! इसका ख़ून तो जोश से उबाल खा रहा है! इस बोनापार्ट ने इन सबके दिमाग़ फेर दिये हैं; ये लोग सोचते हैं कि देखो, वह एक मामूली से पताका-वाहक से किस तरह सम्राट् बन गया। अच्छी बात है, परमात्मा इनकी इच्छा पूरी करे!'

इस समय उन्होंने आगन्तुका की व्यङ्गपूर्ण मुस्कराहट नहीं देखी थी।

——

पाँचवाँ परिच्छेद

पीरी को वास्तव में पीटर्सबर्ग में अपने मन लायक़ काम तलाश करने का समय ही नहीं मिला और उसे पुलिस ने उसके असद् आचरण पर उसे मास्को को लाद दिया। रोस्टोव भवन में पीरी के बारे में जो कहानी सुनाई गई थीं, सो ठीक ही थी। पीरी ने एक पुलिसमैन को रीछ के साथ बाँधने में सचमुच सहायता की थी। उसे मास्को में आये हुए कई दिन हो गये थे और वह यथापूर्व अपने पिता के घर ही रह रहा था। यद्यपि वह जानता था कि यह कहानी मास्को में भी अवश्य जा पहुँची होगी और उसके पिता को घेरे रहनेवाली महिलाओं ने, जो पहले से ही उसके विरुद्ध रहती थीं, काउण्ट के कान भरने में कोई कोर कसर न रख छोड़ी होगी, तथापि वह मास्को में पहुँचते ही उस भवन के उसी हिस्से में पहुँचा जहाँ उसके पिता रहते थे। ड्राइङ्ग रूम में घुसने के बाद उसने प्रिंसेज़ों को—जिनमें से दो कशीदे पर बैठी हुई थीं और एक ज़ोर ज़ोर से किताब पढ़ रही थी—अभिवादन किया। जो किताब पढ़ रही थी वह सबसे बड़ी प्रिंसेज़ थी—शुष्क, नीरस, क़ायदे क़ानून की पाबन्द—लम्बा धड़, छोटी टाँगें—यही उसका आकार प्रकार था। कशीदा काढ़नेवाली लड़कियाँ एक जैसी सुन्दर और स्वस्थ थीं और दोनों में केवल इतना ही

भेद था कि एक के ऊपर के ओठ के बीच के सिरे पर एक मस्सा था जिससे उसकी सुन्दरता बढ़ गई थी। पीरी का स्वागत इस प्रकार किया गया मानो वह कोई लाश हो या कोई कोढ़ी हो। सबसे बड़ी प्रिंसेज़ अपना पढ़ना बन्द करके सशंकित नेत्रों से उसकी ओर ताकती रही। दूसरी ने भी ऐसा ही भाव धारण किया। तीसरी और सबसे छोटी—वही मस्सेवाली प्रिंसेज़—सजीव और उल्लसित स्वभाव की थी। वह कशीदे से अपना मुँह छिपाकर आनेवाले मनोरञ्जक दृश्य की बात सोचकर हँसने लगी। जब उससे हँसी रोके न रुकी तो उसने अपना सिर कशीदा काढ़ने के बहाने झुका लिया।

पीरी ने कहा 'कहो बहिन, कैसी हो? तुम तो पहचानती भी नहीं।'

'मैं तुम्हें ख़ूब पहचानती हूँ।'

'कहो, काउण्ट कैसे हैं? मैं उनसे मिल सकता हूँ न?' पीरी ने अपने स्वभावसिद्ध भद्दे ढङ्ग से—पर बिना लजाये—कहा।

'काउण्ट को बड़ा ही भौतिक और मानसिक कष्ट है, और तुमने उनका कष्ट बढ़ाने में कोई कोर-कसर नहीं रख छोड़ी है।'

'तो मैं उनसे मिल सकता हूँ न?' पीरी ने फिर पूछा।

'हूँ! जो तुम उन्हें मारना चाहो—इसी दम प्राण निकालना चाहो तो जाओ, मिलो। ओल्गा, देख तो सही, चाचा की चाय तैयार है या नहीं। समय हो गया है।' इस प्रकार उसने पीरी को जताया कि वे उसके पिता को आराम पहुँचाने की कोशिश

कर रही हैं और वह—उनका सपूत बेटा—उन्हें कष्ट पहुँचाने की फ़िक्र में लगा रहता है।'

ओल्गा बाहर चली गई। पीरी खड़ा हुआ अपनी बहिनों की ओर देखता रहा। इसके बाद उसने अभिवादन करके कहा, 'अच्छा, तो मैं अपने कमरे में जाता हूँ। मुझे कहला भेजना कि मैं उनसे कब मिल सकता हूँ।'

और इतना कहकर वह चला गया और साथ ही मस्सेवाली प्रिंसेज़ की धीमी, पर गूँजती हुई, हँसी सुनाई दी।

दूसरे दिन प्रिंस वैसिली भी आ गया और काउण्ट के ही घर टिका। उसने पीरी को अपने कमरे में बुलाया और समझाया 'भई, अगर तुमने यहाँ भी वही करना शुरू किया जो पीटर्सबर्ग में किया था, तो तुम्हें परेशानी उठानी पड़ेगी; यह मैं पहले से ही कहे रखता हूँ। काउण्ट सख़्त बीमार हैं, और तुम्हें उनसे ज़रा भी न मिलना चाहिए।'

इसके बाद पीरी बिल्कुल अकेला छोड़ दिया गया। वह दिन भर अपने कमरे में अकेला पड़ा रहता था।

एक दिन अन्ना मिखायलोव्ना का पुत्र बोरिस अपनी माँ के साथ काउण्ट से मिलने आया। माँ प्रिंस वैसिली के पास चली गई और बोरिस पीरी के पास आया।

वह जिस समय उसके कमरे के दरवाज़े पर पहुँचा तो वह कमरे में चहलक़दमी कर रहा था। वह कभी किसी कोने में जाकर रुक जाता, उसकी ओर धमकी की मुद्राएँ बनाता—मानो

किसी अदृश्य शत्रु के शरीर में तलवार घुसेड़ रहा हो—और कभी अपने चश्मे के ऊपर से बड़ी डरावनी शक्ल बनाकर झाँकता। इसके बाद वह फिर टहलना शुरू कर देता, अस्पष्ट वाक्यों का उच्चारण करता, कंधे हिलाता और हाथ फैलाता।

इसी समय पीरी ने अपने कमरे में एक सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट युवक सैनिक अफ़सर को घुसते देखा। पीरी रुका। जिस समय वह मास्को से गया था उस समय बोरिस चौदह वर्ष का था। पीरी उसे बिलकुल भूल गया था; पर उसने अपने स्वभावसिद्ध सहृदयता और सरलतापूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए बोरिस का हाथ पकड़ लिया।

बोरिस ने उल्लास के साथ मुस्कराते हुए कहा 'आप मुझे पहचानते हैं? मैं अपनी माँ के साथ काउण्ट से मिलने आया हूँ। सुना है, वह बहुत बीमार हैं।'

पीरी ने इस युवक को पहचानने की चेष्टा करते हुए कहा 'हाँ, मैं समझता हूँ, वह बीमार हैं।'

बोरिस समझ गया कि पीरी उसे पहचान नहीं सका। उसने उसे अपना परिचय देने की ज़रूरत भी नहीं समझी। उसने बिना कुछ संकोच के ठीक पीरी के मुँह की ओर देखा। इसके बाद उसने कुछ देर रुककर कहा 'काउण्ट रोस्टोव ने आपको आज खाने की दावत दी है।'

पीरी ने अब हर्ष के साथ कहा 'आह! काउण्ट रोस्टोव! तो तुम उनके इलिया हो? ज़रा देखो तो, मैं तुम्हें पहचान ही न

सका। तुम्हें याद है न, हम मेडम जैफर के साथ स्पैरोहिल्स में गये थे? कितने दिन हो गये हैं........।'

बोरिस ने दृढ़ और व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा 'आप भूल रहे हैं। मेरा नाम बोरिस है, मैं प्रिंसेज़ अन्ना मिखायलोव्ना द्रुबैट्स्काया का लड़का हूँ। रोस्टोव के पिता का नाम इलिया है, पुत्र का नाम नहीं। उसका नाम निकोलस है। मैं किसी मैडेम जैफर को नहीं जानता।'

पीरी ने अपना सिर और हाथ हिलाये, मानो उसे मच्छरों या शहद की मक्खियों ने काट खाया हो।

इसी समय एक अर्दली बोरिस को बुलाने आया। प्रिंसेज़ मिखायलोव्ना जा रही थी। पीरी ने बोरिस से मित्रता बढ़ाने के लिए दावत में शरीक होने का वचन दिया। उसका हाथ दबाकर उसकी ओर अपने चश्मे के ऊपर से सप्रेम देखने लगा। बोरिस के जाने पर पीरी फिर चहलक़दमी करने लगा। पर इस बार वह अपनी काल्पनिक तलवार से किसी काल्पनिक शत्रु की हत्या नहीं कर रहा था। इस दफ़ा वह इस प्रफुल्लित, चतुर और बेधड़क युवक की याद कर-करके मुस्करा रहा था।

छठा परिच्छेद

जिस समय रोस्टोव परिवार के नाचघर में नाच का छठा फेरा हो रहा था और बाजा बजानेवाले थककर बार-बार भूलें कर रहे थे, और नौकर-चाकर शाम के भोजन की तय्यारी में दौड़-धूप कर रहे थे, उसी समय पीरी के पिता काउण्ट बैजूखोव पर छठा दौरा पड़ा था। डाक्टरों ने बिल्कुल आशा छोड़ दी थी। मरणासन्न काउण्ट की मूक अपराध-स्वीकारोक्ति के बाद उनसे दान वग़ैरा कराया गया और सारे भवन में उस समय के अनुरूप चहल-पहल और उद्विग्नतापूर्ण प्रतीक्षा दिखाई देने लगी।

प्रिंस वैसिली नाचघर में अकेला एक कुर्सी पर टाँग पर टाँग रक्खे, जाँघों पर कुहनियाँ टेके, और अपने हाथों में मुँह छिपाये बैठ गया। इस प्रकार कुछ देर बैठने के बाद वह एकाएक उठ खड़ा हुआ और अपने चारों ओर सशंकित नेत्रों से देखता हुआ जल्दी जल्दी भवन के पीछे के हिस्से में सबसे बड़ी प्रिंसेज़ के कमरे की ओर जाने लगा। उसने प्रिंसेज़ के कमरे का द्वार खोला। कमरे में अँधेरा सा था। क्रासों के सामने दो छोटे से लेम्प जल रहे थे और सारे कमरे में से पुष्पों और धूप काफ़ूर की सुगंधि आ रही थी। कमरा अंगड़-खंगड़, अल्मारियों और नन्हीं मेज़ों स खचाखच भरा हुआ था। प्रिंस वैसिली के घुसते ही एक छोटा

सा कुत्ता भोंकने लगा। प्रिंसेज देखकर बोली 'अच्छा, भाई साहब तुम हो !'

उसने अपने बालों पर हाथ फेरा जो इतने चिकने थे मानो सिर ही के साथ जमे हुए हों और उन पर रोग़न किया हुआ हो। उसने पूछा 'कहो, कोई नई बात हुई क्या ? मुझे तो तरह तरह के सुपने दिखाई दे रहे हैं।'

'नहीं, वही बदस्तूर हाल है। केटेचे, मैं आज तुमसे काम की बात करने आया हूँ।' इतना कहकर वह प्रिंसेज़ की ख़ाली की हुई एक कुर्सी पर थका हुआ सा गिर पड़ा। उसने कहा 'तुमने कुर्सी को ख़ूब गरम कर दिया है। ख़ैर बैठ जाओ, हमें बड़े काम की बातचीत करनी है।'

प्रिंसेज़ ने शुष्क कठोर भाव के साथ कहा, 'मैंने तो समझा था कि कोई नई बात हो गई।' इतना कहकर वह प्रिंस के सामने की एक कुर्सी पर बैठ गई।

प्रिंस ने उसकी ओर से निगाह बचाये हुए कहा, 'केटेचे, तुम जानती ही हो कि तुम तीनों बहिनें और मेरी स्त्री—बस, काउण्ट के धन माल की यही उत्तराधिकारिणी हैं। मैं यह जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ कि ऐसे मौक़े पर इसका प्रसङ्ग छेड़ना तुम्हारे लिए कैसा कष्टदायक है। मेरे लिए भी यह कोई आसान काम नहीं है, पर अब मेरी साठी आ लगी है, और मुझे हर एक बात के लिए तैयार रहना चाहिए। तुम्हें मालूम है, मैंने पीरी

को बुलवा भेजा है ? काउण्ट ने उसकी तसवीर की ओर संकेत करके उसे देखने की इच्छा प्रकट की है।'

प्रिंस ने उसकी ओर प्रश्नात्मक नेत्रों से देखा, पर वह यह निश्चय न कर सका कि प्रिंसेज़ उसकी बात पर विचार कर रही है, या केवल उसकी ओर ताक ही रही है ।

प्रिंसेज़ बोली 'भाई साहब, मैं तो परमात्मा से केवल यही प्रार्थना करती रहती हूँ कि उनके प्राण शान्ति के साथ निकल जायँ ।'

प्रिंस वैसिली ने अपना चिकना माथा खुजलाते हुए कहा, 'हाँ, हाँ, यह बात तो ठीक है। पर, असली बात यह है कि... तुम खुद अच्छी तरह जानती हो कि...पिछले जाड़ों में काउण्ट ने एक वसीयतनामा बनाया था जिसमें उन्होंने अपनी सारी जायदाद पीरी को दे दी थी--हमें नहीं जो उनके असली वारिस हैं ।'

प्रिंसेज़ ने शान्तभाव से कहा 'वह अब तक न मालूम कितने वसीयतनामे बना चुके हैं ! पर वह पीरी को अपनी सारी जायदाद कैसे छोड़ सकते हैं ? वह तो अवैध लड़का है ।'

अकस्मात् प्रिंस वैसिली ने अधिक सजीव होकर और मेज़ को ज़ोर से पकड़कर जल्दी जल्दी बोलते हुए कहा 'पर उन्होंने सम्राट् को एक पत्र जो लिखा था जिसमें उन्होंने पीरी के क़ानूनी क़रार दिये जाने की प्रार्थना की थी ? काउंट ने सम्राट् की जितनी सेवाएँ की हैं, उन्हें देखते तो उनकी प्रार्थना का स्वीकृत हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।'

प्रिंसेज़ उस व्यक्ति की तरह मुस्कराई जो यह समझता हो कि जिससे वह बात कर रहा है उसकी अपेक्षा वह स्वयं उस विषय से अच्छी तरह परिचित है।

प्रिंस वैसिली ने उसका हाथ पकड़कर कहा 'मैं तो यहाँ तक बता सकता हूँ कि वह ख़त लिखा गया था, पर सम्राट् के पास भेजा नहीं गया, और सम्राट् को उसके बारे में मालूम हो गया। अब सवाल सिर्फ़ इतना ही बाक़ी है, क्या वह पत्र नष्ट कर दिया गया? अगर नहीं, तो जहाँ सब कुछ समाप्त हुआ'—यहाँ यह दिखाने के लिए कि 'सब कुछ समाप्त हुआ' से उसका क्या आशय है, उसने लम्बी साँस ली—'उसी दम वसीयत सम्राट् के हाथों में पहुँचा दी जायगी और प्रार्थनापत्र के स्वीकार होने में फिर देर न लगेगी। पीरी क़ानूनी वारिस क़रार दिया जायगा, और फिर उसी को सब कुछ मिलेगा।'

'मैं यह तो जानती हूँ कि वसीयतनामा बनाया गया था, पर साथ ही यह भी जानती हूँ कि वह अवैध है। भाई साहब, तुमने क्या मुझे पूरी अल्हड़ नादान ही समझ लिया?' यह बात प्रिंसेज़ ने इस लहज़े से कही जिसका उपयोग स्त्रियाँ उस समय करती हैं जब वे समझती हैं कि वे कोई पते की, और चुभनेवाली बात कर रही हैं।

'मैं यह बात दसवीं बार फिर कहता हूँ कि अगर सम्राट् के नाम पत्र और पीरी के नाम वसीयतनामा काउण्ट के काग़ज़-पत्रों में हुए तो मुन्नी, तुम और तुम्हारी बहिनें वारिस बनने से रहीं!

अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो, तो एक सुविज्ञ पुरुष की बात पर विश्वास करो। मैं अभी अभी डिमिट्री ओनफ्रिच (पारिवारिक सालिसिटर) से सब बातचीत कर रहा था, और उसकी भी यही राय है।'

इस पर प्रिंसेज़ के विचारों में स्पष्टतया परिवर्तन होना आरम्भ हो गया। उसके पतले ओठ सफ़ेद पड़ गये, और जब वह बोलने लगी तो उसकी आवाज़ इतनी भर्राई हुई और तीव्र हो गई कि स्वयं उसे भी सुनकर आश्चर्य हुआ।

उसने कहा 'वाह वाह! कैसी बढ़िया बात है! मुझे पहले भी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं थी, और अब भी मैं कुछ नहीं चाहती!'

उसने कुत्ते को अपनी गोद में से फेंक दिया और अपनी पोशाक को चिकना किया। वह तीव्र स्वर से चिल्लाकर बोली, 'उपकारों का यही बदला है!—यह उनकी सेवाओं का पुरस्कार है जिन्होंने उनके लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया! वाह! वाह! कैसी सुन्दर बात है! क्या कहने हैं! प्रिंस, मुझे किसी बात की दरकार नहीं है।'

प्रिंस वैसिली ने कहा 'पर सिर्फ़ तुम्हीं अकेली तो नहीं हो। तुम्हारी बहिनें भी तो हैं...।'

पर प्रिंसेज़ ने उसकी बात न सुनी। वह उठकर जाना चाहती थी, पर प्रिंस ने उसे हाथ पकड़कर रोक लिया। उस समय प्रिंसेज़ की मुद्रा ऐसी हो रही थी मानों सारी मानव जाति के

प्रति उसकी आँखों से मोहावरण एकाएक हट गया हो। उसने प्रिंस की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा।

'शान्त होओ! मैं जानता हूँ तुम्हारा मन कितना साफ़ है।'

'नहीं, मेरा मन बड़ा कठोर है।'

प्रिंस ने फिर कहा, 'नहीं, मैं तुम्हारे मन को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं तुम्हारी मित्रता का मूल्य समझता हूँ और चाहता हूँ कि तुम भी मेरे बारे में ऐसी ही सम्मति रक्खो। इस तरह चीख़ने चिल्लाने से काम नहीं चलेगा। आओ, बैठकर अक़्ल की बातें करें। तुम जानती ही हो कि मेरी एकमात्र इच्छा यह है कि मैं बुद्धि-विवेक के साथ उनकी सारी अभिलाषाओं को पूरा करूँ; इसी लिए मैं यहाँ आया हूँ। मैं सिर्फ़ तुम्हारी और उनकी सहायता करने आया हूँ।'

प्रिंसेज़ ने चिल्लाकर कहा 'बस, अब समझ में आ गया, यह आग किसकी लगाई हुई है।'

'पर इस बात से हमें क्या मतलब ?'

'यह वही तुम्हारी सुन्दर प्रिंसेज़ मिखायलोव्ना है—वही अन्ना मिखायलोव्ना है जिसके हाथ का मैं छुआ पानी तक न पीऊँ!—बदज़ात कमीनी औरत!'

'हमें बेकार की बातों में समय नहीं खोना चाहिए।'

'आह, मेरे सामने उसका नाम मत लो' (यद्यपि प्रिंस ने अभी तक उसका नाम नहीं लिया था) 'पिछले जाड़ों में वह यहाँ आ घुसी और काउण्ट से उसने हमारे सम्बन्ध में ऐसी ऐसी

गन्दी और गर्हित बातें सुनाईं कि मैं उन्हें तुम्हारे सामने दुहरा तक नहीं सकती! काउण्ट का मन हमारी ओर से इतना फिर गया कि उन्होंने एक पखवारे तक हमारी सूरत तक नहीं देखी। मैं जानती हूँ उसी समय यह भद्दा, कुत्सित वसीयतनामा लिखा गया था, पर मैं इसी भरोसे पर बैठी थी कि पीरी अवैध है।'

'खैर, अब तो पता लग गया—तुमने मुझसे उसके बारे में पहले ही क्यों नहीं कह दिया?'

'वह वसीयतनामा तसवीरोंवाले पोर्ट फालियो में है जिसे वह अपने तकिये के नीचे रखते हैं। अब पता चला! हाँ, अगर मुझसे कोई बुराई है, अगर मैंने कोई पाप किया है, तो वह यह है कि मैं उस बुरी स्त्री से घृणा करती हूँ' प्रिंसेज़ ने चीखकर कहा। 'और वह यहाँ आ आकर घुसती ही क्यों है? खैर, समय आने दो, मैं उसे कुछ शिक्षा दूँगी!'

इसी समय पीरी और अन्ना मिखायलोव्ना आ पहुँचे। अन्ना मिखायलोव्ना ने एक सेवक से पूछा 'प्रिंसेज़ों के कमरों की ओर को यही रास्ता जाता है न?'

एक अर्दली ने ऊँची आवाज़ में कहा 'हाँ, महोदया, बाएँ हाथ को।'

जब दोनों सीढ़ियों के सिरे पर जा पहुँचे तो पीरी ने पूछा, 'काउण्ट ने अभी तक मुझे तो याद नहीं किया न? तो मैं अपने कमरे में जाऊँ?'

अन्ना मिखायलोव्ना रुकी और उसके ऊपर तक पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगी। जब वह ऊपर जा पहुँचा तो अन्ना मिखायलोव्ना ने कहा 'मुझे तुमसे कम कष्ट नहीं होता है, पर धीरज रखने से काम चलेगा !'

पीरी की समझ में खाक न आया; पर यह धारणा उसके भीतर और भी दृढ़तर हो गई कि यह सब कुछ अतीव आवश्यक है, इसलिए वह अन्ना मिखायलोव्ना का चुपचाप अनुकरण करने लगा।

बाएँ हाथ का पहला दरवाज़ा प्रिंसेज़ों के कमरों की ओर ले जाता था, और दासी उनमें से एक दरवाज़ा जल्दी में बन्द करना भूल गई थी (उस समय वहाँ सभी काम जल्दी में हो रहे थे)। अन्ना मिखायलोव्ना ने उस कमरे में किसी दैवी प्रेरणा से झाँककर देखा कि प्रिंस वैसिली बड़ी प्रिंसेज़ के साथ वार्तालाप में संलग्न है। इन दोनों—पीरी और अन्नामिखायलोव्ना—को जाते हुए देखकर प्रिंस वैसिली असन्तोषजनक भाव के साथ कुर्सी पर लुढ़क गया और प्रिंसेज़ ने बड़े क्षोभ के साथ कूदकर अपनी पूरी ताक़त के साथ द्वार बन्द कर दिया।

प्रिंसेज़ की यह फुर्ती उसके स्वाभाविक संयम शांति के इतनी प्रतिकूल थी, और प्रिंस वैसिली के चेहरे पर अङ्कित भीति उसकी रोबदार मुद्रा के लिए इतनी भद्दी दिखाई देती थी, कि एकाएक पीरी रुक गया और अपने चश्मों के ऊपर से झाँककर अन्ना की ओर प्रश्नात्मक नेत्रों से देखने लगा। अन्ना मिखायलोव्ना ने किसी

प्रकार का आश्चर्य प्रकट नहीं किया, वह सिर्फ़ हल्की मुस्कराहट के साथ मुस्कराई और एक साँस लेकर चुप हो रही, मानो उसने कहा हो कि, ऐसी दशा में इसके अतिरिक्त और किस बात की आशा की जा सकती है? बोली 'बेटे, धीरज रक्खो। मैं भर-सक तुम्हारी बुराई न होने दूँगी।'

पीरी कुछ न समझ सका कि यह सारा व्यापार क्या हो रहा है; और न उसकी समझ में यही आ सका कि 'बुराई न होने दूँगी' का क्या मतलब है; पर उसने यह तय अवश्य किया कि यह सब कुछ अनिवार्य है।

प्रिंसेज़ अन्ना मिखायलोव्ना ने एक पादरी से कहा 'ईश्वर का धन्यवाद है, आप समय पर आ पहुँचे। हम सारे घरवाले बड़ी चिन्ता में थे। यह युवक...काउएट का पुत्र है,' उसने पहले से भी अधिक विनीत स्वर में कहा। 'कैसा दुःखदायक अवसर है!'

दो मिनट बीतते न बीतते प्रिंस वैसिली सिर उठाये रोबदाब के साथ कमरे में दाखिल हुआ। बोला 'भई, हिम्मत बाँधो, हिम्मत बाँधो! उन्होंने तुम्हें देखने को बुलाया है। अच्छा ही हुआ!' और इतना कहकर उसने जाने के लिए पीठ फेरी।

पीरी ने 'वह कैसे हैं?' यह पूछना आवश्यक समझा, पर वह बीच ही में रुक गया। वह यह निश्चय न कर सका कि उस मरणासन्न व्यक्ति को काउएट कहना ठीक होगा या नहीं, और साथ ही उसे काउएट को 'पिता' के नाम से पुकारने में भी लज्जा लगी।

'अभी आधा घण्टा हुआ उन पर एक और दौरा गिरा है। धीरज रक्खो।'

कुछ देर बाद प्रिंसेज़ अन्ना मिखायलोव्ना दरवाज़े में से निकलकर शीघ्रता के साथ पीरी के पास पहुँची और उसे धीरे से छूकर बोली :

'उसकी इच्छा के आगे किसी का इजारा नहीं चलता! अन्तिम संस्कार होनेवाला है। आओ।'

पीरी कालीन पर पैर रखता हुआ दरवाज़े की ओर गया।

——

सातवाँ परिच्छेद

पिता पुत्र की भेंट समाप्त होने के बाद पीरी बाहर निकला।

मुलाक़ाती कमरे में प्रिंस वैसिली और बड़ी प्रिंसेज़ के सिवाय और कोई न था। ज्योंही उन्होंने पीरी और उसकी साथिन को आते देखा, दोनों चुप हो गये, और पीरी को ऐसा जान पड़ा कि उन्हें देखकर प्रिंसेज़ ने कोई चीज़ छिपाई है। प्रिंसेज़ ने वह चीज़ छिपाते हुए धीरे से कहा था 'मैं इस स्त्री की शक्ल तक नहीं देखना चाहती।'

प्रिंस वैसिली ने अन्ना मिखायलोव्ना से कहा 'केटेचे ने छोटे ड्राइङ्ग रूम में चाय का बन्दोबस्त करा दिया है। जाओ, अन्ना मिखायलोव्ना, कुछ खा पी लो। ऐसे तो तुम कमज़ोर हो जाओगी।'

उसने पीरी से कुछ नहीं कहा। सिर्फ़ उसके हाथ को सहानुभूति सहित दबाया। पीरी अन्ना मिखायलोव्ना के साथ ड्राइङ्ग रूम की ओर चला गया।

पीरी इच्छा रहते भी कुछ न खा सका। उसने अपनी साथिन की ओर प्रश्नात्मक नेत्रों से देखा और उसे मुलाक़ाती कमरे की ओर—जहाँ प्रिंस वैसिली और प्रिंसेज़ बातें कर रहे थे—अँगूठों के बल जाते हुए पाया। पीरी ने नतीजा निकाला कि यह भी

कोई अनिवार्य कार्य है, और वह भी कुछ देर बाद उसी ओर को चल पड़ा। अन्ना मिखायलोव्ना बड़ी प्रिंसेज़ के पास खड़ी थी और वे जोश के साथ धीरे धीरे वार्तालाप कर रहे थे।

प्रिंसेज़ कह रही थी (और उसो जोश के लहजे में जिसमें वह दरवाज़ा बन्द करने से पहले बातचीत कर रही थी) 'प्रिंसेज़, मुझे अच्छी तरह मालूम है कि कौन सी बात आवश्यक है और कौन सी अनावश्यक।'

अन्ना मिखायलोव्ना ने उसे रोगी के कमरे की ओर जाने से—सहज भाव से पर दृढ़ता के साथ—रोकते हुए कहा 'पर मेरी प्यारी प्रिंसेज़, इस समय चाचा को आराम पहुँचाना चाहिए या इस तरह कष्ट देना? ऐसे अवसर पर संसार की बातें करना...।'

प्रिंस वैसिली एक आरामकुर्सी पर अपने स्वाभाविक सहज ढङ्ग से एक टाँग पर दूसरी टाँग रक्खे बैठा हुआ था। उसके गाल ज़ोर-ज़ोर से फड़क रहे थे; पर उसने ऐसी मुद्रा बना ली थी मानों दोनों महिलाओं के वार्तालाप से उसका कोई सम्पर्क न हो। उसने कहा 'प्रिय अन्ना मिखायलोव्ना, जाने दो, केटेचे जो चाहती है सो करने दो। तुम तो जानती ही हो कांउएट इसे कितना प्यार करते हैं।'

प्रिंसेज़ ने काग़ज़ों के पुलिन्दे की ओर संकेत करते हुए प्रिंस वैसिली से कहा 'मैं तो यह भी नहीं जानती कि इसमें कौन सा काग़ज़ है। मैं तो इतना ही जानती हूँ कि उनका असली वसीयतनामा उनकी डेस्क में है और इसमें जो काग़ज़ है उसे वह... ।'

इतना कहकर उसने निकल जाना चाहा, पर अन्ना मिखाय-लोव्ना ने कूदकर फिर रास्ता छेक लिया।

उसने पुलिन्दे को इतनी दृढ़ता से पकड़ लिया कि यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह उसे सहज में छोड़नेवाली नहीं है। उसने कहा 'प्रिय प्रिंसेज़, यह तो मैं जानती हूँ, पर दुलारी, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, उनकी हालत पर तरस खाओ। मैं तुम्हारी ठोढी में हाथ डालती हूँ।'

प्रिंसेज़ ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। केवल पुलिन्दे की छीना-झपटी की आवाज़ ही सुनाई पड़ी; पर यह स्पष्ट था कि यदि प्रिंसेज़ बोलेगी तो वे शब्द अन्ना मिखायलोव्ना के कानों को अधिक मीठे न लगेंगे। यद्यपि अन्ना मिखायलोव्ना पुलिन्दे से उसी तरह चिपटी हुई थी, पर उसकी आवाज़ में मृदुलता-पूर्ण दृढ़ता और नम्रता वैसी ही बनी हुई थी। उसने पीरी को देखकर कहा—

'पीरी, बेटे, यहाँ आओ। शायद इस घरेलू मामले में इससे सलाह लेना कुछ बुरा न होगा। है न प्रिंस ?'

अकस्मात् प्रिंसेज़ ने चिल्लाकर कहा (और इतने ज़ोर से कि ड्राइङ्ग रूम तक के लोग चौंक पड़े) 'भाई साहब, आप क्यों नहीं बोलते ? आप गूँगों का गुड़ खाये क्यों चुपचाप बैठे हैं जब यह इस तरह यहाँ बिना मतलब—एक मरनहार आदमी के दरवाजे पर—टाँग अड़ाती फिरती है ? चालबाज़ कहीं की !' उसने दाँतों में से कहा और पुलिन्दे पर अपना सारा ज़ोर लगा दिया।

पर अन्ना मिखायलोव्ना पुलिन्दे पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए दो-एक क़दम और आगे बढ़ आई। उसने पकड़ बदल ली।

प्रिंस वैसिली उठा और भर्त्सनापूर्ण स्वर में बोला, 'देखो, कैसी भद्दी बात है! छोड़ दो, मेरे कहने से।'

प्रिंसेज़ ने छोड़ दिया।

'और तुम भी!'

पर अन्ना मिखायलोव्ना ने उसकी आज्ञा नहीं मानी।

'मैं कहता हूँ, छोड़ दो! इसकी ज़िम्मेवारी मैं लेता हूँ। मैं ख़ुद जाकर उनसे पूछूँगा! बोलो, अब तो राज़ी हो?'

अन्ना मिखायलोव्ना बोली, 'पर देखो तो सही प्रिंस, अभी वह लेटे हैं, उन्हें इस समय छेड़ना क्या अच्छा होगा? पीरी, यहाँ आओ, बताओ तुम्हारी क्या राय है' उसने पीरी की ओर—जो अब उसके बिल्कुल पास आ गया था और प्रिंसेज़ के रोषपूर्ण चेहरे और प्रिंस वैसिली के फड़कते हुए गालों को आश्चर्य के साथ देख रहा था—मुड़कर कहा।

प्रिंस वैसिली ने कठोर शब्दों में कहा 'याद रखना, इसका नतीजा अच्छा न होगा। तुम्हें यह भी ख़याल नहीं है कि तुम क्या कर रही हो।'

प्रिंसेज़ ने चिल्लाकर कहा 'छिनाल कहीं की!' और एकाएक झपटकर उसने अन्ना मिखायलोव्ना के हाथ से पुलिन्दा छीन लिया।

प्रिंस वैसिली ने अपना सिर झुकाया और हाथ फैला दिये।

इसी समय वह भयङ्कर द्वार, जिसकी ओर पीरी ने थोड़ी देर पहले इतनी उत्सुकता के साथ देखा था और जो हमेशा धीरे से खोला जाता था, धड़ाके के साथ चौपट खोल दिया गया और मँझली बहिन अपने हाथ उमेठे हुए बाहर निकल आई।

उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'तुम सब क्या कर रहे हो! उनका दम निकल रहा है और तुम सब मुझे उनके पास अकेली छोड़ आये हो।'

बड़ी बहिन ने पुलिन्दा डाल दिया और अन्ना मिखाय-लोव्ना जल्दी से उस झगड़े की जड़ को उठाकर उस कमरे की ओर झपटी। बड़ी बहिन और प्रिंस वैसिली भी संयत होकर उसके पीछे-पीछे चले गये। एक मिनट बाद बड़ी बहिन अपना निचला ओठ चबाती हुई रूमाल से आँखें ढके बाहर निकली। पीरी को देखते ही उसके चेहरे पर अदम्य घृणा के भाव उदित हो गये। वह बोली 'हाँ, अब ख़ूब ख़ुशी मनाओ, तुम्हारे मनचीते कारज हो गये।'

और इतना कहकर वह फफक-फफककर रोती हुई शीघ्रता से कमरे में से निकल गई। उसके बाद प्रिंस वैसिली आया, और जिस सोफ़ा पर पीरी बैठा हुआ था, उस पर—अपना मुँह हाथों से छिपाये—गिर पड़ा। पीरी ने देखा कि उसका रङ्ग पीला पड़ गया है और उसका नीचे का जबड़ा काँप रहा है, जिस तरह बुख़ार में काँपता है।

उसने पीरी की कुहनी पकड़ी और कहा 'आह! भाई, हम इस चन्दरोज़ा ज़िन्दगी के लिए कितने पाप करते हैं, कितने छल करते हैं! मेरी भी साठी आ लगी है...मैं...एक दिन सबको मरना है। मौत भी कैसी भयानक वस्तु है!' और इतना कहकर वह ज़ार-ज़ार रोने लगा।

सबके अन्त में अन्ना मिखायलोव्ना आई और बिना किसी तरह की आहट किये पीरी के पास पहुँची।

उसने कहा 'पीरी!'।

पीरी ने उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। उसने उसके माथे का चुम्बन लिया और उसे अपने आँसुओं से भिगो दिया। फिर उसने कुछ देर बाद कहा :

'वह इस लोक में अब नहीं हैं...।'

पीरी ने उसकी ओर अपने चश्मे के ऊपर से देखा। अन्ना मिखायलोव्ना बोली :

'आओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। आँसुओं से जी का बोझ हल्का हो जाता है।'

इतना कहकर वह उसे अँधेरे ड्राइङ्ग रूम में ले गई, और पीरी को यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि उसका चेहरा अब कोई नहीं देख सकता। अन्ना मिखायलोव्ना उसे वहीं छोड़कर चली गई और जब वापस लौटी तो वह अपने हाथ पर सिर रक्खे खर्राटे भर रहा था।

दूसरे दिन सुबह को अन्ना मिखायलोव्ना ने पीरी से कहा : –

'मेरे बेटे, हम सबको काउण्ट की मृत्यु से बड़ा धक्का पहुँचा है, तुम्हारे तो वह बाप ही थे। ईश्वर तुम्हें धीरज देगा। मुझे आशा है तुम अब एक अतुल सम्पत्ति के अधिकारी बनोगे। तुम अभी बच्चे ही हो। अभी वसीयतनामा खोला नहीं गया है। मैं यह जानती हूँ कि इससे तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हो जायगी; पर इस धन के साथ ही तुम्हारे ऊपर एक बड़ी भारी ज़िम्मेवारी आ गई है। तुम्हें हिम्मत से काम लेना चाहिए।'

पीरी चुप था।

'शायद फिर कभी मैं तुम्हें बताऊँगी कि मैं वहाँ न होती तो पता नहीं क्या अर्थ का अनर्थ हो जाता! तुम्हें मालूम ही है कि कल चाचा ने मुझे वचन दिया था कि वह बोरिस का ध्यान रक्खेंगे। पर अब क्या होता है! बेटे, तुम अपने पिता की इस अभिलाषा को पूरा करोगे न?'

पीरी की समझ में कुछ नहीं आया।

आठवाँ परिच्छेद

युवक प्रिंस एण्ड्र्यू और उसकी स्त्री के आने की वाल्ड हिल्ज़ में रोज़ प्रतीक्षा की जा रही थी। पर इस प्रतीक्षा से वृद्ध प्रिंस निकोलस एण्ड्रीविच बोल्कोंसकी के घरेलू दैनिक जीवन में किसी तरह का अन्तर नहीं पड़ा था। जनरल-इन-चीफ़ प्रिंस निकोलस एण्ड्रीविच सोसायटी में प्रूशिया के बादशाह के नाम से प्रसिद्ध थे। जब से सम्राट् पॉल ने उन्हें निर्वासित कर दिया था, वह बराबर अपनी देहाती ज़मींदारी में रहते थे। उनके साथ उनकी पुत्री प्रिंसेज़ मेरी और उसकी साथिन मेडेम बोरिन रहती थीं। यद्यपि नवीन शासन-प्रबन्ध में उन्हें मास्को या पीटर्सबर्ग वापस लौट जाने में कोई रोक-टोक न थी, पर वह बराबर देहात ही में रहना पसन्द करते थे, और कहते थे कि जिस किसी को उनसे मिलना होगा वह मास्को से सौ मील दूर चलकर भी आ सकता है। स्वयं उन्हें किसी से कोई प्रयोजन नहीं है। वह कहते थे कि मानव-जीवन में दुर्वासनाओं के उत्पन्न होने के दो कारण हैं: अकर्मण्यता और अंधविश्वास; और उदात्त जीवन बनने के भी दो ही कारण हैं; कार्य्यशीलता और विवेक-बुद्धि। वह अपनी कन्या की शिक्षा की देख-रेख स्वयं करते थे, और उसमें इन दो प्रधान गुणों का समावेश कराने के लिए वह उसकी बीस वर्ष की

आयु तक उसे रेखागणित और बीजगणित सिखाते रहे थे। उन्होंने उसके जीवन को इस प्रकार संलग्न कर दिया था कि उसका सारा समय घिरा रहता था। वह ख़ुद भी ख़ाली नहीं रहते थे। वह आत्मचरित लिखते, गणित के प्रश्न हल करते, बाग़ में माली का काम करते या बनते हुए मकानों की देख-भाल करते। कार्य्य-शीलता के लिए सुव्यवस्था एक ख़ास चीज़ है, इसलिए इनके घर में सुव्यवस्था का बड़ी कड़ाई के साथ पालन किया जाता था। वह भोजन करने ठीक उसी समय और उसी मिनट पर बैठते। जो उनके आस-पास के लोग थे—उनकी पुत्री से लेकर उनके असा-मियों तक—उनके साथ प्रिंस तीव्रता और बेहद एकरूपता से पेश आते। इसके कारण सबके दिलों में उनकी ओर से ऐसा आतङ्क बैठा हुआ था जैसा कोई कठोरहृदय पुरुष भी उत्पन्न न कर सकता। और तिस पर तारीफ़ की बात यह थी कि प्रिंस कठोरहृदय नहीं थे। यद्यपि अब प्रिंस रिटायर हो चुके थे, और राजकार्य्य में अब उनका कोई प्रभाव नहीं रहा था, पर जब कभी उनकी जायदादवाले प्रान्त में कोई नया गवर्नर नियुक्त होता, वह उनसे मुलाक़ात करना अपना कर्त्तव्य समझता, और उनके सुवि-शाल मुलाक़ाती कमरे में बैठकर प्रिंस के ठीक समय पर बाहर निकलने की उसी प्रकार प्रतीक्षा करता जिस प्रकार राज मज़दूरों का नायक, माली या प्रिंसेज़ मेरी करते थे। जिस समय उनकी अध्ययनशाला का ऊँचा द्वार खुलता और उसमें से एक छोटे क़द का वृद्ध पुरुष—बालों में पाउडर लगाये—बाहर निकलता तो हर एक

के हृदय में आदर और आतङ्क का बलात् उद्रेक हो उठता। प्रिंस के हाथ छोटे-छोटे थे और घनी भवें अब भूरी पड़ गई थीं। उनके भवों के चढ़ाने पर उनकी चमकती हुई तेज़ आँखें ढक सी जाती थीं।

जिस दिन युवा दम्पति आई उसके सुबह को नियत समय पर प्रिंसेज़ मेरी यथास्वभाव अपने पिता को अभिवादन करने के लिए मुलाक़ाती कमरे में घुसी और क्रास का चिह्न बताती हुई कम्पित हृदय से अपनी मूक प्रार्थना दुहराने लगी। वह रोज़ सुबह को इसी प्रकार आती और रोज़ सुबह को प्रार्थना करती कि आज की भेट सही सलामती से गुज़र जाय।

एक वृद्ध नौकर ने कमरे में से उठकर शान्त भाव से धीमे स्वर में कहा :—'अन्दर जाइए।'

प्रिंस की अध्ययनशाला में चारों ओर वही चीज़ें दिखाई पड़ती थीं जिनका वह प्रतिदिन व्यवहार करते थे। एक बड़ी सी मेज़ पर किताबें और नक़शे रक्खे हुए थे, शीशे की पुस्तक की अल्मारियों के तालों में तालियाँ अड़ी हुई थीं, एक पूरे क़द का डेस्क रक्खा हुआ था जिस पर एक कापी खुली रक्खी थी, और एक मशीन और कुछ औज़ार चारों ओर फैले हुए थे—इन सब बातों से प्रयोगकर्त्ता की अनवरत, विभिन्न और सुव्यवस्थित कार्य्यशीलता प्रकट होती थी। जिस समय प्रिंसेज़ ने कमरे का दरवाज़ा धीरे से खोला, उस समय वह मशीन घुमा रहे थे। प्रिंसेज़ को देखकर उन्होंने मशीन को दो-एक बार और घुमाया और फिर मेज़ के पास पहुँचकर लड़की को अपने पास बुलाया। वह अपने बच्चों

को कभी आशीर्वाद नहीं देते थे, इसलिए उन्होंने अपना एक गाल उसके आगे कर दिया (उन्होंने अभी हजामत नहीं बनाई थी), और उसकी ओर स्नेह के साथ ध्यानपूर्वक देखने के बाद कठोर स्वर में कहा :

'भली चङ्गी ? ठीक ! बैठ जाओ ।' उन्होंने कापी उठाई जिसमें उन्होंने रेखागणित के कुछ प्रश्न अपने हाथ से लिखे थे, और अपने पैर से कुर्सी खींचकर अपने नाखूनों से एक-एक पैरा अङ्कित करते हुए पृष्ठ खोजते खोजते कहा 'कल के लिए !'

प्रिंसेज़ ने मेज़ पर कापी रखकर उस पर ध्यान लगाया।

अकस्मात् प्रिंस बोले 'रुको, तुम्हारा एक ख़त आया है।' और इतना कहकर उन्होंने मेज़ पर से लटकते हुए एक बेग में से एक पत्र निकाला जो किसी स्त्री का लिखा मालूम होता था।

प्रिंस ने शुष्क मुस्कराहट के साथ पूछा 'हैलोइस के पास से आया है न ?' उनके दाँत अब भी वैसे ही दृढ़ और मज़बूत थे।

प्रिंसेज़ ने भीत दृष्टि और भीत मुस्कराहट के साथ कहा 'जी हाँ, जूली का है।'

प्रिंस कठोर स्वर में बोले 'मैं दो ख़त और दे दूँगा, पर तीसरा पढ़कर देखूँगा। मुझे शक है तुम कहीं इधर-उधर की बातें न लिखती होओ। बस, मैं तीसरा पढ़ूँगा।'

प्रिंसेज़ ने और भी लजाकर पत्र आगे करते हुए कहा 'पिताजी, आप इसी को पढ़कर देख लीजिए।'

प्रिंस अचानक चिल्ला उठे 'मैंने कहा है, तीसरा!' और इतना कहकर उन्होंने उसके पत्रवाले हाथ को पीछे हटा दिया और मेज़ पर अपनी कुहनियाँ टेक कर उन्होंने अपनी ओर अभ्यास की कापी खिसकाई।

उन्होंने प्रिंसेज़ की कुर्सी के पीछे हाथ रखकर और उसके सिर के पास अपना सिर ले जाकर किताब की ओर झुकते हुए कहा 'देखो महोदया।' प्रिंसेज़ इस समय ऐसी अनुभूति कर रही थी कि वह चारों ओर से आती हुई वृद्धावस्था और तम्बाकू की गन्ध से घिरी हुई है।

'तो महोदया, ये त्रिकोण सम हैं; कृपा करके देखो कि यह अ ब स वाला त्रिकोण········।'

प्रिंसेज़ ने अपने सिर के पास चमकती हुई अपने पिता की आँखों की ओर हताश भाव से देखा; उसके चेहरे पर सुर्खी बार-बार आती और ग़ायब हो जाती, और यह साफ़ ज़ाहिर था कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, चाहे वह कितनी ही सफ़ाई के साथ समझने की कोशिश करे। चाहे यह उस्ताद का क़सूर हो, चाहे शागिर्द का, पर ऐसा रोज़ होता था। प्रिंसेज़ के नेत्र धुँधले पड़ गये और न वह कुछ सुन सकी न देख सकी; बस उसे एक बात याद रही, वह यह कि उसके कठोर पिता का झुर्री पड़ा हुआ मुँह उसके मुँह के बिलकुल पास है; और उसे केवल एक बात की फ़िक्र थी, वह यह कि वह किसी तरह उसके मुँह के वहाँ से अपने कमरे में खिसक जाय जहाँ वह सवाल शान्ति के साथ निकाल

सके। वृद्ध सज्जन को बड़ी उद्विग्नता थी। वह कभी अपनी कुर्सी धड़ाके के साथ आगे करते, कभी पीछे, वह कोशिश करते कि जोश में न आयें। पर हमेशा जोश में आ जाते। वह अपनी कापी को बुरा-भला कहते और कभी-कभी इधर-उधर फेंक देते।

प्रिंसेज़ ने एक सवाल का ग़लत जवाब दिया।

प्रिंस ने एकाएक किताब को दूर खिसकाकर और मुँह फेरकर ज़ोर से कहा 'कैसी बेवक़ूफ़ लड़की से पाला पड़ा है!' पर उसी समय उठकर वह कमरे में चहलक़दमी करने लगे, और फिर अपनी लड़की के बालों को धीरे से छूकर कुर्सी पर बैठ गये। वह कुर्सी सरकाकर समझाने लगे।

जब प्रिंसेज़ दूसरे दिन का सबक़ लेकर किताब बन्द करके जाने लगी तो प्रिंस बोले 'प्रिंसेज़, ऐसे काम नहीं चलेगा, ऐसे काम नहीं चलेगा। गणित बड़ी ज़रूरी चीज़ है! मैं तुम्हें इन मूर्ख महिलाओं जैसी कभी न बनने दूँगा। जी लगाओ तो तुम्हें इसमें सुख आने लगेगा।' और इतना कहकर उन्होंने उसके गाल थपथपाये। 'फिर ये सारी बेकार बातें तुम्हारे दिमाग़ से निकल जायँगी।'

वह जाने लगी तो उन्होंने उसे इशारे से रोक दिया और डेस्क में से एक बे कटी पुस्तक निकाली।

"यह 'स्वर्ग की कुञ्जी' पुस्तक है जो तुम्हारी हैलोइस ने तुम्हारे लिए भेजी है। धार्मिक पुस्तक है! मैं किसी के धर्म के मामले में दख़ल नहीं देता। मैंने भी इसे एक नज़र देख डाला है। लो, ले जाओ, जाओ।"

उन्होंने उसका कन्धा थपथपाया और स्वयं उसके जाने पर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

× × × ×

बुड्ढा सेवक प्रिंस के खर्राटे की आवाज़ सुनता हुआ बैठा-बैठा ऊँघ रहा था। भवन के दूसरे प्रान्त में पियानो की एक कठिन गत की आवाज़ आ रही थी।

इसी समय पोर्च में एक बन्द गाड़ी आ लगी और प्रिंस एण्ड्र्यू ने उतरकर अपनी नन्हीं पत्नी को उतरने में सहारा दिया और भवन में पहले उसे प्रवेश करने दिया। वृद्ध सेवक तीखन ने मुलाक़ाती कमरे में से दबे पाँव जाकर प्रिंस एण्ड्र्यू को सूचना दी कि प्रिंस अभी सो रहे हैं, और फिर चुपचाप दरवाज़ा बन्द कर लिया। तीखन जानता था कि दिन की व्यवस्था में—पुत्र के आगमन या और किसी असाधारण घटना के कारण—किसी प्रकार का अन्तर न पड़ना चाहिए। प्रिंस एण्ड्र्यू भी तीखन की तरह यह बात अच्छी तरह जानता था और उसने अपनी घड़ी देखकर निश्चय किया कि उसके पिता की आदतों में पिछली बार से किसी प्रकार का परिवर्तन तो नहीं हुआ है, और, यह निश्चय करने पर कि सब कुछ पूर्ववत् ही है, उसने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा :

'कोई बीस मिनट में उठ बैठेंगे। चलो प्रिंसेज़ मेरी के पास चलें।'

नन्हीं प्रिंसेज़ पहले से भी ज़्यादा मोटी हो गई थी, पर उसके नेत्र और उसका निचला ओठ सब पूर्ववत् ही सुन्दर थे।

उसने प्रिंस एण्ड्र्यू की ओर मुड़कर कहा 'घर क्या है, राज महल है !' मानो वह उसे इसके लिए बधाई दे रही हो। 'आओ, चलो, जल्दी चलें।' और एक दृष्टि फेरकर वह तीखन, अपने पति और अर्दली सबकी ओर समान भाव से मुस्कराई।

'क्या मेरी बाजे का अभ्यास कर रही हैं? चलो चुपचाप जाकर उन्हें हक्की-बक्की करने में बड़ा आनन्द रहेगा।'

प्रिंस उसके पीछे-पीछे नम्र, पर उदास भाव से चला। उसने वृद्ध सेवक से, जिसने उसका हाथ चूमा था, कहा 'तीखन, तुम्हारी उम्र ढलती जा रही है।'

जिस कमरे से गाने की आवाज़ आ रही थी उसके सामने के कमरे के दरवाज़े में से सुन्दर सुवेशी फ्रेंच स्त्री मैडेम बोरीन निकली। ऐसा मालूम होता था मानों हर्ष के मारे वह पागल हो जायगी। उसने कहा 'आहा! कैसी ख़ुशी की बात है! आख़िर आही गईं! मैं प्रिंसेज़ को ख़बर किये देती हूँ।'

'नहीं, तुम्हें मेरी सौगन्ध, ऐसा मत करना। मैं तुम्हें पहचान गई, तुम्हारा नाम मैडेम बोरीन है। आओ।' इतना कहकर उसने उसका चुम्बन किया। 'वह हमारी बाट जोह रही हैं क्या?'

सब बैठक के दरवाज़े पर पहुँचे। भीतर से बाजे की आवाज़ आ रही थी। प्रिंस एण्ड्र्यू ने नाक-भौं चढ़ाई मानों वह समझता हो कि कोई विषादकारी बात होनेवाली है।

नन्हीं प्रिंसेज़ कमरे में घुसी। गत अधूरी रह गई। एक चीख़ सुनाई पड़ी, प्रिंसेज़ मेरी के पैरों की आहट आई, और फिर

चुम्बनों की आवाज़ आने लगी। जिस समय प्रिंस एण्ड्र्यू कमरे में घुसा तो दोनों प्रिंसेज़—जो पहले केवल शादी के अवसर पर मिली थीं—एक दूसरी का आलिंगन कर रही थीं और, शरीर के जिस अवयव का संयोग से स्पर्श हो जाय, उसी का चुम्बन ले रही थीं। मेडेम बोरीन दोनों के पास अपने हृदय पर हाथ रक्खे उल्लसित भाव से मुस्करा रही थी और रोने-चिल्लाने के लिए भी उतनी ही तैयार दिखाई देती थी जितनी खिलखिलाकर हँस पड़ने के लिए। प्रिंस एण्ड्र्यू ने अपने कंधे हिलाये और भृकुटी चढ़ाई—उसी प्रकार जिस प्रकार संगीत-प्रेमी कोई अशुद्ध गत सुनकर करते हैं। अब दोनों महिलाएँ एक दूसरी के आलिंगनपाश से अलग हुई और फिर एक दूसरी के हाथ पकड़कर चूमने और खींचने लगीं। इसके बाद उन्होंने फिर एक दूसरी के मुखों के चुम्बन का लग्गा लगा दिया, और फिर दोनों ने रोना-चिल्लाना और फिर-फिर चुम्बन करना शुरू कर दिया। प्रिंस एण्ड्र्यू यह सब देखकर बड़ा विस्मित हुआ। मेडेम बोरीन ने भी रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया। प्रिंस एण्ड्र्यू को यह देखकर बड़ा क्षोभ हुआ, पर इन दोनों महिलाओं को यह बात बिलकुल स्वाभाविक दिखाई दी कि इस भेंट पर उन्हें रोना-चिल्लाना ही चाहिए।

अकस्मात् वे कहने लगीं 'आह! प्यारी!...!' 'आह! मेरी!...।' और फिर दोनों हँस पड़ीं। 'मैंने कल रात एक सुपना देखा था।' 'तुम हमारी बाट थोड़े ही देख रही थीं?......'—'आह, मेरी, तुम तो बड़ी दुबली होती जाती हो!' 'और तुम मोटी होती जाती हो!'

मेडेम बोरीन बोल उठी 'मैं तो प्रिंसेज़ को देखते ही पहचान गई थी।'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा 'और मुझे ख़याल भी नहीं था कि......। आह! एण्ड्र्यू, मैंने तुम्हें तो देखा ही नहीं था!'

प्रिंस एण्ड्र्यू और प्रिंसेज़ मेरी ने—एक दूसरे का हाथ पकड़-कर—चुम्बन लिया और प्रिंस ने उसे बताया कि वह अभी तक वैसी ही अल्हड़ लड़की है। प्रिंसेज़ मेरी अपने आँसुओं में से प्रिंस एण्ड्र्यू के चेहरे की ओर—स्नेह-स्निग्ध, सहृदयतापूर्ण, और कोमल दृष्टि से जिसने उस समय उसके मुखमंडल को बड़ा ही सुन्दर बना दिया था—एकटक देखने लगी।

जब बीस मिनट बीत गये और प्रिंस के उठने का समय निकट आ गया, तो तीखन एण्ड्र्यू को बुलाने आया। वृद्ध सज्जन ने अपने पुत्र के आगमन के उपलक्ष्य में दैनिक व्यवस्था में एक शिथिलता की; उन्होंने उसे, अपने कपड़े पहनने के लिए नियत समय में, आने की अनुमति दे दी। प्रिंस हमेशा पुराने ढङ्ग का कोट पहना करते थे। जिस समय प्रिंस एण्ड्र्यू अपने पिता के ड्रेसिङ्ग रूम में घुसा (उस क्षुब्ध मुद्रा के साथ नहीं जिसके साथ वह अन्ना पैवलोव्ना के ड्रायङ्गरूम में गया था; बल्कि उस सजीव उल्लसित मुद्रा के साथ, जिसके साथ उसने पीरी से बातचीत की थी) उस समय वृद्ध सज्जन अपने नौकर से बाल ठीक करवा रहे थे। वृद्ध सज्जन ने प्रिंस एण्ड्र्यू को देखकर सिर हिलाते हुए कहा 'आह! यह बहादुर आ पहुँचा!

बोनापार्ट को जीतने का इरादा है न?' पर वह सिर अधिक न हिला सके, क्योंकि तीखन उसे बाल सँवारने के लिए पकड़े हुए था।

वह बोले 'ज़रा उसकी ख़बर अच्छी तरह लेना, नहीं तो अगर वह इसी तरह कूदता-फाँदता रहा, तो एक न एक दिन हमें भी अपनी रिआया बनाकर छोड़ेगा! कहो, अच्छे हो न?' इतना कहकर उन्होंने उसे अपना गाल दिया।

प्रिंस भोजन के पहले एक झपकी लेने के बाद से उल्लसित से थे। (वह कहा करते थे, कि भोजन के बाद झपकी लेना चाँदी है, और पहले—सोना।) उन्होंने तिरछी नज़रों से घनी भवों में से अपने पुत्र की ओर अत्यन्त आनन्द के साथ देखा। प्रिंस एण्ड्र्यू ने उनके पास पहुँचकर उनके बताये स्थान का चुम्बन लिया। उसने वृद्ध सज्जन के मनभावने प्रसङ्ग—तत्कालीन सैनिक योद्धाओं की, और विशेष कर बोनापार्ट की, दिल्लगी उड़ाने—में सहयोग नहीं दिया।

उसने अपने पिता के चेहरे की गति-विधि की ओर उत्सुक और आदरपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा 'हाँ पिताजी, मैं आपके पास ही आ गया हूँ और अपने साथ अपनी स्त्री को भी ले आया हूँ। वह गर्भिणी है। आपका स्वास्थ्य कैसा है?'

'बेटे, सिर्फ़ मूर्ख और दुराचारी ही बीमार पड़ा करते हैं। तुम मुझे जानते ही हो; मैं सुबह से शाम तक लगा रहता हूँ और सब चीज़ों से परहेज़ रखता हूँ, इसलिए भला-चङ्गा हूँ।

पुत्र ने मुस्कराकर कहा 'ईश्वर का धन्यवाद है।'

'ईश्वर का इस बात से कोई वास्ता नहीं है! .खैर, यह तो बताओ, जर्मनों ने तुम्हें बोनापार्ट के साथ लड़ने की वह नई विद्या कौन सी बताई है जिसे 'नक़ली लड़ाई' कहते हैं ?'

प्रिंस एण्ड्र्यू मुस्कराया जिससे प्रकट होता था कि उनकी इस दुर्बलता पर भी वह उनका उतना ही आदर करता है। उसने कहा 'पिताजी, मुझे पहले अपने होश-हवास तो दुरुस्त कर लेने दीजिए। मुझे अभी कुछ भी सोचने विचारने का मौक़ा नहीं मिला।'

भोजन के समय वृद्ध प्रिंस ने शीघ्रतापूर्वक आकर अपनी पतोहू के नेत्रों में ध्यानपूर्वक ताकते हुए कहा 'मुझे .खुशी हुई, बड़ी .खुशी हुई।' और इसके बाद वह शीघ्रता से अपनी जगह चले गये और बैठते हुए कहने लगे—'बैठ जाओ, बैठ जाओ! बैठ जाओ, माइकेल इवानिच!'

उन्होंने अपनी पतोहू के लिए अपनी बग़ल वाले स्थान की ओर संकेत किया। अर्दली उसके लिए कुर्सी लाने दौड़ा। वृद्ध सज्जन ने उसके बढ़ते हुए पेट को देखकर कहा 'ओहो! अभी ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी? यह बात ठीक नहीं है।'

और वह अपने स्वाभाविक शुष्क हास्य के साथ—आँखों से नहीं, केवल ओठों से—हँसे। फिर बोले 'तुम्हें चलना फिरना चाहिए, खूब चलना चाहिए, जितना हो सके चलना चाहिए।'

नन्हीं प्रिंसेज़ को या तो उनके शब्द सुनाई नहीं पड़े, या उसने उन्हें जान बूझकर सुनने की चेष्टा नहीं की। वह चुप थी

और उद्विग्न सी दिखाई देती थी। प्रिंस ने उससे उसके पिता का कुशल-मंगल पूछा और अब वह मुस्कराने और बातचीत करने लगी। प्रिंस ने उन लोगों का कुशल-मंगल पूछा जिन्हें वह भी जानते थे और नन्हीं प्रिंसेज़ भी, और वह और भी अधिक सजीव हो उठी और उन्हें भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के सन्देशे देने और पीटर्सबर्ग में उस समय की प्रचलित चर्चा सुनाने और ख़ूब इधर-उधर की बातचीत करने लगी।

उसने अधिकाधिक सजीव होते हुए कहा 'बेचारी काउण्टेस ऐप्रेक्सीना के पति का देहान्त हो गया, और वह रोते-रोते अन्धी हो गई।'

और ज्यों-ज्यों वह अधिकाधिक स्फूर्तिपूर्ण होती गई, प्रिंस उसकी ओर तीव्रतर दृष्टि से देखते गये, और फिर अचानक—मानो उन्होंने उसका पूरा अध्ययन कर लिया हो और उसके विषय में एक निश्चित सम्मति निर्धारित कर ली हो—उसकी ओर से पीठ फेरकर कहने लगे :

'तो अबकी बार बच्चू बोनापार्ट को दाल-आटे का भाव मालूम पड़ेगा। प्रिंस एण्ड्र्यू अभी-अभी मुझे बता रहे थे कि उसके विरुद्ध बड़ी भारी सेना एकत्र की गई है! इधर हम और तुम उसे बिल्कुल नाचीज़ समझे बैठे थे।'

और बातचीत का रुख़ एक बार फिर युद्ध, बोनापार्ट और तत्कालीन सेनापतियों और राजनीति-विशारदों की ओर मुड़ा। प्रिंस को न केवल इसी बात का विश्वास सा हो गया दिखाई देता

था कि तत्कालीन सारे अधिकार-प्राप्त व्यक्ति कल के छोकरे हैं, जो युद्ध और राजनीति का अभी ककहरा भी नहीं जानते, और बोनापार्ट एक नगण्य सा फ्रेंच है, जिसे केवल इस कारण सफलता पर सफलता प्राप्त होती जा रही है कि उसका सामना करने के लिये अब न कोई पोटेमकिन ही रहा है, और न सुवोरोव ही,—बल्कि उन्हें इस बात का भी दृढ़ विश्वास हो गया था कि योरुप में वास्तव में कोई राजनीतिक विपत्ति उपस्थित नहीं है, और न किसी प्रकार का वास्तविक युद्ध ही है, बल्कि एक तरह का गुड़ियों का खेल है जिसमें अधिकार-प्राप्त व्यक्ति क्रीड़ा-कौतूहल कर रहे हैं, और बहाना यह बनाते हैं कि वे वास्तव में कोई बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य्य कर रहे हैं। प्रिंस एण्ड्र्यू प्रफुल्लित चित्त से अपने पिता के नवीन अधिकार-प्राप्त व्यक्तियों के उपहास को सुनता रहा और उनकी बातचीत में बड़े आनन्द के साथ मनोयोग देता रहा।

प्रिंस फिर अपना शुष्क हास्य हँसे।

'बिल्ली के भाग्य से छींका टूट पड़ा। बोनापार्ट को शुरू से ही सुविधाएँ मिलती चली आ रही हैं। उसे बढ़िया सिपाही मिले। और इसके अलावा उसने शुरुआत जर्मनों से की। और जर्मनों को पीट पछाड़ने में किसी विरले ही बुद्धू को असफलता हुई होगी। जब से दुनिया बनी, जर्मन सब से पिटे। वे किसी को नहीं पीट पाते—हाँ, एक दूसरे को ख़ूब पीट लेंगे। और नैपोलियन ने इससे नाम हासिल कर लिया।'

नन्हीं प्रिंसेज़ सारे वादविवाद भर में कभी भीत दृष्टि से अपने ससुर की ओर देखती, और कभी प्रिंसेज़ मेरी की ओर। जब पुरुष-समाज वहाँ से चला गया तो उसने मेरी का हाथ पकड़ा और दूसरे कमरे में ले जाकर कहा—

'तुम्हारे पिता भी कैसे बुद्धिमान् हैं! इसी से मुझे उनसे डर लगता है!'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा 'वह बड़े दयालु हैं!'

दूसरे दिन सुबह को प्रिंस एण्ड्र्यू रवाना होनेवाला था। वृद्ध प्रिंस ने अपनी दिन-चर्य्या में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया और वह भोजन के बाद यथापूर्व सोने चले गये। यात्रा के समय या अपने जीवन का रहन-सहन बिल्कुल बदलने के अवसर पर विचारशील मनुष्य बड़े गम्भीर विचार में निमग्न हो जाते हैं। ऐसे अवसर पर अतीत की बातें दुहराई जाती हैं और भविष्य की योजनाएँ स्थिर की जाती हैं। प्रिंस एण्ड्र्यू की मुद्रा बड़ी गम्भीर और कोमल दिखाई पड़ती थी। वह अपनी कमर के पीछे हाथ किये कमरे में जल्दी-जल्दी चहल-क़दमी कर रहा था और अपने ठीक सामने देखता हुआ चिन्तित भाव से सिर हिलाता जाता था।

प्रिंसेज़ ने आकर जल्दी-जल्दी साँस लेते हुए (वह दौड़ती हुई आ रही थी) कहा—'मैंने सुना है, तुमने घोड़े जोतने को कह दिया है। मैं तुमसे अकेले में एक बार और बातचीत करना चाहती हूँ। ईश्वर जाने हम फिर कब मिलें। तुम मेरे आने से

अप्रसन्न तो नहीं हो? एण्ड्र्यू शा, तुम तो बिल्कुल बदल गये!' उसने कहा, मानो ऐसा प्रश्न करने का कारण समझाते हुए।

वह उसका दुलार का नाम 'एण्ड्रूशा' लेकर मुस्कराई। उसे यह बात बड़ी विचित्र सी जान पड़ी कि यह कठोर, सुन्दर युवक ही वह शरारती दुबला-पतला लड़का है जो बचपन में उसके साथ खेला करता था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसके प्रश्न का उत्तर मुस्कराहट के रूप में देते हुए कहा 'और लीसा कहाँ है?'

'वह इतनी थक गई है कि मेरे कमरे में सोफा ही पर सो गई। ओह, एण्ड्र्यू तुम्हें यह बहू क्या मिली, लक्ष्मी मिल गई। बिल्कुल बच्चों जैसी आदत है। मैं उसका क्या मनोरंजन कर सकती हूँ? हाँ एक मेडेम बोरीन अवश्य ऐसी है...।'

प्रिंस एण्ड्र्यू बीच ही में बोल उठा 'मुझे तुम्हारी यह मेडेम बोरीन फूटी आँख नहीं भाती।'

'नहीं, वह बड़ी अच्छी और सहृदय लड़की है, और सबसे बड़ी बात यह है कि हमें उस पर दया करनी चाहिए। वह बिल्कुल अनाथ है—उसका कोई नहीं है। पिताजी ने उसे निराश्रय देखकर अपने आश्रय में ले लिया। वह बड़ी कोमलहृदय है, और पिताजी को उसका पढ़ना बहुत भाता है। वह उन्हें शाम को पुस्तक पढ़कर सुनाती है, और बड़े सुन्दर ढंग से।'

अकस्मात् प्रिंस एण्ड्र्यू पूछ बैठा—'मेरी, साफ़ बात कहने में क्या हर्ज है, मेरी समझ में कभी कभी पिताजी का आचरण तुम्हारे लिए बड़ा क्लेशदायक हो जाता होगा।'

"मैं तुमसे कोई बात छिपाऊँगी नहीं—एक बात से मुझे बड़ा कष्ट होता है। पिताजी धार्मिक तत्त्वों के प्रति कुछ विचित्र ही भाव रखते हैं। मेरी समझ ही में नहीं आता कि उनके जैसी विशाल बुद्धि वाला मनुष्य एक ऐसी बात को नहीं समझ पाता जो दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट है।' प्रिंसेज़ मेरी ने क्षण भर चुप रहने के बाद सलज्ज भाव से कहा 'अच्छा तो, भय्ये, मैं तुमसे एक प्रार्थना करती हूँ।'

'वह क्या, बहन ?'

'नहीं, ऐसे नहीं, पहले वादा करो कि तुम इनकार नहीं करोगे। इससे तुम्हें तो किसी तरह का कष्ट होने से रहा—और साथ ही यह तुम्हारे अयोग्य भी नहीं है—और मुझे एक तरह की सान्त्वना मिल जायगी। हाँ, तो एण्ड्रूशा, करो वादा !...' उसने—अपने बेग में हाथ डालकर उसके भीतर कोई चीज़ पकड़ते हुए—कहा, पर वह चीज़ उसने बाहर नहीं निकाली, मानों उसके अनुरोध का उस वस्तु से कोई घनिष्ठ सम्बन्ध है और जब तक वादा न कर लिया जाय, तब तक उसका दिखाया जाना निषिद्ध है।

उसने अपने भाई की ओर सलज्ज और कातर दृष्टि से देखा।

'हाँ; बताओ क्या है ?

'एण्ड्रयू, मैं तुम्हें इस मूर्ति के साथ आशीर्वाद देती हूँ, और तुम्हें वादा करना पड़ेगा कि तुम इसे अपने से कभी दूर होने न दोगे। हाँ, तो वादा करते हो न ?'

'अगर इसमें पन्सेरी का बोझ न हुआ, और इससे मेरी गर्दन टूटने का अंदेशा न हो तो मैं तुम्हारी ख़ातिर...।' प्रिंस एण्ड्रयू ने कहा। पर ज्योंही उसने देखा कि इस बात से उसकी बहिन की आकृति व्यथा से विकृत हो उठी है, उसने पश्चात्तापपूर्ण स्वर में कहा—'हाँ, ख़ुशी से; बहिन, मुझे सचमुच बड़ा हर्ष हो रहा है।'

'वह तुम्हारी इच्छा के विपरीत तुम्हारी रक्षा करेंगे और तुम पर दया करेंगे और तुम्हें अपने पास बुलायेंगे, क्योंकि सच्ची शान्ति और सत्य उन्हीं में केन्द्रीभूत है।' जिस समय मेरी यह कह रही थी उसकी आवाज़ भावावेश से काँप रही थी। उसने गम्भीरता के साथ ईसा की मूर्ति को अपने भाई के सिर पर उठाया, और फिर क्रास-चिह्न बनाकर मूर्ति का चुम्बन लिया और एण्ड्रयू के हाथ में पकड़ा दिया।

'हाँ, तो एण्ड्रयू, मेरी ख़ातिर !......।'

उसके सलज्ज विशाल नेत्रों से प्रकाश की रश्मियाँ निकलकर छितराने लगीं। इन नेत्रों से उसका सारा रुग्ण और दुर्बल चेहरा उद्भासित हो उठा और उसने एक अपूर्व सौन्दर्य्य धारण कर लिया। उसका भाई उसके हाथ से मूर्ति लेने को बढ़ा, पर उसने उसे रोक दिया। एण्ड्रयू उसका मतलब समझ गया। उसने क्रास-चिह्न बनाया और मूर्ति का चुम्बन किया। उसके नेत्रों से उस समय सुकोमलता व्यंजित होती थी। (उसका हृदय द्रवीभूत हो उठा था।) और साथ ही उसके चेहरे पर व्यंग्य की मुद्रा भी विराज रही थी।

'बहिन, धन्यवाद !'

प्रिंसेज़ मेरी ने उसके माथे का चुम्बन किया।

छः घोड़ों की गाड़ी पोर्च में खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। हेमन्त ऋतु थी, और इतना अन्धकार था कि कोचवान गाड़ी की बम तक को बड़ी कठिनता से देख पाता था। आदमी अपने हाथों में लालटेनें लिये पोर्च में दौड़-धूप कर रहे थे।

जिस समय प्रिंस एराड्र्यू पिता से विदा लेने कमरे में घुसा, वृद्ध प्रिंस अपना चश्मा लगाये और सफ़ेद चोग़ा पहने (जिसे पहने हुए वह अपने पुत्र के सिवाय और किसी से भेंट नहीं करते थे) मेज़ पर बैठे लिख रहे थे। उन्होंने पीछे की ओर नज़र की। प्रिंस एराड्र्यू को देखकर उन्होंने लिखते-लिखते कहा 'क्यों, चल दिये?'

प्रिंस एराड्र्यू बोला 'मैं आपसे विदा लेने आया हूँ।'

प्रिंस ने अपने गाल की ओर संकेत करके कहा 'यहाँ चुम्बन करो। धन्यवाद, धन्यवाद!'

'आप मुझे धन्यवाद किस बात का दे रहे हैं?'

'एक औरत की बग़ल में न घुसे रहने का। सब से पहले अपना फ़र्ज़ है, बाद को कुछ और। धन्यवाद, धन्यवाद!' और उनका लिखना बराबर जारी था। 'अगर तुम कुछ कहना चाहते हो तो कहो। ये दोनों बातें एक साथ हो सकती हैं।'

'मैं अपनी पत्नी के बारे में कहना चाहता हूँ। मुझे उसे आपके ऊपर छोड़कर जाते हुए शर्म सी आती है...।'

'बेकार बात क्यों करते हो? काम की बात कहो।'

'जब उसके गर्भ के दिन पूरे होने लगे तो मास्को से एक डाक्टर को बुलवा लीजिएगा। वह यहीं मौजूद रहे।'

वृद्ध प्रिंस ने लिखना बन्द कर दिया, और उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा, मानों वह उसका आशय न समझ सके हों। इसके बाद उन्होंने अपने अस्थिचर्मावशिष्ट हाथ से अपने पुत्र का हाथ पकड़ा और उसके नेत्रों में ध्यानपूर्वक देखकर अपने उसी शुष्क ढंग से हँसना शुरू कर दिया। ऐसा मालूम पड़ता था कि उन्होंने उन नेत्रों के ज़रिये उसके हृदय का भेद जान लिया है।

पुत्र ने लम्बी साँस खींची, और इस प्रकार स्वीकार कर लिया कि उसके पिता ने वास्तव में सारा भेद जान लिया है। वृद्ध सज्जन ने पत्र को मुहर लगाने और बन्द करने का काम जारी रक्खा। उन्होंने कहा 'फिर और किया ही क्या जा सकता है? वह है बड़ी सुन्दर! मैं करने में कुछ उठा न रक्खूँगा। निश्चिंत रहो।' उन्होंने पत्र पर मुहर लगाते हुए बीच-बीच में कहना जारी रक्खा।

एण्ड्र्यू चुप था। वह इस बात पर प्रसन्न भी हुआ और अप्रसन्न भी कि उसके पिता ने उसके हृदय की व्यथा जान ली है। अंत में वृद्ध सज्जन उठ खड़े हुए और उसके हाथ में पत्र पकड़ाते हुए बोले—

'देखो, सुनो! अपनी बीबी की तरफ़ से बेफ़िक्र रहो। जो कुछ हो सकेगा, उसमें कसर न छोड़ी जायगी। अब ध्यान से बात सुनो! यह पत्र माइकेल कुटूजोव को देना। मैंने इसमें लिख दिया है कि वह मौक़े बेमौक़े तुमसे काम लेते रहें, और बहुत

दिनों तक एड्जूटेंट ही न बना रहने दें। यह भी बड़ा बुरा ओहदा है। उनसे कहना कि मैं अब भी उन्हें याद करता रहता हूँ और उनसे प्रेम करता हूँ। फिर मुझे लिखना कि वह तुमसे किस तरह पेश आते हैं। अगर वह अच्छी तरह पेश आयें तो उनकी सेवा करना। निकोलस बोल्कोन्सकी के पुत्र को किसी की नाराज़गी बर्दाश्त करते हुए कोई सेवा करने की ज़रूरत नहीं है। इस बात को गाँठ बाँध लो, अगर तुम वहाँ मारे गये, तो मुझे—तुम्हारे बुड्ढे बाप को—ज़रूर रंज होगा।' यहाँ वह एकाएक रुक गये, और फिर भर्राई हुई आवाज़ में कहने लगे—'पर अगर मैंने सुना कि तुमने निकोलस बोल्कोन्सकी के नाम को बट्टा लगा दिया, तो मुझे मुँह दिखाने को जगह न रहेगी।' अंतिम वाक्य उन्होंने एक चीख के साथ कहा।

पुत्र ने मुस्कराते हुए कहा 'पर पिता जी, इस बात के कहने को तो कोई ज़रूरत न थी।'

वृद्ध सज्जन चुप रहे।

प्रिंस एण्ड्रयू ने कहना फिर आरंभ किया 'मैं आपसे यह भी कहना चाहता था कि अगर मैं लड़ाई में मारा जाऊँ और मेरे पुत्र उत्पन्न हो, तो जैसा मैंने आपसे कल कहा था, उसे अपने पास से अलग न करिएगा......वह आप ही की देख-रेख में रहे......।'

'तुम्हारी बीवी को न दूँ ?' वृद्ध सज्जन ने हँसते हुए कहा।

दोनों एक-दूसरे के सामने चुपचाप खड़े रहे। वृद्ध सज्जन के चंचल नेत्र ठीक अपने पुत्र के नेत्रों पर जमे हुए थे। उनके चेहरे के नीचे का भाग अकस्मात् काँपा।

अकस्मात् उन्होंने दरवाज़ा खोलते हुए तीव्र स्वर में चिल्लाकर कहा 'हमने एक-दूसरे से विदा ले ली है। जाओ!'

जब प्रिंस एण्ड्र्यू बाहर निकल आया तो दोनों प्रिंसेज़ों ने उससे पूछा 'क्यों, क्या बात है?—क्या है?' और उसी समय दोनों ने वृद्ध सज्जन को गाउन पहने, चश्मा लगाये, रुष्ट भाव से क्षण भर के लिए दरवाज़े पर खड़े देखा।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने केवल साँस भरी और उत्तर कुछ नहीं दिया।

इसके बाद उसने अपनी स्त्री की ओर फिरकर कहा—'अच्छा!'

और इस 'अच्छा!' ने शुष्कतापूर्ण व्यंग्य विद्रूप व्यंजित किया, मानो उसके कहने का असली आशय हो 'हाँ, तो तुम भी अपना अभिनय समाप्त करो।'

नन्हीं प्रिंसेज़ बोली 'एण्ड्र्यू, इतनी जल्दी!' और उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह अपने पति की ओर भयभीत नेत्रों से देखने लगी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसका आलिंगन किया और वह चीखकर उसके कंधे पर मूर्च्छित हो गई। प्रिंस एण्ड्र्यू ने सावधानी से अपना कंधा छुड़ाया, उसके चेहरे की ओर देखा और उसे सम्हालकर आरामकुर्सी पर लिटा दिया।

इसके बाद उसने अपनी बहिन से कोमल स्वर में कहा 'अच्छा मेरी, सलाम !' और उसके हाथ का चुंबन करके वह जल्दी जल्दी क़दम रखता हुआ कमरे में से चला गया।

अध्ययनशाला से वृद्ध सज्जन के नाक बजाने की ज़ोर ज़ोर से आवाज़ आ रही थी, मानो कोई पिस्तौल चला रहा हो। प्रिंस एण्ड्र्यू अभी कठिनता से बाहर निकला होगा कि अध्ययनशाला का द्वार शीघ्रता से खुल गया और वृद्ध सज्जन ने कठोर मुद्रा बनाये बाहर की ओर झाँका।

उन्होंने कहा—'चला गया? ठीक हुआ!' और अचेत नन्हीं प्रिंसेज़ की ओर देखकर भर्त्सनाव्यंजक ढंग से सिर हिलाते हुए फिर द्वार बंद कर लिया।

—

नवाँ परिच्छेद

प्रिंस वैसिली पहले से ही किसी योजना को स्थिर नहीं करता था, और अपने लाभ के लिए किसी की हानि करने को भावना भी उसके हृदय में स्थान नहीं पाती थी। वह तो एक सांसारिक आदमी था जिसे किसी न किसी तरह दुनिया में अपना पहिया लुढ़काना पड़ता था। उसके दिमाग़ में परिस्थितियों और मनुष्यों के अनुसार हमेशा ऐसी ऐसी योजनाएँ उत्पन्न होती रहती थीं जिनका कारणरूप वह अपने आप को कभी नहीं समझता था, पर जिनसे उसके जीवन के हितों का घनिष्ठ संबंध था। और ये योजनाएँ कोई एक-दो नहीं होतीं—दर्जनों होतीं। उनमें से कुछ का जन्म ही हुआ होता, कुछ को प्रकृत रूप मिलता जाता, और बाक़ी अपनी सफलता के निकट होतीं। उदाहरण के लिये वह ख़ुद यह कभी नहीं कहता था कि 'इस आदमी का आज बोलबाला है, और मुझे अपना फ़लाँ काम निकालने के लिए उससे दोस्ती बढ़ानी चाहिए।' न वह कभी यह ही कहता कि 'पीरी मालदार आदमी है, और मुझे किसी न किसी तरह अपनी लड़की को उसके सिर चपेक देना चाहिए जिससे मुझे ४०००० रूबल—जिनकी मुझे सख़्त ज़रूरत है—मिल जायँ। बस, जब कभी उसे ऐसे किसी अधिकार-सम्पन्न आदमी से पाला पड़ता, उसकी दैवी प्रेरणा उसे फ़ौरन बता देती कि इस आदमी से उसका काम निकलेगा—

और इसके लिए उसे पहले से किसी सोच-विचार की ज़रूरत न होती। प्रिंस वैसिली उसके दिल में घुसने, उसके साथ दोस्ती गाँठने और उससे चिकनी-चुपड़ी बातें करने का मौक़ा ताकता रहता, और तब कहीं अन्त में अपना आशय प्रकट करता।

उसने मास्को में पीरी का पीछा नहीं छोड़ा था। उसने कोशिश करके उसे ज़ार का जैंटिलमैन आफ़ दी बैडचेम्बर नियुक्त करा दिया। इसके बाद वह हठपूर्वक उसे अपने साथ पीटर्सबर्ग ले गया, और उसे अपने ही भवन में ठहराया। प्रकट में तो उसने बड़ी लापरवाही सी दिखाई, पर मन ही मन उसने यह दृढ़ विश्वास कर लिया कि पीरी के साथ उसकी कन्या का विवाह बिल्कुल न्यायोचित है, और इसके लिए उसने पूरी सङ्कोचहीनता के साथ दोनों का सम्बन्ध कराने की भरसक चेष्टा की।

पीरी इस प्रकार अचानक काउण्ट बैज़ूखोव और इतना मालदार आदमी बन बैठने के बाद से—एकाकी और चिन्ता-मुक्त जीवन बिताना तो एक ओर—अब इतना संलग्न और अस्त-व्यस्त रहने लगा कि केवल चारपाई पर पड़ते समय वह अकेला हो पाता। उसे अनेक कागज़-पत्रों पर हस्ताक्षर करने पड़ते, सरकारी ओहदों से—जिनके उपयोग का विषय उसके लिए रहस्य-पूर्ण रहता—जानकारी बढ़ानी पड़ती, अपने स्टीवार्ड से काम-काज की बातें करनी पड़तीं, मास्को के निकट अपनी जायदाद का निरीक्षण करने को जाना पड़ता, और बहुत से ऐसे आदमियों से भेंट करनी पड़ती जो अब से कुछ समय पहले उसके अस्तित्व तक

के विषय में पूछताछ करने की इच्छा प्रकट न करते थे। पर अब यदि उनसे भेंट न की जाती तो वे बड़े दु:खित और अप्रसन्न हो जाते। ये सारे विभिन्न स्थिति के आदमी—व्यापारी, रिश्तेदार और मेल-मुलाक़ाती—इस युवक उत्तराधिकारी के साथ बड़ी सहृदयता और चापलूसी के साथ पेश आते।

मास्को की तरह पीटर्सबर्ग में भी पीरी को वही सहृदयता और सौजन्य का वातावरण दिखाई पड़ा। वह अपनी नई नियुक्ति को अस्वीकार न कर सका (और नियुक्ति के स्थान पर उसे पदवी कहना अधिक उचित होगा, क्योंकि वह करता-कराता कुछ नहीं था)। उसके मेल-मुलाक़ातियों, निमन्त्रणों और सहभोजों की संख्या इतनी अधिक थी कि उसे यहाँ मास्को से भी अधिक स्पन्दन, आकांक्षाओं और परेशानी का सामना करना पड़ा। पर वह इन सबसे जिस निश्चिन्तता की आशा करता था वह उसे कभी प्राप्त न होती थी।

उसके पीटर्सबर्ग के पहले क्वाँरे साथियों में से अब बहुत से वहाँ नहीं थे। गार्ड्स सेना लड़ाई में मौजूद थी, डोलोखोव सिपाहियों में तनज़्ज़ुल कर दिया गया था, अनातोले अपनी सेना के साथ देहात में था; प्रिंस एण्ड्र्यू भी विदेश में था। अत: अब पीरी के पास न तो पहले की तरह अपनी रातें बिताने का ही—जिसके लिए उसका मन बड़ा लालायित था—साधन था, और न किसी पुराने और आदृत मित्र के साथ वार्तालाप करके अपने दिल का ग़ुबार निकालने का ही अवसर था। अब उसका सारा समय

सहभोजों, नाचों और—सबसे अधिक—प्रिंस वैसिली के घर उसकी मोटी स्त्री और सुन्दरी कन्या हैलेन के संसर्ग में बीतता।

उसने हैलेन के संबंध में सोचा : 'पर वह मूर्ख है। मैं ख़ुद कई दफ़ा कह चुका हूँ कि वह मूर्ख है। उसने मेरे भीतर जिस भावना को जागृत कर दिया है वह कुछ गर्हित, निषिद्ध सी जान पड़ती है। मुझे बताया गया है कि वह अपने भाई अनातोले पर आसक्त थी और अनातोले उस पर आसक्त था, और इसी के कारण चारों ओर किंवदन्तियाँ फैलने लगी थीं, और अनातोले को विदेश भेज दिया गया था। उसका भाई हिप्पलाइट...उसका पिता प्रिंस वैसिली...सब एक सिरे से गर्हित लोग हैं...।' उसके मस्तिष्क में इसी प्रकार की विचारधारा प्रवाहित होने लगी, पर तो भी इस विचार से उसे किसी प्रकार का संतोष नहीं हुआ। उसने देखा कि वह मुस्करा रहा है। उसे पता चला कि पूर्वोक्त विचारों में से नवीन नवीन विचार उत्पन्न हो रहे हैं, और उसने जाना जिस समय वह हैलेन के निकम्मेपन पर विचार कर रहा था उसी समय वह यह भी स्वप्न देख रहा था कि किस प्रकार वह उसकी पत्नी होगी, किस प्रकार फिर वह उसे प्रेम करने लगेगी और इस प्रकार बिल्कुल दूसरी ही हो जायेगी, और किस प्रकार वे सारी सुनी सुनाई बातें असत्य सिद्ध होंगी। और इस बार वह फिर उसके सामने आ खड़ी हुई, प्रिंस वैसिली की कन्या की हैसियत से नहीं, बल्कि अपने पूरे—नग्न—रूप में, केवल एक भूरी पोशाक का आवरण डाले हुए! 'पर नहीं!

यह विचार मेरे मस्तिष्क में पहले उत्पन्न क्यों नहीं हुए ?' और उसने एक बार फिर स्वगत कहा कि यह असम्भव है, अतः इस विवाह में एक प्रकार की अस्वाभाविकता और—उसे ऐसा ही बोध हुआ—अधःपतन का पुट मिला रहेगा। उसने एक बार उसकी नज़र और बातचीत और उन सब लोगों की नज़रों और बातचीत को स्मरण किया जिन्होंने उन दोनों को एक साथ देखा था। उसने अन्ना पैवलोव्ना की नज़र और उसके मकान का ज़िक्र करते समय उसके शब्द याद किये, और प्रिंस वैसिली और अन्य लोगों के इसी ढंग के संकेतों को स्मरण किया। अब वह इस बात को सोचकर भयभीत हो गया कि कहीं उसने किसी न न किसी ढंग से इस काम के करने में—जिसे वह अनुचित समझता है—अपने आपको बद्ध न कर दिया हो। पर जिस समय वह इस प्रकार निर्णय कर रहा था, ठीक उसी समय उसके दिमाग़ के एक कोने में एक बार फिर वह स्त्री-मूर्ति अपने पूरे रूपयौवन के साथ उठ खड़ी हुई थी।

प्रिंस वैसिली चाहता था कि उस वृद्ध सम्पन्न प्रिंस बोल्कोन्स-की की कन्या के साथ उसके दुराचारी पुत्र अनातोले का विवाह हो जाय। पर घर छोड़ने और नई योजनाओं को हाथ में लेने से पहले वह पीरी का मामला तय कर जाना चाहता था। वह यह जानता था कि वैसे तो पीरी आजकल सारा दिन घर ही पर—अर्थात् प्रिंस वैसिली के मकान पर, जहाँ वह ठहरा हुआ था—बिताता है, और अन्य प्रेमियों की तरह वह भी हैलेन की उपस्थिति

में बेतरह उद्वेलित और पागल हो जाता है, पर अभी तक उसने विवाह का प्रस्ताव नहीं किया है।

पीरी चाहता था कि कोई न कोई निश्चय कर डाले, पर वह भय-पूर्वक देखता कि कम से कम इस मामले में उसमें उस इच्छा-शक्ति का अभाव है जो उसके पास साधारण अवस्था में प्रचुर मात्रा में रहती थी। पीरी उन लोगों में से था जो केवल उसी दशा में अपनी इच्छा-शक्ति का परिचय दे सकते हैं जब उन्हें यह विश्वास हो कि वे सर्वथा निर्दोष हैं, और अन्ना पैवलोव्ना के मित्र-समागमवाले दिन के बाद से जब हैलेन को देखते ही—उसके ऊपर एक बलवती आकांक्षा ने अधिकार जमा लिया था—वह अपने आपको अपराधी-सा समझने लगा—यद्यपि उसने इसे स्वयं स्वीकार नहीं किया—और यही भावना उसकी इच्छा-शक्ति का संहार करने लगी।

हैलेन के नामकरण दिवस के अवसर पर प्रिंस वैसिली के घर प्रिंसेज़ (वैसिली की स्त्री) के कथनानुसार केवल इने-गिने घर के आदमियों की दावत हुई। सारे उपस्थित हित-सम्बन्धियों ने ताड़ लिया था कि आज लड़की के भाग्य का निपटारा हो जायगा।

मेज़ के मध्य भाग में प्रिंस वैसिली सबकी दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। वह सहज मुस्कराहट के साथ महिलाओं को इम्पीरियल कौंसिल के गत अधिवेशन का ज़िक्र सुना रहा था कि किस प्रकार पीटर्सबर्ग के नवीन सैनिक गवर्नर-जनरल सरजी कुज़मिच व्याज़मिटिनोव को सम्राट् ऐलेक्ज़ण्डर का एक पत्र मिला

जिसमें उन्होंने आर्मी हेड क्वार्टर्ज़ से उसे सम्बोधित करके लिखा था कि उन्हें चारों ओर से राजभक्ति के घोषणापत्र मिले हैं, और पीटर्सबर्ग के घोषणापत्र से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई, और उन्हें ऐसे राष्ट्र के सम्राट् बनने में गर्व की अनुभूति होती है। यह पत्र "सरजी कुज़मिच, मुझे चारों ओर से जो रिपोर्टें मिली हैं" इस प्रकार आरम्भ होता था।

एक महिला ने कहा 'तो उससे "सरज़ी कुज़मिच" से आगे नहीं बढ़ा गया ?'

प्रिंस वैसिली ने हँसते हुए कहा 'बाल बराबर भी नहीं। "सरज़ी कुज़मिच......मुझे...मुझे चारों ओर से..." बस बेचारा व्याज़मिटिनोव इससे आगे न बढ़ सका। उसने कई बार पढ़ने की कोशिश की, पर ज्योंही वह कहता "सरजी" उसे सुबकी आ जाती, "कुज़मिच," आँसू निकल आते, "मुझे चारों ओर से," फिर सुबकियाँ ज़ोर पकड़ जातीं, और इस तरह वह इससे आगे न बढ़ सका। और इसके बाद फिर रूमाल और फिर शुरुआत...... "सरज़ी कुज़मिच, मुझे चारों ओर से," और आँसू मौजूद थे; अन्त में किसी दूसरे आदमी से पढ़ सुनाने का अनुरोध किया गया।

एक ने हँसते हुए दुहराया : 'कुज़मिच, मुझे चारों ओर से... और आँसू मौजूद थे !'

अन्ना पैवलोव्ना ने अपने कोने से अँगुली उठाकर कहा 'आप लोगों को उसकी आलोचना इस तरह नहीं करनी चाहिए। व्याज़-मिटिनोव बड़ा योग्य और सहृदय आदमी है...।'

सबके सब जी खोलकर हँसे। मेज़ के प्रधान स्थान की ओर—जिधर सारे माननीय अतिथि बैठे हुए थे—सारे आदमी उल्लसित थे और विभिन्न आनन्ददायक समाचारों से अपना मनोरंजन कर रहे थे। केवल पीरी और हैलेन मेज़ के दूसरे कोने पर चुपचाप बैठे हुए थे; एक दबी हुई मुस्कराहट से उनके चेहरे चमक रहे थे, और इस मुस्कराहट का सरजी कुज़मिच से कोई सम्बन्ध न था। यह मुस्कराहट अपने ही भावों पर लज्जित हो उठने का व्यक्त रूप थी। पर चाहे बाक़ी लोग कितना ही हँसते बोलते और तरह-तरह की शराबों और भोजनों का स्वाद चखते रहे, और चाहे कितना ही वे इस युवा-जोड़े की ओर से आँखे चुराते रहे, और चाहे कितनी ही उपेक्षा और उदासीनता व्यक्त करते रहे, उनका पारस्परिक दृष्टि-विनिमय इस बात को प्रकट करता था कि यह कुज़मिच की कहानी और यह हास-परिहास, और यह भोजन का स्वाद, सब बहाने हैं और सारे समुदाय का ध्यान इस युवा जोड़े की ओर है।

पीरी इस सारे कार्य-कलाप का अपने को केन्द्रस्थल समझता, और इससे वह प्रसन्न भी हो रहा था और क्षुब्ध भी। वह अपने कार्य में पूरी तरह तन्मय था। उसे कोई बात साफ़ तौर से सुनाई न पड़ती थी—और यदि सुनाई भी पड़ जाती थी तो समझ में न आती। हाँ, बीच-बीच में वास्तविक संसार के विचार और धारणाएँ भी उसके दिमाग़ में अचानक प्रवेश कर जाते थे।

भोजन के बाद पीरी अपनी सङ्गिनी को औरों के साथ ड्रायङ्ग-रूम में ले गया। अतिथि जाने लगे—उनमें से कुछ ने हैलेन से बिदा तक न ली। कुछ—मानों वे उसका ध्यान इस परम आवश्यक व्यापार से खींचने को तैयार न हों—उसके पास क्षण भर के लिए आये और फ़ौरन चले गये और उसे अपने पीछे जाने से हठपूर्वक रोकते गये।

अन्ना पैवलोव्ना ने वैसिली पत्नी का ज़ोर से चुम्बन करते हुए कहा 'लो अब बधाई देने का अवसर भी आ ही पहुँचा। मेरे सिर में दर्द हो रहा है, नहीं तो और कुछ देर ठहरती।'

पर वैसिली पत्नी ने कुछ उत्तर न दिया। वह अपनी लड़की की प्रसन्नता को देख-देखकर मन ही मन जली भुनी जा रही थी।

जिस समय अतिथि बिदा ले रहे थे उस समय पीरी हैलेन के साथ एक छोटे ड्रायङ्ग रूम में बहुत देर तक बैठा रहा। वह पहले भी उसके साथ एकान्त में बैठ चुका था, पर उसने प्रेमालाप कभी नहीं किया था। अब उसने सोचा कि यह आवश्यक प्रतीत होता है। पर वह निश्चयात्मक ढङ्ग से क़दम उठाने का साहस न कर सका। उसे लज्जा का भास हुआ। उसे प्रतीत हुआ कि वह यहाँ—हैलेन की बग़ल में—किसी दूसरे पुरुष का स्थान ग्रहण किये हुए है। उसके भीतर से आवाज़ आई : 'यह प्रसन्नता तुम्हारे लिए नहीं है। यह उसके लिए है जिनके पास उस वस्तु का अभाव है जो तुम्हारे पास है।'

जब प्रिंस वैसिली ड्रायङ्ग रूम में पहुँचा तो उसकी पत्नी एक वृद्धा महिला से बातचीत कर रही थी। वह पीरी के विषय में कह रही थी :

'वैसे जोड़ी तो बड़ी अच्छी है, पर सुख एक... ।'

वृद्धा महिला ने उत्तर दिया 'बहिन विधाता पहले से ही जोड़ी बना देता है ।'

प्रिंस वैसिली उनके पास से होकर चला गया, उसने ऐसा भाव दिखाया मानो उसने उपर्युक्त शब्द सुने ही नहीं, और कोने में एक सोफ़ा पर जाकर धम से बैठ गया। उसने अपने नेत्र बन्द कर लिये मानों झपकी ले रहा हो। उसने अपना सिर सीने पर झुका लिया, और फिर एकाएक सचेत होकर अपनी स्त्री से बोला : 'ऐलाइन, ज़रा देखो तो, दोनों क्या कर रहे हैं ।'

प्रिंसेज़ छोटे ड्रायङ्ग रूम के दरवाज़े तक गई और रोबदार और उपेक्षा-पूर्ण भाव से दरवाज़े के सामने से होकर निकल गई। वापस आकर अपने पति से बोली 'वही पहले जैसे ।'

प्रिंस वैसिली ने तेवर चढ़ाये, मुँह बनाया, उसके गाल काँप उठे, और उसने एक ऐसी भद्दी, गर्हित मुद्रा धारण कर ली जो केवल वही बनाना जानता था। उसने एक फुरहरी ली, अपने स्थान से उठकर सिर ऊँचा किया, और फिर वह दृढ़ पगों के साथ छोटे ड्रायङ्ग रूम की ओर गया। दरवाज़े पर पहुँचकर उसने अपने पैरों की गति तेज़ की, और जब वह पीरी के पास

पहुँचा तो उसके चेहरे से ऐसा विजयसूचक उल्लास दमक रहा था कि पीरी देखकर सशङ्कित हो उठा।

प्रिंस वैसिली ने कहा 'ईश्वर को धन्यवाद है! मेरी पत्नी ने मुझसे सब बात कह दी है!'—(उसने अपना एक हाथ पीरी की कमर में डाला, और दूसरा हैलेन की कमर में।) 'बेटे, लल्ली, मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है।' (उसका स्वर कम्पित हो उठा।) 'पीरी, बेटे, मैं तुम्हारे पिता को बहुत चाहता था...और यह तुम्हारी योग्य बहू बनेगी...परमात्मा तुम दोनों को कुशलपूर्वक रक्खे।'

उसने अपनी लड़की का आलिंगन किया, और फिर पीरी का, और तब दोनों का चुम्बन किया। सचमुच आँसुओं से उसके गाल भीग गये थे।

उसने चिल्लाकर कहा 'प्रिंसेज़, यहाँ आओ!'

वृद्धा प्रिंसेज़ भी आई और रोने लगी। वृद्धा महिला को भी रूमाल का उपयोग करने की आवश्यकता पड़ी। पीरी का चुम्बन लिया गया, और उसने सुन्दरी हैलेन का हाथ अनेक बार चूमा। इसके बाद दोनों को फिर अकेले छोड़ दिया गया।

पीरी ने सोचा, इसके सिवाय और कुछ होना सम्भव न था, इसलिए अब यह सन्देह करना कि, यह अच्छा हुआ या बुरा, ठीक नहीं है। उसे याद आ गया कि ऐसे अवसरों पर किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उसने कहा 'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ'; पर उसके शब्द इतने नीरस और उथले जान पड़े कि वह स्वयं लज्जित हो गया।

छः सप्ताह बाद दोनों का विवाह हो गया और दोनों काउण्ट बैजूखोव के पीटर्सबर्ग वाले नवीन सजे हुए मकान में रहने लगे। कहा जाता था कि धन और यौवन का ऐसा योग बहुत कम देखा जाता है, और लोग पीरी को बड़ा सौभाग्यशाली समझते थे।

———

दसवाँ परिच्छेद

१८०५ की नवम्बर में प्रिंस निकोलस वोल्कोन्सकी को प्रिंस वैसिली का एक पत्र मिला जिसमें उसने उन्हें सूचना दी कि वह उनसे भेंट करने आ रहा है। 'मैं निरीक्षण के लिए दौरे पर निकला हूँ और रास्ते में अपने पुराने कृपाशील मित्र के दर्शन करने के लिए ७० मील का और सफ़र करने की विशेष चिंता न करूँगा। मेरा पुत्र अनातोले भी युद्ध में जाने से पहले आपके दर्शन करने के लिए मेरे साथ आ रहा है। आशा है आप उसे व्यक्तिगत रूप से आपके प्रति अपनो श्रद्धा प्रकट करने का अवसर देंगे।'

जब नन्हीं प्रिंसेज़ को यह समाचार मिला तो वह असावधानता के साथ कह उठी : 'मेरी को ख़ुद बाहर लाने की ज़रूरत न पड़ेगी। लोग-बाग ख़ुद अपने आप आ रहे हैं।'

प्रिंस निकोलस ने तेवर बदले, पर कहा कुछ नहीं।

इस पत्र के एक पक्ष बाद प्रिंस वैसिली के नौकर अपने स्वामी से पहले आ पहुँचे, और दूसरे दिन वह भी अपने पुत्र के साथ आ पहुँचा।

वृद्ध प्रिंस वोल्कोन्सकी की धारणा प्रिंस वैसिली के विषय में हमेशा से तुच्छ रही, और इधर पॉल और एलेक्ज़ेण्डर के शासनकाल में उसके पद-मान पाने के बाद से तो वह उसे और

भी क्षुद्र भाव से देखने लगे थे। अब उसके पत्र के संकेत और नन्हीं प्रिंसेज़ के इशारे से उन्होंने अंदाज़ा लगा लिया कि वायु का वेग किस ओर को है, और उसके विषय में उनकी हीन धारणा एक कुत्सापूर्ण घृणा के रूप में बदल गई। जब कभी उनके सामने उसका नाम लिया जाता, उनके नथने फूल जाते। प्रिंस वैसिली के आगमन के दिन प्रिंस बोल्कोन्सकी विशेष रूप से असंतुष्ट और रुष्ट थे।

प्रिंस नौ बजे यथास्वभाव मख़मली कोट, कालर और टोपी पहने टहलने को गये। एक दिन पहले बर्फ़ पड़ चुका था। उद्यान का फुट-पाथ—जिस पर प्रिंस टहला करते थे—साफ़ कर दिया गया था और उस पर झाड़ू के चिह्न उस समय तक विद्यमान थे। पाथ के एक ओर फावड़ा खोंसा हुआ था। प्रिंस उद्यानों, आसामियों के डेरों, और अन्य इमारतों में होते हुए वापस आ गये—पर भृकुटी चढ़ाये, और चुपचाप।

उन्होंने अपने ओवरसियर से, जो देखने में अपने स्वामी जैसी मुद्रा और चालढाल रखता था, और आदरणीय दिखाई पड़ता था, पूछा : 'इस पर से होकर स्लेज़ तो निकल सकती है न ?।'

'महोदय, बर्फ़ बहुत पड़ी है, मैं रास्ता साफ़ करा रहा हूँ।'

प्रिंस ने अपना सिर झुकाया और पोर्च की ओर चले। ओवरसियर ने समझा 'ईश्वर का धन्यवाद ! तूफ़ान निकल गया !' उसने कहा 'पर इस पर गाड़ी का चलना ज़रा मुश्किल होगा। महोदय, मैंने सुना है आज आपसे भेंट करने कोई मंत्री आ रहे हैं।'

प्रिंस ओवरसियर की ओर लौट पड़े और तेवरी बदलते हुए उसकी ओर ताकने लगे। वह तीव्र स्वर में बोले 'कौन? मंत्री? कौन सा मंत्री? तुमसे यह सब करने को किसने कहा? तो यह सड़क मेरी लड़की के लिए नहीं, एक मंत्री के लिए साफ़ की गई है? मेरे लिए कोई मंत्री नहीं है!'

'महोदय मैंने तो सिर्फ़ यही सोचा था कि......'

अब की बार उन्होंने पहले से भी अधिक स्पष्टता और शीघ्रता के साथ कहा 'तुमने सिर्फ़ सोचा था! सिर्फ़ सोचा था! पाजी! बदमाश! मैं तुम्हें सबक़ सिखाऊँगा कि किस तरह सोचा जाता है!' और उन्होंने अपनी छड़ी उठाई, इधर-उधर घुमाई और ओवरसियर पर छोड़ दी। यदि वह शीघ्रता से न बचा जाता तो वह उसके लगती। उन्होंने शीघ्रता के साथ कहा: 'सोचा था!... ..पाजी कहीं का!'

पर ओवरसियर अपनी उद्दण्डता पर स्वयं ही भयभीत होता हुआ अपना चँदुला सिर आगे किये आत्म-समर्पण के भाव के साथ प्रिंस के सामने आ खड़ा हुआ। पर शायद इसी कारण से, प्रिंस ने वैसे चिल्लाना तो उसी प्रकार जारी रक्खा: 'पाजी! सड़क पर फिर बर्फ़ डाला जाय!' पर उन्होंने फिर छड़ी नहीं उठाई, बल्कि वह घर में शीघ्रता के साथ चले गये।

भोजन के समय मेडेम बोरीन ने अपनी गुलाबी अँगुलियों से अपने रुमाल की गाँठ खोलते हुए कहा: 'प्रिंस महोदय, हमारे घर

आज मेहमान आनेवाले हैं ? शायद हिज़ ऐक्सीलेन्सी प्रिंस वैसिली कुरागिन और उनके सुपुत्र ?'

प्रिंस ने घृणाव्यंजक लहजे में कहा : 'हूँ—हिज़ ऐक्सीलेंसी एक कुत्ते का पिल्ला है। उसे मंत्रिमंडल में मैंने ही जगह दिलाई थी। पता नहीं, उसका बेटा क्यों आ रहा है। शायद प्रिंसेज़ एलीज़ाबेथ और प्रिंसेज़ मेरी जानती हैं। मालूम नहीं, वह अपने बेटे को यहाँ क्यों ला रहा है। मैं उसकी शक्ल तक नहीं देखना चाहता।' इतना कहकर उन्होंने अपनी लजाती हुई कन्या की ओर देखा। 'क्या आज तेरा जी अच्छा नहीं है ? ऐं ? क्या "मंत्री" से—जैसा वह ओवरसियर का बच्चा कहता है—डर गई ?'

प्रिंसेज़ बोली :—'नहीं तो पिताजी।'

भोजन के बाद प्रिंस अपनी पतोहू को देखने गये। वह आज नीचे न आई थी और एक छोटी सी मेज़ के पास बैठी हुई अपनी दासी के साथ गपशप कर रही थी। अपने ससुर को देखकर उसका रंग पीला पड़ गया।

अब वह पहले जैसी सुन्दर नहीं रही थी। उसके गालों में गड्ढे पड़ गये थे, और ओठ भी ऊपर खिंच गये थे। उसके नेत्र नीचे को खसक गये थे।

उसने प्रिंस के प्रश्न के उत्तर में कहा : 'जी हाँ, हृदय पर कुछ बोझ सा रक्खा मालूम होता है।'

'तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है ?'

'नहीं, पिताजी।'

'अच्छी बात है, अच्छी बात है।'

और इतना कहकर वह अपने मुलाक़ाती कमरे की ओर गये जहाँ उनका ओवरसियर सिर झुकाये खड़ा था।

'बर्फ़ ज़मीन पर फिर बिछा दिया गया न?'

'हाँ महोदय, कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिये; वह सारी मेरी मूर्खता थी!'

'अच्छी बात है, अच्छी बात है', प्रिंस ने अपने अस्वाभाविक हास्य के साथ कहा और उसके चुम्बन के लिए अपना हाथ उसकी ओर किया। और फिर वह अपनी अध्ययनशाला में चले गये।

शाम के वक़्त प्रिंस वैसिली भी आ पहुँचा। भवन के मार्ग पर उसे अर्दली और कोचवान मिले जिन्होंने जान-बूझकर बर्फ़ से ढकी गई सड़क पर से उसकी स्लेज खींची और भवन के पास लाकर लगा दी।

प्रिंस वैसिली और अनातोले को एक अलग प्रांत में कमरे दिये गये।

अनातोले ने अपना ओवरकोट उतार दिया और फिर अपने हाथों को कुहनियों के साथ लगाये हुए अपने नेत्रों से शून्य भाव से एक ओर देखते हुए मुस्कराहट के साथ मेज़ के एक कोने के पास बैठ गया। वह अपने जीवन को आमोद-प्रमोद का एक निरन्तर घूमता हुआ चक्र समझता था, और इस आमोद-प्रमोद के लिए कोई न कोई सामग्री उपलब्ध कर लेता था। इस अभद्र वृद्ध पुरुष और मालदार पर बदसूरत उत्तराधिकारिणी के साथ होने

वाली भेंट को भी वह इसी दृष्टिकोण से जाँच रहा था। उसकी सम्मति में यह सब कुछ अत्यंत रोचक ढंग से उसके आमोद-प्रमोद की वृद्धि का ही हेतु होगा। उसने सोचा 'और अगर वह वाक़ई इतनी मालदार है तो शादी करने में क्या हर्ज है? कोई नुकसान तो पहुँचने से रहा।'

इसी बीच में दासियों के कमरे में न केवल यह सूचना ही फैल गई थी कि प्रिंस वैसिली और उसका पुत्र आ पहुँचे, बल्कि उनकी सूरत-शक्ल का भी ख़ूब बारीकी के साथ वर्णन किया जा चुका था। प्रिंसेज़ मेरी अपने कमरे में अकेली बैठी हुई अपने उद्वेलन को व्यर्थ ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।

नन्हीं प्रिंसेज़ ने इधर-उधर झूमते हुए और अन्त में एक कुर्सी पर धमाके के साथ बैठते हुए कहा 'मेरी, लो आ गये।' नन्हीं प्रिंसेज़ उस समय अपना ढीला ढीला चोग़ा नहीं पहने हुए थी, बल्कि उसके स्थान पर अपनी सबसे बढ़िया पोशाक धारण किये हुए थी। उसने बड़ी सावधानता के साथ अपने बाल सँवारे थे और उसके चेहरे पर सजीवता की छाया विद्यमान थी। पर कुछ भी हो, उसके चेहरे की हतश्री फिर भी छिपाये न छिपती थी। और इस पोशाक में उसकी नष्ट प्रभा और भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे जाती थी। मेडेम बोरीन के परिच्छेद में भी कुछ परिवर्तन-परिवर्द्धन किया गया था जिससे उसका गुलाबी मुखड़ा और भी कान्त हो उठा था।

नन्हीं प्रिंसेज़ ने प्रिंसेज़ मेरी को पोशाक पहिनाकर इधर-उधर सिर करके देखते हुए कहा—'नहीं बहिन, यह पोशाक तुम्हें अच्छी

नहीं लगती। वह दूसरी बैंगनी रंग की पोशाक तो निकलवाओ। तुम्हारे भाग्य का निपटारा इसी पर है। यह पोशाक बहुत हल्की है, यह ठीक नहीं है।'

पर वह पोशाक ग़ैर मौज़ूँ नहीं थी। उसका चेहरा और शरीर के सारे अवयव ग़ैर मौज़ूँ थे, किन्तु इस बात को न बोरीन ने ही ताड़ा और न नन्हीं प्रिंसेज़ ने ही। उन्हें अब भी विश्वास था कि यदि बालों में नीला फ़ीता बाँध दिया जाय और बालों में कङ्घी कर दी जाय, तो सब ठीक हो जायगा। वे इस बात को भूल गई कि भयभीत आकृति में किसी प्रकार का परिवर्त्तन किया जाना सम्भव नहीं है।

जब केटी बताई पोशाक ले आई तो भी प्रिंसेज़ उसी प्रकार दर्पण की ओर मुँह किये निश्चेष्ट भाव से अपने चेहरे की ओर निहारती हुई बैठी रही। उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे और उसके ओठ काँप रहे थे, मानो वह अभी सुबकी लेकर रो देगी।

मेडेम बोरीन बोली 'अच्छी प्रिंसेज़, बस, एक दफ़ा और सही।'

नन्हीं प्रिंसेज़ दासी से पोशाक लेकर मेरी के पास पहुँची। उसने कहा 'बस, अबकी बार किसी तरह की सजावट न होगी, बिलकुल सादा मामला।'

इन तीनों—मेडेम बोरीन, नन्हीं प्रिंसेज़ और हँसती हुई केट—की आवाज़ें मिल कर चिड़ियों के चहचहाने की तरह सुनाई पड़ीं।

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा 'नहीं, मुझे अकेली छोड़ दो।'

उसके स्वर में इतनी गम्भीरता और वेदना निहित थी कि चिड़ियों का चहचहाना बात की बात में बन्द हो गया। उन्होंने उन सुन्दर, बड़े-बड़े और विचारपूर्ण नेत्रों की ओर देखा जिनमें आँसू भरे हुए थे और जो उनकी ओर कातर भाव से देख रहे थे। और उन्होंने जान लिया कि अब और हठ करना बिल्कुल व्यर्थ और निर्दयतापूर्ण होगा।

नन्हीं प्रिंसेज़ बोली—'पर कम से कम अपनी चुटिया तो ठीक कर लेने दो।' उसने मेडेम बोरीन की ओर भर्त्सना पूर्ण दृष्टि के साथ देखकर कहा 'क्यों, मैंने क्या कहा था! मेरी के चेहरे की बनावट ही ऐसी है कि उन्हें ऐसे बाल कभी शोभा नहीं देंगे। ज़रा भी तो नहीं, तनिक भी तो नहीं! मेरी, ज़रा अपने बाल अवश्य सुधार लेने दो।'

'मुझे अकेली छोड़ दो, मुझे अकेली छोड़ दो! ये सब कुछ मेरे निकट एक जैसा है,' मेरी ने सुबकियाँ लेते हुए कहा।

मेडेम बोरीन और नन्हीं प्रिंसज़ को मानना पड़ा कि प्रिंसेज़ मेरी इस वेश में बेहद सादी लगती है, पहले से भी अधिक। पर अब किये क्या हो सकता था? वह उनकी ओर ऐसी मुद्रा के साथ देख रही थी जिसका मर्म दोनों जानती थीं—शोकपूर्ण और विचार-मग्न मुद्रा के साथ। इस मुद्रा से वे भयभीत नहीं हुई (उससे कभी कोई भयभीत नहीं होता था), परन्तु उन्होंने जान लिया कि उसके चेहरे पर जब कभी ऐसी मुद्रा अंकित होती है, वह चुप्पी साध लेती है और फिर उसे अपने निश्चय से कोई नहीं हिला सकता।

'इसे तो तुम बदलोगी ही, बदलोगी न ?' लीसा ने कहा। और जब प्रिंसेज़ मेरी ने कोई उत्तर नहीं दिया तो वह कमरे से चली गई।

प्रिंसेज़ मेरी अकेली रह गई। उसने लीसा का अनुरोध स्वीकार नहीं किया। उसने अपने बाल तो पूर्ववत् रहने ही दिये। अपने शीशे की तरफ़ भी निगाह उठाकर नहीं देखा। उसने असहायावस्था के साथ अपने हाथ नीचे गिरा दिये और नीची निगाह किये हुए वह विचार-मग्न हो गई। उसके कल्पना-संसार में एक पति, एक पुरुष—बलवान, ओजस्वी और बेहद रूपवान व्यक्ति—की मूर्ति आ खड़ी हुई और उसे बिल्कुल विभिन्न आनन्द-राज्य में खींच ले गई। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसकी छाती से एक बच्चा, उसका बच्चा—बिल्कुल वैसा ही जैसा उसने पिछले दिन अपनी धाय की लड़की के पास देखा था—लगा हुआ है, और उसका पति उसकी बग़ल में खड़ा उसकी और बच्चे की ओर स्नेहपूरित नेत्रों से देख रहा है। 'पर नहीं, यह असम्भव है : मैं बड़ी कुरूपा हूँ', उसने सोचा !

दरवाज़े के पीछे से दासी की आवाज़ आई,—'चाय सजा दी गई है; प्रिंस आने ही वाले हैं।'

वह चैतन्य हुई और अपने विचारों पर उसे स्वयं ही विस्मय हुआ। पर ड्रायंग रूम में जाने से पहले वह एक कमरे में गई जहाँ प्रभु ईसा की मूर्त्तियाँ टँगी हुई थीं, और मोमबत्ती के प्रकाश से प्रकाशित एक मूर्त्ति के आगे हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई। वेदना-

निहित संशयों से उसकी आत्मा आकुल हो उठी। क्या यह प्रेम का, एक ऐसे आदमी के प्रेम का जिसे प्राप्त करना उसके लिए सम्भव है, आह्लाद था? वैवाहिक जीवन का विचार करते समय वह आनन्द का और अपने बालकों का स्वप्न देखा करती थी, पर इन विचारों से कहीं प्रबलतर और छिपा हुआ विचार वासनाओं से सम्बन्ध रखता था। वह इस भावना को जितना ही दूसरों से—और स्वयं अपने आपसे भी—छिपाने का प्रयत्न करती, उतनी ही वह प्रबलतर होती जाती। उसने कहा, 'हे भगवान्, मैं इन अपवित्र विचारों को कैसे कुचलूँ? मैं तेरी इच्छा पूरी करने के लिए अपनी इन गर्हित भावनाओं को हृदय से कैसे निकाल फेंकूँ?' और ज्योंही वह स्वगत इस प्रकार का प्रश्न करती, त्योंही उसके हृदय में भगवान् का अंतर्नाद होता—'किसी बात की इच्छा मत कर, किसी बात की अभिलाषा मत कर।'

वृद्ध प्रिंस ने अपनी स्वाभाविक फ़ुर्तीली चाल के साथ शीघ्रता-पूर्वक सारे व्यक्तियों पर निगाह दौड़ाते हुए ड्रायंग रूम में प्रवेश किया। उन्होंने नन्हीं प्रिंसेज़ की पोशाक में परिवर्तन देखा, मेडेम बोरीन के फ़ीते की ओर दृष्टिपात किया, प्रिंसेज़ मेरी की भद्दी चुटिया पर निगाह डाली, मेडेम बोरीन और अनातोले का मुस्क्यान-व्यापार भी उनकी नज़रों से बचा न रहा, और सारे वार्तालाप में अपनी कन्या का एकाकिनी बैठे रहना भी उनसे न छिप सका। उन्होंने उसकी ओर रुष्ट भाव से देखकर मन ही मन कहा—'इस लड़की ने तो बौरंगेपन की हद कर दी!

शर्म भी तो नहीं आती। और वह इसकी ओर तनिक भी आकर्षित नहीं है।'

वह सीधे प्रिंस वैसिली के पास पहुँचे। बोले 'अच्छा! कहिए, मिज़ाज तो अच्छे हैं? मिज़ाज तो अच्छे हैं? मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई!'

प्रिंस वैसिली ने अपने स्वाभाविक आत्म-संयम के साथ शीघ्रता-पूर्वक कहा—'ज़्यादा दिनों तक न मिलने से दोस्ती में कुछ न कुछ फ़र्क़ आ ही जाता है। यह मेरा दूसरा लड़का है; उम्मीद है आप इससे स्नेह करेंगे।'

प्रिंस ने अनातोले की ओर ग़ौर से देखा और कहा 'अच्छा ख़ूबसूरत जवान है! अच्छा ख़ूबसूरत जवान है! लो मेरा चुम्बन करो।' इतना कहकर उन्होंने अपना गाल आगे कर दिया।

अनातोले ने चुम्बन किया और फिर वृद्ध सज्जन की ओर—इस प्रतीक्षा में देखा कि देखें उन्हें क्या-क्या सनक चेतती है।

प्रिंस यकायक उठकर अपनी कन्या के पास पहुँचे।

उन्होंने कहा—'तो तुमने यह सारा वेश इन मेहमानों की ही ख़ातिर किया है न? वाहवा! क्या कहने हैं! तुमने अपने बाल शायद इन मेहमानों को दिखाने के लिए ही इस नये फ़ैशन में सजाये हैं। अच्छा, तो मैं तुमसे इन मेहमानों के सामने ही कहे देता हूँ कि आयन्दा बिना मेरी मर्ज़ी के अपने वेश का रंग-ढंग कभी मत बदलना।'

नन्हीं प्रिंसेज़ ने लजाते हुए कहा 'पिताजी, यह मेरा क़सूर है।'

प्रिंस बोल्कोन्सको ने अभिवादन करते हुए कहा 'आपके जी में जो कुछ आये सो करती रहिए, पर इसे तरह-तरह के बहुरूप बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह जैसी है, अच्छी है।'

और इतना कहकर वह बैठ गये। उन्होंने अपनी लड़की की ओर फिर ध्यान नहीं दिया। वह रुलासी हो रही थी।

प्रिंस वैसिली ने कहा 'पर प्रिंसेज़ को तो यह चोटी बड़ी अच्छी लगती है।'

वृद्ध प्रिंस ने अनातोले की ओर फिरकर कहा 'तो हज़रत, हाँ प्रिंस, इनका क्या नाम है ? हाँ, यहाँ आओ, ज़रा बातचीत करके जान पहचान बढ़ा लें।'

अनातोले ने वृद्ध प्रिंस के पास मुस्कराते हुए बैठते-बैठते मन ही मन कहा 'अब तमाशा शुरू होगा।'

वृद्ध प्रिंस ने अनातोले की ओर मनोयोगपूर्वक देखते हुए कहा 'हाँ, तो हज़रत, मैंने सुना है तुमने विदेश में शिक्षा पाई है। तो तुम अपने पिता की तरह या मेरी तरह गाँवों के पादरियों द्वारा नहीं पढ़ाये गये। अच्छा, तो यह तो बताओ, आज कल तुम घुड़-सवार गार्ड्स सेना में हो न ?'

अनातोले ने कठिनता से अपनी हँसी रोकते हुए कहा 'जी नहीं, मेरा वहाँ से तबादला हो गया है।'

'आह ! बड़ी अच्छी बात है ! तो भाई तुम ज़ार की और अपने देश की सेवा करना चाहते हो—ऐं न ? अब लड़ाई छिड़ ही गई

है। ऐसे ही जवानों को लड़ाई में हिस्सा लेना चाहिए। तो तुम मोर्चे पर जानेवाले हो न ?'

'नहीं प्रिंस, हमारी रेजीमेंट तो चली गई। पर मैं सम्बद्ध हूँ......। पापा, भला मैं किससे सम्बद्ध हूँ ?' अनातोले ने हँसते हुए अपने पिता की ओर मुख़ातिब होकर पूछा।

'वाह वाह! कैसा बढ़िया जवान है! "भला मैं किससे सम्बद्ध हूँ !" हा, हा, हा !!' प्रिंस बोल्कोन्सकी ने हँसते हुए कहा।

और अनातोले और भी ज़ोर से हँसा। अकस्मात् प्रिंस बोल्कोन्सकी ने तेवर बदले। उन्होंने अनातोले से कहा, 'हाँ, अब तुम जा सकते हो।'

अनातोले हँसता हुआ महिलाओं के पास जा पहुँचा।

प्रिंसेज़ मेरी अपने चेहरे और चोटी की बात बिलकुल भूल गई। अब उसका सारा ध्यान एक मात्र उसी पुरुष की लुभावनी आकृति की ओर लग गया जो सम्भवतः उसका पति होनेवाला था। उसे वह सहृदय, वीर, निश्चयपूर्ण और पुरुषोचित उदारता से युक्त दिखाई दिया। उसे इन सब बातों का दृढ़ विश्वास हो गया। उसके कल्पना-संसार में भावी गृहस्थ-जीवन के अनेकानेक स्वप्न उदित होने लगे। उसने इन सारे विचारों को ज़बर्दस्ती बाहर निकाल दिया और उन्हें छिपाने की चेष्टा की।

प्रिंसेज़ मेरी ने सोचा 'पर मैंने उनकी ओर काफ़ी प्रेम नहीं दिखाया। मैं संकुचित रहना चाहती हूँ, क्योंकि हृदय से मैं उनके बहुत निकट पहुँच गई हूँ। पर वह इस बात को कैसे जानेंगे कि

मैं उनके विषय में कैसे विचार करती हूँ ? वह तो यही समझेंगे कि मैं उन्हें चाव की निगाह से नहीं देखती।'

और प्रिंसेज़ मेरी ने अपने नये मेहमान के साथ अधिक सहृदयता के साथ पेश आने की कोशिश की, पर वह ख़ुद नहीं जानती थी कि अधिक सहृदय किस प्रकार बना जाता है। अनातोले सोच रहा था; 'निरीह लड़की! कैसी भद्दी शक्ल है !'

और अनातोले के आगमन से मेडेम बोरीन के हृदय में भी भीषण उद्वेलन हो उठा। पर उसका विचार-क्षेत्र बिल्कुल दूसरा था। इसमें शक ही क्या किया जा सकता था कि वह—निर्धन, निराश्रय, असहाय, गृहहीन सुन्दर लड़की—उम्र भर प्रिंस बोल्कोन्सकी को पुस्तकें पढ़कर सुनाते रहने अथवा प्रिंसेज़ मेरी से बहनापा निभाते रहने के लिए किसी दशा में भी तैयार नहीं थी ? मेडेम बोरीन ऐसे किसी रूसी प्रिंस की बहुत दिनों से बाट जोह रही थी जो उसे देखते ही कुरूपा और बौरंगी रूसी प्रिंसेज़ों के मुक़ाबले में उसकी उत्कृष्टता को समझ जाय, उसके साथ प्रेम करने लगे और उसे उठाकर ले जाये।

सब के सब रात भर के लिए बिदा हो गये थे, पर अनातोले को छोड़कर—जो पलँग पर पड़ते ही सो गया था—और सब बहुत देर तक जागते रहे।

प्रिंसेज़ मेरी ने सोचा 'क्या यह अपरिचित पुरुष, जो इतने भले मानुस हैं—हाँ, इतने भले मानुस हैं—सचमुच मेरे पति होंगे ?'

मेडेम बोरीन उस रात को बाग़ में बहुत देर तक चहलक़दमी करती हुई किसी की बाट जोहती रही—पर सब व्यर्थ।

नन्हीं प्रिंसेज़ भी नहीं सो सकी और अपनी दासी पर बिगड़ती रही।

वृद्ध प्रिंस भी नहीं सो सके। वह सोच रहे थे 'कोई अजनबी आया और वह अपने बाप को और और सबको भूली और ऊपर जाकर अपने बाल सँवारने लगी और पूँछ हिलाने लगी। बस अपने आपका उसे बिलकुल ध्यान नहीं रहा! शायद वह अपने बाप से छुटकारा पाने में बड़ी .खुश हो रही है! और यह वह जानती थी कि मैं यह सब अपनी आँखों से देखूँगा। फूँ... फूँ...फूँ...! और क्या यह मुझे दिखाई नहीं देता कि वह कुत्ते का पिल्ला बोरीन को छोड़कर और किसी की तरफ़ निगाह तक नहीं डालता? (इस बोरीन की बच्ची से भी मैं जल्दी ही पीछा छुड़ाऊँगा।) अगर मेरी में आत्मसम्मान बिलकुल नहीं है तो भी उसे इस मौक़े पर थोड़ा सा मुझसे ले लेना चाहिए था! उसे यह दिखा देना होगा कि वह चुग़द उसकी रत्ती भर भी परवाह नहीं करता और सिर्फ़ बोरीन ही पर लट्टू है। नहीं, उसमें आत्मसम्मान बिलकुल नहीं है। पर मैं उसे दिखा दूँगा...।'

दूसरे दिन वृद्ध प्रिंस ने अपनी लड़की के साथ बड़ी सहृदयता और सतर्कता का व्यवहार किया। प्रिंसेज़ मेरी अपने पिता के इस विनम्र व्यवहार का आशय अच्छी तरह जानती थी। यह विनम्र व्यवहार वह उस समय करते थे जब उसकी समझ में

गणित का कोई प्रश्न नहीं आता था और वह व्यस्त भाव से अपने शुष्क हाथों की मुट्ठी भींचते थे, और कुर्सी पर से उठकर टहलते हुए एक ही शब्द को अनेक बार दुहराते जाते थे।

वह उसके साथ अदब-क़ायदे का व्यवहार करते हुए तत्काल मतलब की बात पर आ गये। उन्होंने अपनी अस्वाभाविक मुस्कराहट के साथ कहा—'मुझसे तुम्हारे लिए विवाह-प्रस्ताव किया गया है। शायद तुम भी समझ गई होगी कि प्रिंस वैसिली अपने चेले के साथ' (प्रिंस बोल्कोन्सकी किसी कारणवश अनातोले को 'चेले' के नाम से पुकारते थे) 'यहाँ सिर्फ़ मेरे सुन्दर नेत्रों की ख़ातिर ही नहीं आये हैं। कल रात तुम्हारे लिए प्रस्ताव रक्खा गया है, और तुम मेरे सिद्धान्त जानती हो, इसलिए इसे मैं तुम्हारी इच्छा पर छोड़ता हूँ।'

प्रिंसेज़ मेरी का रङ्ग पीला पड़ गया, और फिर तत्काल ही वह लजाती हुई बोली 'पिताजी, आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती।'

उसके पापा ने क्रुद्ध स्वर में कहा—'मेरी बात समझ में नहीं आती! मेरे कहने का मतलब यह है कि प्रिंस वैसिली तुम्हें अपनी पतोहू बनाना चाहता है, और इसी लिए उसने अपने चेले के द्वारा विवाह का प्रस्ताव रक्खा है। बस, इतनी-सी बात है! "आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती!" बताओ, क्या इरादा है।'

प्रिंसेज़ ने धीरे से कहा 'पिताजी, मुझे यह मालूम नहीं कि इस सम्बन्ध में आपका क्या विचार है।'

'मेरा ? मेरा ? मुझसे क्या वास्ता ? मेरी बात छोड़ दो। कोई मेरा व्याह थोड़े ही हो रहा है! तुम्हारा क्या विचार है? बस, मैं सिर्फ़ इतनी सी बात जानना चाहता हूँ।'

प्रिंसेज़ समझ गई कि उसके पिता को यह सम्बन्ध नापसन्द है, पर उसी समय उसे ख़याल आया कि उसके भाग्य-निर्णय का समय यही है। उसने अपने नेत्र नीचे कर लिये—इसलिए कि वह उन नेत्रों को न देख सके जिनके प्रभाव से वह स्वयं विचार करने में असमर्थ हो जायगी और पुराने अभ्यास के अनुसार केवल आत्मसमर्पण करने को ही विवश होगी। उसने कहा :

'मेरी तो सिर्फ़ यही अभिलाषा है कि आप अपनी इच्छा-नुसार काम करें, पर यदि आप सचमुच मेरी इच्छा जानना चाहते हैं तो...।' पर उसे वाक्य समाप्त करने का अवसर नहीं मिला—वृद्ध प्रिंस ने बीच ही में बाधा दे दी।

उन्होंने तीव्र स्वर में चिल्लाकर कहा 'वाह वा! कैसी बढ़िया बात है! वह तुम्हें तुम्हारे दहेज़ के साथ—जिसमें मेडेम बोरीन भी शामिल रहेगी—ले जायगा, और वह उसकी बीवी होगी, और तुम...'

प्रिंस ने वाक्य पूरा नहीं किया। उन्होंने देखा कि इन शब्दों का प्रिंसेज़ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा है। उसने अपना सिर नीचा कर लिया और फुक्का फाड़कर रोने की तैयारी कर दी।

प्रिंस बोले—'नहीं नहीं, मैं तो सिर्फ़ हँसी कर रहा था! देखो प्रिंसेज़, मैं हमेशा इस सिद्धान्त का पालन करता हूँ कि एक

कन्या को अपना वर चुनने का पूरा अधिकार है। मैं तुम्हें पूरी आज़ादी देता हूँ; पर तुम इस बात को न भूलना कि तुम्हारा सारा सुख इसी निश्चय पर निर्भर है। मेरा कोई ख़याल मत करो।'

'पर पिताजी, मैं इन बातों को क्या जानूँ ?'

'बताने की कोई बात नहीं है! उसे अपने गुरु का हुक्म मिला है और वह तुम्हें क्या, किसी को भी व्याह लेगा; पर तुम्हें अपना बुरा भला अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। जाओ, अपने कमरे में जाओ और इसको सोचो, घण्टे भर में आकर वैसिली की मौजूदगी में कह देना कि तुमने क्या तय किया, हाँ, या ना। मैं जानता हूँ तुम प्रार्थना करोगी। ख़ैर, प्रार्थना ही सही; पर अच्छा यह होगा कि तुम इस पर ग़ौर करो। जाओ! हाँ, या ना; हाँ या ना!' प्रिंस ज़ोर से चिल्लाये और प्रिंसेज़ कमरे में से लड़खड़ाती हुई चली गई मानों कुहासे में उसे कुछ दिखाई न पड़ रहा हो।

उसके भाग्य का निर्णय हो गया और भले प्रकार हो गया। पर उसके पिता का बोरीन-विषयक आरोप बड़ा भयङ्कर था। निश्चय ही वह असत्य था, पर फिर भी वह उसके विषय में कुछ न कुछ सोचे बिना न रह सकी। वह सीधी बिना इधर-उधर देखे उद्यान की ओर चली गई, और इसी समय उसके कानों में मेडेम बोरीन के फुसफुसाने की सुपरिचित आवाज़ आई। प्रिंसेज़ ने अपनी निगाह उठाई और अपने से दो क़दम दूर पर देखा कि अनातोले फ्रेंच स्त्री को आलिंगन-पाश में बाँधे हुए उसके कान

में कुछ कह रहा है। अनातोले ने प्रिंसेज़ की ओर पैशाचिक मुद्रा के साथ देखा, पर देखते ही बोरीन की कमर से अपने हाथ नहीं हटा लिये। बोरीन ने मेरी को अभी नहीं देखा था।

अनातोले का चेहरा कहता मालूम होता था 'यह कौन है? क्यों? अच्छा, ज़रा रुको!' प्रिंसेज़ मेरी उनकी ओर चुपचाप देखती रही और उसकी समझ में यह व्यापार बिलकुल न आ सका। अंत में मेडेम बोरीन ने एक चीख़ मारी और सिर पर पैर रखकर भागी। अनातोले ने उल्लसित भाव से मुस्कराते हुए प्रिंसेज़ मेरी का अभिवादन किया,—मानों वह उसे इस असाधारण घटना पर हँसने का निमंत्रण दे रहा हो—और फिर अपने कंधे उचकाकर अपने कमरों की ओर चला गया।

घण्टे भर बाद तीखन प्रिंसेज़ मेरी को बुलाने आया।

जिस समय प्रिंसेज़ मेरी ने कमरे में प्रवेश किया तो प्रिंस वैसिली पैर पर पैर रक्खे और अपने हाथ में सुँघनीदान लिये बैठा हुआ मुस्करा रहा था मानो उसके हृदय में उद्वेलन की बाढ़ आ गई हो और वह अपनी भावुकता पर स्वयं ही करुणा भाव से मुस्करा रहा हो। उसने प्रिंसेज़ को देखकर शीघ्रता से सुँघनी का एक बुक्का अपनी नाक में घुसेड़ लिया।

उसने उठते हुए प्रिंसेज़ के दोनों हाथ पकड़कर कहा 'आओ बेटी आओ।' इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर बोला—'मेरे बेटे की तक़दीर का फ़ैसला तुम्हारे ही हाथ में है। मेरी अच्छी,

मेरी, भोली मेरी, बताओ, तुमने क्या तय किया। तुम्हें मैं हमेशा से अपनी लड़की की तरह प्यार करता रहा हूँ।'

इतना कहकर वह अलग हट गया और सचमुच उसकी आँखों में आँसू आ गये।

प्रिंस बोल्कोन्सकी ने फुँकार मारकर कहा 'फूँ-फूँ-फूँ! प्रिंस तुमसे अपने चेले—यानी अपने बेटे के नाम पर ब्याह का प्रस्ताव कर रहे हैं। बताओ, तुम प्रिंस अनातोले कुरागिन की बीवी बनना चाहती हो या नहीं? बताओ, हाँ, या ना।' उन्होंने ज़ोर से कहा— 'और फिर मैं अपनी राय बताऊँगा। हाँ, सिर्फ़ अपनी राय।' उन्होंने प्रिंस वैसिली के अनुनय भरे नेत्रों की ओर देखकर कहा, 'हाँ, या ना?'

प्रिंसेज़ मेरी ने अपने सुन्दर नेत्रों से प्रिंस वैसिली और अपने पिता की ओर देखते हुए निर्णयात्मक स्वर में कहा—'पिताजी मैं हमेशा आपके साथ रहना चाहती हूँ, मैं आप से अलग नहीं होना चाहती! मैं विवाह के लिए तैयार नहीं हूँ।'

'बेकार बात है! फ़ज़ूल! बेकार, बेकार, बेकार!' और इतना कहकर प्रिंस ने अपनी लड़की का हाथ पकड़ लिया और चूमा नहीं, नहीं, उसे इतने ज़ोर से दबाया कि प्रिंसेज़ चीख़ उठी।

प्रिंस वैसिली उठा। उसने कहा—'बेटी, यह ऐसा समय है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा। पर बेटी, क्या तुम हमें अपने इस उदार और पवित्र हृदय को पिघलाने के लिए

ज़रा भी आशा न दोगी? कहो "शायद"···अभी बहुत समय है। कहो "शायद"।'

'प्रिंस, जो कुछ मैंने कहा है, अपने हृदय से ही कहा है। आपने इतनी कृपा की, इसके लिए आपका धन्यवाद; पर मैं आपके पुत्र की स्त्री कभी न बन सकूँगी।'

——

ग्यारहवाँ परिच्छेद

रोस्टोव परिवार को निकोलस की ख़ैर-ख़बर बहुत दिनों तक नहीं मिली। अन्त में काउण्ट को आधी शरद् ऋतु बीत जाने पर अपने पुत्र के हाथ का पत्र मिला। उसे लेकर वह पंजों के बल सब की निगाह बचाकर अध्ययनशाला में चले गये और भीत हृदय से पढ़ने लगे।

अन्ना मिखायलोव्ना, जो घर के सारे कार्य्य-कलाप की राई-रत्ती ख़बर रखती थी, इस पत्र की बात सुनकर दबे पाँव कमरे में गई और उसने देखा कि काउण्ट उसे हाथ में लिये एक ही साथ रो और हँस रहे हैं। यद्यपि अन्ना मिखायलोव्ना की स्थिति पहले से सुधर गई थी, फिर भी वह अभी रोस्टोव परिवार के साथ ही रहती थी।

उसने समवेदना-पूर्ण स्वर में पूछा (और उस सहानुभूति का उपयोग वह हर्ष-विषाद दोनों प्रकार से करने को तैयार थी)—'क्यों काउण्ट, क्या बात है ?'

काउण्ट और भी ज़ोर से सुबकियाँ लेने लगे।

'निकोलस...एक ख़त...घायल हो गया...घायल हो गया था...अफ़सर हो गया है...नन्हीं काउण्टेस का क्या हाल होगा ?'

अन्ना मिखायलोव्ना काउण्ट के पास बैठ गई, अपने रूमाल से उनके नेत्रों से और पत्र से आँसू पोंछे। नटाशा बड़ी ढीठ थी,

पर वह जानती थी कि काउएटेस निकोलस से सम्बन्ध रखनेवाली सारी बातों से बड़ी जल्दी उद्विग्न हो जाती हैं। इसलिए उसने भोजन के समय किसी प्रकार का प्रश्न करना उचित न समझा। पर वह इतनी उत्तेजित हो उठी थी कि वह कुछ न खा सकी और अपनी कुर्सी पर बैठी हुई बराबर इधर उधर मुँह फेरती रही।

भोजन के बाद वह अन्ना मिखायलोव्ना के पीछे-पीछे पत्ता-तोड़ भागी और उसे पकड़कर फ़ौरन उसकी गर्दन में हाथ डालकर लटक गई।

'मौसी, क्या बात है! अच्छी मेरी मौसी, बता दो!'

'कुछ हो भी।'

'नहीं मौसी, प्यारी मौसी, मीठी—शहद जैसी—मौसी, मैं तुम्हारा पीछा ऐसे-वैसे छोड़नेवाली नहीं हूँ। मैं जानती हूँ तुम्हें सब मालूम है।'

'तू तो बिल्कुल पगली लड़की है।'

नटाशा ने अपने अनुमान की पुष्टि अन्ना मिखायलोव्ना के चेहरे पर लिखी देखकर कहा 'बस, मैं जान गई, निकोलस के पास से चिट्ठी आई है। शर्त बद लो।'

'पर बेटी, यह बात पेट ही में रखना। तू जानती ही है, इससे तेरी मा कैसी घबरा जायेगी।'

'नहीं जी, भला मजाल क्या जो मेरे पेट से कोई बात निकलवा ले! पर मुझे बता दो, क्या लिखा है। नहीं बताओगी? अच्छी बात है, मैं अभी जाकर कहे देती हूँ।'

अन्ना मिखायलोव्ना ने, इस शर्त पर कि वह यह किसी से न कहेगी, संक्षेप में पत्र का हाल सुना दिया। इस पर नटाशा ने क्रास-चिह्न बनाकर कहा 'नहीं, अपने सिर की क़सम, मैं किसी से कुछ न कहूँगी!' इतना कहकर वह भागी हुई सोनिया के पास पहुँची। अब अन्ना मिखायलोव्ना काउण्टेस के कमरे में पहुँची।

काउण्ट चाभी के सूराख़ में कान लगाकर सुनने लगे।

पहले उन्हें दोनों की आवाज़ें सुनाई पड़ीं, फिर अन्ना मिखायलोव्ना की लम्बी स्पीच, फिर चीख़-चिल्लाहट, फिर निःस्तब्धता, और फिर दोनों की प्रसन्नतापूर्ण आवाज़ें और पैरों की आहट सुनाई पड़ी और अन्ना मिखायलोव्ना ने द्वार खोल दिया।

उसने काउण्ट की ओर विजयसूचक मुद्रा से देखते हुए काउण्टेस की ओर सङ्केत किया जो एक हाथ में अपने पुत्र का चित्र और दूसरे में उसका पत्र लिये बारी बारी से दोनों का चुम्बन कर रही थीं—और कहा 'लीजिए, सब ठीक हो गया।'

काउण्टेस अभी तक रो रही थीं।

बड़ी लड़की वीरा ने पूछा—'मामा, इसमें रोने की कौन सी बात है? उसने जो कुछ लिखा है उससे तो रोने की जगह ख़ुश होना चाहिए।'

बात ठीक थी, पर काउण्टेस, काउण्ट और नटाशा ने उसकी ओर भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से देखा। काउण्टेस ने सोचा 'यह किस पर रूठी है?'

——

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

विषय संख्या 8.3 / 42 आगत नं०

लेखक

शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या
22 DEC 1988			
8021	80		

बारहवाँ परिच्छेद

नैपोलियन के साथ रूस का युद्ध समाप्त हुआ और उसमें रूस की हार हुई। आस्ट्रेलिज़ के युद्ध की समाप्ति पर १८०६ के आरम्भ में निकोलस रोस्टोव छुट्टी लेकर घर आया। उसका सरल अफ़सर डेनीज़ोव भी घर जा रहा था। रोस्टोव ने कह सुनकर उसे कुछ दिन मास्को में अपने घर ठहरने को राज़ी कर-लिया। डेनीज़ोव ने अन्तिम पड़ाव पर अपने एक साथी के साथ दो बोतलें ख़ाली कर डाली थीं और उस समय से वह बराबर स्लेज में बेहोश लेटा हुआ था। उधर ज्यों-ज्यों स्लेज मास्को के निकट पहुँचती जाती थी, त्यों-त्यों रोस्टोव की उत्सुकता भी बढ़ती जाती थी।

घर के हॉल में वृद्ध माइकेल सीने के बल सोया पड़ा था। प्रोकोफ़ी नामक अर्दली—जो इतना बलवान् था कि एक गाड़ी को पीछे से उठा सकता था—अपने स्लीपरों की मरम्मत कर रहा था। उसने दरवाज़े की ओर निगाह उठाई और उसकी निद्रित मुद्रा क्षण भर में विस्मयोल्लासपूर्ण मुद्रा के रूप में बदल गई। उसने अपने स्वामी को पहचानकर चिल्लाकर कहा—'हे भगवान्! छोटे काउण्ट! ख़ूब पहुँचे मेरे मालिक!' और इतना कहकर प्रोकोफ़ी उत्तेजना से काँपता हुआ ड्रायंग रूम की ओर दौड़ा—शायद युवक काउण्ट के आगमन की सूचना देने के लिए—पर

उसने तत्काल अपना इरादा बदल दिया और वापस लौटकर रोस्टोव का कन्धा चूमा।

रोस्टोव ने अपना कंधा हटाते हुए कहा 'सब राज़ी-ख़ुशी हैं न?'

'जी हाँ, ईश्वर का धन्यवाद! अभी भोजन कर चुके हैं। पर पहले हमें तो देखकर अपनी आँखें ठंडी करने दीजिए!'

'तो सब कुछ ठीक है न?'

'जी हाँ, परमात्मा की दया है!'

रोस्टोव इस समय डेनीज़ोव की बात बिल्कुल भूल गया था। वह अपने आगमन की सूचना किसी और से नहीं दिलाना चाहता था, अतः उसने अपना ओवरकोट उतार फेंका और दबे पाँव अँधेरे नाचघर में घुसा। सब कुछ बदस्तूर था—वही ताश खेलने की मेज़ें और वही फ़ानूस। पर किसी ने उसे आख़िर देख ही लिया और वह अभी ड्रायंग रूम में न पहुँच पाया था कि बग़ल के दरवाज़े से कोई चीज़ बिजली की तरह दौड़कर उससे लिपट गई और उसका लगातार चुम्बन करने लगी। इसके बाद इसी तरह का एक दूसरा, और फिर तीसरा जीव बग़ल के दरवाज़ों से निकला। आलिंगनों, चुम्बनों, चीख़ों और हर्षाश्रुओं का तूफ़ान आ गया। रोस्टोव पहचान न सका कि इनमें कौन उसके पिता हैं, कौन नटाशा है, और कौन पीटिया है। हर एक एक ही समय में चीख़ता-चिल्लाता, बातचीत करता और चुम्बन करता। पर अभी उसकी माँ वहाँ न आई थीं। रोस्टोव ने यह बात देखी।

'और मुझे कानोंकान ख़बर तक न हुई......निकोलस......मेरी आँखों के तारे !'

'हमारे कोलिया भाई साहब आ पहुँचे...और इनकी सूरत कैसी बदल गई है !...अरे, रोशनी लाओ !...चाय !...'

'और मेरा तो चुम्बन करो !'

'और मेरा भी तो !'

सोनिया, नटाशा, पीटिया, अन्ना मिखायलोव्ना, वीरा और वृद्ध काउण्ट—सब एक सिरे से उसका आलिंगन कर रहे थे। नौकर-चाकर भी इकट्ठे होकर आह-ऊह कर रहे थे।

पीटिया निकोलस के पैरों से लिपटा हुआ चिल्लाता रहा 'और मेरा भी तो !'

नटाशा ने निकोलस के मुँह को अपनी ओर खींचकर उसे चुम्बनों से ढकने के बाद उसका कोट दृढ़ता से पकड़ लिया और बड़े तीव्र स्वर से चीख़-चीख़कर एक बकरी की तरह कूदना शुरू कर दिया।

चारों ओर स्नेहपूरित नेत्र हर्षाश्रुओं से भरे हुए थे, और चारों ओर ओठ एक चुम्बन पा जाने की अभिलाषा कर रहे थे। सोनिया भी खड़ी थी। पर रोस्टोव के नेत्र इस समय भी किसी को खोज रहे थे। काउण्टेस अभी तक नहीं आई थीं। पर अब पैरों की आहट सुनाई पड़ी, इतनी जल्दी-जल्दी कि वह उसकी माता के पैरों की होनी असम्भव सी थी।

पर थीं काउण्टेस ही। वह एक नया गाउन पहने हुए थीं। सबने रोस्टोव को छोड़ दिया और वह उनकी तरफ़ दौड़ा। जब

दोनों मिले तो उन्होंने अपना सिर उसकी छाती पर रख दिया और सुबकियाँ लेने लगीं। वह अपना मुख उठा न सकीं, बल्कि उसे रोस्टोव की हुसारवर्दी में और भी ज़ोर से छिपा लिया। डेनी-ज़ोव भी कमरे में आ गया था और एक कोने में सबसे अलग खड़ा था। यह दृश्य देखकर वह अपने नेत्र पोंछने लगा।

उसने काउण्ट की प्रश्नात्मक दृष्टि का उत्तर देते हुए कहा—'वैसिली डेनीज़ोव, आपके पुत्र का मित्र।'

काउण्ट ने फ़ौरन उसका आलिंगन और चुम्बन किया और कहा 'स्वागत! निकोलस ने तुम्हारे बारे में लिखा था। नटाशा, वीरा, देखो! यह डेनीज़ोव हैं!'

सारे उल्लसित मुख डेनीज़ोव की भद्दी आकृति की ओर फिर गये।

नटाशा तो खुशी के मारे चिल्ला उठी। उसने उछलकर डेनी-ज़ोव की गर्दन में हाथ डाल दिया और चुम्बन करते हुए कहा 'प्यारे डेनीज़ोव!' इस अद्भुत व्यापार से सब अचम्भे में आ गये। डेनीज़ोव भी लजा गया, पर वह मुस्कराया, और उसका हाथ पकड़कर उसने चूमा।

सोनिया रोस्टोव की रिश्ते की बहिन लगती थीं और एक दूसरे से प्रेम करते थे। पर रोस्टोव के माता-पिता रोस्टोव का विवाह किसी धनी परिवार में करना चाहते थे।

दूसरे दिन जब रोस्टोव ड्रायङ्ग रूम में सोनिया के सामने पहुँचा तो उसका चेहरा लजा गया। वह यह न जान सका कि

उससे किस ढङ्ग का बर्ताव करना चाहिए। पिछली रात दोनों ने मिलन के प्रारम्भिक उल्लास में एक-दूसरे का चुम्बन किया था, पर अब दोनों समझ रहे थे कि यह होना सम्भव नहीं है। रोस्टोव को प्रतीत हुआ कि सब कोई—जिनमें उसकी माँ, और बहनें भी शामिल हैं—उसकी ओर—यह देखने के लिए, कि देखें यह इसके साथ किस तरह व्यवहार करता है—एकटक दृष्टि लगाये हुए हैं। उसने उसका हाथ पकड़कर चूमा और 'तू सोनिया' नहीं—'तुम सोनिया' कहा; पर उसी समय दोनों के नेत्र मिले और मूक भाषा में बोले 'तू', और नेत्रों में ही एक-दूसरे ने चुम्बन कर लिया।

जब सब चुप हो गये तो वीरा ने अवसर देखकर कहा—'कैसे अचरज की बात है कि अब निकोलस सोनिया एक-दूसरे से तुम कहते हैं, और अजनबियों की तरह मिलते हैं।'

वीरा की बात ठीक थी (जिस प्रकार उसकी अन्य सब बातें ठीक होती थीं) पर उसने सबको क्षुब्ध कर दिया (जिस प्रकार उसकी अन्य सब बातें दूसरों को क्षुब्ध कर देती थीं)। और न केवल सोनिया, निकोलस और नटाशा ही, बल्कि वृद्धा काउण्टेस तक—जो इस प्रेम-व्यापार से हमेशा सशङ्कित रहती थीं, क्योंकि इससे निकोलस के किसी अमीर घराने में शादी होने की सम्भावना को आघात पहुँचने की आशङ्का थी—एक लड़की की तरह लजा उठीं।

रोस्टोव को उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ जब डेनीज़ोव बालों में तेल डाले, इत्र लगाये, नई वर्दी पहने, और वैसी ही

सजीवता धारण किये जैसी उसने युद्ध के दिन धारण की थी, कमरे में दाखिल हुआ। और रोस्टोव उससे जितनी आशा रखता था उसने महिलाओं और पुरुषों के साथ उससे अधिक सहृदयता का व्यवहार किया।

तेरहवाँ परिच्छेद

मार्च के आरम्भ में वृद्ध काउण्ट इलिया रोस्टोव आस्ट्रेलिज़ युद्ध के वीर नायक प्रिंस बैग्रेशन के सम्मान में इँगलिश क्लब में सहभोज देने में बेतरह संलग्न थे। वह अपना ड्रेसिंग गाउन पहने हॉल में टहलते हुए नौकरों को तरह-तरह के आर्डर दे रहे थे। परेशान थे। इसी समय द्वार पर पैरों की हल्की चाप सुनाई दी, और दूसरे ही क्षण युवक काउण्ट—सुन्दर, स्वस्थ, और मास्को के नागरिक जीवन के कारण बहुत कुछ अलस—हॉल में घुसा।

काउण्ट ने मुस्कराते हुए, मानो वह अपने पुत्र की उपस्थिति में कुछ व्यग्र से हो गये हों, कहा—'आओ बेटे! मेरा दिमाग़ तो चक्कर खाने लगा! तुम अपने बुड्ढे बाप की मदद न करोगे? कुछ गाने-बजानेवालों का भी इन्तज़ाम चाहिए। आर्चेस्ट्रा मेरा निजी रहेगा, पर कुछ नाचनेवालों को बुला लिया जाय तो कैसा? तुम सिपाही लोग इस बात को पसन्द करते हो न?'

पुत्र ने मुस्कराकर कहा—'सचमुच पापा, मेरे ख़याल में तो जब प्रिंस बैग्रेशन ने शन ग्रेबर्न की लड़ाई की तैयारी की थी, तब भी उन्हें इतनी परेशानी न हुई होगी जितनी आपको हो रही है।'

काउण्ट ने कृत्रिम क्रोध धारण किया। बोले 'बातें बनानी तो आती हैं, ज़रा ख़ुद तो करके देखो!'

इतना कहकर काउण्ट ने हर्ष के साथ अपने पुत्र के हाथ पकड़े और कहा—'बस मुन्ना, अब पकड़ लिया, अब कहाँ भाग सकते हो! अच्छा सुनो, एक स्लेज ले जाओ और बैज़ूखोव के यहाँ जाकर कहो—"काउण्ट इलिया ने आपसे कुछ स्ट्राबेरी और नाशपाती भेजने को कहा है।" वह वहाँ आजकल मौजूद नहीं हैं, इसलिए भीतर प्रिंसेज़ों के पास चले जाना, और वहाँ से रसगुल्मा के पास जाना और इल्युश्का को बुला लाना। यह काउण्ट ओलोर्व के यहाँ नाच चुका है। तुम्हें तो याद ही होगा। सफ़ेद कोट पहने हुए था।'

निकोलस ने हँसते हुए कहा—'और अगर आप कहें तो कुछ नाचनेवालियों को भी बुला लाऊँ?'

इसी अवसर पर बिना किसी आहट के, सतर्क पर धर्मभीरु, मुद्रा बनाये अन्ना मिखायलोव्ना ने प्रवेश किया। यद्यपि वह काउण्ट से उनके ड्रेसिंग गाउन में प्रायः रोज़ भेंट करती, पर काउण्ट प्रत्येक ऐसे अवसर पर व्यग्र हो उठते और अपने गाउन के लिए क्षमा प्रार्थना करते।

अन्ना मिखायलोव्ना ने अपने नेत्र विनीत भाव से बन्द करते हुए कहा—'नहीं, प्रिय काउण्ट, कोई हर्ज नहीं है। पर काउण्ट बैज़ूखोव के यहाँ मैं ख़ुद जाऊँगी। पीरी आ पहुँचा है, और अब हमें जिस चीज़ की ज़रूरत होगी, मिल जायगी। मुझे उससे ऐसे भी मिलना है और—वैसे भी। उसने मेरे पास बोरिस का पत्र भेजा है। ईश्वर का धन्यवाद! बोरिस अमले में आ गया।'

काउण्ट को बड़ी .खुशी हुई कि अन्ना मिखायलोव्ना भी उनका हाथ बटा रही है, और उसके लिए बन्द गाड़ी जोतने की आज्ञा दी।

उन्होंने कहा 'और बैज़ूखोव से दावत में शरीक होने को कह देना। मैं उनका नाम भी शामिल किये लेता हूँ। उनकी स्त्री तो उनके साथ ही है न ?'

अन्ना मिखायलोव्ना ने अपनी निगाह ऊपर की ओर उठाई और उसके चेहरे पर शोक के चिह्न अङ्कित हो गये। उसने कहा — आह, प्रिय काउण्ट, पीरी पर बड़ी मुसीबत आ पड़ी है! अगर जो कुछ हमने सुना है वह सच है तो कहना पड़ेगा कि बड़ी भयानक बात हो गई! हम सब उसकी .खुशी में .खुशी मना रहे थे, यहाँ तक तो किसी का भी ध्यान तक नहीं गया था! और युवक बैज़ूखोव की आत्मा कैसी विशाल है! सोने में तोलने योग्य है! मुझे उस पर बड़ी दया आती है, और मैं उसे धीरज दिलासा देने की भरसक चेष्टा करूँगी।'

वृद्ध और युवक, दोनो काउण्ट बोल उठे —'क्यों, क्यों, क्या बात हुई ?' अन्ना मिखायलोव्ना ने लम्बी साँस ली।

उसने भेद भरे स्वर में धीरे से कहा—'सुनने में आया है, मेरी इवानोव्ना के लड़के डोलोखोव के कारण पीरी की स्त्री की बड़ी बदनामी हुई है। पीरी ने उसे पीटर्सबर्ग में अपने घर दावत दी, और फिर...अब वह यहाँ आई है तो वह कलमुँहा यहाँ भी आ मौजूद हुआ!' अन्ना मिखायलोव्ना पीरी के साथ समवेदना प्रकट करना चाहती थी, पर 'कलमुँहा' शब्द उच्चारण करने के

लहजे और क्षीण मुस्कराहट से उल्टे डोलोखोव से उसकी सहानुभूति प्रकट हुई। 'कहते हैं, इस विपत्ति से पीरी का जी बिल्कुल टूट गया है!'

'हे भगवान्! पर फिर भी उन्हें दावत दे देना। ज़रा उनकी वहाँ तबीयत बहलेगी। बड़ी भारी दावत होगी।'

× × ×

दूसरे दिन, तीन मार्च को, एक बजे दिन के, ढाई सौ इँगलिश क्लब के सदस्य और पचास अतिथि अपने प्रधान अतिथि, आस्ट्रेलिज़ युद्ध के नायक, की भोजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय रूसी विजय पर विजय पाने के इतने अभ्यस्त थे कि इस पराजय की ख़बर सुनकर बहुतों ने उस पर विश्वास ही नहीं किया, और बहुत से उसका सविस्तर कारण जानने की इच्छा करने लगे। रूसी पराजय की इस अश्रुतपूर्व, अविश्वसनीय और असम्भव घटना के लिए कारण खोज लिये गये, और फिर हर एक बात साफ़ हो गई और सब कोई इसी घटना के इन्हीं कारणों की पुनरावृत्ति करने लगे। और ये कारण थे आस्ट्रिया का विश्वासघात; कमसरियट का निकम्मापन; फ्रेंच मेनलेंजीरन और पोलेण्ड के प्रिज़बिज़बिज़्की का विश्वासघात; प्रधान बलाध्यक्ष कुटूज़ोव की अयोग्यता (और यह बात कानाफूँसी में कही जाती); और सम्राट् की युवावस्था और अनुभवहीनता (उन्होंने बहुत से निकम्मे और नगण्य आदमियों पर विश्वास किया)। पर इस बात को सब ने एकमत से स्वीकार किया कि जहाँ तक रूसी सेना का सम्बन्ध था,

सिपाही बहादुरी में अपना सानी नहीं रखते। सिपाही, अफ़सर और जनरल—सब वीर थे—पर वीरों का सरताज प्रिंस बैग्रेशन था जिसने शोन ग्रेबन में अतुल वीरता का परिचय दिया था। बोल्कोन्सकी के विषय में किसी ने कुछ नहीं कहा। वह युद्धक्षेत्र से लापता हो गया था और सबकी धारणा थी कि वह लड़ाई में काम आया। जो लोग उसे अंतरंग रूप से जानते थे उन्होंने शोक प्रकट किया कि वह अपनी गर्भिणी-स्त्री को विक्षिप्त पिता के सहारे छोड़कर मर गया।

अतिथियों में रोबदार मुद्रा के लोग थे जो अपनी अपनी छटी हुई जगहों पर और छटे हुए लोगों के साथ बैठे। कुछ युवक अतिथि थे जिनमें डेनीज़ोव, रोस्टोव, डोलोखोव (जिसने गत युद्ध के बाद अपना पुराना पद प्राप्त कर लिया था) थे। इन युवा लोगों के, विशेषकर सैनिक युवकों के, चेहरों से अपने बड़े बूढ़ों के लिए कृपापूर्ण आदर भाव टपकता था, मानो वे कह रहे हों 'हम आपका आदर-सम्मान करने को उसी तरह तैयार हैं, पर यह आप याद रखिए कि भविष्य हमारे हाथ में है।'

पीरी भी—जिसने अपनी पत्नी के आज्ञानुसार बाल बढ़ाने आरम्भ कर दिये थे और चश्मा उतार दिया था—फ़ैशनेबिल कपड़े पहने हुए, पर क्षुब्ध और उदास—इधर-उधर घूम रहा था। अन्य स्थानों की तरह यहाँ भी वह लक्ष्मी की अधीनता के वातावरण से घिरा हुआ था।

प्रिंस बैग्रेशन ने बिना तलवार और बिना टोपी के—जो क़ायदे के अनुसार अर्दली ने बाहर ले ली थी—प्रवेश किया। काउण्ट इलिया रोस्टोव ने उनके सामने चाँदी की तश्तरी पेश की जिस पर उनकी प्रशंसा में कविता खुदी हुई थी। प्रिंस बैग्रेशन ने चारों ओर देखा—मानों सहायता की याचना कर रहा हो; पर जब उसने लोगों की दृष्टि से जाना कि उसे यह स्वीकार करना ही पड़ेगा तो उन्होंने काउण्ट के हाथ से तश्तरी लेकर उनकी ओर भर्त्सना-पूर्ण दृष्टि से देखा।

निकोलस रोस्टोव डेनीज़ोव और अपने नये दोस्त डोलोखोव के साथ मेज़ के मध्य भाग में बैठा था। इनके सामने पीरी और नेस्विट्स्की बैठे थे। काउण्ट इलिया रोस्टोव और अन्य मेम्बर बैग्रेशन के सामने बैठे, और इस प्रकार मास्को की सम्भ्रान्त जनता ने प्रिंस बैग्रेशन का सम्मान किया। पीरी ने हमेशा की तरह आज भी खूब उत्सुकता के साथ खाया पिया। पर जो उसे अच्छी तरह जानते थे, उनसे यह बात छिपी न रह सकी कि उसमें एक भारी परिवर्तन हुआ है। वह बराबर चुप रहा और जल्दी-जल्दी पलक मारते हुए या घूर-घूरकर देखते हुए, या बिल्कुल लापरवाही के साथ किसी तरफ़ शून्य दृष्टि किये, बराबर अपनी नाक में अँगुली घुसेड़ता रहा। उसका चेहरा शान्त और विषण्ण था। ऐसा मालूम पड़ता था मानो वह सारे जन-कोलाहल से बिल्कुल निर्लिप्त बैठा हो, उसे कुछ दिखाई या सुनाई न पड़ रहा हो, और मानो वह किसी दूसरी ही क्षोभकारिणी समस्या की गुत्थी

सुलझाने में लगा हुआ हो। इस समय वह डोलोखोव की ओर दृष्टिपात तक करने में भयभीत हो रहा था। जितनी बार उसकी निगाह संयोग से डोलोखोव की सुन्दर, उद्दण्डतापूर्ण आँखों से मिली, उतनी ही बार उसके हृदय में कुछ भीषण और पैशाचिक सी प्रवृत्ति प्रबलतर होने लगी, और उसने तत्काल मुँह फेर लिया। उसे सहजभाव से याद आया कि किस प्रकार डोलोखोव गत युद्ध के बाद—जिसमें उसने अपना पहला पद पूरी तरह प्राप्त कर लिया था—पीटर्सबर्ग में उसके घर आया था। वह पीरी की मैत्री से लाभ उठाकर सीधा उसके पास पहुँचा था, और पीरी ने उसे अपने घर रहने को स्थान और ख़र्च करने को रुपया दिया था। पीरी को याद आया कि किस प्रकार उस मकान में हैलेन ने डोलोखोव के रहने को मुस्कराते हुए नापसन्द किया था, और किस प्रकार डोलोखोव ने उसके सामने उसकी पत्नी के रूप की व्यंग्य के साथ प्रशंसा की थी। किस प्रकार उसने उस समय से दोनों को अकेले पल भर के लिए नहीं छोड़ा था।

अब डोलोखोव, डेनीजोव और रोस्टोव उसके सामने बैठे थे और हर्षाकुल दिखाई देते थे। रोस्टोव अपने दोनों साथियों के साथ वार्तालाप कर रहा था, जिनमें से एक ज़ोरदार हुसार था, और दूसरा एक बदनाम अत्याचारी और व्यभिचारी था; और बीच-बीच में वह पीरी की ओर भी व्यंग्य-निहित दृष्टि से देख लेता था। पीरी अपनी लापरवाही, संलग्नता और भारी-भरकमपन के कारण औरों से स्पष्ट ही विभिन्नता स्थापित करता था।

जिस समय सम्राट् का स्वास्थ्य पान किया गया तो पीरी अपनी ही चिन्ताओं में संलग्न हुआ बैठा रहा; उठकर गिलास ऊँचा नहीं किया।

रोस्टोव ने उत्साहपूर्ण क्रुद्ध नेत्रों से देखते हुए ज़ोर से कहा—'आप क्या कर रहे हैं? आप के कानों में आवाज़ नहीं आ रही है? सम्राट् महोदय का स्वास्थ्य पान!'

पीरी ने लम्बी साँस ली, वह चुपचाप उठा और गिलास ख़ाली करके दूसरों के अपनी-अपनी जगहों पर बैठने की बाट जोहने लगा, और फिर रोस्टोव की ओर फिरकर मुस्कराते हुए बोला—'और मैंने तुम्हें अभी तक नहीं पहचाना था!' पर रोस्टोव दूसरी ओर संलग्न था; वह चिल्ला रहा था 'हुर्रे!'

डेनीज़ोव ने रोस्टोव से कहा—'देखो, वह तुम्हारी जान-पहचान के हैं, क्या कह रहे हैं, सुनो।'

रोस्टोव बोला—'अजी गोली मारो, पूरा काठ का उल्लू है!'

डोलोखोव ने कहा—'भई ख़ूबसूरत औरतों के ख़ाविंदों से तो ख़ूब जान-पहचान बढ़ानी चाहिए।'

पीरी उनकी बातचीत का एक भी शब्द नहीं समझ सका, पर वह यह अवश्य जान गया कि वे उसी के विषय में वार्त्तालाप कर रहे हैं। उसका चेहरा लाल हो उठा और उसने मुँह फेर लिया।

डोलोखोव ने कहा—'यह सुन्दर स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए है!' और वह गम्भीर मुद्रा के साथ—यद्यपि उसके ओठों के दोनों कोनों पर मुस्कराहट विराज रही थी—अपने हाथ का गिलास ऊँचा

करके पीरी की ओर मुड़ा। उसने फिर कहा—'पीरी, यह सुन्दर स्त्रियों और उनके प्रेमियों के स्वास्थ्य के लिए है !'

पीरी ने डोलोखोव की बात का उत्तर दिये बिना, नीची निगाह किये, अपना गिलास ख़ाली कर दिया। अर्दली कुटूज़ोव की कविता की छपी हुई प्रतियाँ चारों ओर बाँटता फिर रहा था। उसने एक प्रति पीरी के सामने भी प्रमुख अतिथि की हैसियत से रक्खी। पीरी उसे उठाने के लिए बढ़ा ही था कि चट डोलोखोव ने मेज़ पर झुककर उसे उसके हाथ में से छीन लिया और पढ़ना आरम्भ कर दिया। पीरी ने डोलोखोव की ओर देखा, और फिर नीचे निगाह की, और यकायक वही भीषण और पैशाचिक प्रवृत्ति उसके हृदय में उठी और उसने प्रबलतम रूप धारण कर लिया। उसने अपना सारा भारी भरकम शरीर मेज़ पर झुका दिया और चिल्लाकर कहा—'तुम्हारी इतनी मजाल !'

इस आवाज़ को सुनकर, और यह देखकर कि वह किसके लिए कही गई है, नेस्विट्स्की और उसके आपपास के और आदमियों ने बेज़ूखोव की ओर सशंकित नेत्रों से देखा। उन्होंने भीत स्वर में धीरे-धीरे कहा—'नहीं ! क्या कर रहे हो ? जाने भी दो !'

डोलोखोव ने पीरी की ओर अपने स्वच्छ, उल्लासपूर्ण और निर्मम नेत्रों से देखा, और वह इस ढंग से मुस्कराया मानो वह कह रहा हो—'बस, यही तो मैं चाहता था !'

उसने स्पष्ट स्वर में कहा—'तुम्हें यह नहीं मिलेगी !'

पीली का रंग पीला पड़ गया और ओठ काँपने लगे; उसने वह प्रतिलिपि उसके हाथ से छीन ली और चिल्लाकर कहा 'तुम...! तू...हरामज़ादा कहीं का ! मैं तुझे चुनौती देता हूँ।' और अपनी कुर्सी पीछे खसकाकर वह उठ खड़ा हुआ।

और ज्यों ही उसने ये शब्द मुँह से निकाले कि उसे बोध हुआ कि उसकी स्त्री के अपराध की समस्या—जो उसे दिन भर पीड़ित करती रही थी—यकायक सुलझ गई है और वह अपराधिनी प्रमाणित हुई है।

दूसरे दिन द्वन्द्व युद्ध था। सुबह को आठ बजे पीरी और नेस्विट्स्की गाड़ी में बैठकर सोकोल्निकी के जङ्गल में पहुँचे। वहाँ रोस्टोव और डेनीज़ोव के साथ डोलोखोव पहले से ही तैयार था। पीरी की आकृति से ऐसा मालूम होता था कि वह किसी ऐसे विचार में तन्मय है जिसका इस द्वन्द्व युद्ध से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसका श्रान्त चेहरा फीका पड़ा हुआ था। यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह रात भर नहीं सो सका था। पीरी ने सोचा। 'शायद उसकी जगह मैं होता तो मैं भी यही करता। निश्चय ही मैं भी यही करता; फिर यह द्वन्द्व युद्ध, यह हत्या, क्यों ? दो बातों में से एक ही बात हो सकती है ! या तो मैं उसे मार डालूँगा, या वह मेरे माथे, घुटने या कुहनी में गोली मार देगा। क्या मैं यहाँ से भागकर कहीं अपना मुँह नहीं छिपा सकता ?' पर जिस समय उसके दिमाग़ में इस प्रकार के विचार आ रहे थे, उसने अन्यमनस्कतापूर्वक शान्ति-संयम के साथ जिससे

दूसरों का मन अकारण ही उसका आदर करने को चाहता था—पूछा :

'कहो, सब ठीक है ? कितनी देर है ?'

सब प्रबन्ध हो गया, दूरी जताने के लिए बर्फ़ में तलवारें गाड़ दी गईं, और पिस्तौलों के घोड़े चढ़ा दिये गये।

डोलोखोव बोला 'अच्छा, फिर, शुरू करो !'

पीरी ने उसी प्रकार मुस्कराकर कहा 'अच्छी बात है !'

परिस्थिति भयङ्कर रूप धारण करती जा रही थी। यह साफ़ ज़ाहिर था कि जिस मामले की शुरुआत इतनी बात की बात में की गई थी, अब उसका टालना असम्भव है और अब वह आदमी की इच्छा से परे हो गया है। डेनीज़ोव चिह्नित स्थान पर पहुँचा और बोला :

'दोनों दुश्मन आगे क़दम बढ़ायें। दोनों अपने पिस्तौल सम्हालें और तीन कहने पर आगे बढ़ना शुरू करें।'

उसने रुष्ट भाव से चिल्लाकर कहा 'एक ! दो ! तीन !' और आप अलग हट गया।

दोनों प्रतिद्वन्द्वी चिह्नित मार्ग पर आगे बढ़ने लगे और दोनों को कुहासे में एक-दूसरे की शक्ल अधिकाधिक साफ़ दिखाई देने लगी। उन्हें निषिद्ध स्थान तक पहुँचते-पहुँचते किसी भी समय फ़ायर करने का अधिकार था। पीरी बहककर बर्फ़ में जा पड़ा। उसने पिस्तौल अपने शरीर से एक हाथ की दूरी पर पकड़ रक्खी थी, मानों उसे यह आशङ्का हो कि कहीं वह अपने

ही गोली न मार ले। उसने अपना बाँया हाथ सावधानता के साथ पीछे की ओर फैलाया जिससे वह दाहिने हाथ को सहारा दे सके; साथ ही वह यह भी जानता था कि ऐसा उसे नहीं करना चाहिए। छ: क़दम चलने के बाद, जब उसका पैर चूक गया तो, उसने अपने पैरों पर निगाह डाली, और फिर शीघ्रता से डोलो-खोव की ओर देखकर बताये हुए ढङ्ग से घोड़े पर अँगुली दबा दी। उसे इतने ज़ोर की आवाज़ सुनने की आशा न थी, इस-लिए वह काँप गया, और फिर अपनी इस भीरुता पर स्वयं ही मुस्कराने लगा। पिस्तौल का धुआँ कुहासे से और भी गहरा हो गया और कुछ क्षण तक पीरी को कुछ दिखाई न पड़ा। पर, जैसी वह आशा करता था, पिस्तौल की दूसरी आवाज़ उसे सुनाई न दी। उसे सिर्फ़ डोलोखोव के द्रुतगामी पैरों की आहट सुनाई दी, और फिर धुएँ में उसका शरीर दिखाई पड़ा। डोलोखोव का चेहरा पीला पड़ा हुआ था। रोस्टोव ने शीघ्रता से उसके पास जाकर कुछ कहा।

डोलोखोव ने अपने दाँतों में से कहा, 'न...हीं! अभी दम बाक़ी है!' और लड़खड़ाता हुआ गड़ी हुई तलवार के पास आकर बर्फ़ में गिर पड़ा। उसके बायें हाथ से ख़ून चू रहा था। उसने कोट से हाथ पोंछ लिया और उसका सहारा लिया। उसका चेहरा सफ़ेद, तेजहीन और निर्जीव हो गया था। उसने कहने की कोशिश की 'मेहरबानी करके।...' पर वाक्य पूरा न कर सका। अंत में उसने प्रयत्न करके जल्दी से कहा 'मेहरबानी करके आगे बढ़िये!'

पीरी बड़ी कठिनता से रुलाई रोकता हुआ शीघ्रता से उसकी ओर झपटा और निषिद्ध स्थान पर पैर रखने ही वाला था कि डोलोखोव ने चिल्लाकर कहा 'अपनी जगह पर रहिए !' और पीरी उसका मतलब समझकर अपनी तलवार के पास खड़ा हो गया। दोनों में केवल दस क़दम का फ़ासला रह गया था। डोलोखोव ने अपना सिर बर्फ़ पर रख दिया और पिस्तौल उठाकर निशाना साधा। उसी समय पिस्तौल की आवाज़ आई और फिर डोलो-खोव का रुष्ट चीत्कार सुनाई पड़ा 'चूक गया !' और वह असहायावस्था के साथ बर्फ़ पर औंधे मुँह पड़ गया।

पीरी ने अपना माथा ज़ोर से पकड़ा, और बर्फ़ को खूदते हुए अपने मुँह से असम्बद्ध और अस्पष्ट शब्द निकालता हुआ मुड़ पड़ा। उसने अपना मुँह फुलाते हुए कहा, 'मूर्खता !...बेवकूफ़ी ! मौत !...झूठ !'

नेस्विट्स्की उसे पकड़कर घर ले गया। रोस्टोव और डेनीज़ोव आहत डोलोखोव को गाड़ी में सवार कराकर ले गये।

— —

चौदहवाँ परिच्छेद

इधर कुछ दिनों से पीरी अपनी स्त्री को बहुत कम अकेली पाता था। पीटर्सबर्ग और मास्को, दोनों जगह उसका घर मुलाक़ातियों से हर दम भरा रहता था। द्वंद्व युद्ध के बाद की रात को वह अपने शयनागार में नहीं गया, बल्कि अपने पिता के कमरे में—उसीमें जिसमें काउण्ट बैज़ूखोव ने देह त्याग किया था—सोफ़ा पर लेटा हुआ सब कुछ भुलाकर सोने की चेष्टा करने लगा, पर सफल न हो सका। उसके हृदय और मस्तिष्क में विचारों, भावों और स्मृतियों की ऐसी प्रबल बाढ़ आई कि सोना तो क्या, वह लेटा भी न रह सका, और उठकर कमरे में इधर-उधर चहल-क़दमी करने लगा।

उसने सोचा—'अनातोले हैलेन के पास आकर उससे रुपया उधार माँगता था और उसके नग्न कंधों का चुम्बन किया करता था। वह उसे रुपया तो न देती थी, पर चुम्बन कर लेने देती थी। उसके पिता ने हँसी-हँसी में उसमें डाह उत्पन्न करने की चेष्टा की थी; और इस पर उसने शान्त भाव से मुस्कराकर कहा था कि वह ऐसी बुद्धिहीन नहीं है जो डाह करने लगे। उसने मेरे विषय में कहा—"उनके जो मन में आये वह करें।" एक दिन मैंने उससे पूछा कि उसे गर्भ के तो कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, और वह घृणाव्यंजक ढंग से हँसी और बोली कि वह ऐसी मूर्ख नहीं है

जो सन्तान की अभिलाषा करे। उसने कहा था—'मैं तुम्हारे औरस से किसी सन्तान को जन्म न दूँगी।'

इसके बाद उसे उसके विचारों के भद्देपन और उजड्डपन और शब्दों के गन्देपन का ध्यान आया, यद्यपि उसे अत्यन्त संभ्रान्त वर्ग में शिक्षा-दीक्षा मिली थी।

रात को उसने अपने वैलेट को बुलाया और पीटर्सबर्ग के लिए सामान कसने की आज्ञा दी। वह यह सोच भी न सका कि हैलेन से किस प्रकार बात कर सकेगा। उसने निश्चय किया कि वह वहाँ से तड़के ही रवाना हो जायगा और उसके नाम एक पत्र लिखकर छोड़ जायगा कि वह उससे हमेशा के लिए विदा होता है।

जब सुबह को वैलेट चाय लाया तो वह अपने हाथ में खुली किताब पकड़े मसनद पर बेख़बर सो रहा था। जब वह जागा तो थोड़ी देर तक सशंकित मुद्रा से इधर-उधर देखता रहा और यह न समझ सका कि वह कहाँ है।

वैलेट ने पूछा—'काउण्टेस ने मुझे आप से यह पूछने की आज्ञा दी है कि आप उनसे भेंट कर सकेंगे या नहीं।'

पर पीरी इस बात का निश्चय कर ही रहा था कि क्या उत्तर दे, कि काउण्टेस स़फ़ेद पोशाक पहने शान्त, संयत और रोबदार मुद्रा से जिस पर रोष की रेखाएँ भी विद्यमान थीं—स्वयं ही आ मौजूद हुई। वह उस समय तक कुछ न बोली जब तक वैलेट चाय का सामान रखकर कमरे से न चला गया।

इसके बाद उसने घृणाव्यंजक ढंग से पूछा—'हाँ, तो यह क्या तमाशा है ? ज़रा बताओ तो, तुम्हारा इरादा क्या है ?'

पीरी ने अस्पष्ट स्वर में कहा—'मैंने क्या किया ?'

'तो अब आपको बहादुर बनने का शौक़ चर्राया है !—ऐं न ? ज़रा बताओ तो, यह द्वंद्व युद्ध किस लिए हुआ ? इसका मतलब क्या था ? हाँ, बताओ न ?'

पीरी ने मसनद पर करवट ली और मुँह खोला, पर कह कुछ न सका।

हैलेन ने कहना जारी रक्खा—'अगर तुम जवाब नहीं देते तो लो मैं ही बताये देती हूँ। जो कुछ तुमसे कहा जाए उस पर तुम आँख-कान बन्द करके विश्वास कर लेते हो। तुम्हें बताया गया है',...इतना कहकर वह हँसी, 'कि डोलोखोव मेरा यार है,' उसने यार शब्द अपने भद्दे मुँहफट ढंग से इस प्रकार अनायास उच्चारण किया मानो इस शब्द में और शब्दों से कुछ विशेष अर्थ भरा हुआ नहीं है, 'और तुमने उस पर विश्वास कर लिया ! तो इस द्वंद्व युद्ध से तुमने क्या प्रमाणित किया ? इस द्वंद्व युद्ध से क्या प्रमाणित हुआ ? यही न कि तुम बुद्धू हो, तुम मूर्ख हो ? पर इसकी ज़रूरत ही क्या थी ?—अब सारा जगत् इस बात को जान गया। इसका क्या नतीजा होगा ? यही न, कि सारे मास्को में मेरी हँसी उड़ाई जायगी, और लोग कहेंगे कि तुमने शराब के नशे में मस्त होकर एक ऐसे आदमी को चुनौती दी जिससे—ईश्वर जाने क्यों—तुम डाह करते थे,' हैलेन की आवाज़

अधिकाधिक उत्तेजित होती गई; 'और जो हर तरह तुमसे बढ़-कर है...'

'हूँ...हूँ...!' पीरी ने गुर्राकर कहा। उसने तेवर बदले, पर कहा कुछ नहीं! वह केवल निश्चेष्ट भाव से उसकी ओर ताकता रहा।

'और तुमने यह कैसे विश्वास कर लिया कि वह मेरा यार था? क्यों? इसलिए कि मैं उससे हँसती-बोलती थी? अगर तुम उससे अधिक चतुर और अच्छे होते तो मैं तुम्हारे साथ हँसती-बोलती।'

'पर हाथ जोड़ता हूँ...यह बात मेरे सामने मत कहो,' पीरी ने भर्राये हुए स्वर में कहा।

'क्यों न कहूँ? लाख दफ़े कहूँगी। मुझे कहने का अधिकार है, और मैं तुमसे दो टूक बात कहे देती हूँ कि तुम्हारे जैसे पति-वाली स्त्रियाँ अधिक न निकलेंगी जिन्होंने किसी न किसी को यार न बना लिया हो, पर फिर भी मैंने ऐसा नहीं किया।'

पीरी ने कुछ कहने की इच्छा की, और उसकी ओर ऐसी दृष्टि से देखा जिसका वह मर्म न समझ सकी, और फिर नेत्र नीचे कर लिये। अब तक तो मानसिक कष्ट ही था, अब वह भौतिक यन्त्रणा से विकल हो रहा था; उसके सीने पर न मालूम कहाँ का बोझ आ पड़ा था जिससे वह साँस तक कठिनता से ले सकता था। वह जानता था कि इस दारुण वेदना से त्राण पाने के लिए उसे कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए, पर वह जो कुछ करना चाहता वह बड़ा ही भीषण था।

उसने किसी प्रकार निकाल बाहर किया : 'अच्छा होता कि हम अलग हो जाते।'

'अलग हो जाते ? अच्छी बात है, पर पहले मेरे लिए अच्छा सा प्रबंध भी तो कर दो ! अलग हो जाते ! तुमने सोचा होगा कि यह सुनकर डर जायगी !'

पीरी सोफ़ा पर से कूद पड़ा और उसकी तरफ़ लड़खड़ाता हुआ झपटा।

'मैं तुझे मार डालूँगा !' उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा और एक मेज़ की संगमर्मर की सिल उठाकर (उस समय उसके शरीर में अमानुषिक बल आ गया था) उसे उसकी ओर हिलाता हुआ बढ़ा।

हैलेन का चेहरा भयंकर हो उठा; वह चीख़ उठी और कूदकर अलग जा खड़ी हुई। पीरी के हृदय में अपने पिता की प्रकृति ने ज़ोर पकड़ा। उसने सिल अपने हाथ में से पटक दी जिससे वह चकनाचूर हो गई, और अपने हाथ उसकी ओर फैलाये हुए उसके निकट पहुँचकर कहा, 'निकल जा !' और यह उसने इतने भयंकर स्वर में कहा कि उसे सारे भवन के निवासियों ने सुना और सबका कलेजा काँप उठा। यदि हैलेन वहाँ से उसी दम सिर पर पैर रखकर न भागती तो ईश्वर जाने वह क्या कर डालता।

एक हफ़्ते बाद पीरी ने अपनी स्त्री को अपनी सारी जायदाद का अटर्नी बना दिया, और ख़ुद अकेला पीटर्सबर्ग चला गया।

———

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

आस्ट्रेलिज़ के युद्ध और एण्ड्र्यू की मृत्यु का समाचार वाल्ड-हिल्स में पहुँचे दो महीने हो गये और राजदूत के द्वारा भेजे गये सारे पत्र और सारी खोजें करने पर भी उसका शव न मिल सका, न उसका नाम क़ैदियों की सूची में ही पाया जा सका। एक सप्ताह बाद कुटूज़ोव का पत्र आया जिसमें उन्होंने प्रिंस के पुत्र का हाल लिखा था।

कुटूज़ोव ने लिखा—'आप का पुत्र मेरी आँखों देखते—रेजीमेण्ट का नेतृत्व करता हुआ अपने हाथ में झंडा लिये—गिरा, और यह उसके पिता और उसकी मातृ-भूमि के गौरवशाली नाम के अनुरूप ही हुआ।'

जब यथासमय प्रिंसेज़ मेरी आई तो वह अपनी मशीन घुमाने में लगे हुए थे। उन्होंने सदैव के अनुसार कुछ देर सिर उठाकर नहीं देखा।

अकस्मात् वह मशीन घुमाना बन्द करके अस्वाभाविक ढंग से कह उठे—'आह! प्रिंसेज़ मेरी!'

वह प्रिंस के पास पहुँची और उनके चेहरे की ओर देखने लगी, और उसके कलेजे पर आघात-सा लगा। उसकी आँखें भर आईं। उसने अपने पिता के चेहरे की ओर—जो न शोकमग्न दिखाई पड़ता था, न विपत्ति-भार-जर्जर, बल्कि क्रुद्ध और अस्वा-

भाविक दिखाई पड़ता था—देखा और अनुमान किया कि उसके सिर पर कोई बड़ी विपत्ति—इतनी बड़ी जितनी उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं भोगी थी और जिसका सुधार या परिवर्त्तन करना असम्भव था—आनेवाली है, और वह विपत्ति किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु है जिसे वह स्नेह करती है।

विरूपा भद्दी प्रिंसेज़ ने ऐसे सुन्दर शोकावेग और ऐसी आत्मविस्मृति के साथ अपने पिता की ओर देखा कि वह उसकी दृष्टि को सहन न कर सके और उन्होंने सुबकी लेकर मुँह फेर लिया। प्रिंसेज़ ने कातर स्वर में कहा—'पिताजी! एण्ड्रयू!'

'बुरी ख़बर है! न क़ैदियों में है, न मरे हुओं में! कुटूज़ोव ने लिखा है...' और वह इतने तीव्र स्वर में चिल्लाये मानो प्रिंसेज़ को उस चीख़ से वहाँ से भगाना चाहते हों...'मारा गया!'

प्रिंसेज़ न गिरीं, न मूर्च्छित हुई। उसका रंग ज़र्द था, पर इन शब्दों के सुनते ही उसके सुन्दर नेत्रों में किसी प्रकार का आलोक छा गया। ऐसा मालूम पड़ता था मानो एक आनन्द ने—स्वर्गीय आनन्द ने, जिसका इन सांसारिक आनन्दों-विषादों से कोई सम्बन्ध नहीं था—उसके हृदय के शोकावेग को ढक दिया हो। वह अपने पिता का सारा भय भूल गई, उनके पास पहुँची और उनका हाथ पकड़कर एक हाथ से उनकी दुर्बल गर्दन में लटक गई।

उसने कहा—'पिताजी, मेरे पास से हटो मत। हम दोनों को एक साथ रोने दो।'

वृद्ध सज्जन ने अपना चेहरा उसके पास से हटाकर चिल्लाकर कहा—'बदमाश ! पाजी ! सेना को बर्बाद कर रहे हैं, आदमियों को कटवा रहे हैं ! और यह सब बिना वास्ते ! जाओ, जाओ, लीसा से जाकर कहो ।'

जब प्रिंसेज़ मेरी अपने पिता के पास से वापस आई तो नन्हीं प्रिंसेज़ बैठी काम कर रही थी, और उसने उस आन्तरिक शान्ति और उल्लास की दृष्टि से देखा जो केवल गर्भिणी स्त्रियों के लिए ही सम्भव है। यह साफ़ ज़ाहिर था कि उसके नेत्र प्रिंसेज़ मेरी की ओर नहीं देख रहे थे, बल्कि अपने भीतर...एक हर्षपूर्ण और रहस्यमय कार्य-कलाप की ओर दृष्टि डाल रहे थे।

उसने कशीदा हटाकर कुर्सी में लेटते हुए कहा—'मेरी, अपना हाथ लाओ।' इतना कहकर उसने अपनी ननद का हाथ पकड़ा और उसे अपनी कमर के नीचे रक्खा। उसके नेत्र आशा के साथ मुस्करा उठे, नीचे का ओठ उठा और उसी प्रकार शिशु-सुलभ उल्लास के साथ उठा रहा।

प्रिंसेज़ मेरी ने निश्चय कर लिया कि वह यह समाचार उसे न सुनायगी, और अपने पिता को भी राज़ी कर लिया कि वह उसके प्रसव के बाद तक इस भयंकर बज्रपात की सूचना उसे न देंगे।

दासियों के कमरे से हास्य-ध्वनि सुनाई नहीं पड़ रही थी। नौकर अपने हाल में चुपचाप तैयार बैठे थे। आसामियों के क्वार्टरों में सब रात भर जागते रहे और कन्दील और मशालें

बराबर जलती रहीं। वृद्ध प्रिंस अपने कमरे में एड़ियों के बल टहलते रहे। उन्होंने तीखन को मेरी वेगडैनोव्ना के पास पूँछ-ताँछ करने को भेजा। उन्होंने कहा—'सिर्फ उससे यह कहना, "प्रिंस ने पूछा है", और उसका जवाब लाकर बता दो।'

मेरी वेगडैनोव्ना ने सन्देशवाहक की ओर मर्म भरी दृष्टि डालकर कहा 'कहना, दर्द शुरू हो गये हैं।'

तीखन ने जाकर प्रिंस से कह दिया।

प्रिंस ने कहा 'अच्छी बात है!' और दरवाज़ा बन्द कर लिया। तीखन ने फिर कोई आवाज़ न सुनी।

कुछ देर बाद गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनाई दी। प्रिंसेज़ मेरी अपने सिर पर शाल डालकर आगन्तुक से भेंटने दौड़ी। मुलाक़ाती कमरे से गुज़रते हुए उसने देखा कि भवन के सामने एक लेम्पदार गाड़ी खड़ी है। वह बाहर निकलकर सीढ़ियों पर पहुँची। बम के पास एक बत्तीदार लम्प लगा हुआ था जो हवा में झिलमिला रहा था। सीढ़ियों के नीचे फिलिप अर्दली अपने हाथ में लेम्प लिये भीत मुद्रा के साथ खड़ा था। उससे भी नीचे—जहाँ से सीढ़ियाँ शुरू होती थीं—एक व्यक्ति फैल्ट बूट पहने हुए खड़ा हुआ—ऐसे स्वर में जो प्रिंसेज़ मेरी को सुपरिचित सा लगा—कुछ कह रहा था।

उस स्वर ने कहा—'ईश्वर का धन्यवाद! और पिताजी?'

भवन-संरक्षक डेमियन ने कहा—'सो गये।'

इसके बाद उस स्वर ने कुछ और पूछा, डेमियन ने उत्तर दिया, और इसके बाद आगन्तुक शीघ्रता के साथ सीढ़ियों की ओर बढ़ा।

प्रिंसेज़ मेरी ने सोचा 'कहीं एण्ड्र्यू भय्या न हों ? पर ऐसा नहीं हो सकता; हमारे ऐसे भाग्य कहाँ हैं !' और जिस क्षण वह यह सोच रही थी उसी क्षण वह आगन्तुक अर्दली की लालटेन के सामने पहुँचा और प्रिंसेज़ मेरी को बर्फ़ से ढके हुए ओवरकोट पहने एण्ड्र्यू का चेहरा दिखाई पड़ा। हाँ, निश्चय ही वही था—पीला, दुबला-पतला, और सहृदयतापूर्ण, पर उद्विग्न मुद्रा धारण किये। वह सीढ़ियों पर चढ़ा और अपनी बहिन को गले से लगाकर बोला—

'तुम्हें मेरा ख़त नहीं मिला ?' और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये पीछे लौट पड़ा, और फिर डाक्टर के साथ—जो उसे पिछले पड़ाव पर मिल गया था—दुबारा सीढ़ियों पर चढ़ा और दुबारा उसने अपनी बहिन को गले से लगा लिया।

'माशा बहिन ! कैसा विचित्र भाग्य-चक्र है !' और इतना कहकर वह अपना कोट और फैल्ट बूट उतारकर नन्हीं प्रिंसेज़ के कमरे में चला गया।

नन्हीं प्रिंसेज़ सफ़ेद टोपी पहने तकियों के सहारे पड़ी थी (दर्द अभी कम हुआ था)। उसके काले बालों के गुच्छे उसके सूजे हुए और पसीने से तर गालों के चारों ओर फैले हुए थे, सुन्दर मुँह खुला हुआ था, और वह उल्लास के साथ मुस्करा सी

रही थी। प्रिंस एण्ड्र्यू कमरे में घुसा और उसके चेहरे को देखकर रुक गया। उसके प्रोज्ज्वल नेत्र—जिनमें शिशु-सुलभ आशंका और उत्तेजना भरी हुई थी—एण्ड्र्यू के चेहरे पर जम गये, पर उनका भाव वही रहा। उसकी दृष्टि कहती मालूम होती थी—'मैं तुम सबको प्यार करती हूँ, मैंने तुम्हारा कभी कुछ नहीं बिगाड़ा; फिर मुझे ऐसा कष्ट क्यों हो रहा है? मेरी सहायता करो!' उसने अपने पति को देखा, पर वह उसके इस समय प्रकट होने का अर्थ न समझ सकी। प्रिंस एण्ड्र्यू घूमकर उसके सिर के पास पहुँचा और वहाँ उसने उसका माथा चूमा।

'प्रिये!' उसने कहा—और यह शब्द उसकी ज़ुबान से पहली बार ही निकला था। 'ईश्वर की दया से...'

नन्हीं प्रिंसेज़ ने उसकी ओर प्रश्नात्मक और शिशु-सुलभ भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से देखा। उसके नेत्र कह रहे थे—'मैं तुमसे सहायता की आशा करती थी, और मुझे कोई सहायता नहीं मिली; तुमसे भी नहीं मिली!' उसे उसके आगमन पर किसी प्रकार का विस्मय नहीं हुआ; वह यह न जान सकी कि वह आ गया है। उसके आगमन से उसकी दारुण वेदना और उसकी निवृत्ति का कोई संबंध न था। दर्द फिर शुरू हो गये और मेरी बेगडैनोव्ना ने प्रिंस एण्ड्र्यू को कमरे से चले जाने की सलाह दी।

एण्ड्र्यू अपने कमरे में टहलने लगा। चीत्कार-ध्वनि आनी बंद हो गई और इसी प्रकार कुछ क्षण बीत गये। अकस्मात् एक

भयानक चीत्कार—यह चीत्कार नन्हीं प्रिंसेज़ का होना सम्भव नहीं था, वह इस प्रकार नहीं चीख़ सकती थी—सुनाई पड़ा। प्रिंस एण्ड्रयू दौड़कर दरवाज़े के पास पहुँचा। चीत्कार-ध्वनि बंद हो गई और एक बच्चे का रोदन सुन पड़ा।

शुरू-शुरू में एण्ड्रयू ने मन ही मन में कहा 'ये लोग वहाँ बच्चे को क्यों लाये हैं? बच्चा? कैसा बच्चा? वहाँ बच्चा कैसे पहुँच गया? क्या बच्चा पैदा हुआ है?'

फिर अकस्मात् उसकी समझ में उस रोदन का आनन्दपूर्ण अर्थ आ गया; आँसुओं से उसका गला भर आया, और खिड़की की सिल पर कुहनियाँ टेककर वह सुबकियाँ ले-लेकर बच्चों की तरह रोने लगा। दरवाज़ा खुला। डाक्टर आस्तीनें चढ़ाये, बिना कोट के, आ पहुँचा। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और नीचे का जबड़ा काँप रहा था। प्रिंस एण्ड्रयू उसकी ओर मुड़ा, पर डाक्टर ने उसकी ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा और आगे बढ़ गया। एक स्त्री दौड़ती हुई आई, और प्रिंस एण्ड्रयू को देखकर चौखट पर भीत मुद्रा के साथ रुक गई। प्रिंस एण्ड्रयू अपनी स्त्री के कमरे में पहुँचा। वह उसी दशा में जिसमें उसने उसे पाँच मिनट पहले लेटे हुए देखा था मरी हुई पड़ी थी, और उसकी दृष्टि की निर्जीवता और चेहरे के पीलेपन पर भी उसके शिशु-सुलभ सुन्दर चेहरे पर वही पहली मुद्रा विराज रही थी। उसका ऊपर का ओठ उसके नन्हें-नन्हें काले बालों से ढका हुआ था

उसका प्यारा करुणापूर्ण निर्जीव मुखड़ा कहता दिखाई पड़ता था—'मैं तुम सबको प्यार करती हूँ, मैंने तुम्हारा कभी कुछ नहीं बिगाड़ा, और तुमने मेरे साथ क्या कर डाला ?'

कमरे के एक कोने में मेरी बेगडैनोव्ना के कम्पित हाथों में किसी लाल-लाल नन्हीं सी चीज़ ने चीख़-पुकार मचाई।

दो घण्टे बाद प्रिंस एण्ड्र्यू धीरे-धीरे पैर रखता हुआ अपने पिता के कमरे में पहुँचा। वृद्ध सज्जन को पहले से ही सब बातों का पता लग गया था। वह दरवाज़े के पास ही खड़े थे, और दरवाज़ा खुलने की देर थी कि उन्होंने बिना कुछ कहे अपने पुत्र के गले में अपने खुर्दरे दुर्बल हाथ डाल दिये और बच्चे की तरह सुबकियाँ भरना शुरू कर दिया।

तीन दिन बाद नन्हीं प्रिंसेज़ दफ़नाई गई।

——

सोलहवाँ परिच्छेद

काउण्ट के प्रयत्न से डोलोखोव और बैज़ूखोव के द्वंद्व युद्ध में रोस्टोव के भाग लेने की बात दबा दी गई। वह अपने परिवार के साथ देहात में रहने न जा सका, बल्कि अपनी नई नियुक्ति पर सारी गर्मियों में मास्को में ही रहा। डोलोखोव चंगा होने लगा और उसके आरोग्य-लाभ करने के दिनों में रोस्टोव उसका विशेष मित्र बन गया। डोलोखोव अपनी माँ मेरी इवानोव्ना के घर ही—जो उसे बेहद प्यार करती थी—आरोग्य-लाभ करता रहा; और उसकी माता अपने पुत्र के साथ रोस्टोव की मैत्री देखकर रोस्टोव को भी स्नेह-दृष्टि से देखने लगी। वह उससे अपने पुत्र के विषय में घण्टों बातें करती रहती।

.खुद डोलोखोव भी अपनी रुग्णावस्था में रोस्टोव से इस ढंग से बातचीत करता जिससे उसने पहले कभी किसी से नहीं की थी।

उसने कहा—'मैं जानता हूँ, लोग-बाग मुझे बुरा आदमी समझते हैं! बला से! मैं उनकी तिनके बराबर भी परवाह नहीं करता। हाँ, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, उन्हें इतना करता हूँ कि उनके पसीने पर अपना .खून बहाने को तैयार रहता हूँ—रहे बाक़ी सो उन सबको मैं अपने रास्ते से कुचलकर फेंक दूँगा। मेरे दोस्त, मुझे बहुत से उदारहृदय और प्रेमी पुरुष मिले हैं; पर मुझे ऐसी स्त्री आज तक नहीं मिली—चाहे वह काउण्टेस हो या बावर्चिन—जो दिल

की काली न हो। मुझे अभी वैसी कोई स्त्री नहीं मिली जिसमें वह स्वर्गीय पवित्रता और सतीत्व पाया जा सके। अगर मुझे ऐसी कोई स्त्री मिल जाय, तो मैं उसके लिए अपनी ज़िन्दगी तक क़ुरबान कर दूँगा! पर ऐसी है कहाँ!'

× × × ×

हेमन्त में रोस्टोव-परिवार फिर मास्को वापस आ गया। शरद् ऋतु के आरम्भ में डेनीज़ोव भी उनके पास कुछ दिनों के लिए आ गया। १८०६ की शरद् ऋतु का प्रारम्भिक आधा अंश निकोलस ने अत्यंत आनन्द-उल्लास के साथ व्यतीत किया। निकोलस अपने घर अनेक युवकों को लाता। वीरा बीस वर्ष की सुन्दर कन्या थी; सोनिया सोलह वर्ष की लड़की थी, और एक खिलते हुए फूल की तरह उसने अलौकिक शोभा धारण कर ली थी; नटाशा—कुछ स्यानी, कुछ अयानी—कभी बच्चों की तरह मनोरंजन करनेवाली बन जाती, कभी बालिकाओं की तरह दूसरों पर आकर्षण का जादू फेंकनेवाली।

रोस्टोव अपने परिवार में जिन-जिन युवकों को लाया था उनमें प्रमुख डोलोखोव था, जिसे नटाशा को छोड़कर और सब चाहते थे। नटाशा उसके ऊपर कभी-कभी अपने भाई से लड़ पड़ती थी। वह हठपूर्वक प्रतिपादन करती कि वह बुरा आदमी है, और बैज़ूखोव के द्वंद्व-युद्ध में पीरी न्याय-पक्ष में था और डोलोखोव अन्याय-पक्ष में।

रोस्टोव कहता—'ओह, डोलोखोव बिल्कुल दूसरे ढंग का आदमी है।' इसका आशय था कि डोलोखोव के मुक़ाबले में डेनीज़ोव

की भी कोई गिनती नहीं—'यह समझने के लिए कि उसका हृदय कैसा है, दूसरे का भी वैसा ही हृदय चाहिए—उसे उसकी माँ के पास देखो तो पता चले। कैसा अच्छा हृदय है।'

एक दिन नटाशा बोली—'मैं इन सब बातों को नहीं जानती। हाँ, मैं इतना अवश्य कह सकती हूँ कि उसे देखते ही मैं घबड़ा उठती हूँ। और तुम्हें कुछ और भी पता है?—वह सोनिया के साथ प्रेम करने पर उतारू हो गया है।'

'फ़ज़ूल बातें मत किया करो।'

'मैं बिल्कुल सच्ची बात कह रही हूँ, तुम ख़ुद देख लोगे।'

नटाशा की भविष्यवाणी ठीक निकली। वैसे डोलोखोव महिलाओं के संसर्ग से बचता रहता था, पर अब वह यहाँ आये दिन आने लगा; और यह बात भी अधिक दिनों तक छिपी न रह सकी कि वह किसके लिए आता है (यद्यपि कोई इस बात को ज़ुबान पर न लाता था)। वह सोनिया की ख़ातिर आता था; और सोनिया भी—यद्यपि ख़ुद किसी से कुछ न कहती—इस बात को जानती थी, और जब-जब वह आता, शर्म के मारे सुर्ख़ हो जाती।

यह साफ़ ज़ाहिर था कि यह विचित्र बली पुरुष इस साँवली सलोनी लड़की पर बेतरह मुग्ध था जो एक दूसरे पुरुष पर आसक्त थी।

१८०६ के अन्त में सबकी ज़ुबान पर एक बार फिर नैपोलियन के साथ युद्ध करने की चर्चा सुनाई पड़ने लगी। बड़े दिन के तीन

दिन बाद निकोलस ने घर भोजन किया, और यह एक नई सी बात थी। रोस्टोव की विदा के उपलक्ष में एक विशाल सहभोज दिया गया था जिसमें डेनीज़ोव और डोलोखोव के अतिरिक्त कोई बीस आदमी और होंगे।

रोस्टोव-परिवार में प्रेमालाप का वातावरण इतना सघनतर पहले कभी नहीं हुआ था, और वासनामय अनुभूति सबके हृदयों में इतनी प्रबलता से पहले कभी जाग्रत् नहीं हुई थी, जितनी इस अवसर पर। उस स्थान का वातावरण कहता 'आमोद-प्रमोद करो, प्रेम करो और प्रेम करने दो! बस, दुनिया में यही एक सार वस्तु है, और सारा भुलावा है। बस, हम सब इसी एक आमोद-प्रमोद में तल्लीन हैं!'

निकोलस ठीक भोजन के पहले घर आ मौजूद हुआ। ज्योंही उसने घर में पैर रक्खा, उसे प्रतीत हुआ कि वहाँ के वासनामय वातावरण में कुछ विषाद सा फैला हुआ है, और उपस्थित व्यक्तियों में एक प्रकार का क्षोभ सा दिखाई देता है। विशेषकर सोनिया, डोलोखोव, वृद्धा काउण्टेस और उससे कुछ कम दर्जे पर, नटाशा अधिक क्षुब्ध दिखाई पड़ती थीं। निकोलस ताड़ गया कि डोलोखोव और सोनिया में अवश्य कोई न कोई विशेष बात हुई है।

उस समय उसकी उक्त धारणा और भी पुष्ट हो गई जब भोजन के तुरन्त बाद ही डोलोखोव चला गया। निकोलस ने नटाशा को बुलाकर इसका कारण पूछा।

नटाशा ने उसके पास दौड़कर आते हुए कहा—'और मैं तुम्हें ख़ुद तलाश करती फिर रही हूँ।' इसके बाद उसने विजय-सूचक ध्वनि में कहा 'मैं तुमसे पहले ही कह चुकी थी, पर तुम्हें विश्वास ही न आया तो मैं क्या करती! उसने सोनिया से विवाह का प्रस्ताव किया था!'

वैसे इधर निकोलस सोनिया के विषय में बहुत कम सोचता विचारता था, पर इस समाचार के सुनते ही उसका दिल बैठ गया। इस अनाथ बालिका के लिए डोलोखोव एक योग्य, और कई अंशों में बढ़िया, वर था। पर इस समाचार के सुनते ही निकोलस को झट सोनिया पर रोष उत्पन्न हो गया। वह कहने ही वाला था, 'बहुत अच्छे! ख़ैर इतना तो हुआ कि वह अपने वादों के साथ बच्चों की तरह अब खिलवाड़ न कर सकेगी।' पर उसके इतना कहने से पहले ही नटाशा ने कहना आरम्भ कर दिया :

'और सोचने की बात है, उसने उसे बिलकुल अस्वीकार कर दिया। उसने उससे साफ़ कह दिया कि वह एक दूसरे से प्रेम करती है।'

निकोलस ने सोचा—'मेरी सोनिया इसके सिवाय और कुछ कर ही न सकती थी!'

'माँ ने बहुतेरा दबाव डाला, पर उसने अपना इरादा न पलटा, और जब वह एक दफ़ा कह चुकी है, तो पलटेगी भी नहीं।'

'और माँ ने दबाव डाला!' निकोलस ने भर्त्सना-पूर्ण स्वर में कहा।

नटाशा ने कहा—'हाँ! निकोलस—बुरा मानने की बात नहीं है—तुम उसके साथ कभी व्याह न करोगे। मैं इस बात को अच्छी तरह जानती हूँ। किस तरह जानती हूँ, यह मैं ख़ुद नहीं जानती। पर यह तय है कि तुम उसके साथ व्याह कभी न करोगे।'

निकोलस ने कहा—'बस, तुम इतनी ही बात तो नहीं जानतीं!'

——

सत्रहवाँ परिच्छेद

रोस्टोव को डोलोखोव दो दिन तक न अपने घर पर ही मिल सका और न वही उसके घर आया। तीसरे दिन उसके पास से एक नोट मिला।

'तुम जानते ही हो मैं अब तुम्हारे घर किन कारणों से आने में असमर्थ हूँ; और इधर मैं अपनी सेना में सम्मिलित होने को रवाना होनेवाला हूँ, इसलिए मैंने अपने दोस्तों को इँगलिश क्लब में एक दावत दी है, आशा है, तुम भी आओगे।'

शाम के दस बजे रोस्टोव थियेटर से, जहाँ वह अपने परिवार और डेनीज़ोव के साथ गया था, सीधा इँगलिश क्लब पहुँचा और जाते ही सबसे बढ़िया कमरों में पहुँचा दिया गया। मेज़ पर सोने के सिक्कों और नोटों का ढेर लगा हुआ था। विवाह-प्रस्ताव के बाद से भेंट का यह पहला अवसर था, अतः रोस्टोव कुछ उद्विग्न सा हो उठा। डोलोखोव ने अपने शुष्क स्वच्छ नेत्रों से रोस्टोव की ओर इस प्रकार देखा मानों वह उसी का बहुत देर से इंतज़ार कर रहा हो।

उसने कहा—'आओ जी, बहुत दिनों बाद मिले। यहाँ आने के लिए धन्यवाद। आओ बैठो, अभी खेल समाप्त हुआ जाता है।'

रोस्टोव ने कहा—'मैं कई दफ़ा तुम्हारे घर भी हो आया।' और उसका चेहरा लाल हो उठा।

डोलोखोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने कहा--'आओ, तुम भी पत्ते तराशो।'

इसी समय रोस्टोव को वह वार्तालाप याद आ गया जिसके सिलसिले में डोलोखोव ने उससे कहा था--'जुए में तक़दीर पर सिर्फ़ बुद्धू ही भरोसा करते हैं।'

डोलोखोव ने मानो रोस्टोव के जी की बात ताड़कर मुस्कराते हुए कहा--'कहीं तुम मेरे साथ खेलने में डरते तो नहीं ?'

और रोस्टोव ने उसकी मुस्कराहट के नीचे उसी निर्मम मुद्रा की झलक देखी जिसे वह उस समय धारण कर लिया करता था जब वह साधारण दैनिक जीवन से उकताकर किसी विचित्र और निष्ठुरतापूर्ण कार्य द्वारा उससे छुटकारा पाना चाहता हो। पीरी की चुनौती वाले दिन भी उसके चेहरे पर वही मुद्रा विराज रही थी।

रोस्टोव को संकोच करते हुए देखकर वह कहने लगा--'अच्छी बात है, तुम मत खेलो।' इतना कहकर उसने ताश की नई गड्डी तराशते हुए आवाज़ दी, 'दोस्तो, आओ!' और रुपया आगे खसका कर वह संलग्न हो गया। रोस्टोव उसकी बग़ल में बैठा रहा, खेला नहीं। डोलोखोव बराबर उसकी ओर कनखियों से देखता रहा। अंत में उसने पूछा--'तो तुम नहीं खेलोगे ?'

और कैसी विचित्र बात थी कि रोस्टोव पत्ते तराशने को विवश हो गया और उसने भी खेलना शुरू कर दिया। उसने कहा--'मेरे पास इस वक़्त रुपया नहीं है।'

'मुझे तुम्हारा यक़ीन है।'

रोस्टोव ने पाँच रूबल लगाये और हारा, और फिर दस लगाये, और फिर हारा। डोलोखोव ने चिल्लाकर कहा—'दोस्तो, अपने-अपने पत्तों पर रूबल रखते जाओ, नहीं तो हिसाब गड़बड़ हो जायगा।' इसके बाद उसने रोस्टोव की ओर घूमकर कहा—'यह बात तुम पर लागू नहीं है। हमारा तुम्हारा हिसाब पीछे होता रहेगा।'

खेल जारी हो गया। नौकर शाम्पियन के गिलास पकड़ाता रहा।

रोस्टोव की बराबर हार होती रही। उसके नाम ८०० रूबल निकलने लगे। उसने एक कार्ड पर ८०० रूबल लिखे, पर फिर कुछ सोचकर अपनी बीस रूबल की पुरानी रफ़्तार रक्खी।

डोलोखोव ने कहा—'अजी यही रहने दो। इससे तुम्हारा सारा घाटा एकदम पूरा हो जायगा। मैं जो दूसरों से हारा हूँ वह तुमसे जीत रहा हूँ। कहीं तुम्हें मुझसे खेलने में डर तो नहीं लग रहा है?'

रोस्टोव ने ८०० रूबल का हिन्दसा ही बना रहने दिया। वह डोलोखोव के हाथ को बड़ी उत्सुकता और व्यग्रता के साथ देख रहा था। इसका कारण यह था कि गत रात्रि को वृद्ध काउण्ट ने उसे २००० रूबल दिये थे और—यद्यपि उन्हें आर्थिक बातों पर कहते सुनते कष्ट होता था—फिर भी रोस्टोव से कह दिया था कि उसे मई तक इससे अधिक न मिल सकेगा।

डोलोखोव ने कहा 'तो अब तो तुम्हें मेरे साथ खेलते हुए डर नहीं मालूम होता।' मानो वह कोई विनोद-पूर्ण कहानी सुनाने की तैयारी में हो। इसके बाद वह कुर्सी का सहारा लेते हुए मुस्करा कर निश्चयात्मक स्वर में कहने लगा—

'हाँ, तो दोस्तो, मास्को में मेरे बारे में एक अफ़वाह फैला दी गई है कि मैं आँखों में धूल झोंक देता हूँ, सो आप लोग ज़रा चौकन्ने रहिए।'

रोस्टोव बोला—'हाँ, तो पत्ता निकालो!'

डोलोखोव ने ताश की गड्डी उठाते हुए मुस्कराकर कहा—'भला इन अफ़वाहों का भी कुछ ठिकाना है!'

अकस्मात् रोस्टोव अपने हाथों से माथा पीटकर चिल्ला उठा। वह हार गया। डोलोखोव उसकी ओर कनखियों से देखते हुए कहने लगा 'अभी से घबराने से काम न चलेगा।' और वह फिर ताश सम्हालने में लग गया।

डेढ़ घण्टे बाद और सारे खिलाड़ी अपने-अपने खेल की ओर बहुत कम ध्यान दे रहे थे। सबकी दृष्टि रोस्टोव की ओर लगी हुई थी। सोलह सौ रूबलों के स्थान पर अब उसके नाम के आगे रक़म की एक लम्बी क़तार लगी हुई थी जिसे उसने दस हज़ार रूबलों के निकट अन्दाज़ा था, पर जो बीस हज़ार से भी ऊपर पहुँच गई थी। अब डोलोखोव का ध्यान किसी की ग़प-शप की ओर नहीं था, वह चुपचाप रोस्टोव की गति-विधि को ग़ौर से देख रहा था, और यदा-कदा उसके नाम के आगे लिखी

हुई रक़म की क़तार पर दृष्टि डाल लेता था। उसने निश्चय किया था कि जब तक रक़म तैंतालीस हज़ार तक न पहुँच जायगी, वह खेलना बंद न करेगा। उसने यह संख्या इसलिए चुनी थी कि उसकी और सोनिया की आयु मिलाकर तेंतालीस होती थी। रोस्टोव सिर पर हाथ रक्खे उस मेज़ के सामने बैठा था जो हिन्दसों से लिपीपुती थी, शराब से तर थी और बिखरे हुए ताशों से ढकी हुई थी। बस, उसके हृदय को केवल एक दारुण वेदना व्यथित किये जा रही थी—जिन लाल-लाल चौड़े हाथों को वह इतना प्रेम और घृणा करता था, अब वह उन्हीं की शक्ति में जा पड़ा था। वह मन ही मन आश्चर्य करता, इसने मेरे साथ यह घात क्यों किया?

वह उत्तेजित और पसीने-पसीने हो रहा था, यद्यपि कमरे में गर्मी न थी। उसका चेहरा भयङ्कर और कातर हो उठा, विशेष कर इसलिए कि वह शान्त बनने की चेष्टा कर रहा था।

अब रक़म तैंतालीस हज़ार तक जा पहुँची। रोस्टोव ने अबकी बार तीन हज़ार रूबल का दुगना लगाने का इरादा किया, पर एकाएक डोलोखोव ने ताश मेज़ पर पटक दिये और अपने दृढ़ स्वच्छ हाथों से खड़िया से रक़म का जोड़ लगाना शुरू किया। वह बोला—

'अच्छा अब भोजन! खाने का वक़्त आ पहुँचा! और लो, नाचनेवालियाँ भी आ पहुँचीं।'

और सचमुच कुछ आदमी और औरतें अपने विचित्र उच्चारण में बातचीत करते आ पहुँचे। निकोलस समझ गया कि कार्य समाप्त हो गया।

डोलोखोव ने कहा—'काउण्ट, तुम्हें तेंतालीस हज़ार रूबल देने हैं।' इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ और अँगड़ाइयाँ लेता हुआ बोला—'बैठे-बैठे थक गया।'

रोस्टोव बोला—'मैं ख़ुद थक गया।'

डोलोखोव ने—मानो उसे यह याद दिलाने के लिए कि कम से कम उसके लिए मज़ाक़ का कोई मौक़ा नहीं है—बाधा दी—'तो, काउण्ट, मुझे रुपया कब मिल जायगा ?'

रोस्टोव ने लजाते हुए डोलोखोव को दूसरे कमरे में बुलाया। वहाँ उसने कहा—'मैं एकदम तो नहीं दे सकता। बिल दे दूँ ?'

डोलोखोव ने उसके नेत्रों की ओर एकटक देखते हुए मुस्करा कर कहा—'तो रोस्टोव, तुम्हें वह कहावत मालूम है "प्रेम-व्यापार में सौभाग्यशाली और जुए में भाग्यहीन" ? तुम्हारी चचेरी बहिन तुम्हारे साथ मुहब्बत करती है, यह मैं जानता हूँ।'

'मेरी चचेरी बहिन का इस बात से कोई ताल्लुक़ नहीं, और उसका नाम लेने की कोई ज़रूरत नहीं;' उसने भयङ्कर रूप धारण करके कहा।

'तो फिर मुझे कब मिल जायँगे ?'

'कल', और इतना कहकर रोस्टोव चला गया।

× × × ×

'कल' कह देना और शान के साथ चले आना मुश्किल काम नहीं था; पर घर अकेले जाना, अपने भाई-बहिनों और माता-पिता के सामने पहुँचना, अपराध स्वीकार करना और रुपया माँगना कठिन ही नहीं, बड़ा भयङ्कर काम था।

अभी घर के आदमी सोने नहीं गये थे। युवा-समाज थियेटर से आकर खाना खाने के बाद पियानो के चारों ओर एकत्र था। निकोलस को अपने घर में पैर रखते ही भास हुआ कि वह एक बार फिर वासनामय वातावरण में पहुँच गया है।

नटाशा डेनीज़ोव के साथ गा रही थी। रोस्टोव को देखते ही दौड़ती हुई बोली—'आहा! निकोलस भय्ये आ गये!' निकोलस ने पूछा—'पापा घर ही हैं न?'

नटाशा ने उसकी बात का कोई उत्तर न देकर कहना जारी रक्खा—'कैसो ख़ुशी की बात है जो तुम भी आ पहुँचे! हम ख़ूब मौजें कर रहे हैं! वैसिली डिमिट्रिच ने मेरी ख़ातिर एक दिन और ठहरने का वादा कर लिया है! तुम्हें मालूम है न?'

सोनिया ने कहा—'नहीं, पापा अभी नहीं लौटे हैं।'

वृद्धा काउण्टेस ने ड्राइंगरूम से पुकार कर कहा—'निकोलस, आ गया बेटे; यहाँ तो आ।'

निकोलस ने उनके पास जाकर उनका हाथ चूमा और उनके पास चुपचाप बैठ गया। नृत्यशाला से हँसने और चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं। नटाशा को गाने के लिए राज़ी किया जा रहा था।

डेनीज़ोव की आवाज़ आई—'अब बहानेबाज़ियों से काम न चलेगा! इतनी मिन्नतों के बाद तो अब तुम्हें गाना ही पड़ेगा!'

काउण्टेस ने अपने पुत्र की ओर देखा और कहा—'क्यों बेटे, क्या बात है?'

'कुछ नहीं; पापा कब लौटेंगे?' यह वाक्य निकोलस ने इस स्वर में कहा मानो वह इस प्रश्न के बार-बार दुहराये जाने से उकता गया हो।

'बस, आते ही होंगे।'

निकोलस वहाँ से उठकर फिर नृत्यशाला में चला गया और मन ही मन कहने लगा—'इनके लिए हमेशा एक जैसी दिन-रात रहती है।'

वह कमरे में चहलक़दमी करता रहा। वह लड़कियों और डेनीज़ोव से निगाह चुरा लेता और स्वयं विषण्ण भाव से उनकी ओर देखता रहता।

सोनिया के नेत्रों ने उसकी ओर ताकते हुए कहा—'निकोलस, क्या मामला है?' उसने फ़ौरन ताड़ लिया था कि कुछ दाल में काला अवश्य है।

निकोलस ने अपना मुँह फेर लिया।

वह बिना कुछ कहे सीढ़ियों से नीचे उतरकर अपने कमरे की ओर चल दिया। पन्द्रह मिनट बाद काउण्ट भी अपने क्लब से प्रसन्न और संतुष्ट भाव से वापस आ पहुँचे। निकोलस उनकी गाड़ी की आहट सुनकर उनसे मिलने के लिए बाहर निकला।

११

वृद्ध काउण्ट ने अपने पुत्र को देखकर उल्लास और गर्व के साथ मुस्कराकर कहा—'कहो, जी बहला आये ?'

निकोलस ने कहना चाहा 'जी हाँ' पर कह न सका, और फूट-फूटकर रोने को उतारू हो गया। काउण्ट अपना पाइप सुलगा रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने पुत्र की दशा नहीं देख पाई। बोला—'पापा, मुझे आपसे आज बहुत ज़रूरी काम है। मैं क़रीब-क़रीब भूल ही गया था। मुझे कुछ रुपये की ज़रूरत है।'

काउण्ट उस समय विशेष उल्लास में थे। बोले 'अरे भाई, मैंने तो तुझसे पहले ही कहा था कि इतना काफ़ी न होगा। बोल, कितना चाहिए।'

निकोलस ने बेहूदे ढंग से लापरवाही के साथ मुस्कराकर कहा (और इस मुस्कराहट की बात सोचकर वह बहुत दिन बाद तक शर्मिन्दा होता रहा)—'बहुत सारा। मैं कुछ हार गया हूँ—मेरा मतलब बहुत सारे से—ढेर के ढेर से—है—तेंतालीस हज़ार!'

'क्या! किसके हाथों ?—बेकार बात है!' काउण्ट ने कहा, और उनका चेहरा गर्दन तक लाल हो उठा।

निकोलस बोला—'मैंने कल ही भुगताने का वादा किया है।'

काउण्ट ने अपने हाथ फैलाकर असहाय भाव से सोफ़ा पर बैठते हुए कहा—'अच्छा!...।'

पुत्र ने दृढ़, सहज और संकोचहीन स्वर में कहा—'क्या किया जाय! ऐसा हर एक से होता है!' पर वह मन ही मन अपने आप

को एक ऐसा अधम जीव समझ रहा था जिसके पापों का प्रायश्चित्त इस जन्म में होना असम्भव हो। वह चाहता था कि अपने पिता से क्षमा प्रार्थना करे और घुटने टेककर उनके हाथ चूमे, पर फिर भी उसने वार्तालाप का वही बेहूदा ढंग जारी रक्खा—'ऐसा हर एक से होता है।'

काउण्ट अपने पुत्र की ओर शीघ्रता से देखकर कमरे से बाहर चल दिये। निकोलस अवरोध की प्रतीक्षा कर रहा था। इसकी उसे स्वप्न में भी आशा न थी।

वह सिसकते हुए चिल्लाकर अपने पिता के पीछे झपटा 'पापा! पा-पा! मुझे क्षमा करिए!' और उनका हाथ लेकर उसने अपने ओठों से लगा लिया और फूट-फूटकर रोने लगा।

× × × ×

जिस समय पिता-पुत्र में यह कहा-सुनी हो रही थी, उस समय माता-पुत्री भी एक ऐसे ही व्यापार में संलग्न थीं जो उससे किसी प्रकार भी कम महत्त्व का न था। नटाशा अपनी मा के कमरे में उत्तेजित मुद्रा के साथ दौड़ती हुई आई।

'माँ!...माँ!...उन्होंने मुझसे...।'

'उन्होंने मुझसे क्या?'

'उन्होंने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया है। माँ! माँ!'

काउण्टेस को अपने कानों पर विश्वास न आया। डेनीज़ोव ने प्रस्ताव किया है। किससे? इस ज़रा सी लौंडिया से, जो अब

से कुछ दिनों पहले तक गुड़ियों से खेलती थी और जो अब भी अपना सबक़ याद किया करती है! उन्होंने समझा, दिल्लगी है; बोली— 'नहीं नटाशा! यह बात ठीक नहीं है! ऐसी भी बेहूदी बात कहीं कहते हैं!'

'बेहूदी बात—बेशक! मैं तुमसे सच्ची सच्ची बात कह रही हूँ,' उसने क्रोध के साथ कहा—'मैं तुमसे पूछने आई हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए, और तुम कहती हो "बेहूदी बात"!'

काउण्टेस ने अपने कन्धे उचकाये। 'अगर यह बात सच्ची है कि महाशय डेनीज़ोव ने तुझसे विवाह का प्रस्ताव किया है तो उनसे जाकर कह दे कि वह मूर्ख हैं, बस!'

नटाशा ने क्रोध के साथ गम्भीर भाव से कहा—'नहीं, वह मूर्ख नहीं हैं!'

'तो फिर बता मैं क्या करूँ? तू तो आजकल सबसे प्रेम करती फिरती है। अच्छी बात है, अगर तू उनसे प्रेम करती है तो ब्याह कर ले! मुझसे क्या कहती है! परमात्मा करे, ठण्डी सुहागिन रहे, बेटे-पोते हों!' काउण्टेस ने ऊबकर हँसते हुए कहा।

नटाशा भी मुस्कराई! बोली—'तुम्हें तो यह खेल लगता है! तुम उन्हें यह बात कहते देखतीं तो कहतीं!'

'कुछ भी हो, जाकर उनसे मना कर दे।'

'नहीं, मैं मना नहीं करूँगी। मुझे उन पर तरस आ रहा है! वह बड़े अच्छे आदमी हैं।'

'अच्छी बात है, मैं ख़ुद जाकर कहे देती हूँ।' काउण्टेस को इस बात पर विशेष क्रोध आ रहा था कि इस नन्हीं नटाशा को अभी से इतनी सयानी समझ लिया गया।

'नहीं, अच्छी मेरी माँ, तुम कुछ मत कहो। मैं ख़ुद कह दूँगी। तुम दरवाज़े पर खड़ी सुनती रहो।' और इतना कहकर नटाशा नृत्यशाला की ओर भागी और डेनीज़ोव के पास धीरे से पहुँचकर—जो उसी प्रकार पियानो के सामने कुर्सी पर अपने हाथों से मुँह ढके बैठा था—खड़ी हो गई।

उसके पैर की आहट सुनकर डेनीज़ोव चौंककर उठ खड़ा हुआ और उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—'नैटाली, बताओ, क्या तय किया। मेरा भाग्य तुम्हारे हाथ में है।'

'वैसिली डिमिट्रिच, मुझे बड़ा दुःख हो रहा है!...पर वैसे तुम बड़े अच्छे हो...पर यह नहीं हो सकेगा ..यह बात नहीं है कि... वैसे मैं हमेशा तुम्हें प्रेम करती रहूँगी।'

डेनीज़ोव उसके हाथ पर झुक गया। नटाशा को कुछ विचित्र सी आवाज़ सुनाई देने लगी जिनका आशय वह न समझ सकी। उसने डेनीज़ोव के रूखे काले घुँघराले बाल चूमे। इसी समय जल्दी जल्दी काउण्टेस की पोशाक की खसखसाहट की आवाज़ सुनाई दी। वह उनके पास जाकर उद्विग्न स्वर में (यद्यपि डेनीज़ोव को उस स्वर में कठोरता मालूम हुई) बोली—'वैसिली डिमिट्रिच, आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद; पर अभी यह बड़ी अयानी है।'

डेनीज़ोव ने नीची निगाह डालकर अपराधियों जैसी मुद्रा से कहा—'काउण्टेस।' वह कुछ और कहने जा रहा था, पर बात गले ही में रुक गई।

नटाशा उसे इतना कातर देखकर शान्त न रह सकी। वह ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ लेकर रोने लगी।

डेनीज़ोव ने अपने असंयत स्वर में कहना शुरू किया—'काउण्टेस, मैंने आपका अपराध किया है। पर आप विश्वास रखिए कि मैं आपकी कन्या और आपके सारे परिवार से इतना प्रेम करता हूँ कि उनके लिए अपने आपको क़ुरबान तक करने को तैयार हूँ।' इतना कहकर उसने काउण्टेस की ओर ताका, और, उनकी कठोर मुद्रा देखकर, बोला—'अच्छा काउण्टेस, सलाम।' और उनके हाथ का चुम्बन करके वह, नटाशा की ओर बिना देखे, अपने कमरे की ओर शीघ्र और दृढ़ गति से चला गया।

× × × ×

डेनीज़ोव एक दिन और नहीं ठहर सका, अतः रोस्टोव ने उसे बिदा किया। डेनीज़ोव के सारे संगी-साथियों ने उसकी बिदा के उपलक्ष में एक सहभोज दिया। नाचना गाना भी हुआ, और फल यह हुआ कि उसे यहाँ तक पता न चला कि उसे स्लेज में किसने रक्खा, और शुरू के तीन पड़ाव कब निकल गये।

डेनीज़ोव के जाने के बाद रोस्टोव एक पक्ष तक मास्को में और रहा, क्योंकि उसके पिता इतनी बड़ी रक़म इससे पहले एकत्र न

कर सके। वह घर से बाहर तक न निकला और अपना अधिक समय युवती महिलाओं के कमरे में ही बिताता रहा।

सोनिया उसे पहले से भी अधिक प्यार करने लगी—मानो वह यह दिखाना चाहती थी कि इस हार से भी उसे एक लाभ हुआ, और वह यह कि वह उसे पहले से भी अधिक सहृदयता के साथ प्रेम करेगी। पर अब निकोलस अपने आपको उसके अयोग्य समझने लगा।

उसने दोनों बालिकाओं के एल्बम कविताओं और संगीतों से भर डाले, और अन्त में डोलोखोव को तेंतालीस हज़ार रूबल भेजकर नवम्बर के अन्त में—बिना किसी मेल मुलाक़ाती से मिले-जुले—वह अपनी सेना में शामिल होने के लिए रवाना हो गया। सेना अब तक पोलेण्ड में जा पहुँची थी।

——

दूसरा खंड

पहला परिच्छेद
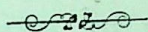
पीरी मास्को से पीटर्सबर्ग चला आया था। दूसरे दिन पीरी अपनी अध्ययनशाला में बैठा हुआ कोई पुस्तक पढ़ रहा था। उसने एक समाचार सुना था कि उसके द्वंद्व-युद्ध की बात सम्राट् के कानों तक पहुँच गई है। पीरी की विचार-धारा बीच-बीच में इस ओर भी प्रवाहित हो जाती थी। पीरी अपनी दक्षिण की जायदाद का निरीक्षण करने और रिआया के कष्ट दूर करने के लिए यात्रा करने का विचार कर रहा था। अचानक प्रिंस वैसिली आ पहुँचा।

उसने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—'भई, तुम मास्को में क्या करतूत कर आये? तुमने हैलेन से लड़ाई क्यों कर ली? तुम्हें ग़लतफ़हमी हो गई है। मैंने सब कुछ सुन लिया है, और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हैलेन तुम्हारे आगे उतनी ही निर्दोष है जितने प्रभु ईसा यहूदियों के सामने थे।'

पीरी उत्तर देने की तैयारी कर रहा था, पर प्रिंस वैसिली ने बीच ही में बाधा देकर कहा—'अरे आखिर मैं भी तो तुम्हारा कुछ

लगता ही हूँ; तुम सीधे मेरे पास क्यों नहीं चले आये? मुझे सब मालूम हो गया है और मैं सब समझता हूँ। यह ठीक है कि तुम्हें उस दशा में अपने नाम पर बट्टा लगते देखकर जल्दी में कुछ सूझ न पड़ा—पर हमें उसका क़ज़िया उठाने की ज़रूरत नहीं है।' इसके बाद उसने धीमे स्वर में कहा—'याद रक्खो इस तरह तुम उसे और मुझे सारी सोसायटी और राजदरबार तक में ज़लील करा रहे हो। वह मास्को में है और तुम यहाँ आ गये। भई! मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ यह सिर्फ़ तुम्हारी ग़लतफ़हमी है।' और इतना कहकर उसने उसका हाथ नीचे की ओर खींचा। 'शायद तुम ख़ुद इस बात को जानते हो। तो उसे दो लाइनें झटपट लिख डालो और ख़त मुझे दे दो, वह यहाँ आ जायगी और सारा समझौता हो जायगा, नहीं तो मैं तुम्हें बताये देता हूँ तुम्हें इससे कुछ न कुछ नुक़सान पहुँच जायगा।'

प्रिंस वैसिली ने पीरी की ओर भेद-भरी दृष्टि से देखा। उसने फिर कहना आरम्भ किया—'मुझे विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि राजमाता इस मामले में बड़ी दिलचस्पी दिखा रही हैं। तुम जानते ही हो वह हैलेन को कितना प्यार करती हैं।'

पीरी ने कई बार बोलने की चेष्टा की, पर अव्वल तो प्रिंस वैसिली बीच-बीच में बाधा देता गया, और दूसरे वह अपने ससुर से निश्चयात्मक अस्वीकारोक्ति और विग्रह-व्यंजक स्वर में बात-चीत करने से डरता था—यद्यपि उसने इसका पहले से ही निर्णय कर लिया था। उसने तेवर बदले, लजाया, उठा और फिर बैठ

गया। उसे प्रिंस वैसिली के उदासीनतापूर्ण आत्मविश्वास-व्यंजक स्वर के आगे सिर झुकाने का ऐसा अभ्यास सा पड़ गया था कि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उस स्वर का सामना करने योग्य साहस सञ्चय न कर सकेगा; पर उसी समय उसे ख़याल आया कि इसी एक बात पर उसका भविष्य निर्भर है।

प्रिंस वैसिली ने कौतुक भरे स्वर में कहा—'हाँ, तो बेटे, तुम सिर्फ 'हाँ' कह दो, और उसे मैं खुद लिख दूँगा और हम सारे झगड़े की जड़ को उखाड़ फेंकेंगे।'

पर प्रिंस वैसिली ने अभी अपना विनोद समाप्त न किया था कि पीरी ने फुसफुसाकर, पर उस रोष के साथ जिसके कारण वह अपने पिता से बहुत कुछ मिलता-जुलता था, कहा—

'प्रिंस, आपको मैंने तो नहीं बुलाया। जाइए, मेहरबानी करके तशरीफ़ ले जाइए।' और उसने कूदकर उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया। उसने फिर कहा 'जाइए'! उसे अपने साहस पर स्वयं ही आश्चर्य हो रहा था। और साथ ही प्रिंस वैसिली के चेहरे पर उद्विग्नता और भीति के लक्षण अंकित देखकर भी उसे प्रसन्नता हो रही थी।

प्रिंस वैसिली ने कहा—'क्यों, क्या बात है? तुम्हारा जी तो अच्छा है?'

कम्पित स्वर में फिर कहा—'जाइए!' और प्रिंस वैसिली को उसी दम चले जाना पड़ा।

एक सप्ताह बाद पीरी अपनी जायदाद का निरीक्षण करने चला गया।

दूसरा परिच्छेद

युद्ध की आग एक बार फिर भड़क उठी थी और तेज़ी के साथ रूसी सीमा की ओर बढ़ रही थी। गाँवों से रंगरूटों की भरती हो रही थी और युद्ध-स्थलों से एक-दूसरे के विरुद्ध समाचार आ रहे थे जो एक सिरे से सब असत्य निकलते थे और उनका अर्थ अलग-अलग ढंग से लगाया जाता था।

१८०५ के बाद से प्रिंस बोल्कोन्सकी, प्रिंस एण्ड्र्यू और प्रिंसेज़ मेरी की रहन-सहन में बहुत बड़ा अन्तर हो गया था।

१८०६ में रूस भर के गाँवों में रंगरूट भरती करने का निरीक्षण करने के लिए जिन आठ कमाण्डर-इन-चीफ़ों की नियुक्ति की गई थी उनमें एक वृद्ध प्रिंस भी थे। वैसे वह अत्यन्त वृद्ध और जर्जर हो चले थे, और इस वृद्धावस्था ने उन पर उन दिनों और भी प्रभाव डाला था जब उन्हें अपने पुत्र के मारे जाने का विश्वास हो गया था; पर इतने पर भी उन्होंने इस पद को, जिस पर स्वयं सम्राट् ने उनकी नियुक्ति की थी, अस्वीकार करना उचित न समझा, और कार्य्य-शीलता के इस नवीन अवसर के मिलते ही उनमें एक नई सजीवता और बल उत्पन्न हो गया। वह अपने सिपुर्द किये गये तीनों प्रान्तों का आयेदिन दौरा करते रहते, अपनी ड्यूटी पूरी करने में बेहद कड़ाई से काम लेते, अपने मातहतों के साथ कठोरता से—जो निर्दयता की सीमा तक पहुँच जाती—पेश आते, और सारी बातों

को अपनी आँखों के सामने पूरा कराते। प्रिंसेज़ मेरी ने अपने पिता से गणित-शास्त्र का सबक़ लेना छोड़ दिया था, और जब वह घर होते तभी वह धाय और नन्हें प्रिंस निकोलस (जैसा उसके बाबा उसे कहा करते थे) के साथ उनकी अध्ययनशाला में जाती। बालक प्रिंस निकोलस अपनी धाय के पास रहता, और धाय मृत नन्हीं प्रिंसेज़ के कमरे में रहती। प्रिंसेज़ मेरी अपना अधिकांश समय इस शिशुशाला में ही व्यतीत करती और जहाँ तक सम्भव होता अपने भतीजे की माता के रिक्त स्थान की पूर्ति करती। मेडेम बोरीन भी बच्चे को बेहद चाव की दृष्टि से देखती मालूम होती थी। प्रिंसेज़ मेरी अपनी सहेली को यदा-कदा इस बाल-गोपाल की सेवा-सुश्रूषा करने और उसे खिलाने और अपना मन बहलाने का अवसर देकर आत्मत्याग का परिचय देती!

प्रिंस एण्ड्रयू घर ही रहा क्योंकि नन्हें निकोलस की तबीयत ख़राब थी।

अपनी ज़मींदारी से वापस आते हुए पीरी ने अपने मित्र बोल्कोन्सकी से भेंट करने की बहुत दिनों की साध भी पूरी कर लेने का निश्चय किया। प्रिंस एण्ड्रयू से वह पिछले दो वर्षों से बिल्कुल नहीं मिल सका था।

दरवान ने काउण्ट बैज़ूखोव को गाड़ी से उतारकर प्रिंस एण्ड्रयू के छोटे से स्वच्छ मुलाक़ाती कमरे का रास्ता दिखाया। पीरी ने प्रिंस एण्ड्रयू को अन्तिम बार पीटर्सबर्ग में बड़ी सज-धज के साथ रहते हुए देखा था, अतः वह इस छोटे से स्वच्छ

कमरे को देखकर विस्मित रह गया। वह शीघ्रता के साथ मुलाक़ाती कमरे में घुसा और जल्दी-जल्दी क़दम रखता हुआ आगे बढ़ने लगा, पर दरवान ने फ़ुर्ती से पंजों के बल चलकर दरवाज़ा थपथपाया।

एक तीव्र रुष्ट स्वर सुनाई पड़ा—'कौन है?'

दरवान ने उत्तर दिया—'एक मुलाक़ाती।'

'उससे कहो कि वह इन्तज़ार करे।' और कुर्सी के पीछे खसकाने की आवाज़ आई।

पीरी जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता हुआ दरवाज़े पर पहुँचा और अचानक प्रिंस एण्ड्रयू कमरे के भीतर से शुष्क और निर्जीव मुद्रा लिये निकल आया। पीरी ने उसका आलिंगन किया और चश्मा उतारकर अपने मित्र का चुम्बन किया और उसकी ओर ध्यान से देखा। प्रिंस एण्ड्रयू पहले से अधिक वयस्क दिखाई देता था।

प्रिंस एण्ड्रयू ने कहा—'अहा! कैसे अचरज की बात है; बड़ी प्रसन्नता हुई।'

पीरी ने कुछ नहीं कहा। वह अपने मित्र की ओर बराबर विस्मयोत्सुक नेत्रों से देखता रहा। प्रिंस एण्ड्रयू के इस परिवर्त्तन को देखकर वह हतप्रभ रह गया था। वैसे उसके शब्द सहृदयतापूर्ण थे, ओठों पर मुस्कराहट भी थी, पर उसके नेत्र निर्जीव और उल्लासविहीन थे, और प्रयत्न करने पर भी वह उनमें प्रफुल्लता और हर्ष की ज्योति उत्पन्न न कर सका।

भोजन के समय वार्तालाप की गति पीरी के विवाह की ओर फिरी। प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'जब मैंने यह सुना तो मैं भौचक्का रह गया।'

पीरी लजा गया—जिस प्रकार वह अन्य ऐसे सारे अवसरों पर लजा जाता था—और शीघ्रता से बोला—

'मैं तुम्हें फिर कभी बताऊँगा कि यह सब कैसे हुआ। मगर अब तो यह हमेशा के लिए हो बीता।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'हमेशा के लिए? हमेशा का बीड़ा तुमने कैसे उठा लिया?'

'पर तुम्हें यह सब तो पता ही होगा कि यह सब कैसे निपटा, है न? तुमने द्वंद्व के बारे में सुना है?'

'तो क्या तुम्हें इस आफ़त को भी मोल लेना पड़ा था?'

पीरी बोला—'बस, एक बात अच्छी हुई, जिसके लिए मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ, और वह यह कि मैंने बेचारे को मारा नहीं।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने पूछा—'क्यों? एक कमीने कुत्ते को मारने से अच्छी और बात ही क्या हो सकती है?'

'नहीं, हर्गिज़ नहीं!—आदमी की जान लेनी बुरी बात है—गुनाह है!'

प्रिंस एण्ड्र्यू बोला—'गुनाह क्यों है? आदमी की ताक़त में यह बात जानना नहीं है कि गुनाह क्या है और सवाब क्या है। आदमी हमेशा से गलती करते आये और हमेशा करते रहेंगे, और

इतनी और किसी बात में नहीं जितनी गुनाह और सवाब के फ़ैसले में।'

प्रिंस एण्ड्र्यू अधिकाधिक सजीव होता गया और जीवन के विषय में अपने नवीन निष्कर्ष को व्यक्त करने की उसकी आतुरता भी प्रबलतर होती गई। बात-चीत फ़्रेंच में हो रही थी। वह बोला—'यह ठीक है कि हम सब यह बात ख़ुद अच्छी तरह जानते हैं, पर जिस नुक़सान को मैं अपने दिल में महसूस करता हूँ उसे मैं दूसरे पर नहीं लाद सकता। मैं तो इस जीवन में केवल दो ही असली बुराइयों को जानता हूँ—पश्चात्ताप और बीमारी। बस, जो इन बुराइयों से बचा रहा, समझो वही अच्छा है। मेरी तो अब यही एक फ़िलासफ़ी है, अपने लिए जीना, और इन बुराइयों से बचते रहना।'

पीरी बोला—'और अपने पड़ोसी के साथ प्रेम और आत्म-त्याग की बात? नहीं भई, मैं तुमसे सहमत नहीं हो सकता! सिर्फ़ बुराइयों से बचे रहना ही—जिससे फिर पश्चात्ताप न करना पड़े—जीवन का एकमात्र उद्देश नहीं है। मैं ख़ुद इसी तरह रह चुका हूँ, मैं ख़ुद अपने लिए जी चुका हूँ, और इस तरह मैंने अपने जीवन को बर्बाद कर दिया। और अब मैं दूसरों के लिए जी रहा हूँ।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने पीरी की ओर व्यंग्य-निहित मुस्कराहट के साथ देखा।

'जब तुम मेरी बहिन से मिलोगे तो तुम्हारी उसकी ख़ूब निभेगी।'

कुछ देर बाद उसने कहा—'चलो, मेरी बहिन से भेंट कर लो। वह कहीं छिपी हुई बैठी है। मैं अभी तक उसे नहीं खोज सका। अच्छी बात है, उसकी यही सज़ा है, तुम्हें देखकर वह घबरा उठेगी। पर तुम्हें भी उसकी "रामललियें" देखने का अवसर मिल जायगा। बड़ी मज़ेदार बात है।'

पीरी ने पूछा—'भई, रामललियें क्या होती हैं ?'

'आओ, ख़ुद अपनी आँखों से देख लेना।'

जब दोनों अन्दर पहुँचे तो सचमुच प्रिंसेज़ मेरी घबरा उठी और उसके चेहरे पर लज्जा के लाल-लाल धब्बे चमक उठे। वह एक सोफ़ा पर एक लम्बी नाक और बड़े-बड़े बालोंवाले लड़के के साथ बैठी हुई थी। उसका कमरा बड़ा सुखदायक था। मूर्तियों के सामने प्रकाश जल रहा था। सोफ़ा के पास एक मेज़ पर चायदानी रक्खी हुई थी।

उनके पास ही एक आराम-कुर्सी पर अपने शिशुसुलभ चेहरे पर विनीतभाव धारण किये एक दुबली-पतली वयोवृद्ध स्त्री बैठी हुई थी।

प्रिंसेज़ मेरी इन दोनों को देखकर इन तीर्थ-यात्रियों के सामने इस तरह खड़ी हो गई जिस तरह अपने बच्चे-कच्चों के सामने मुर्ग़ी तनकर खड़ी हो जाती है। उसने मृदु भर्त्सना भरे स्वर में फ़्रेंच में कहा—'एराड्रयू, तुमने मुझे ख़बर क्यों नहीं की ?'

पीरी ने उसका हाथ चूमा और वह बोली 'बड़े हर्ष की बात है। तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई।' वह पीरी को बचपन से

जानती थी, और अब अपने भाई के साथ उसकी मैत्री, स्त्री-संबंधी दुर्भाग्य, पर सबसे अधिक उसके सीधेसादे सहृदयतापूर्ण मुखमण्डल के सम्मिलित योग ने उसके हृदय में उसके प्रति अनुकूल भावना उत्पन्न कर दी। उसने पीरी की ओर प्रोज्ज्वल कान्त नेत्रों से देखा, मानो वह कह रही हो—'वैसे तुम मुझे बड़े अच्छे लगते हो, पर कहीं मेरी रामललियों की दिल्लगी मत उड़ाने लगना।' और इस प्रकार अभिवादन-प्रत्यभिवादन करके सब बैठ गये।

प्रिंस एण्ड्रयू ने उस नवयुवक तीर्थयात्री की ओर मुस्कराकर देखते हुए कहा—'ओह! इवानुश्का भी यहीं मौजूद है!'

प्रिंसेज़ मेरी ने अनुनय भरे स्वर में कहा—'एण्ड्रयू।'

प्रिंस एण्ड्रयू ने पीरी से फ्रेंच में कहा—'तुम्हें जानकर ताज्जुब होगा, यह लड़का औरत है।'

प्रिंसेज़ मेरी ने फ्रेंच में फिर कहा—'देखो, एण्ड्रयू ईश्वर के वास्ते!'

यह साफ़ ज़ाहिर था कि इन तीर्थयात्रियों के प्रति प्रिंस एण्ड्रयू का व्यंग्यपूर्ण आचरण और उनकी रक्षा करने की प्रिंसेज़ मेरी की असहाय चेष्टाएँ कोई नई बात नहीं थी।

प्रिंस एण्ड्रयू ने कहा—'पर बहिन, तुम्हें तो उल्टे मेरी कृतज्ञ होना चाहिए, जो मैंने इस युवक के साथ तुम्हारी मित्रता का रहस्य पीरी को समझा दिया।'

पीरी ने कहा—'सचमुच!' और वह अपने चश्मों पर से इवानुश्का के चेहरे की ओर कौतूहल और गम्भीर भाव से देखने लगा (प्रिंसेज़ मेरी इस दृष्टि के लिए मन ही मन उसकी बड़ी

कृतज्ञ हुई)। इवानुश्का ने अपने सम्बन्ध में बात-चीत होते देख उनकी ओर अपने चञ्चल नेत्रों से देखा।

पर प्रिंसेज़ मेरी का अपनी "रामललियों" के विषय में इतना अस्त-व्यस्त होना बिल्कुल अनावश्यक था। वे ज़रा भी लज्जित दिखाई नहीं पड़ती थीं। उस वृद्धा स्त्री ने अपने चाय के प्याले का ढकना बन्द करके उसे थोड़ी सी बची हुई गुड़ की डली के साथ मेज़ पर रख दिया था (यद्यपि अभी एक प्याला चाय पीने की उसकी इच्छा और थी)। बीच-बीच में वह चुपचाप नीची निगाहों से आगन्तुकों की तरफ़ दृष्टि डाल लेती थी। इवानुश्का अपने प्याले में से चाय सड़ोपते हुए भवों के नीचे से इन दोनों युवकों को चुराई हुई स्त्री-सुलभ आँखों से देख रहा था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने बुड्ढी स्त्री से पूछा—'कहो, कहाँ कहाँ हो आई ? कीव गई थीं ?'

उस स्त्री ने भन्नाये हुए स्वर में उत्तर दिया—'हाँ महोदय, वहीं गई थी। बड़े दिन के ऊपर मुझे सन्तजी के पवित्र वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और मालिक, अब मैं कोलयाज़िन से चली आ रही हूँ। वहाँ तो परमात्मा की बड़ी अद्भुत लीला दिखाई पड़ती है।'

'और तुम्हारे साथ इवानुश्का भी था ?'

इवानुश्का ने गूँजती हुई आवाज़ में बोलने की चेष्टा करते हुए कहा—'मेरे दाता, मैं अकेला ही तीर्थयात्रा करता हूँ। मुझे पेलाजिया यहीं युखनोवो में मिल गई थीं।'

पर पेलाजियां ने बाधा दी। वह अपनी बात सुनाने को बेतरह उत्कण्ठित दिखाई पड़ती थी। बोली—

'मालिक कोलयाज़िन में बड़ी विचित्र लीला दिखाई दी है।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने पूछा—'क्या? कोई नया चमत्कार?'

प्रिंसेज़ मेरी बोली—'एण्ड्र्यू, जाने भी दो। पेलाजिया, मत बताना।'

'पर बेटी क्यों न बताऊँ?—हज़ार दफ़े बताऊँगी। मुझे यह बड़े अच्छे लगते हैं। बड़े दयालु हैं, परमात्मा की इन पर विशेष कृपा है, कितने दयाशील हैं, मुझे याद है, अभी भूली नहीं हूँ, इन्होंने मुझे एक दफ़ा दस रूबल का नोट दिया था। हाँ, तो जब मैं कीव में थी तो मस्तराम सिरिल ने मुझसे कहा—(वह तो भगवान ही का आदमी है, जाड़े हों या गर्मी, कभी जूते पहनने का नाम नहीं लेता)—"तुम इधर-उधर टक्करें क्यों खाती फिरती हो?— असली जगह क्यों नहीं जातीं? कोलयाज़िन जाओ, वहाँ माँ मेरी की एक विचित्र मूर्ति प्रकट हुई है।" यह सुनकर मैंने पवित्र संतों से विदा माँगी और चट रवाना हो गई।'

सब चुप थे, केवल वह यात्रिन स्त्री ही साँस ले-लेकर नपी-तुली आवाज़ में बोल रही थी।

'तो मालिक, जब मैं वहाँ पहुँची तो क्या देखती हूँ, हर किसी के मुँह पर वही चर्चा—"साक्षात् माँ मेरी उतरी हैं, माँ के गालों से आँसुओं की बूँदें झड़ती हैं।"'

प्रिंसेज़ मेरी ने सलज्ज भाव से कहा—'अच्छी बात है, पर यह सारी बातें अकेले में कहना।'

पीरी ने पूछा—'ज़रा मैं भी तो पूछूँ। अच्छा बताओ, यह कौतुक तुमने अपनी आँखों से देखा ?'

'हाँ, मालिक, उसे देखने का मुझे भी सौभाग्य मिला था—न जाने कब के पुण्य जागे। मुखौटी ऐसी दमक रही थी मानो स्वर्ग की ज्योति आकर इकट्ठी हो गई हो। और हमारी माँ के गाल से बूँद-बूँद करके...... ।'

पीरी ने सहज भाव से कहा—'पर यह तो सरासर धोका-धड़ी है !'

भयातुर पेलाजिया ने प्रिंसेज़ मेरी की ओर सहायता की याचना भरी दृष्टि से देखकर कहा—'मेरे मालिक, तुम क्या कह रहे हो !'

पीरी ने दुहराया—'सरासर धोकाधड़ी !'

यात्रिन स्त्री ने क्रास का चिह्न बनाकर कहा—'हे मेरे ईसु भगवान् ! मालिक, ऐसी बात नहीं कहते हैं ! एक जनरल भी ऐसा ही था जो कहता फिरता था—"यह सारी पुजारियों की कारस्तानी है," और यह कहते ही वह अंधा हो गया। फिर उसे सुपना हुआ। कीववाली मेरी मय्या ने सुपने में आकर दर्शन दिये और कहा—'मुझ में विश्वास कर और तेरी आँखें वापस मिल जायँगी।" अब जनरल को प्रार्थना करने की सूझी—"मुझे वहीं ले चलो, मुझे वहीं ले चलो।" आँखों देखी बात है। जो देखा है वह कह रही हू। जनरल को मेरी मय्या के सामने लाया गया। वह

घुटनों पर गिरकर प्रार्थना करने लगा—"माँ, मेरी माँ, मेरे ऊपर दया करो, मेरे अपराध क्षमा करो, मेरी आँखों की ज्योति वापस दो, और मैं अपना सारा धन माल--जो कुछ मुझे ज़ार से मिला है—तुम्हारे अर्पण कर दूँगा।" मालिक, यह मेरी आँखों देखी बात है। मूर्ति पर एक तारा हरदम जगमगाता रहता है। क्षण भर के भीतर क्या अचरज हुआ ? उसकी आँखें वापस मिल गईं ! इस तरह बात नहीं करते हैं, पाप होता है। भगवान् तुमसे रूठ जायगा', उसने पीरी की ओर मुँह करते हुए नसीहत भरे लहजे में कहा।

पीरी ने पूछा—'और मूर्ति में तारा कहाँ से आ घुसा ?'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने मुस्कराकर पूछा—'और मेरी मय्या को जनरल का ओहदा मिला या नहीं ?'

अकस्मात् पेलाजिया का रंग बिल्कुल पीला पड़ गया। उसने अपने हाथ जोड़े। 'मालिक, मालिक, तुम क्या ग़ज़ब कर रहे हो ! तुम्हें भगवान् ने एक बेटा दिया है !' और उसका रंग पीलेपन से लाली में बदल गया।

उसने क्रास का चिह्न बनाया और कहा—'मालिक, तुमने क्या कह डाला ! भगवान् तुम्हें क्षमा करें ! हे मेरे परमात्मा, इनके कहे-सुने को क्षमा कर ! क्यों बेटी, यह सब क्या हो रहा है ?...' उसने मेरी की तरफ़ फिरकर कहा। इसके बाद वह उठ बैठी और सुबकियाँ लेते लेते अपनी झोली ठीक करने लगी। यह स्पष्ट था कि वह इस घर से, जहाँ ऐसी बातें कही जा सकती हों,

दान ग्रहण करने में ग्लानि और भय का बोध कर रही थी, और साथ ही उसे दुःख भी हो रहा था कि अब इस गृह की दान-दक्षिणा से उसे हाथ धोने पड़ेंगे।

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'एण्ड्र्यू, तुम भी कैसी बातें करते हो! तुम यहाँ आये ही क्यों?'

पीरी नें कहा—'नहीं, पेलाजिया, मैं तो हँसी कर रहा था।' इसके बाद उसने प्रिंसेज़ मेरी से फ्रेंच में कहा—'प्रिंसेज़, अपनी शपथ, मैं उसे कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता था।' उसने फिर रूसी भाषा में कहा—'मैंनें तो यों ही, तमाशे के लिए, कह दिया था।' उसने मुस्कराकर अपने अपराध को मिटाने की चेष्टा करते हुए कहा—'यह सारा मेरा अपराध था, और मैं सिर्फ़ दिल्लगी कर रहा था।'

पेलाजिया संदिग्ध भाव से रुक गई, पर पीरी के चेहरे पर पश्चात्ताप की ऐसी गहरी मुहर लगी हुई थी, और प्रिंस एण्ड्र्यू ऐसी अपराधियों की दृष्टि से देख रहा था कि उसे धीरे-धीरे आश्वासन हो गया और वह रुक गई।

× × × ×

रात के दस बजे के लगभग नौकर हड़बड़ाकर सदर दरवाज़े की ओर भागे। वृद्ध प्रिंस को गाड़ी की घण्टियों की आवाज़ आ रही थी। प्रिंस एण्ड्र्यू और पीरी भी बाहर निकलकर खड़े हो गये। वृद्ध प्रिंस दौरे पर से लौटे थे।

वृद्ध प्रिंस ने गाड़ी पर से उतरते-उतरते पीरी की ओर देखकर पूछा—'यह कौन है?'

जब उन्हें पता चला कि अपरिचित युवक घर का ही आदमी है तो उन्होंने उल्लास के साथ कहा—'आह ! बड़ी .खुशी की बात है ! मेरा चुम्बन करो।'

प्रिंस महोदय उस समय बड़े उल्लसित थे, अतः उन्होंने पीरी के साथ बड़े तपाक का व्यवहार किया।

भोजन से पहले प्रिंस एण्ड्र्यू ने अपने पिता की अध्ययन-शाला में जाकर देखा कि वह पीरी के साथ ज़ोर-शोर से बहस करने में संलग्न हैं। पीरी कह रहा था कि एक समय ऐसा आयेगा जब युद्ध का नामोनिशान तक मिट जायगा। वृद्ध प्रिंस इसका व्यंग्य-विद्रूप के साथ—पर क्रोध के साथ नहीं—निरसन कर रहे थे। उन्होंने कहा—

'आदमियों की धमनियों से खून निकालकर पानी भर दो और फिर लड़ाई कभी न होगी ! बूढी औरतों का सुपना !—बूढी औरतों का सुपना !' पर साथ ही उन्होंने पीरी के कंधे को स्नेह के साथ थपथपाया और इसके बाद वह मेज़ की ओर चले गये जहाँ प्रिंस एण्ड्र्यू, इस वार्तालाप में निर्लेप रहने के लिए, शहर से लाई गई अपने पिता की डाक छाँट रहा था। वृद्ध प्रिंस ने उसके पास पहुँचकर काम की बात करनी शुरू की।

'मार्शल काउण्ट रोस्टोव ने आधे भी आदमी नहीं भेजे। शहर में आकर हज़रत ने मुझे खाने की दावत देने की कोशिश की—मैंने भी उन्हें वह बढ़िया दावत दी कि मुन्ना याद करेंगे !... देखो, यह देखो...।' इसके बाद वह पीरी का कंधा थपथपाते हुए

प्रिंस एण्ड्र्यू से बोले—'भई लड़के, तुम्हारा दोस्त तो बड़ा अच्छा निकला। मैं ऐसे ही युवक को प्यार करता हूँ। पट्ठे ने मुझ में जोश फूँक दिया। ऐसी बारीकी की बातें कोई दूसरा भी कर सकता था, और शायद कोई उसकी बात की ओर कान भी न देता, पर यह मेरा शेर काम की बात भी कहता है और एक बूढ़े आदमी में जान भी फूँक देता है। अच्छी बात है, जाओ! शायद मैं भी भोजन के समय तुम्हारे पास आ पहुँचूँ। एक दफ़ा फिर बहस होगी। मेरी बावली बौरंगी लड़की से मेल करना।' उन्होंने पीरी से दरवाज़े में से चिल्लाकर कहा।

पीरी उन कठोर वृद्ध प्रिंस और सीधी सादी डरपोक प्रिंसेज़ मेरी का पहले ही क्षण से घनिष्ट मित्र बन गया।

सब उसे चाव की दृष्टि से देखने लगे। प्रिंसेज़ मेरी तो अपनी "रामललियों" के साथ उसके सहृदयता-पूर्ण व्यवहार को देखकर शुरू ही से उससे स्नेह करने लगी थी और उसकी ओर बड़ी सहृदयता-पूर्ण प्रोज्ज्वल दृष्टि से देखती थी। एक वर्ष का 'प्रिंस निकोलस' (यह उसके बाबा का दिया हुआ नाम था) भी उसे देखकर मुस्करा उठता था और उसकी गोद में चुपचाप पहुँच जाता था। जब वह वृद्ध प्रिंस से वार्तालाप करता तो माइकेल इवानिच और मेडेम बोरीन उसकी ओर मुस्कराते हुए देखते रहते।

वृद्ध प्रिंस भी भोजन के समय आये, और सिर्फ़ पीरी की ख़ातिर। पीरी यहाँ दो दिन ठहरा और इस बीच में वृद्ध प्रिंस ने

उसके साथ अत्यंत सहृदयता-पूर्ण व्यवहार किया, और फिर आने का निमंत्रण दिया।

पीरी के जाने के बाद जब घर के सारे लोग एकत्र हुए तो सब उसके विषय में अपनी-अपनी सम्मति प्रकट करने लगे, जैसा कि किसी नव परिचित व्यक्ति के जाने के बाद सदैव होता है, पर—किसी ने उसके विषय में अच्छी छोड़कर बुरी बात कोई नहीं कही, और ऐसा कम होता है।

——

तीसरा परिच्छेद

१८०८ में सम्राट् ऐलेक्ज़ण्डर ने एर्फर्ट में जाकर सम्राट् नैपोलियन से भेंट की और पीटर्सबर्ग की ऊँची सोसायटी में उस महत्त्वपूर्ण भेंट की शानशौक़त की .खूब चर्चा रही।

१८०९ में संसार के दोनों भाग्य-विधाताओं में—जैसा सम्राट् ऐलेक्ज़ण्डर और सम्राट् नैपोलियन को कहा जाता था—मैत्री इतनी घनिष्ट हो गई कि जब नैपोलियन ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की तो एक रूसी सेना भी हमारे पुराने मित्र सम्राट् .फ्रेंसिस के विरुद्ध हमारे पुराने शत्रु नैपोलियन की सहायता करने को सीमा पार करके आगे बढ़ी, और दरबारियों में बोनापार्ट और ऐलेक्ज़ण्डर की एक बहिन के विवाह-सम्बन्ध की चर्चा की जाने लगी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने दो वर्ष देहात में ही व्यतीत कर दिये।

१८०९ में वह रियाज़न रियासत का निरीक्षण करने गया। यह रियासत उसके पुत्र के नाम कर दी गई थी और उसे उसका अभिभावक बनाया गया था। और रियाज़न रियासत के ट्रस्टी की हैसियत से उसका उस प्रांत के ज़िमींदारों के मार्शल से भेंट करना आवश्यक था, और संयोगवश वह मार्शल काउण्ट इलिया रोस्टोव के सिवा और कोई नहीं था। प्रिंस एण्ड्र्यू आधी मई में उनसे भेंट करने गया।

उस समय वसंत और ग्रीष्म का सुन्दर योग दिखाई पड़ता था; सारा वन हरित परिधान से ढका हुआ था। धूल वगैरा उड़ रही थी और गर्मी इतनी तेज़ थी कि पानी के पास जाते ही स्नान करने की इच्छा होती थी।

प्रिंस एराड्र्यू गाड़ी में सवार, जिस कार्य्य के विषय में वह मार्शल से भेंट करना चाहता था, उसमें निमग्न, भग्नहृदय के साथ रोस्टोव परिवार के ओट्रेडनो भवन के सामनें जा पहुँचा। दाहिने हाथ की तरफ़ पेड़ों के पीछे से उसें बहुत-सी लड़कियों का सम्मिलित कोलाहल सुनाई पड़ा, और उसी समय उसने लड़कियों के एक झुण्ड को अपनी गाड़ी का मार्ग दौड़कर पार करते हुए देखा। सबके आगे, और गाड़ी के निकटतर, एक काले बालोंवाली दुबली-पतली सुन्दर लड़की पीली छींट की पोशाक पहने और माथे से जेबी रूमाल कसे, जिसमें से बालों की लटें निकलकर झूल रही थीं, भाग रही थी। लड़की ने चिल्लाकर कुछ कहा, पर जब उसने देखा कि आगन्तुक अपरिचित है, तो वह प्रिंस एराड्र्यू की ओर देखे बिना हँसती हुई वापस भाग गई।

१८०९ में भी काउराट इलिया रोस्टोव ओट्रैडनो में वही पहले जैसा अभ्यास-सिद्ध जीवन बिता रहे थे। कभी सारे प्रांत की दावत करते, कभी शिकार से उनका मनोरंजन करते, और कभी थियेटर कराते। प्रिंस एराड्र्यू से मिलकर वह प्रसन्न हुए—जिस प्रकार वह और किसी भी नये मुलाक़ाती से मिलकर प्रसन्न हो उठते थे—और उन्होंने उसे रातभर के लिए हठपूर्वक ठहरा लिया।

उस रात को अपरिचित भवन में अकेले उसे बहुत देर तक नींद न आ सकी। उसने कुछ देर तक पढ़ा, फिर क़न्दील बुझा दिया, पर फिर जला लिया। कमरे में गर्मी थी। खिड़कियों के दरवाज़े बन्द थे। उसे इस बौड़म बुड्ढे पर (जैसा कि वह काउण्ट रोस्टोव को कहा करता था) रह-रहकर गुस्सा आ रहा था। काउण्ट ने प्रिंस एण्ड्र्यू को यह कहकर रात भर के लिए टिकने को राज़ी कर लिया था कि मास्को से अभी कुछ ज़रूरी काग़ज़-पत्र नहीं आये हैं।

वह उठकर खिड़की के पास उसे खोलने गया। उसके खिड़की के पर्दे हटाते ही कमरे में चाँदनी छिटक गई, मानो वह इसके लिए पहले से बाट जोह रही थी। अब उसने पूरी खिड़की खोल ली। रात सजीव, उज्ज्वल और निस्तब्ध थी। खिड़की के सामने बराबर कटे हुए पेड़ों की एक क़तार खड़ी थी जो एक तरफ़ से काली दिखाई देती थी और दूसरी तरफ़ से चन्द्रमा के शुभ्र प्रकाश में चमचमा रही थी।

उसका कमरा निचली मंजिल में था। उससे ऊपर के कमरे के जीव भी अभी नहीं सोये थे। उसके कानों में स्त्री-कंठों की आवाज़ें आईं।

ठीक उसके सिर के ऊपर से एक बालिका-कण्ठ ने—जिसे वह तुरंत पहचान गया—कहा—'बस एक दफ़ा और।'

दूसरी आवाज़ आई—'पर तुम सोने कब चलोगी?'

'मैं नहीं सोती, मेरी आँख ही नहीं लगेगी, यों हीं क्यों पड़ी रहूँ? अच्छा, अब मान जाओ, बस यही आख़िरी होगा।'

दो स्त्री-कण्ठों ने एक गाना गाया जो किसी गीत का उत्तरार्द्ध था।

दूसरी आवाज़ ने कहा—'आहा, कैसा सुन्दर है! बस अब चलो, सोने चलें और सब ख़तम हो जायगा।'

पहली आवाज़ ने खिड़की की ओर बढ़ते हुए कहा—'तुम चाहो तो सो रहो, मुझे नींद नहीं आयगी।' स्पष्टतया ही वह कहनेवाली खिड़की के बिल्कुल बाहर झुकी हुई थी क्योंकि उसकी पोशाक की खसखसाहट, और उसके साँस लेने की आवाज़ तक कानों में आ रही थी। चंद्रमा, उसके प्रकाश, और पेड़ों की छाया की तरह और सारी वस्तुएँ भी घोर नीरवता में स्नान कर रही थीं। एण्ड्र्यू को भी—इस आशंका से कि कहीं उसकी अनिच्छित उपस्थिति न खुल जाय—वहाँ से हटने का साहस न हुआ।

पहली आवाज़ फिर सुनाई पड़ी—'सोनिया! सोनिया! तुम्हारी नींद भी क्या बला है! देखो कैसी सुहावनी रात है! अहा, कैसी सुहावनी है! सोनिया, उठो तो!' शायद उसके नेत्रों में आँसू आ चले थे क्योंकि उसका स्वर भारी और प्रकम्पित हो चला था। 'ऐसी सुन्दर रात पहले कभी नहीं हुई थी—कभी नहीं!'

सोनिया ने कुछ संकोच-पूर्ण उत्तर दिया।

फिर पहली आवाज़ आई—'ज़रा आकर देखो तो चंद्रमा कैसा निकल रहा है...! आहा, कैसा प्यारा लगता है! आओ, मेरी अच्छी सोनिया, मेरी प्यारी, मेरी आखों की पुतली, ज़रा यहाँ

आओ ! देखो, मुझे देखो। बस इस तरह, एड़ियों के बल बैठकर हाथ घुटनों के चारों ओर कस लिये और ख़ूब किलकिलाकर दबाया और बस उड़ गये ! यह देखो...!'

'देखो, होशियार रहो, गिर पड़ोगी।'

एण्ड्रयू के कानों में धींगामुश्ती की आवाज़ आई और फिर सोनिया की असहमति-सूचक आवाज़ सुनाई दी—'कब सोने चलोगी ?—दो बजनेवाले हैं।'

'तुम मेरा सारा आनन्द किरकिरा किये देती हो। जाओ, तुम चली जाओ, मैं न आऊँगी।'

फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गई। पर प्रिंस एण्ड्रयू को मालूम था कि वह अभी उसी स्थान पर बैठी है। बीच-बीच में उसके कानों में धीरे से हिलने-डुलने या लम्बी साँस लेने की आवाज़ आ रही थी।

अकस्मात् वह बोल उठी—'हे भगवान् ! हे भगवान् ! यह सब क्या लीला है ? अच्छी बात है, सोना पड़ेगा ही, तो यही सही।' और उसने खिड़की बंद कर दी।

जिस समय प्रिंस एण्ड्रयू के कान में उसकी आख़िरी आवाज़ आई तो उसने मन ही मन कहा 'मैं होऊँ या न होऊँ, इसकी इसे क्या चिंता ?' पर साथ ही किसी अज्ञात कारण से उसे आशा बनी हुई थी कि वह उसके संबंध में भी कुछ न कुछ कहेगी। उसने सोचा—'यह देखो, फिर आ मौजूद हुई ! मानो इस संयोग में भी कुछ भेद छिपा हो।'

और अकस्मात् उसके हृदय में सजीवता-पूर्ण विचार और आकांक्षाओं का ऐसा उद्वेलनकारी उद्रेक हो उठा—और यह उसके लिए नई बात थी—कि उसका कारण समझने में असमर्थ होने पर वह चारपाई पर जा पड़ा, और लेटते ही सो गया।

दूसरे दिन सुबह को प्रिंस एण्ड्र्यू सिर्फ काउण्ट से भेंट करके बिना महिलाओं की बिदा लिये घर को रवाना हो गया। घर के पास आने पर उसकी दृष्टि अपने भवन से लगे हुए वन के एक पुराने शाहबलूद के पेड़ की तरफ़ आकृष्ट हो गई। जून मास का आरम्भ था। शाहबलूद ने एक नया ही कलेवर धारण कर लिया था। उसने हरे-हरे कोमल पत्तों का एक शामियाना सा तान रक्खा था और उसकी एक सदी पुरानी छाल में भी जगह-जगह कोंपलें फूट निकली थीं। प्रिंस एण्ड्र्यू के हृदय में इस वृक्ष को देखकर वसंत ऋतु के प्रफुल्लता-पूर्ण हर्षातिरेक और आनन्दोल्लास की प्रबलता हो उठी।

अकस्मात् प्रिंस एण्ड्र्यू ने निश्चयपूर्वक निष्कर्ष के साथ कहा- 'नहीं नहीं, इकत्तीस वर्ष की आयु हो चली है' यह माना—पर अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। घर वापस आने के बाद से प्रिंस एण्ड्र्यू ने आगामी हेमंत में पीटर्सबर्ग जाने का निश्चय किया और इस निश्चय के अनुरूप उसे अनेक कारण भी दिखाई पड़े।

१८०९ में प्रिंस एण्ड्र्यू पीटर्सबर्ग पहुँचा।

——

चौथा परिच्छेद

पीरी जिस निर्जीवता और विषण्णता से इतना डरता था उसने अब उस पर फिर अधिकार जमा लिया।

इसी अवसर पर उसे अपनी स्त्री का पत्र मिला। पत्र में उसने उससे मिलने की बड़ी अनुनय-विनय की थी, और लिखा था कि किस प्रकार वह उसके विरह से दुखी रहती है, और किस प्रकार वह उसकी सेवा में अपना जीवन अर्पण कर देना चाहती है।

पत्र के अन्त में उसने यह भी लिखा था कि दो-एक दिन में वह विदेश से पीटर्सबर्ग वापस आनेवाली है।

और उसी अवसर पर उसकी सास का एक पत्र आया जिसमें उसने पीरी से प्रार्थना की थी कि वह कुछ मिनटों के लिए उससे खड़े-खड़े मिल जाये क्योंकि एक अत्यन्त आवश्यक विषय पर उससे बातचीत करनी है। पीरी ताड़ गया कि यह सब षड्यन्त्र का सूत्रपात है, और ये सब लोग मिलकर किसी न किसी तरह उसकी बीवी को उसके गले फिर चपेक देना चाहते हैं; और उस समय वह जिस मनोवृत्ति के वशवर्ती था, उसके अनुसार वह कुछ अप्रसन्न भी नहीं हुआ। अब वह सब ओर से उदासीन था। उसने इस बात पर विचार नहीं किया कि संसार में कोई वस्तु किसी विशेष महत्त्व की भी हो सकती है, और उस निर्जीवता के वशीभूत होकर, जिसने उस पर इन दिनों बुरी तरह अधिकार कर लिया

था, वह न अब अपनी स्वच्छन्दता का ही कुछ मूल्य समझता और न अपनी स्त्री को दण्ड देने के निर्णय पर ही कुछ ग़ौर करता।

उसने सोचा—'न कोई पापी है, और न कोई पुण्यात्मा, इसलिए उसने भी कोई पाप नहीं किया था।'

यदि उसने उसी क्षण अपनी स्त्री को बुलाने की स्वीकृति नहीं दे दी तो उसका कारण केवल यह था कि उसकी निर्जीवता ने उसे कोई नया संकल्प करने में अशक्त बना दिया था। यदि उस समय उसकी स्त्री वहाँ आ पहुँचती तो वह उसे घर से न निकाल देता। जिस विचार-धारा ने उसके हृदय में इस समय प्रत्यूह उत्पन्न कर दिया था उसके मुक़ाबले में क्या यह समस्या कुछ विशेष महत्त्व रखती थी कि वह अपनी त्यक्ता पत्नी के साथ रह सकेगा या नहीं?

पर उसने न अपनी सास के पत्र का कोई उत्तर दिया, और न अपनी पत्नी को ही कोई ख़त लिखा।

पीरी की डायरी का एक पृष्ठ—

"पीटर्सबर्ग, २३ नवम्बर: मैंने अपनी स्त्री के साथ फिर रहना शुरू कर दिया है। मेरी सास खुद आईं और रो-रोकर कहने लगीं कि हैलेन यहीं मौजूद है, और कि वह मेरे सामने अपनी बात कहने की प्रार्थना करती है कि वह बिल्कुल निर्दोष है, और मेरे त्यागने पर बड़े कष्ट में दिन बिता रही है। उन्होंने इसी तरह की और भी बहुत सी बातें कहीं। मैं यह जानता था कि यदि मैंने उसे अपने सामने आने की अनुमति दे दी तो मुझमें उसकी इच्छा अस्वीकार करने योग्य शक्ति न रह जायगी। इस तरह द्विधा में

पढ़कर मैं निश्चय न कर सका कि मुझे किसकी सलाह और सहायता लेनी चाहिए। मैंने निष्कर्ष निकाला कि याचक की प्रार्थना का अस्वीकार नहीं करना चाहिए। हरएक की ओर—और विशेषकर उसकी ओर जिसका मेरे जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है—सहायता का हाथ बढ़ाना चाहिए, और अपने भाग्य पर सन्तोष करना चाहिए। पर यदि मैं उसे केवल न्यायाचरण की दृष्टि से क्षमा करता हूँ तो मेरा उसका सम्पर्क केवल आत्मिक होना चाहिए—भौतिक नहीं। बस, मैंने यही निश्चय किया। मैंने अपनी स्त्री से कहा कि मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ अन्याय किया हो, उसकी क्षमायाचना करता हूँ। उससे यह सब कहते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द हुआ। उसे यह बताने की क्या ज़रूरत है कि उसकी सूरत देखकर मुझे कितना दारुण सन्ताप हुआ है ? इस विशाल भवन का ऊपरी हिस्सा मैंने अपने लिये ठीक समझा है, और मैं नवजीवन की उल्लासपूर्ण अनुभूति कर रहा हूँ।"

हैलेन जैसी उच्च सोसायटी में रहनेवाली स्त्री के लिए पीरी जैसा पति सोलह आने ठीक था। वह एक ऐसा तटस्थ और सनकी पति था जो किसी के रास्ते में रुकावट नहीं डालता था, और बजाय इसके कि वह ड्रायंगरूम के आनन्द-उल्लास-पूर्ण जन-रव में व्याघात उपस्थित करता, उल्टे वह अपनी मनोहारिणी और व्युत्पन्नमति पत्नी के साथ आकाश-पाताल का अन्तर स्थापित करके उसके लिए एक उपयोगी आश्रय-स्थल का काम देता। उसने

अपनी स्त्री के वर्ग के प्रति उपेक्षा, उदासीनता, और उदारहृदयता का भाव ग्रहण कर लिया था। वह अपनी पत्नी के कमरे में इस प्रकार घुसता जिस प्रकार कोई थियेटर में घुसता है; वह सबसे भेंट करता, सबसे मिलकर प्रसन्न होता, और साथ ही सबसे असम्पृक्त रहता। कभी-कभी वह किसी रोचक वार्तालाप में भाग भी लेता, और बिना यह देखे हुए कि कोई राजदूत उपस्थित है या नहीं, हकलाकर अपने विचार प्रकट करना शुरू कर देता, और कभी-कभी उसकी यह अभिव्यक्ति अन्य उपस्थित व्यक्तियों की सर्व-मान्य धारणा के विरुद्ध पड़ती। पर साधारणतया 'पीटर्सबर्ग की सुन्दरी-शिरोमणि' स्त्री के इस विचित्र पति के विषय में जो धारणा प्रचलित थी वह इतनी दृढ़ हो चली थी कि उसके इन वहमों की ओर कोई गम्भीरता से ध्यान न देता।

हैलेन के पास रोज़ आनेवाले नवयुवकों में बोरिस ड्रूबेट्स्काय (प्रिंसेज़ अन्ना मिखायलोव्ना का पुत्र) उसका सबसे अधिक अंतरंग था। हैलेन ने उसका नाम रक्खा था 'मेरा दुलारा,' और वह उससे इस तरह खिलवाड़ करती जिस तरह बच्चों से करते हैं। वैसे वह अन्य सारे लोगों को जैसी मुस्कराहट प्रदान करती, बोरिस को भी वही मुस्कराहट देती, पर कभी-कभी पीरी इस मुस्कराहट को देखकर मन ही मन क्षुब्ध हो उठता। उसके साथ बोरिस एक खास ढंग के रोबदार और खिन्न आदरभाव से पेश आता। इस आदरभाव से पीरी और भी क्षुब्ध हो उठता। अब से तीन साल पहले उसकी स्त्री ने उसे जो नीचा दिखाया था उससे उसे ऐसी

मर्मान्तक दारुण वेदना हुई थी कि वह अब उसकी पुनरावृत्ति के ख़तरे से बचने के लिए अपने आपको अपनी पत्नी का पति ही न समझता।

पीरी मन ही मन कहता—'कैसी भयंकर घृणा है? और किसी ज़माने में मैं इस लड़के को कितना प्यार करता था!'

——

पाँचवाँ परिच्छेद

पीटर्सबर्ग आकर दूसरे दिन प्रिंस एण्ड्र्यू उन परिवारों से भेंट करने गया जिनसे वह अभी तक भेंट न कर सका था। और इन परिवारों में रोस्टोव परिवार भी शामिल था। सौजन्य के विधान के अनुसार उसे उनके घर ज़रूर जाना चाहिए था, और साथ ही वह उस मौलिक, आकांक्षामयी लड़की को, जिसकी ओर वह इतना आकृष्ट हो गया था, उसके घर में देखना चाहता था। रोस्टोव परिवार देहात से कुछ दिनों के लिए यहीं आ गये थे।

और सबसे पहले उसके सामने नटाशा ही आई। वह उस समय गहरे नीले रंग की घरेलू पोशाक पहने हुए थी। रोस्टोव परिवार ने उसका हृदय से स्वागत किया जैसे किसी पुराने मित्र का स्वागत करते हैं। किसी ज़माने में वह इस परिवार को बड़ी कड़ी आलोचनात्मक दृष्टि से देखता था, पर अब उसे सारे परिवार में सहृदय, सरल और भद्र जीव नज़र आये। काउण्ट के आतिथ्य-सत्कार में कुछ ऐसा सहज आग्रह निहित था कि प्रिंस एण्ड्र्यू भोजन करने से इन्कार न कर सका। उसने मन ही मन कहा—'हाँ, सचमुच सब भले आदमी हैं, पर शायद इन्हें इस बात का गुमान तक नहीं है कि नटाशा के रूप में उनके घर कैसी अतुल निधि मौजूद है। इसमें शक नहीं कि सब नेक हैं। इस अत्यंत

कवित्वमयी, सजीवता-पूर्ण, मनोहारिणी लड़की के अनुकूल इससे अच्छा वातावरण हो ही क्या सकता है।'

नटाशा में प्रिंस एण्ड्र्यू एक अपरिचित विश्व की अनुभूति करता। उसे देखते ही उसके हृदय में ऐसा प्रबल आनन्दोद्रेक हो उठता कि वह आकुल हो जाता। पर अब इस नवीन विश्व ने उसे आकुल करना छोड़ दिया था, अब उसे वह अपरिचित लोक दिखाई न देता था; अब वह स्वयं उसमें प्रविष्ट होकर एक नवीन आनन्द की अनुभूति कर रहा था।

भोजन के बाद प्रिंस एण्ड्र्यू के अनुरोध से नटाशा ने पियानो पर गाना आरम्भ किया। प्रिंस एण्ड्र्यू खिड़की के पास खड़ा हुआ महिलाओं के साथ बातें करता-करता उसका गाना सुन रहा था। एक पद पर उसने अकस्मात् महिलाओं से बातचीत करना बन्द कर दिया और उसे प्रतीत हुआ कि आँसुओं से उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया है। पहले वह इसी भावावेश को अपने लिए असम्भव समझता था। वह गाती हुई नटाशा की ओर एकटक देखने लगा, और उसके हृदय में एक नवीन और उल्लास-पूर्ण स्पन्दन हो उठा।

गाना समाप्त करके नटाशा प्रिंस एण्ड्र्यू के पास पहुँची और पूछने लगी कि उसे उसकी आवाज़ कैसी लगी। पर जब वह यह प्रश्न कर चुकी तो लजा गई और सोचने लगी कि उसे ऐसा प्रश्न न करना चाहिए था। प्रिंस एण्ड्र्यू उसकी ओर देखकर मुस्कराया और बोला कि उसे उसका गाना

अच्छा लगा, उसी तरह जिस तरह उसे उसके और सारे काम अच्छे लगते हैं।

शाम को प्रिंस एराड्र्य्‌ रोस्टोव परिवार से विदा होकर अपने घर पहुँचा, और चारपाई पर जा लेटा, पर उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह न सो सकेगा। उसने क़न्दील जलाया और चारपाई पर बैठ गया; फिर उठ बैठा, और फिर लेट गया, और अपनी इस बेचैनी से उसे तनिक भी कष्ट नहीं पहुँचा। उस समय उसका हृदय आह्लाद से स्फूर्ति-पूर्ण हो रहा था, मानों वह एक गंदे कमरे में से निकलकर परमात्मा के प्रकाश में आ पहुँचा हो। उसकी समझ में यह बात न आ सकी कि वह नटाशा से प्रेम करता है—इसका उसने ध्यान तक न किया। उसने केवल उसकी मूर्ति को कल्पना के नेत्रों से देखा, और फलतः उसका सारा जीवन सुखमय हो उठा।

काउएट रोस्टोव ने प्रिंस एराड्र्य्‌ को दूसरे दिन के भोजन का निमंत्रण दिया था, और प्रिंस एराड्र्य्‌ दूसरे दिन रोस्टोव परिवार में पहुँचा और दिन भर वहीं रहा।

घर का बच्चा-बच्चा जानता था कि प्रिंस एराड्र्य्‌ किसके लिए आया है, और वह भी इसे छिपाने की चेष्टा न करके दिन भर नटाशा के पास ही बना रहा। न केवल भीत, पर प्रसन्न और प्रफुल्लित, नटाशा के हृदय में ही, बल्कि सारे घर भर में एक प्रकार का आतंक फैला हुआ था कि कुछ न कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य्य होना अनिवार्य्य है। जब प्रिंस एराड्र्य्‌ नटाशा से बातचीत करता तो काउएटेस

उसकी ओर क्षुब्ध और कठोर नेत्रों से देखतीं, पर जब वह उनकी ओर दृष्टि फेरता तो भीतभाव से कृत्रिमता के साथ इधर-उधर की बातें करने लगतीं। सोनिया नटाशा को अकेली छोड़ते हुए भी भयभीत होती, और साथ ही व्यर्थ ही प्रिंस एण्ड्र्यू के मार्ग में रुकावट भी न डालना चाहती। जब नटाशा प्रिंस एण्ड्र्यू के साथ अकेली रह जाती तो प्रतीक्षापूर्ण भीति से उसका चेहरा पीला पड़ जाता। प्रिंस एण्ड्र्यू की कातर मुद्रा को देख-देखकर नटाशा हैरान थी। उसे प्रतीत हुआ कि प्रिंस एण्ड्र्यू उससे कुछ कहना चाहता तो है, पर वह बात कहने का उसमें साहस नहीं है।

जब शाम के वक्त प्रिंस एण्ड्र्यू विदा हो गया तो काउण्टेस नटाशा के पास पहुँचीं और बोलीं—'बोलो?'

नटाशा ने कहा—'माँ, तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, अभी मुझसे कुछ मत पूछो! मेरे प्राण निकल जायँगे।'

पर तो भी नटाशा उस रात को अपनी माँ के बिछौने पर पड़ी-पड़ी शून्य दृष्टि से ताकती रही। कभी वह उत्तेजित हो उठती, और कभी भयभीत। उसने अपनी माँ को बताया कि किस प्रकार प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसका प्रशंसा की थी, बताया था कि वह विदेश को जा रहा है, और पूछा था कि वे आगामी ग्रीष्म ऋतु कहाँ बितायँगे।

उसने कहा—'पर ऐसा...ऐसा...मुझे कभी मालूम नहीं हुआ था! मुझे उनके साथ रहते हुए भय मालूम होता है। जब कभी उनके साथ अकेली होती हूँ, डर जाती हूँ। माँ, इसका क्या

अर्थ है? क्या सचमुच—क्या सचमुच ही यह सब होकर रहेगा? हाँ? माँ, क्या तुम सो गईं?'

माँ ने कहा—'नहीं मेरी बेटी, मुझे ख़ुद भय लग रहा है। अच्छा अब जाओ, सोओ।'

'मेरी आँख ही न लगेगी। सो जाऊँ?—कैसी बेढंगी बात है!...मैया, मैया! मुझे पहले ऐसा कभी मालूम नहीं पड़ा था,' नटाशा अपने हृदय की वस्तु-स्थिति से सचेत होकर विस्मय-भीति के साथ बोली—'क्या ऐसा पहले कभी सोचा था!'

नटाशा को ऐसा प्रतीत होने लगा कि जिस समय उसने प्रिंस एण्ड्र्यू को ओट्रैडनो में देखा था, उसी समय से वह उससे प्रेम करने लग गई थी।

'और संयोग की बात, वह भी पीटर्सबर्ग में तभी आये जब हम यहाँ मौजूद थे। भाग्य है, भाग्य! बस, यह भाग्य है जो यह सब करा रहा है! मैंने तो उन्हें वहीं पर जब देखा था तभी मेरे हृदय में एक खलबली-सी मच गई थी।'

'और तुझसे उसने और क्या-क्या कहा था? ज़रा वह कविताएँ तो पढ़कर सुना।' माँ ने कहा। प्रिंस एण्ड्र्यू ने दिन में नटाशा के एल्बम में कुछ कविताएँ लिखी थीं।

'माँ, उनकी पहली बहू मर गई है, यह मेरे लिए लज्जा की बात तो नहीं है?'

'बेटी, ऐसी बात नहीं करते हैं! ईश्वर से प्रार्थना कर—"जोड़ा वही बनाकर भेजता है"।'

'प्यारी मैया, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ ! मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है !' नटाशा उत्तेजना और हर्ष के आँसू बहाती हुई बोली, और अपनी माँ के कलेजे से लिपट गई ।

और उसी समय प्रिंस एण्ड्रय् पीरी के साथ बैठा हुआ उसे नटाशा के प्रति अपने प्रेम की बात सुना रहा था, और कह रहा था कि उसने उससे शादी करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है ।

× × × ×

काउण्टेस हैलेन ने उस दिन अपने घर एक आयोजन किया था जिसमें फ़्रेंच राजदूत उपस्थित था, और फ़्रेंच-सम्राट् के रक्त से संबंध रखनेवाला एक प्रिंस भी मौजूद था जिसने इधर कुछ दिनों से उसके पास बहुत आवा-जाई शुरू कर दी थी। और बहुत सी सुन्दर महिलाएँ और सज्जन मौजूद थे। पीरी उतरकर नीचे गया और सारे कमरों में घूमता फिरा। सब उसकी चिन्तित और विषण्ण मुद्रा को देखकर चकित रह गये।

आधी रात के समय वह काउण्टेस के कमरों में से आकर पुरानी सी पोशाक पहने अपने कमरे में बैठा हुआ एक पुरानी पुस्तक में से कुछ नक़ल करने में लग गया। सारा कमरा तम्बाकू के धुएँ से भरा हुआ था। इसी समय कमरे में कोई आ पहुँचा। यह प्रिंस एण्ड्रय् था।

पीरी ने संलग्न और असंतुष्ट भाव से कहा—'अहा, तुम हो ! और देखो, मैं इसमें लगा हुआ हूँ।' उसने अपनी नोट-बुक की ओर संकेत किया, उस अभागे मनुष्य की तरह जो अपने

दुर्भाग्य से बचने के लिए अपने काम की ओर असंतुष्ट नेत्रों से देखता है।

प्रिंस एण्ड्र्यू का चेहरा नवजीवन की हर्षातिरेकपूर्ण कांति से तमतमा रहा था। उसने पीरी के खिन्न चेहरे की ओर ग़ौर से नहीं देखा, और वह उसकी ओर देखकर हर्ष की आत्मश्लाघा के साथ मुस्कराया।

उसने कहा—'मेरे जिगरी दोस्त, मेरी तबियत न मानी और इस वक़्त यहाँ आ मौजूद हुआ। पहले मेरी ऐसी दशा कभी नहीं हुई थी। मेरे मित्र, मैं प्रेम करता हूँ!'

अकस्मात् पीरी ने एक लम्बी साँस ली और प्रिंस एण्ड्र्यू की बग़ल में सोफ़ा पर अपना भारी भरकम शरीर डाल दिया।

उसने पूछा—'नटाशा रोस्टोव से?—ऐं न?'

'हाँ, हाँ! और ऐसा कौन हो सकता है?'

अकस्मात् पीरी ने सोफ़ा से उठकर कमरे में चहल-क़दमी करते हुए कहा—'मैं? मैं? मेरा हमेशा से यही ख़याल था। लड़की हीरों में तोलने लायक़ है...बस, इस लोक से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। मेरे दोस्त, मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ, फ़जूल की फिला-सफी मत घुसेड़ो, शक को बालायेताक़ रख दो, और झटपट शादी कर डालो! और मुझे यक़ीन है फिर दुनिया में तुमसे अधिक सुखी आदमी दूसरा न निकलेगा।'

'पर उसकी बात तो कहो?'

'वह तुम पर मर रही है!'

'तुम तो फ़जूल बातें करते हो...' प्रिंस एण्ड्र्यू ने मुस्कराकर पीरी के नेत्रों से नेत्र मिलाये।

पीरी ने रोष के साथ चिल्लाकर कहा—'मैं फिर कहता हूँ, वह मर रही है!'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसकी बाँह पकड़कर कहा—'पर मेरी बात तो सुनो। तुम जानते हो मेरी आजकल क्या हालत है? मैं यह सब किसी से कह डालना चाहता हूँ।'

'अच्छा, बोलो, बोलो। मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है।' पीरी ने कहा, और सचमुच उसका चेहरा परिवर्त्तित हो चला, चेहरे की सिल्वटें निकल गईं, और वह प्रिंस एण्ड्र्यू की बात प्रसन्नता के साथ सुनने लगा। प्रिंस एण्ड्र्यू ने तो अब बिल्कुल दूसरा ही कलेवर बदल लिया था। उसकी वह गर्हणा, जीवन के साथ उसकी वह घृणा, और उसकी वह आत्मचेतनता अब कहाँ ग़ायब हो गई थी? केवल पीरी ही एक ऐसा आदमी था जिसके सामने उसने सब कुछ खोलकर रख देने का निश्चय किया था, और उसी के सामने उसने अपना कलेजा चीरकर रख दिया। कभी वह भावी जीवन के लिए योजनाएँ स्थिर करता, कभी कहता कि वह अपने पिता के वहम की ख़ातिर अपने सुख की हत्या नहीं कर सकता।

वह बोला—'अगर अब से कुछ ही दिन पहले कोई मुझसे आकर कहता कि मैं इस प्रकार प्रेम कर सकता हूँ तो मैं ख़ुद यक़ीन न कर सकता। पहले जैसी कोई बात ही नहीं है। अब मेरे

लिए सारी दुनिया दो हिस्सों में बँटी हुई है : एक हिस्सा .खुद वह है, और वहीं सारी आशा, आकांक्षा, हर्ष और प्रकाश केन्द्रित हैं; दूसरा हिस्सा वह विराट्, शून्य है जहाँ उसका पता नहीं है, और वहाँ निविड अंधकार, घोर शोक-मग्नता छाई हुई है... ।'

पीरी ने समर्थन किया—'हाँ, शोकमग्नता और अंधकार, ठीक, मैं जानता हूँ ।'

'अगर मैं प्रकाश से प्रेम करता हूँ, तो इसमें मेरा क्या दोष है? और मैं इस वक़्त बड़ा सुखी हूँ । तुम मेरी बात समझते हो न? मैं जानता हूँ, तुम सिर्फ़ मेरी ख़ातिर ही इतने प्रसन्न हो ।'

'हाँ, हाँ', पीरी ने कहा, और उसके नेत्र धुँधले और अधिक शोकमग्न हो चले । उसे प्रिंस एण्ड्र्यू का भावी जीवन जितना ही सुखमय दिखाई देता, अपना उतना ही अंधकारपूर्ण लगता जाता ।

———

छठा परिच्छेद

विवाह के लिए पिता की अनुमति लेना आवश्यक था, अतः प्रिंस एण्ड्र्यू दूसरे ही दिन घर को रवाना हो गया।

उसके पिता ने अपने पुत्र की सूचना बाहर से तो बड़े शांत भाव से ग्रहण की, पर मन ही मन उन्हें बड़ा क्रोध आया। उनकी समझ ही में यह बात न आ सकी कि किसी के मन में अपने जीवन में परिवर्त्तन करने, या उसमें कोई नवीनता उत्पन्न करने, की इच्छा किस तरह उत्पन्न हो सकती है। वृद्ध सज्जन ने सोचा—'बस, किसी तरह ये लोग मुझे अपने मन के मुताबिक़ बाक़ी दिन बिता लेने दें, बाद को इनके जी में जो आये सो करें।' पर उन्होंने अपने पुत्र के साथ कूट-नीति से काम लिया जिसका प्रयोग वह विशेष अवसरों पर किया करते थे, और सारे मामले पर बड़े शांत भाव से चर्चा की।

'पहला दोष तो यह है कि यह सम्बन्ध पद, वंश, और सम्पत्ति—किसी भी दृष्टि से अच्छा नहीं है। दूसरी बात यह है कि तुम अब पहले जैसे युवक नहीं हो और साथ ही बीमार भी रहते हो। (वृद्ध ने इस बात पर ख़ास ज़ोर दिया); और बहू अभी बहुत छोटी है। तीसरी बात यह है कि तुम्हारे एक पुत्र है जिसे एक नादान लड़की के सिपुर्द करना मूर्खता होगी। और चौथी बात यह है,' पिता ने अपने पुत्र की ओर व्यंग्य-भर्त्सना के साथ देखा और कहा: 'कि

ब्याह को कम से कम साल भर के लिए टाल दो : विदेश जाओ, इलाज कराओ और इधर-उधर तलाश करके अपने लड़के के लिए एक जर्मन अध्यापक साथ ले आओ। और फिर भी अगर तुम्हारा यह प्रेम, या वासना, या हठ—कुछ भी कहो—वैसा ही बना रहा, तो शादी कर लेना! बस, मुझे इस पर सिर्फ़ यही कहना है! ख़बरदार, यही कहना है......!' प्रिंस ने ऐसे स्वर में कहा जिससे पता चलता था कि संसार की कोई शक्ति उनके निश्चय को नहीं बदल सकती।

प्रिंस एण्ड्र्यू की समझ में साफ़ आ गया कि वृद्ध पुरुष को यह आशा है कि उसके या उसकी भावी वधू के भाव साल भर की आँच बर्दाश्त न कर सकेंगे, या यह कि वह इस समय से पहले ही मर जायँगे; अतः उसने अपने पिता की इच्छा के अनुरूप ही चलना उचित समझा—विवाह-प्रस्ताव करना, और साल भर के लिए विवाह स्थगित कर देना।

रोस्टोव परिवार में वह दिन व्यतीत करने के तीन हफ़्ते बाद प्रिंस एण्ड्र्यू फिर पीटर्सबर्ग लौट आया।

× × ×

रात को अपनी माँ से बात करने के बाद दूसरे दिन नटाशा ने वोल्कोन्सकी के आने की सारे दिन प्रतीक्षा की, पर वह न आया। दूसरे और तीसरे दिन भी यही बात थी। पीरी भी नहीं आया, और नटाशा यह न जान सकने के कारण कि प्रिंस एण्ड्र्यू अपने पिता से मिलने गया है, उसके न आने का कारण न समझ सकी।

इसी तरह तीन हफ्ते बीत गये। नटाशा का जी कहीं बाहर निकलने को न करता, और वह इस कमरे से उस कमरे में छाया की तरह चक्कर लगाती रहती, अलस और उदास। रातों को वह छिप-छिपकर रोया करती, और अब अपनी माँ के पास न जाती। वह बात बात में लजा और चिढ़ जाती, और समझती कि उसकी हताशा की बात सबको मालूम हो गई है, और सब उसकी दिल्लगी उड़ा रहे हैं और उस पर दया कर रहे हैं। यह आन्तरिक दुःख एक तो वैसे ही प्रबल था, तिस पर इस मिथ्यागर्व के पुट से उसका क्षोभ सौगुना अधिक बढ़ गया था।

एक बार वह अपनी माँ के पास आई, कुछ कहने की चेष्टा की, और यकायक रोने-चिल्लाने लगी। उसके आँसू उस क्रुद्ध बच्चे के आँसुओं की तरह थे जो यह न जानता था कि उसे किस अपराध का दण्ड दिया जा रहा है।

काउण्टेस ने उसे शांत करने की चेष्टा की, पर उसने उनके पहले शब्दों को सुनने के बाद ही बाधा दी। कहा—

'माँ, छोड़ो यह ज़िक्र! मैं इस बात को जी से निकाल फेंकना चाहती हूँ। बस आये, सूरत दिखाई और चले गये, चले गये...!'

उसका स्वर कम्पित हो चला, और उसने फिर रोने की तय्यारी की, पर उसने अपने आप को संयत किया और कहा—

'और मैं ब्याह करना तनिक भी नहीं चाहती। मुझे उनसे डर लगता है...देखो—मैं अब कितनी शांत हो गई हूँ।'

दूसरे दिन सुबह को उसने अपनी पुरानी पोशाक निकालकर पहनी जिसे वह प्रात:कालीन समय को एक विशेष प्रकार से उल्लास-पूर्ण कर देनेवाली समझती थी। सुबह की चाय पीकर वह अपनी नृत्यशाला में चली गई। इस नृत्यशाला को वह बहुत पसंद करती थी क्योंकि इसमें आवाज़ गूँज उठती थी। वहाँ जाकर उसने वाद्ययंत्र पर अपना अभ्यास करना शुरू किया। जब वह गा चुकी तो बीचोबीच कमरे में चुपचाप खड़ी हो गई और अपने एक मनचाहते संगीत को गुनगुनाने लगी। वह उस शून्य नृत्यशाला को अपनी गुंजार से भरती हुई आवाज़ को ध्यान से सुनने लगी (मानो यह कोई अचरज की बात हो), और अंत में वह स्वर धीरे-धीरे विलीन हो गया, और वह एक बार फिर पहले जैसी प्रफुल्लित दिखाई पड़ने लगी। उसने मन ही मन कहा—'घुल-घुलकर मरने में क्या रक्खा है ? जैसा कुछ है, वैसा ठीक है।' और इतना कहकर वह कमरे में चहल-क़दमी करने लगी।

एक अर्दली कमरे में आकर कुछ सफ़ाई करना चाहता था, पर नटाशा ने उसे भीतर न आने दिया, और दरवाज़े बन्द करके चहलक़दमी करना जारी रक्खा। उस दिन सुबह से वह अपनी पुरानी मनचाहती मनोवृत्ति के वशीभूत हो गई थी—अपने आपसे प्रेम और अपने आप में उल्लास।

हॉल में पोर्च का दरवाज़ा खुला और किसी ने पूछा—'क्या सब घर ही पर हैं ?' और फिर पैरों की आहट आई। नटाशा

शीशे में अपनी सूरत देख रही थी, पर उसे अपना प्रतिबिम्ब दिखाई न पड़ा। उसे हाल में से आवाज़ें आती सुनाई दीं। अब उसने शीशे में अपनी सूरत देखी और उसे पीली ज़र्द देखकर हैरान हो गई। वही! उसे इसका निश्चय था, यद्यपि उसे बंद दरवाज़ों में से उसकी आवाज़ साफ़ तौर से सुनाई न पड़ सकी थी।

नटाशा पीली और उत्तेजित हुई सीधी ड्राइंग रूम में भागी। उसने जाकर कहा—'माँ, ! बोल्कोन्सकी आ गये ! माँ, मैं क्या करूँ, यह सब कुछ अब सहन नहीं होता ! मैं यह...मैं यह व्यथा अब नहीं सह सकती ! हाय, मैं क्या करूँ ?'

पर काउण्टेस के उत्तर से पहले ही प्रिंस एण्ड्र्यू कमरे में आ पहुँचा, उत्तेजित और गम्भीर। पर नटाशा को देखते ही वह खिल उठा। उसने काउण्टेस का हाथ चूमा, फिर नटाशा का हाथ चूमा, और सोफ़ा के पास कुर्सी खसका-कर बैठ गया।

काउण्टेस ने कहना आरम्भ किया—'तुमने तो बहुत दिनों बाद सूरत दिखाई...' पर प्रिंस एण्ड्र्यू ने बाधा दी।

'मैं इधर आपके दर्शन करने न आ सका, पर मैं अपने पिता के दर्शन करने गया था। मुझे उनसे एक अत्यंत आवश्यक विषय पर बातचीत करनी थी...मैं कल रात ही वापस आया हूँ।' इसके बाद उसने नटाशा की ओर देखकर कुछ रुककर काउण्टेस से कहा—'काउण्टेस, मुझे आपसे कुछ एकान्त में कहना है।'

काउण्टेस ने नेत्र नीचे कर लिये और लम्बी साँस ली।

वह ओठों में बोली—'बोलो, मैं सुनने को तय्यार हूँ।'

नटाशा जानती थी कि उसे इस अवसर पर चली जाना चाहिए, पर वह न जा सकी। किसी ने अकस्मात् उसका गला जकड़ लिया, और वह अत्यंत भद्दे ढंग से आँखें फाड़-फाड़कर प्रिंस एण्ड्र्यू की ओर देखती रही।

उसने सोचा—'अभी? इसी दम?...नहीं जी, यह नहीं हो सकता!'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसकी ओर एक बार फिर देखा और नटाशा को इस दृष्टि से विश्वास हो गया कि उसका अनुमान ग़लत नहीं है। हाँ, अभी, उसी दम, उसके भाग्य का निर्णय होनेवाला था।

काउण्टेस ने फुसफुसाकर कहा—'नटाशा, जा बेटी, मैं तुझे बुलवा लूँगी।'

नटाशा ने प्रिंस एण्ड्र्यू और अपनी माँ की ओर भीत, कातर, अनुनय भरी दृष्टि से देखा, और कमरे से चली गई।

प्रिंस एण्ड्र्यू बोला—'काउण्टेस, मैं आपसे आपकी लड़की का हाथ माँगने आया हूँ।'

काउण्टेस का चेहरा लाल हो उठा, पर वह कुछ देर तक कुछ न कह सकीं।

अन्त में उन्होंने संयतभाव से कहा—'तुम्हारा प्रस्ताव...।' प्रिंस एण्ड्र्यू चुपचाप उनके नेत्रों में देख रहा था। 'तुम्हारा प्रस्ताव...' (वह उद्विग्न हो गईं) 'हमारी इच्छा के अनुकूल है,

और मैं उसे स्वीकार करती हूँ। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई...... मुझे आशा है...मेरे पति भी...। पर सारी बातें लड़की की इच्छा पर हैं ......।'

प्रिंस एण्ड्र्यू बोला—'आप राज़ी हो जायँगी तो मैं उससे भी कहूँगा। तो आप राज़ी हैं न ?'

'हाँ', काउण्टेस ने कहा, और उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया और जब वह उसे चूमने के लिए झुका तो वैपरीत्य और सहृदयता के अद्भुत सम्मिश्रण के साथ उसके माथे से अपने ओंठ लगाये। वह उसे अपने पुत्र की तरह प्यार करना चाहती थीं; पर उल्टे उन्हें वह एक अजनबी और भयावह मनुष्य प्रतीत हो रहा था। काउण्टेस ने कहा—'मुझे पूरा विश्वास है, काउण्ट ज़रूर राज़ी हो जायँगे। पर तुम्हारे पिता...।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'मैंने अपने पिता से इसका ज़िक्र किया था, और वह सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी हुए हैं कि साल भर के लिए ब्याह मुलतवी कर दिया जाय। मैं ख़ुद आप से यह बात कहने-वाला था।'

'यह तो ठीक है कि नटाशा अभी बच्ची है, पर इतना समय ?...।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने लम्बी साँस लेकर कहा—'मजबूरी है।'

काउण्टेस ने कहा—'मैं उसे तुम्हारे पास भेजे देती हूँ।' और इतना कहकर वह कमरे से चली गईं। अपनी लड़की को इधर-उधर तलाश करती हुई वह बार बार कहने लगीं—'दयामय, दया करो!'

सोनिया ने बताया कि नटाशा अपने शयनागार में है। नटाशा चारपाई पर पीली-ज़र्द बनी बैठी थी और शुष्क नेत्रों के साथ मूर्तियों की ओर देखती हुई क्रास-चिह्न बना-बनाकर जल्दी-जल्दी कुछ कह रही थी। अपनी माँ को देखकर वह उछल पड़ी और उनके पास झपट गई।

'हाँ तो माँ...? क्या हुआ ?..।'

काउण्टेस ने शुष्कभाव से—नटाशा को ऐसा ही प्रतीत हुआ—कहा—'जा, उसके पास जा;—वह तेरा पाणिग्रहण करना चाहता है। जा...जा।' उन्होंने क्षोभ और भर्त्सना के साथ कहा, और जब नटाशा वहाँ से भागने लगी तो उन्होंने एक सर्द आह भरी।

नटाशा यह कभी याद न कर सकी कि वह ड्रायंगरूम तक कैसे पहुँची। जब उसने प्रिंस एण्ड्र्यू को देखा तो वहीं ठिठक गई। 'क्या यह सम्भव है कि यह अपरिचित पुरुष ही अब मेरे सब कुछ हैं ?' उसने अपने आप से प्रश्न किया और फिर तत्काल ही उत्तर दिया—'हाँ सब कुछ! अब संसार की सारी चीज़ों में मेरे लिए यही सबसे अधिक प्रिय हैं!' प्रिंस एण्ड्र्यू नीची निगाह किये उसके पास पहुँचा।

'जिस घड़ी से मैंने तुम्हें पहली दफ़ा देखा तभी से मैं तुम्हें प्रेम की दृष्टि से देखने लगा था। तो बताओ, क्या मैं आशा करूँ ?'

इतना कहकर उसने उसके चेहरे की तरफ़ देखा और उसकी गम्भीर ओजमयी मुद्रा को देखकर भौचक्का रह गया। उसका

चेहरा मानों कह रहा था—'यह भी कोई पूछने की बात है ? जिस बात को तुम .खुद अच्छी तरह जानते हो उसमें शक क्यों करते हो ? कहने की ही क्या ज़रूरत है, क्या हृदय के भाव शब्दों से प्रकट किये जा सकते हैं ?'

वह उसके और पास आ गई और झुकी। प्रिंस एराड्र्यू ने उसका हाथ पकड़कर चूमा। पूछा—

'तुम मुझसे प्यार करती हो ?'

'हाँ, हाँ !' नटाशा ने ओठों में कहा, मानो बड़ी अस्त-व्यस्तता के साथ। इसके बाद उसने ज़ोर से साँस ली, और सुबकियाँ भरनी शुरू कर दीं।

'यह क्या ? क्या मामला है ?'

'मैं इस समय बड़ी सुखी हूँ।' उसने रोते-रोते मुस्कराकर कहा, और उसके और भी पास आकर, क्षण भर के लिए रुककर, मानो अपने जी में निर्णय करते हुए, उसका चुम्बन किया।

प्रिंस एराड्र्यू ने उसके नेत्रों में उसी प्रकार झाँकते हुए कहा—'तुम्हारी माँ ने तुम्हें बता दिया है न कि अभी साल भर तक कुछ न हो सकेगा ?'

नटाशा सोच रही थी—'क्या यह सम्भव है कि मेरे जैसी एक शरीर लड़की—जैसा मुझे सब कहते हैं—इस अद्‌भुत, प्यारे चतुर पुरुष की, जिसका मेरे पिता तक आदर करते हैं—स्त्री बनूँगी, अर्द्धांगिनी बनूँगी ? क्या सचमुच यही बात है ? क्या सचमुच अब मैं अपने जीवन से पहले की तरह खिलवाड़ न कर सकूँगी;

क्या सचमुच अब मैं इतनी सयानी हो गई कि मुझे अपने हर एक काम और हर एक शब्द तक सोच-समझकर निकालना पड़ेगा ? हाँ, यही बात है। पर इन्होंने मुझसे क्या पूछा ?'

नटाशा ने उत्तर दिया—'नहीं !' पर वह उसका सवाल न समझ सकी थी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'क्षमा करना ! पर तुम अभी बड़ी अयानी हो, और मैं इतनी उम्र पार कर चुका हूँ। मुझे तुम्हारे विषय में बड़ी चिंता हो रही है; तुम अभी अपने आपको अच्छी तरह नहीं जानतीं।'

नटाशा ने उसकी बात बड़े मनोयोग से सुनी, पर उसका अर्थ न समझ सकी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहना जारी रक्खा—'वैसे यह मनहूस साल कटेगा तो बड़ी मुसीबत से, पर इस बीच में तुम अपने आप को अच्छी तरह समझ सकोगी। मुझे आशा है कि इस साल में तुम मुझे सुखी बनाने की कोशिश करोगी; पर अगर आगे चलकर तुम्हें पता चले कि तुम मुझ से प्रेम नहीं करतीं, या किसी दूसरे से प्रेम करो...'प्रिंस एण्ड्र्यू अस्वाभाविक ढंग से मुस्कराया, 'तो तुम स्वतंत्र हो, और हमारे इस संबंध का किसी को पता तक न चलेगा।'

नटाशा ने बाधा देकर कहा—'तुम ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ? तुम ख़ुद जानते हो कि जिस दिन से तुम ओट्रेडनो गये, उसी दिन से मैं तुम्हें प्रेम करने लगी थी।' उसने ज़ोर से कहा, और उसे विश्वास था कि उसने बिल्कुल सत्य बात कही है।

प्रिंस एण्ड्र्यू बोला—'साल भर में तुम अपने आप को अच्छी तरह पहचान सकोगी।'

अब कहीं जाकर नटाशा की समझ में आया कि विवाह साल भर के लिए स्थगित किया जा रहा है। उसने अकस्मात् कहा—'पूरा एक साल! पर साल भर क्यों? साल भर क्यों..?'

प्रिंस एण्ड्र्यू उसे इस विलम्ब का कारण समझाने लगा। नटाशा का ध्यान उस ओर नहीं था। उसने कहा—

'पर क्या पहले नहीं हो सकता?' प्रिंस एण्ड्र्यू ने कोई उत्तर न दिया; पर उसके चेहरे ने व्यंजित किया कि इस निश्चय को बदलना उसकी शक्ति के बाहर है।

अकस्मात् नटाशा चिल्ला उठी—'पहाड़-सा साल! कैसे कटेगा! हाय मैं क्या करूँ!' और वह फिर फफक-फफककर रोने लगी—'मैं तो साल भर तक तुम्हारी बाट देखती-देखती मर जाऊँगी—नहीं, यह असम्भव है, यह बड़ी भयंकर बात है!' और इतना कहकर उसने अपने प्रेमी के चेहरे की ओर देखा। उससे करुणा और उद्विग्नता व्यंजित होती थी।

अकस्मात् नटाशा ने संयत भाव से कहा—'नहीं, नहीं, मैं सब कुछ करने को तय्यार हूँ। मैं बड़े आनन्द में हूँ।'

माता-पिता ने कमरे में आकर भावी वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

उस दिन से प्रिंस एण्ड्र्यू रोस्टोव परिवार में एक सम्बद्ध प्रेमी की हैसियत से आने लगा।

पीटर्सबर्ग से अपनी बिदा के अवसर पर प्रिंस एण्ड्र्यू रोस्टोव परिवार में पीरी को भी पकड़ लाया। पीरी भग्नहृदय और विषण्ण दिखाई देता था। नटाशा सोनिया के साथ एक शतरंज की मेज़ के सामने जा बैठी, और इस प्रकार वहाँ आने का प्रिंस एण्ड्र्यू को निमंत्रण दिया। वह आ गया।

उसने पूछा—'तुम बैज़ूखोव को बहुत दिनों से जानती हो। तुम्हें वह अच्छे लगते हैं न?'

'हाँ, वैसे बड़े अच्छे हैं, पर हैं पूरे बौड़म!'

और उसने पीरी का ज़िक्र करते हुए उसकी अन्यमनस्कता के विषय में प्रचलित अनेक किंवदंतियाँ सुनाईं जिनमें से बहुत-सी कपोल-कल्पित थीं।

अकस्मात् प्रिंस एण्ड्र्यू ने बड़ी गम्भीरता के साथ कहना आरम्भ किया—'देखो, हम दोनों का भेद उसे अच्छी तरह मालूम है। मैंने सब उससे कह दिया है। वह मेरा लड़कपन का दोस्त है। उसका दिल हीरों में तोलने लायक़ है। नैटालो, मैं विदेश जा रहा हूँ, ईश्वर न करे कुछ ख़ास बात हो जाय; शायद तुम मुझसे प्रेम करना छोड़ दो... ख़ैर इन बातों को जाने दो; मुझे इसका ज़िक्र नहीं करना चाहिए था। पर सिर्फ़ इस बात का ख़याल रखना, अगर मेरी ग़ैरमौजूदगी में तुम्हें कुछ हो जाय...।'

'क्या हो जाय?'

'तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत आ पड़े, तो—मेडेम सोनिया ख़याल रखना—सहायता और नसीहत के लिए सिर्फ़ इसी व्यक्ति

से याचना करना ! वैसे यह बड़ा लापरवाह और सनकी आदमी है, पर इसका दिल सोने का है।'

जिस समय प्रिंस एण्ड्र्यू ने जाते समय उसके हाथ का चुम्बन किया तो उसने सुबकी तक नहीं ली। सिर्फ़ इतना कहा—'मत जाओ,' और ऐसी आवाज़ में, जिसे सुनकर प्रिंस एण्ड्र्यू सचमुच द्विधा में पड़ गया कि क्या उसे जाने का विचार रद्द कर देना चाहिए। जब वह चला गया तो भी वह रोई-चीखी नहीं; हाँ कई दिनों तक अपने कमरे में अकेली बैठी-बैठी—अन्य सारी बातों से असम्पृक्त—केवल कभी-कभी कह उठती थी 'वह क्यों चले गये!'

पर एक पक्ष बीतते न बीतते उसने अपनी शोक-मग्नता का अकस्मात् अंत करके सबको उसी प्रकार आश्चर्य्य में डाल दिया जिस प्रकार उसने उसके बिदा होने के अवसर पर डाल दिया था। वह एक बार फिर पहले जैसी हो गई, पर उसकी मानसिक आकृति ने अब दूसरा ही नैतिक आवरण धारण कर लिया था, जिस प्रकार बच्चा बहुत दिनों की बीमारी से चंगा होने के बाद एक परिवर्त्तित मुद्रा के साथ चारपाई के नीचे पैर रखता है।

—

सातवाँ परिच्छेद

अपने पुत्र की बिदाई के बाद से वृद्ध प्रिंस का स्वास्थ्य और स्वभाव पहले से भी ख़राब हो चले। वह अब और भी चिड़-चिड़े हो गये और उनके इस सदैव तत्पर क्रोध के अकारण प्रस्फोटन का आघात निरीह प्रिंसेज़ मेरी पर ही ख़ास तौर से पड़ता था। प्रिंसेज़ के जीवन में केवल दो ही वासनाएँ थीं, और फलत: वही दो उसके जीवन के प्रधान हर्ष थे—उसका भतीजा नन्हा निकोलस, और धर्म, और वृद्ध प्रिंस के आक्रमणों और व्यंग्य विद्रूपों के यही दो चुने हुए विषय थे।

शरद ऋतु में प्रिंस एण्ड्र्यू बाल्डहिल्स में आया। वह अब बड़ा प्रसन्न, शिष्ट, और सहृदय था, ऐसा, जैसा प्रिंसेज़ मेरी ने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा था। प्रिंसेज़ मेरी ने ताड़ लिया कि कुछ न कुछ नई बात हुई अवश्य है, पर प्रिंस एण्ड्र्यू ने उससे अपने प्रेम-संबंध के विषय में कुछ नहीं कहा। जाने से पहले उसने अपने पिता से किसी विषय पर बहुत देर तक वार्तालाप की और प्रिंसेज़ मेरी ने देखा कि बिदा के समय दोनों एक-दूसरे से असंतुष्ट थे।

आधी ग्रीष्म ऋतु बीत जाने पर प्रिंसेज़ मेरी को अचानक प्रिंस एण्ड्र्यू का स्विट्ज़रलेण्ड से लिखा हुआ एक पत्र मिला जिसमें उसने उसे विचित्र और विस्मयकारी समाचार लिख भेजे

थे। उसने लिखा था कि वह नैटाली रोस्टोवा से सम्बद्ध हो गया है। सारे पत्र से उसकी भावी पत्नी के प्रति हर्षोल्लास-पूर्ण प्रेम और अपनी बहिन के प्रति सहृदयता-पूर्ण स्नेह और अगाध विश्वास टपका पड़ता था। उसने लिखा था कि उसने उतना प्रेम पहले कभी नहीं किया था 'अब जाकर कहीं मेरी समझ में आया है कि जीवन क्या है।'

प्रिंसेज़ मेरी ने बहुत कुछ संकोच, आशंका, और प्रार्थना के बाद अंत में प्रिंस एण्ड्र्यू का पत्र अपने पिता को दे दिया। दूसरे दिन वृद्ध प्रिंस ने शांतभाव से कहा—

'अपने भाई को ख़त लिखो कि वह मेरे मरने तक रुक जाय, ज्यादा दिन नहीं लगेंगे। मैं जल्दी ही उसका पीछा छोड़ दूँगा।'

प्रिंसेज़ मेरी ने कुछ कहना चाहा, पर उसके पिता ने उसे ऐसा न करने दिया, और अधिकाधिक ज़ोर से चिल्लाते हुए कहना आरम्भ किया—

'मुन्ना को शादी करने की सूझी है!...कैसा अच्छा घर है!... बड़े बुद्धिमान् हैं न! बड़े मालदार हैं न! नन्हें निकोलस को भी क्या अच्छी सौतेली माँ मिलेगी! उसे लिख दो कि अगर वह चाहे तो कल ही शादी कर डाले, यहाँ कौन रोकता है! वह नन्हें निकोलस की सौतेली माँ होगी, और मैं बोरीन से ब्याह कर लूँगा! हा, हा, हा! उसकी भी तो कोई सौतेली माँ होनी चाहिए! बस, सिर्फ़ इतना वह ख़याल रक्खे कि मेरे यहाँ किसी औरत के आने की ज़रूरत नहीं है, वह उसे लेकर जहाँ चाहे रहे। शायद आप

भी उसके साथ ही जायँगी ?' उन्होंने अपनी लड़की की तरफ़ मुड़कर कहा। 'जाइए, अभी चली जाइए ! सब भाड़ में चले जाओ, एक सिरे से सब भाड़ में झुक जाओ ..सब !'

और इस प्रस्फोटन के बाद प्रिंस इस प्रसंग पर फिर कुछ न बोले। पर अपने पुत्र के आचरण से उन्हें जो परेशानी हुई थी उसका ग़ुबार उन्हें अपनी लड़की पर निकालने का अच्छा मौक़ा मिला। अब पहले व्यंग्य विद्रूपों के साथ एक नया व्यंग्य जोड़ा गया—अब सौतेली माँओं का ज़िक्र किया जाता, और मेडेम बोरीन से घनिष्ठता बढ़ाई जाती।

वह अपनी लड़की से कहते—'मैं इससे शादी क्यों न करूँ ? कैसी अच्छी प्रिंसेज़ रहेगी !'

और अन्त में यह देखकर प्रिंसेज़ मेरी के आश्चर्य-विस्मय की सीमा न रही कि उसके पिता उक्त फ़्रेंच स्त्री से अधिकाधिक अतरङ्ग सम्बन्ध स्थापित करने लगे हैं। उसने प्रिंस एण्ड्र्यू को पत्र में यह सारा हाल लिख भेजा कि उसके पत्र पर क्या कुछ लीला हुई थी, पर साथ ही यह आशा भी दिलाई कि सम्भव है पिताजी आगे चलकर राज़ी हो जायँ।

अब प्रिंसेज़ मेरी के लिए इस संसार में केवल दो ही तीन सुख और सान्त्वना के साधन रह गये थे : नन्हा निकोलस और उसकी शिक्षा-दीक्षा, भाई एण्ड्र्यू और धर्म-चर्चा। पर हर एक आदमी की कुछ निजी आशा-आकांक्षाएँ भी होती हैं, और प्रिंसेज़ मेरी के हृदय के प्रगाढ़तम प्रदेश में भी एक निजी स्वप्न, एक

निजी आशा जागृत रहती जिससे उसके जीवन को एक विशेष सान्त्वना मिलती रहती। यह स्वप्न और यह आशा उसे 'रामललियों' से प्राप्त हुई थी जो वृद्ध प्रिंस से लुक-छिपकर उससे मिलने आती थीं।

कभी-कभी उन यात्रिनियों की बातें सुनते-सुनते उसमें ऐसी अवस्था का सञ्चार हो आता कि वह उसी दम घर-बार छोड़कर निकल खड़ी होने को तय्यार हो जाती। वैसे तरह-तरह की कहानियाँ कहते रहना इन यात्रिनियों का दैनिक कार्य्य था, पर प्रिंसेज़ मेरी उनकी बातों में से एक विशेष अर्थ ग्रहण करती। वह अपनी कल्पना-शक्ति के सहारे हाथ में डंडा लेकर थियोडेसिया के साथ गले में झोली डाले, धूल भरी सड़कों पर होते हुए एक महात्मा की समाधि से दूसरे महात्मा की समाधि पर—बिल्कुल असम्पृक्त, प्रेम-द्वेष, इच्छा-आकांक्षा से रहित—घूमती और अंत में उस लोक में पहुँच जाती जहाँ न किसी तरह का दुःख है, न चिंता; जहाँ सदैव अनन्त और नित्य आनन्द और सुख का राज्य रहता है।

वह मन ही मन सोचती—'मैं एक स्थान पर जाऊँगी, प्रार्थना करूँगी, और उस स्थान का मोह पैदा होने से पहले ही आगे बढ़ जाऊँगी। मैं चलती रहूँगी, बराबर चलती रहूँगी, उस समय तक, जब तक मेरी टाँगों में बल रहेगा, और जब बल नष्ट हो जायगा तो एक स्थान पर लेट जाऊँगी और मरकर अंत में एक ऐसे लोक में पहुँच जाऊँगी जहाँ न किसी तरह का दुःख है, न शोक...।'

पर बाद को जब वह अपने पिता को, और विशेषकर नन्हें कोको (निकोलस) को देखती तो उसका निश्चय शिथिल पड़ जाता। वह छिप-छिपकर रोती और सोचती कि वह पापिन है जो अपने पिता और नन्हें भतीजे से ईश्वर से भी अधिक स्नेह करती है।

——

आठवाँ परिच्छेद

प्रिंस एराड्र्यू के नटाशा से सम्बद्ध होने के बाद से पीरी को अकस्मात्—बिना किसी कारण के—बोध होने लगा कि अब वह पहले की तरह अपने दिन न बिता सकेगा। एराड्र्यू और नटाशा के सम्बन्ध से अकस्मात् उसके जीवन की सारी प्रफुल्लता नष्ट हो गई। अब केवल जीवन की ठठरियाँ शेष रह गईं थीं—उसका भवन—उसकी लावण्यमयी पत्नी जिस पर आजकल एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मतवाला हो रहा था—सारे पीटर्सबर्ग से जान-पहचान—और नीरस अदब क़ायदों के साथ दरबार सेवा—पीरी को ये सब अचानक विशेष रूप से गर्हित लगने लगे। उसने डायरी लिखना छोड़ दिया और क्लब में जा-जाकर शराब पीना और फिर से कुमार-समाज के सम्पर्क में आना, और इस ढङ्ग का जीवन बिताना शुरू कर दिया कि काउराटेस हैलेन ने इसका घोर विरोध करना आवश्यक समझा। पीरी को ज्ञात हुआ कि वह ठीक कहती है, और उसकी फ़ज़ीहत न करने के लिए वह मास्को चला गया।

मास्को में पहुँचते ही वह सीधा अपने विशाल भवन में पहुँचा जहाँ हतकान्ति, या हत-प्रायः-कान्ति प्रिंसेज़ और लम्बा-चौड़ा अमला निवास करता था। जब उसने इन दक़ियानूसी आकांक्षा-रहित मास्को निवासियों को अपने दिन अलस, निष्क्रिय रूप से

बिताते देखा; जब उसने इन मास्को की महिलाओं, उन नृत्यों, और उस क्लब को देखा, तो उसे प्रतीत हुआ कि अब वह सारी झंझटों से अलग एक शान्त निर्विघ्न स्थान में पहुँच गया है। मास्को में उसे शान्ति मिली, वही स्वाभाविक उष्ण और गन्दी शान्ति, जो उसे पुराने ड्रेसिङ्गगाउन को पहनने से प्राप्त होती थी।

मास्को की सोसायटी ने—जिसमें बूढ़ी महिलाओं से लेकर बच्चे तक सम्मिलित थे—पीरी का इस प्रकार बाहें पसारकर स्वागत किया मानों सब उसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, और मानों उसका स्थान उसकी अनुपस्थिति में भी मास्को-समाज में उसी प्रकार रिक्त था। मास्को सोसायटी के लिए पीरी एक अत्यन्त सहृदय, उत्तम, परम बुद्धिमान्, परम आमोदी और परम उदार जीव था। उसकी थैली हमेशा खाली रहती, क्योंकि वह हर एक के लिए खुली रहती।

रात को अपने कुमार-भोज के बाद वह सहृदयता-पूर्ण और सजीव मुस्कराहट के साथ अपने स्थान से उठ बैठता और अपने चारों ओर एकत्र प्रसन्न कुमार-समाज की अनुनय को मानकर उनके साथ किन्हीं ख़ास स्थानों के फेरे लगाया करता और युवकों में उल्लास और विजय की ध्वनि गूँज उठती। युवती महिलाएँ भी—विवाहित या अविवाहित—उस पर रीझी रहतीं, क्योंकि वह उनमें से किसी विशेष महिला की ओर आकृष्ट हुए बिना सबके साथ एक जैसी सहृदयता के साथ पेश आता, और विशेषकर रात के भोजन के बाद। वे उसके विषय में कहा करतीं—'बड़ा

आमोदी जीव है, इसे न पुरुषों में शुमार किया जा सकता है, न स्त्रियों में !'

पीरी अब उन हज़ारों-लाखों वयस्क अमीर-उमरावों की तरह हो गया था जो मास्को में आमोद-प्रमोद के साथ अपना जीवन बिताते रहते हैं।

जब कभी उसकी आत्मगरिमा विशेष प्रबलता पकड़ लेती और वह अपनी स्थिति का पर्य्यालोचन करता तो उसे प्रतीत होता कि वह उन वयस्क अमीर-उमरावों से, जिन्हें वह सात वर्ष पहले इतनी घृणा की दृष्टि से देखता था, अब भी बिल्कुल अलग और विभिन्न है; वे बौड़म, बुद्धू, अपनी स्थिति से संतुष्ट हैं, 'पर मैं अब भी असंतुष्ट हूँ और अब भी मानव-जाति के लिए कुछ न कुछ करने की अभिलाषा रखता हूँ।' पर आत्मग्लानि के अवसर पर वह कहा करता— 'पर सम्भव है इन मेरे सारे संगी-साथियों ने भी मेरी ही तरह अपने-अपने जीवन में मार्ग खोजने की कोशिश की होगी। जब उसे मास्को में रहते कुछ दिन बीत गये तो उन वयस्क उमरावों के प्रति उसकी घृणा नष्ट हो गई और अब वह उन्हें आदर, चाव, और सहानुभूति की दृष्टि से देखने लगा।

नवाँ परिच्छेद

शरदऋतु के आरम्भ में प्रिंस निकोलस बोल्कोन्सकी अपनी लड़की के साथ मास्को आ गये। उनके अतीत जीवन, उनकी तीव्र बुद्धि और मौलिकता, और विशेषकर तत्कालीन सम्राट् एलेक्ज़ण्डर के शासन के प्रति जन-समुदाय की उत्साह-भग्नता, और साथ ही मास्को की फ्रेंच-विरुद्ध और देशभक्तिपूर्ण प्रवृत्ति ने प्रिंस निकोलस बोल्कोन्सकी को मास्को-निवासियों का एक विशेष आदर का पात्र बना दिया और वह सरकार-विरोधी दल के केन्द्र बन गये।

इधर कुछ दिनों से यह मास्को का घरेलू जीवन प्रिंसेज़ मेरी को विशेष कष्टदायक होने लगा था। यहाँ वह अपने जीवन के दो सबसे बड़े सुखसाधनों से वञ्चित हो गई थी—तीर्थ-यात्रियों से वार्तालाप, और एकाकी जीवन जिनसे बाल्डहिल्स में उसकी तबीयत ताज़ी रहती थी। और साथ ही उसे शहरी जीवन के सुखों और आनन्दों से लाभ उठाने का अवसर न मिलता था। वह सोसायटी में न जा पाती; सब जानते थे कि उसके पिता उसके साथ स्वयं गये बिना उसे घर से न निकलने देंगे, और अपने रुग्ण स्वास्थ्य के कारण वह स्वयं कहीं जा न सकेंगे, अतः उसे किसी सहभोज या पार्टी में आमंत्रित न किया जाता।

प्रिंस एण्ड्र्यू के आगमन और विवाह का समय सन्निकट आ रहा था, पर उसने अपनी बहिन से पिता को इसके लिए तय्यार करने का जो अनुरोध किया था वह अभी तक सफल होता दिखाई न देता था। सच बात तो यह थी कि मामला पहले से भी ज्यादा खराब होता दिखाई देता था। वृद्ध प्रिंस युवती काउण्टेस रोस्टोवा का नाम सुनते ही आपे से बाहर हो जाते थे।

दूसरा नया दुःख जो उठ खड़ा हुआ था वह नन्हें निकोलस को शिक्षा देने के संबंध में था। उसने अपने और नन्हें निकोलस के पारस्परिक सम्पर्क में देखा कि उसमें अपने पिता की तरह चिड़-चिड़ापन उत्पन्न होता जाता है, और यह देखते ही वह भयभीत हो जाती। वह अपने आप को कितना ही समझाती कि निकोलस को पढ़ाते समय उसे चिड़चिड़ेपन से काम न लेना चाहिए, पर इतने पर भी वह गर्म पड़ जाती, आवाज़ ऊँची करती, और कभी-कभी उसका हाथ खींचकर एक कोने में खड़ा कर देती। कोने में खड़ा करने के बाद वह अपने इस निर्दय और बुरे स्वभाव पर स्वयं रोने चिल्लाने लगती, और नन्हा निकोलस भी उसका अनुकरण करके चीख़ने-चिल्लाने लगता और बिना आज्ञा के कोने में से आकर उसके पास पहुँच जाता और उसके भीगे हाथों को उसके मुँह से खींचकर धीरज देने लगता।

पर प्रिंसेज़ को जिस बात से सबसे अधिक व्यथा होती वह उसके पिता की बदमिज़ाजी थी। यह बदमिज़ाजी अब कुछ दिनों से निष्ठुरता तक पहुँच गई थी। यदि वह उसे रात भर

एक स्थान पर माथा नवाये खड़े रहने की आज्ञा देते, यदि वह मारते-पीटते, यदि वह उसे आँधी-पानी में जाने को कहते, तो भी उसके दिमाग़ में यह बात कभी न आती कि वह कष्ट में है; पर यह स्नेही पिता हमेशा न केवल उसे व्यथित और लांछित करने पर ही तुले रहते, बल्कि यह भी साबित करने को हरदम तय्यार रहते कि ग़लती उसी की थी। कुछ दिनों से उन्होंने एक अनोखा आचरण करना शुरू कर दिया था जिससे प्रिंसेज़ मेरी को सबसे अधिक व्यथा पहुँचती थी। वह मेडेम बोरीन के साथ अंतरंग संबंध बढ़ा रहे थे। यह बात उन्हें सबसे पहले प्रिंस एण्ड्र्यू के विवाह-विषयक पत्र पाने पर मज़ाक की तरह सूझी थी पर अब उन्हें उसमें मज़ा आने लगा था। हाल ही में उन्होंने हठपूर्वक उसे जलाने के लिए उसकी सहेली के साथ विशेष घनिष्ठता प्रदर्शित करनी, और उसके साथ अपना प्रेम ज़ाहिर करके मेरी के साथ अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करनी आरम्भ कर दी थी।

एक दिन का ज़िक्र है, वृद्ध प्रिंस ने प्रिंसेज़ मेरी की मौजूदगी में मेडेम बोरीन के हाथ का चुम्बन किया और उसे अपनी ओर खींचकर बड़े प्रेम के साथ हृदय से लगा लिया। प्रिंसेज़ मेरी का चेहरा लाल हो उठा और वह कमरे से भाग गई। कुछ मिनट बाद ही मेडेम बोरीन भी उसके कमरे में मुस्कराती हुई और मृदुल स्वर में कुछ अच्छी-सी बात कहती हुई आ पहुँची। प्रिंसेज़ मेरी ने झटपट अपने आँसू पोंछ डाले, और उसकी ओर दृढ़ गति से बढ़कर—उसे स्वयं चेत नहीं था कि वह क्या कर रही

है—क्रोध के आवेश के साथ फ्रेंच स्त्री पर असम्बद्ध शब्दों में चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया।

'किसी की दुर्बलता से लाभ उठाना कमीनापन है, घृणित और पैशाचिक...!' इसके आगे वह कुछ न कह सकी। 'निकल जाओ मेरे कमरे से!' और इतना कहकर वह सुबकियाँ ले-लेकर रोने लगी।

दूसरे दिन वृद्ध प्रिंस ने अपनी पुत्री से एक शब्द तक न कहा, पर भोजन के समय प्रिंसेज़ मेरी ने देखा कि उन्होंने भोजन सबसे पहले मेडेम बोरीन के आगे परोसे जाने की आज्ञा दी है। भोजन के बाद जब अर्दली अभ्यासवश चाय परोसने की शुरुआत प्रिंसेज़ मेरी की तरफ़ से करने लगा तो यकायक वृद्ध प्रिंस बिगड़ खड़े हुए। उन्होंने अर्दली फिलिप पर अपनी छड़ी से आघात किया, और उसे सेना में भर्ती करने की आज्ञा दे दी।

'हुक्म अदूली करता है—मैं दो दफ़ा कह चुका था! मगर वहाँ कौन सुनता है! यही तो घर भर में एक क़ायदे की आदमिन है! यही तो मेरी मित्र है!' प्रिंस चिल्ला उठे। अब उन्होंने पहली बार प्रिंसेज़ मेरी को क्रोध के साथ मुखातिब करके कहा—'और देख री, जिस तरह तूने कल इसके सामने बेअदबी करने की जुरत की, वैसी फिर कभी की तो मैं तुझे दिखा दूँगा कि इस घर में कौन मालिक है। चली जा मेरे आगे से, मुझे शक्ल मत दिखा; इससे माफ़ी माँग!'

प्रिंसेज़ मेरी ने मेडेम बोरीन से क्षमा-प्रार्थना की, और फिर अपने पिता से क्षमा माँगी, अपनी तरफ़ से, और फिलिप अर्दली की तरफ़ से जिसने उससे दया प्रार्थना की थी।

ऐसे ही अवसरों पर प्रिंसेज़ मेरी का हृदय त्याग की गरिमा से फूल उठता था। और जिन पिता को वह अब तक मन ही मन धिक्कार रही थी वह जब इधर-उधर अपना चश्मा तलाश करते और अपने पास रखे होने पर भी न देख सकते, या हाल ही की घटना भूल जाते, या अपनी अशक्त टाँगों से लड़खड़ाकर चलते, और फिर यह देखने के लिए कि किसी ने देखा तो नहीं पीठ फेरते, या भोजन की मेज पर तश्तरी में सिर रखकर सो जाते तो वह मन ही मन अपने आपको धिक्कारने लगती और कहती—'यह अब बूढ़े हो गये हैं और कमज़ोर हैं, और मैं इन्हें धिक्कार देती हूँ!'

× × × ×

जनवरी के अन्त में वृद्ध काउण्ट रोस्टोव सोनिया और नटाशा को लेकर मास्को आ पहुँचे। काउण्टेस अभी बीमार थीं और यात्रा करने में असमर्थ थीं, पर उनके आरोग्य-लाभ तक यात्रा स्थगित न की जा सकती थी। आठ मास बीत गये थे और प्रिंस एण्ड्र्यू के आने की आये दिन सम्भावना बनी रहती थी; इसके अलावा नटाशा के व्याह के कपड़े तैयार कराने थे, और मास्को के निकट की रियासत बेचनी थी। साथ ही मास्को में वृद्ध प्रिंस की भावी पतोहू को उनके चरणों में उपस्थित करना था। उन जाड़ों में रोस्टोव प्रासाद गर्म नहीं कराया गया था, और साथ ही उन्हें

मास्को में अधिक दिनों तक रहना भी न था। अतः वह एक रिश्तेदार के घर ठहरे।

रात के समय रोस्टोव परिवार की चार गाड़ियाँ मेरी डिमिट्रीव्ना के भवन के आगे आ लगीं। मेरी डिमिट्रीव्ना बिल्कुल मर्दाने स्वभाव की थीं।

अभी वह सोई नहीं थीं। मेरी डिमिट्रीव्ना अपनी नाक पर चश्मा रखे और सिर पीछे की ओर ताने नृत्यशाला के द्वार पर खड़ी होकर नवागन्तुकों को कठोर मुद्रा के साथ देखने लगीं। कोई देखता तो यह कहता कि वह इनके आगमन से क्रुद्ध हो गई हैं, और यदि नौकरों को असबाव वग़ैरह उतारने में न लगा देतीं तो अवश्य उन सबको निकाल बाहर कर देतीं।

उन्होंने असबाब की ओर संकेत करके कहा—'काउण्ट आये हैं ? यहाँ बुला ला।' और बिना किसी को अभिवादन किये वह अपने स्थान पर खड़ी रहीं। 'लड़कियाँ ? उधर बाईं तरफ़ को।' इसके बाद वह दासी पर चिल्ला उठी—'और तू भमीरी की तरह क्या चक्कर काट रही है ? जा, चाय तय्यार कर।' फिर वह नटाशा को अपनी ओर खींचती हुई बोली—'अरे! पहले से कितनी गद-रीली और सुन्दर हो गई है!' नटाशा के गाल बर्फ़ की तरह ठंडे हो रहे थे। 'अरे! तू तो बिल्कुल ओले-सी हो रही है! जा जल्दी कपड़े उतार।' और इतना कहकर उन्होंने उसका हाथ चूमा। जब क़ाउण्ट उनके हाथ का चुम्बन करने आगे बढ़े तो वह बोलीं—'बस, बर्फ़ हो रहे होगे, मैं जानती हूँ!' और इतना कहकर वह

दासी की ओर मुड़कर बोलीं—'अरी चाय के लिए थोड़ी सी रम ले आ !...सोनिया, सलाम !' उन्होंने सोनिया की ओर मुड़कर फ्रेंच में कहा, जिससे उनका उसके प्रति कुछ उपेक्षापूर्ण—यद्यपि स्नेह-स्निग्ध—व्यवहार व्यंजित होता था।

जब सबने अपने सफ़र के कपड़े उतार दिये और साफ़ कपड़े पहनकर चाय पीने के लिए कमरे में आये तो मेरी डिमिट्रीव्ना ने सबको क़ायदे के साथ चूमा।

वह बोलीं—'आप लोग मेरे यहाँ आकर टिके, इसकी इतनी मुझे बड़ी भारी ख़ुशी है। बड़ा नाज़ुक मौक़ा है !' और इतना कहकर उन्होंने नटाशा की ओर भेद भरे नेत्रों से देखा। 'बुड्ढा आज-कल यहीं है, और उसका लौंडा आजकल में आने ही वाला है। बुड्ढे से तुम्हें ज़रूर मिल लेना चाहिए। पर ख़ैर, इस पर फिर बातें करेंगे।' इतना कहकर उन्होंने सोनिया की ओर देखकर प्रकट किया कि वह उसकी उपस्थिति में यह प्रसंग नहीं चलाना चाहतीं।

काउण्ट बोले—'एक के बाद दूसरी ज़रूरतें निकलती ही आती हैं। इस लड़की के कपड़े तय्यार करने हैं, इधर मेरी मास्कोवाली जायदाद और मकान का भी एक गाहक निकल आया है। अगर तुम इतनी कृपा करो तो मैं एक दिन मुक़र्रर करके वहाँ फेरा लगा आऊँगा और अपनी लड़कियों को तुम्हारे पास छोड़ जाऊँगा।'

'अच्छी बात है, अच्छी बात है ! लड़कियाँ मेरे पास ऐसे यत्न से रहेंगी मानों हाईकोर्ट की रक्षा में हों ! मैं इन्हें अच्छी-अच्छी

जगह ले जाऊँगी, कुछ डाँटूँ-डपटूँगी, और कुछ प्यार-दुलार करूँगी।'

दूसरे दिन सुबह को मेरी डिमीट्रीव्ना लड़कियों को इवेरीन के मन्दिर में ले गईं और वहाँ से दर्ज़िन के यहाँ ले गईं। यह दर्ज़िन इनसे इतना डरती थी कि वह जब कभी आतीं, वह उनके हाथों आधे परदे दामों में अपनी पोशाकें बेच-बाचकर किसी तरह उनसे अपना पीछा छुड़ाती। मेरी डिमिट्रीव्ना ने नटाशा के लगभग सारे विवाह के कपड़ों का आर्डर दे दिया और जब सब घर वापस आये तो उन्होंने सब को अपने कमरे से निकालकर अपनी दुलारी नटाशा को अपनी आराम कुर्सी के पास बिठाया।

'आओ, अब हमारी तुम्हारी बातें ठहरें। तेरी सगाई पर बधाई! तूने भी अच्छे आदमी को फाँसा! तुझे देख-देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है। मैं उसे तब से जानती हूँ जब वह इतना-सा था। (और उन्होंने ज़मीन से दो फ़ीट ऊँचा हाथ उठाया। नटाशा आनन्द के साथ लजा गई।) मुझे वह और उसका घर बार सब बड़े अच्छे लगते हैं। अब काम की बात सुन। तू जानती ही है, बूढ़े प्रिंस निकोलस अपने लड़के के व्याह के विरोध में हैं। बुढ़ापे की सनक, और क्या! वैसे प्रिंस एराड्र्यू कोई दुधमुँहा बच्चा तो है नहीं जो उनके बिना काम न चला सके। पर फिर भी उनकी इच्छा के बिना उनके घर में प्रवेश करना ठीक नहीं है। शान्ति और प्रेम सब चाहते हैं। तू ख़ुद समझदार लड़की है, और धीरे-धीरे तेरी समझ में आ जायगा कि गिरस्ती किस तरह चलाई

जाती है। मीठेपन से काम लेना और बुद्धि को उठाकर बिल्कुल आले में ही न रख देना। बस, फिर सब कुछ ठीक हो जायगा।'

नटाशा चुप रही, मेरी डिमिट्रीव्ना ने समझा शर्म के मारे, पर वस्तुतः इसलिए कि वह प्रिंस एण्ड्र्यू के प्रति अपने प्रेम के सम्बन्ध में किसी दूसरे का दख़ल न चाहती थी और वह समझती थी कि उसका यह प्रेम-व्यापार सारे मानवी व्यापारों से इतना अलग है कि किसी की समझ ही में नहीं आ सकता। वह प्रेम करती थी और केवल प्रिंस एण्ड्र्यू को ही जानती थी; वह भी उससे प्रेम करता था और दो-एक दिन में आकर उसे अपने साथ ले जाने-वाला था। बस, इससे अधिक वह और कुछ न चाहती थी।

मेरी डिमिट्रीव्ना ने फिर कहना आरम्भ किया—'तो तू समझ गई न? मैं उसे बचपन से जानती हूँ, और उसकी बहिन, तेरी भावी ननद, को बड़ा प्यार करती हूँ। कहते हैं—"ननदें फूट की खान होती हैं", पर यह ननद एक मक्खी को भी कष्ट नहीं पहुँचाती। उसने मुझसे कहा है कि मैं तुझे उसके पास अपने साथ ले जाऊँ। कल तू अपने पिता के साथ वहाँ जा। उसके साथ मीठेपन और प्यार से पेश आना, तू उससे उम्र में छोटी है। जब वह आ पहुँचेगा तो आकर देखेगा कि तू उसकी बहिन और बाप दोनों से हिल-मिल गई है, और दोनों तुझे प्यार करते हैं। बोल, मैं ठीक कहती हूँ न? यह अच्छा रहेगा, नहीं?'

नटाशा ने संकोच के साथ उत्तर दिया—'हाँ ठीक है।'

———

दसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन मेरी डिमिट्रीव्ना की सलाह से काउण्ट रोस्टोव नटाशा के साथ प्रिंस निकोलस बोल्कोन्सकी से मिलने गये। काउण्ट घर से कुछ प्रसन्न मन से रवाना न हुए थे, सच बात तो यह थी कि वह मन ही मन डर रहे थे। उन्हें अपनी और प्रिंस की पिछली मुलाक़ात की बात याद थी जब रंगरूट भर्ती किये जाने के अवसर पर उन्हें भोजन के निमंत्रण के उत्तर में पूरे आदमी भर्ती न करा सकने पर प्रिंस से झाड़ खानी पड़ी थी। इसके विपरीत नटाशा अपना सबसे बढ़िया गाउन पहने हुए थी, और बड़ी उल्लसित दिखाई पड़ती थी। उसने मन ही मन कहा—'ऐसा हो ही नहीं सकता जो वे मुझसे प्यार न करें। सब कोई मुझसे प्यार करते हैं। और मैं उनके लिए सब कुछ करने को तय्यार हूँ, उन्हें इसलिये प्यार करने को तय्यार हूँ कि वह उनके पिता हैं, और उसे इसलिए प्यार करने को तैयार हूँ कि वह उनकी बहिन है—फिर उनके मुझे प्यार न करने का कोई कारण ही नहीं !'

दोनों—पिता-पुत्री—पुराने शोक-भग्न भवन के सामने जा पहुँचे और हॉल में पहुँचे।

काउण्ट ने आधे परिहास और आधे सत्यभाव से कहा—'भगवान् दया करें !' पर नटाशा ने देखा कि मुलाक़ाती कमरे में घुसते समय पिता उद्विग्न हो उठे, और जिस समय उन्होंने एक

नौकर से पूछा कि क्या प्रिंस और प्रिंसेज़ घर ही पर हैं, तो उनका स्वर सहमा हुआ हो गया।

जब उनके आगमन की सूचना दे दी गई तो भवन में कुछ क्षोभ के लक्षण दिखाई दिये। जो अर्दली सूचना देने गया था उसे हॉल में एक दूसरे अर्दली ने रोक लिया और दोनों कानाफूँसी करने लगे। इसके बाद एक दासी दौड़ी हुई हॉल में पहुँची और उसने अर्दली से धीमे स्वर में कुछ कहा जिसमें प्रिंसेज़ का भी नाम आया। अंत में उक्त वृद्ध अर्दली खिन्न मुद्रा के साथ आगे बढ़ा और रोस्टोव पिता-पुत्री से बोला कि प्रिंस उनसे भेंट न कर सकेंगे, हाँ प्रिंसेज़ उनसे अपने कमरे में आने की प्रार्थना कर रही हैं। दोनों को सबसे पहले मेडेम बोरीन के दर्शन हुए। उसने पिता-पुत्री का एक ख़ास विनीत भाव से अभिवादन किया, और उन्हें प्रिंसेज़ मेरी के कमरे का मार्ग दिखाया। प्रिंसेज़ उत्तेजित और उद्विग्न मुद्रा के साथ—भारी-भारी क़दम रखती हुई और अपनी उत्तेजना को दबाकर सहृदयता दिखाने की व्यर्थ ही चेष्टा करती हुई—दौड़कर मुलाक़ातियों के पास पहुँची। उसे नटाशा की ओर से पहली ही दृष्टि डालने पर अरुचि हो गई। उसने उसे आवश्यकता से अधिक सजी-बजी, छिछोरेपन के साथ उल्लसित और मिथ्यागर्व-गर्वित समझा। उसकी समझ में यह बात न आई कि अपनी भावी भावज को देखने से पहले ही उसके हृदय में डाह उत्पन्न हो गई थी। और अपनी इस अव्यक्त घृणा के अतिरिक्त प्रिंसेज़ मेरी उस समय उत्तेजित भी हो रही थी क्योंकि

जिस समय रोस्टोव पिता-पुत्री के आगमन की सूचना दी गई उस समय वृद्ध प्रिंस चिल्ला उठे थे कि उन्हें उनसे कोई सरोकार नहीं है। हाँ, प्रिंसेज़ मेरी यदि चाहे तो उनसे भेंट कर सकती है, पर उनके पास उन्हें लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रिंसेज़ मेरी ने उनसे भेंट करने का निश्चय तो कर लिया था, पर साथ ही वह मन ही मन सशंकित हो रही थी कि प्रिंस को कहीं कुछ सनक न सवार हो जाय, क्योंकि वह रोस्टोव पिता-पुत्री के आगमन से बहुत अस्त-व्यस्त दिखाई देते थे।

काउण्ट ने अभिवादन करके इधर-उधर उद्विग्न भाव से – मानो डर रहे हों कि कहीं प्रिंस न आ पहुँचें—देखते हुए कहा—'लो, बेटी प्रिंसेज़, मैं तुम्हारे पास अपनी कोयल ले आया। दोनों एक दूसरी से मिल भेंट लो; बड़ी ख़ुशी की बात है...बड़े दुःख की बात है कि प्रिंस हमेशा बीमार ही रहते हैं।' और फिर कुछ क्षण तक इधर-उधर की बात करके वह उठ खड़े हुए और बोले—'प्रिंसेज़ इजाज़त दो तो नटाशा को पन्द्रह मिनट के लिए तुम्हारे पास छोड़ जाऊँ; मुझे ज़रा अन्ना सैमेनोव्ना के पास जाना है; पास ही है, डाग्ज़ स्क्वेयर में, इसके बाद मैं इसे आकर ले जाऊँगा।'

काउण्ट ने बाद को अपनी लड़की को बताया कि उन्होंने यह कूटनीतिपूर्ण चाल इसलिए चली थी जिससे दोनों भावी ननद-भावजों को खुले दिल से आपस में बातचीत करने का मौक़ा मिल जाय। पर यदि सच पूछा जाय तो उन्होंने यह चाल इसलिए भी चली थी जिससे उनकी प्रिंस से—जिनसे वह बहुत डरते थे—मुठ-

भेड़ न हो पड़े। उन्होंने यह बात अपनी पुत्री से छिपा ली थी, पर उसने अपने पिता की अस्तव्यस्तता और उद्विग्नता से यह बात ताड़ ली थी, और इस पर उसे बड़ी व्यथा हुई थी। उसका मुँह लाल हो उठा, और इसलिए वह और भी नाराज़ हो उठी कि उसका मुँह लाल क्यों हो उठा। उसने प्रिंसेज़ की ओर दृढ़ और अवज्ञापूर्ण मुद्रा के साथ देखा, यह प्रदर्शित करने के लिए कि उसे किसी का डर नहीं है।

मेडेम बोरीन, बराबर कमरे में बनी रही और हठपूर्वक मास्को के आमोद-प्रमोदों और थियेटरों की बातचीत करती रही। नटाशा नाराज़ हो गई थी, और फलतः हर एक चीज़ उस समय उसके असंतोष का कारण हो रही थी। प्रिंसेज़ मेरी उसे नहीं रुची और उसने उसे रूपहीन, दुर्बलहृदय और शुष्क समझा। नटाशा ने ऐसा भाव धारण कर लिया, और इस अवज्ञापूर्ण ढंग से बात करना शुरू किया कि उससे प्रिंसेज़ मेरी उसे और भी ग़ैर समझने लगी। इस प्रकार इस पाँच मिनट के विषादकारी कृत्रिम वार्तालाप के बाद उनके कान में स्लीपर पहने पैरों की आवाज़ अपनी ओर आती सुनाई पड़ी। प्रिंसेज़ का चेहरा भय से विकृत हो उठा; दरवाज़ा खुला और दरवाज़े पर सफ़ेद नाइट कैप और ड्रेसिंग गाउन पहने वृद्ध प्रिंस दिखाई दिये।

उन्होंने कहना आरम्भ किया—'आह, महोदया! महोदया, काउण्टेस...काउण्टेस रोस्टोवा, अगर मैं ग़लती नहीं करता हूँ तो...क्षमा करियेगा...महोदया, मुझे पता नहीं था। ईश्वर मेरा

गवाह है, मुझे पता नहीं था कि आपने यहाँ आने का कष्ट उठाया है। मैं बिना जाने इन कपड़ों में अपनी लड़की से मिलने चला आया था। कृपा करके क्षमा करिये...ईश्वर मेरा गवाह है, मुझे पता नहीं था—' उन्होंने फिर कहा, और 'ईश्वर' शब्द पर इतने अस्वाभाविक और इतने कष्टकारी ढंग से ज़ोर दिया, कि प्रिंसेज़ मेरी नीची निगाह किये खड़ी रही, और उसे न अपने पिता की ओर देखने का साहस हुआ, न नटाशा की ओर।

और न नटाशा को ही यह सूझता था कि वह क्या करे। वह चुपचाप उठकर अभिवादन करके खड़ी हो गई थी। सिर्फ़ मेडेम बोरीन ही एक ऐसी थी जो मृदुल भाव से मुस्करा रही थी।

वृद्ध प्रिंस ने ओठों में कहा—'कृपा करके क्षमा करिये, क्षमा करिये! ईश्वर मेरा गवाह है, मुझे पता नहीं था।' और नटाशा को सिर से पैर तक घूरकर वह बाहर चले गये।

और प्रिंस के इस आकस्मिक आगमन के बाद सबसे पहले मेडेम बोरीन ही संयत हुई, और वह प्रिंस की बीमारी के विषय में बातें करने लगी। नटाशा और प्रिंसेज़ मेरी दोनों एक-दूसरी की ओर चुपचाप देखती रहीं और एक-दूसरी के प्रति एक-दूसरी की अरुचि बढ़ती गई।

जब काउण्ट वापस आये तो नटाशा ने अशिष्ट भाव से प्रसन्नता दिखाई और जाने में आतुरता प्रकट की। उस समय वह इस वयस्क शुष्क प्रिंसेज़ को लगभग घृणा की दृष्टि से देख रही थी जिसने

उसे ऐसी मुसीबत में फँसा दिया था और आध घण्टे में एक बार भी प्रिंस एण्ड्र्यू का नाम न लिया था।

नटाशा ने सोचा—'पर मैं बात करती भी तो कैसे करती ? वह फ्रेंच स्त्री तो बराबर डटी रही !' इसी विचार से प्रिंसेज़ मेरी का हृदय भी बराबर व्यथित हो रहा था। वह जानती थी कि उसे क्या कहना चाहिए, पर वह मेडेम बोरीन की उपस्थिति के कारण कुछ कह न पाती थीं, और साथ ही—न जाने क्यों—विवाह का विषय छेड़ना उसे बड़ा कठिन प्रतीत होता था। जिस समय काउण्ट कमरे में से जा रहे थे, प्रिंसेज़ मेरी शीघ्रता के साथ नटाशा के पास पहुँची और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर लम्बी साँस के साथ बोली—

'रुको, मुझे तुम से कुछ कहना...।'

नटाशा ने उसकी ओर—न जाने क्यों—व्यंग्य-निहित दृष्टि से देखा।

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'प्यारी नैटाली, मैं तुम्हें बता देना चाहती हूँ कि मेरे भाई को तुम्हारे द्वारा जो प्रसन्नता मिली है उसके लिए मेरा रोम-रोम फूला नहीं समाता...।'

इतना कहकर वह रुकी, और सोचा कि वह झूठ बोल रही है। नटाशा ने बात ताड़ ली और उसका कारण भी उससे छिपा न रहा।

उसने बनावटी रोब और शुष्कता के साथ—यद्यपि उसे मालूम हो रहा था कि उसका गला आँसुओं से अवरुद्ध हो रहा है—कहा—'प्रिंसेज़, ऐसी बातें करने का यह अवसर नहीं है।'

पर जब वह कमरे से बाहर चली गई तो उसे होश आया। वह मन ही मन कहने लगी—'मैंने क्या कह दिया ? मैंने क्या कर डाला ?'

उस दिन घरवाले भोजन के समय बैठे-बैठे नटाशा के आने की बहुत देर तक बाट जोहते रहे। वह अपने कमरे में बैठी-बैठी बच्चों की तरह ज़ोर-ज़ोर से सुबकियाँ ले-लेकर रो रही थी। सोनिया उसके पास खड़ी हुई उसके बालों का चुम्बन कर रही थी।

उसने पूछा—'अच्छी मेरी नटाशा, क्या बात है ? तुमने भी अच्छा ध्यान दिया ! ऐसी बातें रक्खी थोड़े ही रहेंगी ?'

'पर जब तुम्हें ख़ुद पता चले कि मेरा कितना अपमान...मानो मैं कोई...।'

'नटाशा, ऐसी बातें नहीं करते हैं। इसमें कोई तुम्हारा दोष है क्या ? फिर तुम क्यों रो-चिल्ला रही हो ? बस आओ, अब मेरा चुम्बन करो।' सोनिया ने कहा—

नटाशा ने अपना सिर उठाया, और अपनी सहेली के ओठों से ओठ लगाकर फिर अपना गीला चेहरा उसके चेहरे के साथ सटा दिया।

उसने कहा—'मैं तुम्हें कैसे बताऊँ ? इसमें और किसी का दोष नहीं है—यह सब मेरा दोष है ! पर कलेजे में आग लग रही है। हाय, वह क्यों नहीं आ जाते ?'

वह आँखें लाल किये भोजन करने आई। मेरी डिमिट्रीव्ना को पता लग गया था कि प्रिंस ने रोस्टोव पिता-पुत्री के साथ किस ढंग का बर्ताव किया है, पर उन्होंने ऐसा रंग-ढंग अख़्तियार किया मानों उन्होंने नटाशा की अस्तव्यस्तता बिल्कुल न देखी हो। वह काउण्ट और अन्य मुलाक़ातियों से उसी प्रकार दृढ़ स्वर में ज़ोर-ज़ोर से हास-परिहास करती रहीं।

———

ग्यारहवाँ परिच्छेद

उस दिन शाम को रोस्टोव परिवार आपेरा में गया जिसके लिए मेरी डिमिट्रीव्ना ने एक बाक्स पहले ही रिज़र्व करा लिया था।

नटाशा जाना न चाहती थी, पर वह मेरी डिमिट्रीव्ना की कृपा को अस्वीकार भी न कर सकी। वह बन-सजकर नृत्यशाला में आई और पिता की बाट देखने लगी। उसकी निगाह वहाँ के क़दे आदम आयने पर पड़ी, तो उसने देखा कि वह सुन्दर—बेहद सुन्दर दिखाई पड़ती है, और वह पहले से भी अधिक खिन्न हो गई, पर यह एक मृदुल और प्यारा खेद था।

'हे भगवान्, इस वक्त वह यहाँ होते तो मैं ऐसा आचरण न करती जैसा अब तक करती आई हूँ, वही अल्हड़पन न दिखाती, और न हरदम किसी न किसी चीज़ से भयातुर रहने का भाव ही दिखाती। मैं बिल्कुल एक नये ढंग का आचरण करती : मैं उनका आलिंगन करती और उनके कलेजे से चिपट जाती, और फिर वह मेरी ओर उन्हीं प्रश्नात्मक खोजते हुए नेत्रों से देखते जिनसे पहले भी वह बहुत बार देख चुके हैं, और फिर वह हँस पड़ते जिस तरह वह पहले हँसा करते थे। और उनके नेत्र मुझे इस समय भी कैसे दिखाई पड़ रहे हैं!' नटाशा सोचने लगी। 'बस, मैं सिर्फ़ उन्हें ही प्रेम करती हूँ, उन्हें ही, उन्हें ही और उनके उस चेहरे को और उन नेत्रों को, उस मुस्कराहट को—बच्चों जैसी, पर साथ

ही पुरुषोचित। नहीं नहीं, मुझे इस समय उन्हें याद न करना चाहिए, मुझे इस समय उन्हें भुला देना चाहिए, इस समय बिल्कुल भुला देना चाहिए। हाय, मैं यह बाट कब तक जोहती रहूँ! बस, अब रोई, अब सुबकी आई!' और वह रोने चिल्लाने से बचने के लिए शीशे के पास से चली गई। 'और इस सोनिया का जी भी कैसा है! यह निकोलस को कितनी शांति और निश्चिन्तता के साथ प्यार करती है, और उनकी कितने संतोष के साथ बाट जोहती रहती है!' उसने सोनिया की ओर देखते हुए—जो कपड़े पहना-पहनाकर हाथ में पंखा लिये वहाँ आ मौजूद हुई थी—मन ही मन कहने लगी। 'नहीं, इसका कलेजा तो लोहे का बना हुआ है। पर मैं कैसे सहूँ!'

रोस्टोव परिवार की गाड़ी अन्य गाड़ियों की पंक्ति में पड़कर बर्फ़ पर चरमराकर चलती हुई, अन्त में थियेटर में जा पहुँची। नटाशा और सोनिया अपनी पोशाकें उठाये शीघ्रता से फुदककर बाहर निकल आईं। काउण्ट भी एक अर्दली का सहारा लेकर उतरे। भीतर से गाने की आवाज़ आनी शुरू हो गई थी।

सोनिया ने कान में कहा – 'नटाशा, बाल सँवारो!...'

एक अर्दली ने विनीत भाव से शीघ्रता के साथ महिलाओं के आगे बढ़कर उनके बाक्स का द्वार खोल दिया। दरवाज़ा खुलने पर गाने-बजाने की आवाज़ पहले से भी अधिक ज़ोर से सुनाई पड़ने लगी और प्रकाश से चमचमाते हुए बाक्सों की क़तारें दिखाई पड़ीं जिनमें कन्धे और बाहें नग्न किये महिलाएँ बैठी दिखाई दीं, और

अन्य सीटों पर बैठे हुए पुरुषों की चमकती हुई वर्दियों से उनके नेत्र चौंधिया गये। एक महिला ने एक दूसरे बाक्स में जाते हुए नटाशा की ओर स्त्रियोचित ईर्ष्या से देखा। अभी पर्दा न उठा था और आर्चेस्ट्रा में अभी नेपथ्य से गाना हो रहा था। नटाशा अपनी पोशाक की सिल्वटें निकालकर आगे की क़तार में से होकर सोनिया के साथ बैठ गई और अपने सामने के प्रकाश-प्रोद्भासित बाक्सों को देखने लगी। उसके हृदय में कुछ ऐसा प्रबल भावावेश हुआ जिसकी अनुभूति उसने बहुत दिनों से नहीं की थी। बात यह थी कि अपने नंगे कन्धों और नग्न गर्दन पर सैकड़ों नेत्र जमे हुए देखकर वह उत्तेजित हो उठी थी। इससे वह मन ही मन प्रसन्न भी हुई, और अप्रसन्न भी।

सामने बीचो बीच में डोलोखोव खड़ा था—पारसी पोशाक पहने और घूँघरवाले बाल गुच्छों के रूप में सँवारे हुए। वह सारे उपस्थित समुदाय के सामने इस ढंग से खड़ा था—और वह स्वयं भी इसे जानता था—कि सबकी दृष्टि उसकी ओर बलात् आकृष्ट हो जाती थी। पर फिर भी इतने निश्चिंत और सहज भाव से खड़ा था मानो थियेटर में नहीं, अपने कमरे में खड़ा हो। उसके चारों ओर मास्को के परम सुन्दर और छैल-छबीले युवकों का जमघट लगा हुआ था और यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह उन सब पर शासन करता है।

काउण्ट ने हँसते हुए लजाती हुई सोनिया की चुटकी लेकर उसके भूतपूर्व आराधक की ओर संकेत किया और कहा—'क्यों,

पहचानती है न ? यह अचानक कहाँ से आ पड़ा ? यह तो कहीं ग़ायब हो गया था ?'

काउण्ट के एक मित्र शिनशिन ने उत्तर दिया—'हाँ, यही बात थी। यह काकेशस में था, और वहाँ से निकल भागा। लोग-बाग कहते हैं यह फ़ारस के किसी शाह का वज़ीर था। वहाँ पट्ठे ने उसके भाई को मार डाला। अब मास्को की सारी महिलाएँ इसके पीछे मतवाली बनी फिरती हैं ! अब यह "फ़ारसी डोलोखोव" कहलाने लगा है ! वे क़समें खाती हैं तो उसकी। बस, डोलोखोव और अनातोले कुरागिन ने आज कल हमारी महिलाओं के दिमाग़ फेर दिये हैं।'

उनके पास ही के बाक्स में एक लम्बी रूपवती स्त्री—मोटे-मोटे श्वेत नंगे कंधे और नंगी गर्दन, जिसमें बड़े-बड़े मोतियों की दो लड़ी माला लटकी हुई थी आई और अपनी भारी सी रेशमी पोशाक को काफ़ी देर तक इधर-उधर फैलाकर अपने स्थान पर बैठ गई।

नटाशा की दृष्टि उस गर्दन और उन कंधों और उन मोतियों, और उन बालों की ओर बलात् आकृष्ट हो गई और वह उन कंधों और उन मोतियों की सुन्दरता को देखकर मुग्ध हो गई। जिस समय नटाशा उसकी ओर दुबारा एक टक दृष्टि से देख रही थी, उस महिला ने इनके बाक्स की ओर मुँह फेरा और काउण्ट की दृष्टि अपनी ओर उठी देखकर मुस्कराते हुए सिर हिलाया। काउण्ट रोस्टोव सोसायटी के सारे प्रसिद्ध व्यक्तियों से परिचित थे, अतः वह झुककर उससे बातें करने लगे।

उन्होंने पूछा—'काउण्टेस, आप को यहाँ आये बहुत देर हुई क्या ? मैं आप के हाथ का चुम्बन लेने आप के घर पहुँचूँगा। मैं भी यहाँ काम से आया था, साथ में लड़कियों को भी लेता आया था। कहते हैं सेवेनोव्ना लाजवाब अभिनय करती हैं। काउण्ट पीरी हमें कभी न भूलते थे—यहीं हैं न ?'

हैलेन ने कहा—'हाँ, वह भी एक नज़र देखना चाहते हैं।' और वह नटाशा की ओर एक टक देखने लगी।

काउण्ट रोस्टोव अपने स्थान पर बैठ गये। उन्होंने फुसफुसा-कर नटाशा से कहा—'देखा, कैसी सुन्दर है ?'

नटाशा ने उत्तर दिया—'बेहद! इसे देखकर मन वश में किया ही नहीं जा सकता।'

इसी समय नेपथ्य से अंतिम गान सुनाई पड़ा और सूत्रधार अपनी लकड़ी से खटका करता गया। कुछ देर से आये हुए दर्शक आम सीटों पर बैठ गये और पर्दा उठा।

पर्दे के उठते ही बाक्सों और सीटों के सारे दर्शकों में सन्नाटा छा गया, और सारे पुरुष—वृद्ध और युवक, पोशाकों में और वर्दियों में—और सारी स्त्रियाँ—जिनके नग्न कंधों पर से हीरे-मोती चमक रहे थे—उत्सुकता के साथ स्टेज की ओर देखने लगे। नटाशा भी उसी ओर देखने लगी।

जिस समय स्टेज पर गाना आरम्भ होने से पहले कुछ शांति-निस्तब्धता छाई हुई थी, थियेटर का द्वार खुला और एक देर से आये हुए दर्शक के पैर की आहट सुनाई पड़ी। शिनशिन ने

फुसफुसाकर कहा —'यह देखो—अनातोले कुरागिन !' काउण्टेस बैजूखोवा ने मुस्कराते हुए मुँह फेरा और नटाशा ने उसकी दृष्टि का अनुसरण करके देखा कि एक असाधारणतया सुन्दर ऐडजूटेण्ट गर्वीले, पर साथ ही शिष्ट ढंग से उनके बाक्स की ओर आया। यह अनातोले कुरागिन था जिसे उसने पहले बहुत दिन हुए पीटर्सबर्ग के नाच में देखा था। इस समय वह ऐडजूटेण्ट की पोशाक पहने हुए था जिसमें एक पद-चिह्न लगा हुआ था। वह संयतभाव से झूमती हुई चाल के साथ—जो, यदि वह इतना सुन्दर न होता, और उसके चेहरे से इतना मनोल्लास और आत्मविश्वास न टपकता, तो बड़ी भद्दी दिखाई देती—आगे बढ़ा। नटाशा की ओर निगाह डालकर वह अपनी बहिन के पास पहुँचा, उसके बाक्स पर हाथ रखकर उसके आगे सिर झुकाया और आगे झुककर नटाशा की ओर देखते हुए एक प्रश्न किया।

उसने कहा—'ग़ज़ब की ख़ूबसूरत है !' नटाशा ने बात तो पूरी तरह नहीं सुनी, पर उसके ओठों की गति से जान लिया कि उसी की ओर निर्देश किया गया है। इसके बाद अनातोले सीधा सीटों की ओर चला गया और सबसे आगे की पंक्ति में डोलोखोव के पास जा बैठा। उसने बड़ी लापरवाही के साथ मित्रतापूर्ण ढंग से अपनी कुहनी से डोलोखोव को टहोका दिया। डोलोखोव की ओर देखकर अनातोले ने आँख मारी और उल्लास के साथ मुस्कराकर अपना पैर बाड़े पर रख दिया।

इधर काउण्ट ने कहा—'भाई-बहिन दोनों एक-दूसरे से कैसे मिलते हैं। और दोनों बला के ख़ूबसूरत हैं!'

शिनशिन ने अपनी धीमी आवाज़ में काउण्ट को मास्को में अनातोले के एक प्रेम-षड्यंत्र की कहानी सुनानी आरम्भ की, और नटाशा ने उसे सुन पाने की चेष्टा की, क्योंकि उसने उसके सम्बन्ध में कहा था कि वह 'ग़ज़ब की ख़ूबसूरत है।'

पहला अंक समाप्त हो गया, और लोग इधर-उधर घूमने और बाहर आने-जाने लगे।

अर्धनग्ना हैलेन नटाशा के पास बैठी-बैठी हर किसी की ओर समान भाव से मुस्करा रही थी।

हैलेन का बाक्स आम सीटों से उठकर आये हुए अत्यन्त सम्भ्रांत और विद्वान् पुरुषों से खचाखच भर गया। वे सबको यह दिखाने में कि वे हैलेन के परिचित हैं एक-दूसरे से बाज़ी मारने की चेष्टा कर रहे थे।

सारे अवकाश भर में अनातोले डोलोखोव के साथ आर्चेस्ट्रा के बाड़े के सामने खड़ा-खड़ा रोस्टोव परिवार के बाक्स की ओर देखता रहा। नटाशा जान गई कि वे उसके विषय में ही बातें कर रहे हैं, और इससे उसे प्रसन्नता हुई। बल्कि वह इस ढंग से उसकी ओर मुड़ी भी जिससे वह उसका चेहरा अच्छी तरह देख सके। दूसरा अभिनय आरम्भ होने से पहले आम सीटों में पीरी की शक्ल दिखाई दी। रोस्टोव परिवार ने उसे मास्को आने के बाद से अब तक न देखा था। उसका चेहरा विषण्ण दिखाई पड़ता था।

वह मोटा भी हो चला था। वह बिना किसी की ओर देखे सामने की क़तार पार करके आगे निकल गया। अनातोले उसके पास जा पहुँचा और रोस्टोव परिवार के बाक्स की ओर संकेत करके कुछ कहने लगा। नटाशा को देखकर पीरी में जान सी आ गई। और वह क़तारों को पार करके उसके बाक्स में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर वह अपनी कुहनियाँ झुकाये बहुत देर तक खड़ा-खड़ा मुस्करा-मुस्कराकर उससे बातें करता रहा। जिस समय नटाशा पीरी के साथ बातचीत कर रही थी, उसके कान में काउण्टेस बैज़ूखोवा के बाक्स में से किसी आदमी के बोलने की आवाज़ सुनाई दी और उसने प्रेरणा से जान लिया कि वह अनातोले कुरागिन था। नटाशा ने मुँह फेरा और दोनों के नेत्र आपस में मिल गये। अनातोले कुरागिन ने लगभग मुस्कराते हुए अपने हर्षोल्लास-पूर्ण प्रेम स्निग्ध नेत्रों से ठीक उसके नेत्रों में देखा।

दूसरे अंक में नटाशा ने जितनी बार आम सीटों की ओर निगाह डाली, उसे अनातोले कुरागिन कुर्सी के पीछे हाथ किये एकटक उसी की ओर देखता दिखाई दिया। नटाशा को यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वह उसके रूप-जाल में फँस गया है, और यह उसके दिमाग़ में एक बार भी न आया कि इसमें कोई बुराई की बात भी हो सकती है।

जब दूसरा अंक समाप्त हो गया तो काउण्टेस बैज़ूखोवा उठी और रोस्टोव परिवार के बाक्स की ओर मुड़ी जिससे उसका वक्ष-स्थल पूरी तरह दिखाई देने लगा। उसने काउण्ट रोस्टोव को

अपनी ओर बुलाया और जो लोग उसके बाक्स में आये थे उनकी ओर तनिक भी ध्यान न देकर, सहृदयतापूर्ण मुस्कराहट के साथ बातचीत करना आरम्भ कर दिया।

उसने कहा—'मेरा अपनी लड़कियों से मेल ज़रूर करा दीजिए। सारे शहर के मुँह पर इनका नाम फिर रहा है, और मैं इन्हें अभी तक जानती तक नहीं।'

नटाशा उठी और इस लावण्यमयी काउण्टेस को उसने अभिवादन किया। इस रूपराशि के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर वह प्रसन्नता के साथ लजा उठी।

हैलेन ने कहा—'मैं ख़ुद अब मास्कोवासिनी बनना चाहती हूँ। आप भी कैसे निर्दयी हैं जो आपने इन मोतियों को देहात में दबा रक्खा है!'

काउण्टेस बैज़ूखोवा को मनोहारिणी स्त्री के नाम से पुकारा जाता था, और यह ठीक भी था। वह ऐसी बात कह सकती थी जिसका उसके हृदय के साथ कोई संबंध न होता था, और ख़ास तौर से यह हुनर वह अच्छी तरह जानती थी कि किसी की ख़ुशामद सरल और स्वाभाविक ढंग से किस तरह की जाती है।

'प्रिय काउण्ट, आपको अपनी लड़कियों की देखभाल मुझे सौंप देनी होगी!' इसके बाद उसने अपनी स्थिर और मृदुल मुस्कराहट के साथ नटाशा से कहा—'मैं तुम्हारा नाम पीटर्सबर्ग में ही बहुत कुछ सुन चुकी थी, और तभी से तुमसे मेल करने की मेरी इच्छा हो रही थी। मैंने अपने पति के मित्र बोल्कोन्सकी से

सुना था।' यह वाक्य उसने विशेष ज़ोर के साथ कहा जिसका आशय था कि वह बोल्कोन्सकी और नटाशा के पारस्परिक संबंध को जानती है। काउण्टेस बैजूखोवा ने अच्छी तरह मेल-मिलाप बढ़ाने के लिए काउण्ट से अनुरोध किया कि वह उस युवती महिला को उसके बाक्स में अवश्य भेज दें, और नटाशा वहाँ चली गई।

दूसरे अवकाश में हैलेन के बाक्स में अनातोले दरवाज़ा खोलकर, और झुककर कि कहीं किसी से टकरा न जाय, भीतर आया और उसके साथ ही साथ एक ठंडी हवा का झोंका भी आया।

हैलेन ने नटाशा की ओर से अनातोले पर, और अनातोले की ओर से नटाशा पर चंचल नेत्र डालकर नटाशा से कहा—'आओ, तुमसे अपने भाई का मेल करा दूँ।'

नटाशा ने अपने नग्न कंधों पर से मुस्कराते हुए अपना नन्हा सा सुन्दर सिर घुमाकर उस सुन्दर युवक को देखा। अनातोले जितना सुन्दर दूर से दिखाई पड़ता था, उतना ही सुन्दर पास से भी दिखाई पड़ता था। वह नटाशा के पास सटकर बैठ गया और कहने लगा—'जब से मैंने तुम्हें पीटर्सबर्ग में नारचस्किन के नृत्य में देखा था तब से मैं बराबर इसी अवसर की बाट जोह रहा था।' कुरागिन पुरुष-समाज की अपेक्षा स्त्री-समाज में कहीं अधिक सरल और व्युत्पन्नमति हो जाता था। वह बराबर सहज और दृढ़ स्वर में बातचीत करता रहा और नटाशा को प्रतीत होने लगा इस आदमी के विषय में जो तरह-तरह की किंवदंतियाँ सुनाई पड़ती

हैं, वैसी भयानकता तो इसमें कोई दिखाई नहीं पड़ती; इसकी मुस्कराहट तो अत्यंत सरल, मृदुल, और स्वाभाविक है।

अकस्मात् उसने उसे इस ढङ्ग से मुख़ातिब किया मानों दोनों की बहुत पुरानी जान-पहचान हो; 'काउण्टेस, तुम्हें मालूम है न, हम जूली कारागिन के यहाँ एक अभिनय की तय्यारी कर रहे हैं। तुम्हें उसमें ज़रूर शरीक होना पड़ेगा। बड़ा मज़ा आयेगा। ज़रूर आना। नहीं! ज़रूर, ऐं न?'

और जब तक वह बोलता रहा उसने उसके नग्न कन्धों, गर्दन, चेंहरे से अपनी मुस्कराती हुई निगाह एक क्षण के लिए नहीं हटाई। नटाशा को पूरा विश्वास था कि वह उस पर मुग्ध हो गया है। इससे वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी, पर फिर भी उसकी उपस्थिति में—न जाने क्यों—वह धीरे-धीरे अस्त-व्यस्त और भग्न-हृदय होने लगी। जब वह उसकी ओर न देखती तो उसे बोध रहता कि उसकी दृष्टि उसके नग्न कन्धों पर लगी हुई है। पर जब उसने उसके नेत्रों से नेत्र मिलाये तो उसे अनुभूति हुई—और इसके साथ ही उसका कलेजा बैठ गया—कि उनके बीच में उस संकोचशीलता की परिधि का अभाव है, जिसका ज्ञान उसे अन्य सारे पुरुषों से बातचीत करते समय हमेशा रहा करता था। वह यह न समझ सकी कि क्या कारण है जो पाँच ही मिनट के भीतर वह इस पुरुष के इतने निकटतर हो गई। जब नटाशा ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया तो वह मन ही मन सशंकित होने लगी कि कहीं वह पीछे से उसकी नग्न बाँह पकड़कर उसकी गर्दन

का चुम्बन न ले ले। दोनों में बातचीत अत्यन्त साधारण हो रही थी, पर इतने पर भी नटाशा को मालूम पड़ा कि वह जितनी इस पुरुष के निकट हो गई है उतनी इससे पहले और किसी पुरुष के निकट न हुई थी। नटाशा बार-बार हैलेन और अपने पिता की ओर देखती रही मानों पूछ रही हो कि इस सारे व्यापार का क्या अर्थ है; पर उस समय हैलेन एक जनरल से वार्तालाप में संलग्न थी, अतः उसने यह सब कुछ नहीं देखा; और उसके पिता के नेत्रों ने उसके सिवाय और कुछ नहीं कहा जो वे हमेशा कहा करते थे; 'क्यों? मौज कर रही है? अच्छी बात है, मुझे बड़ी ख़ुशी है।'

एक बार जब दोनों में इसी प्रकार की भौंड़ी निस्तब्धता छाई हुई थी, और अनातोले के नेत्र उसकी ओर उसी प्रकार संयत भाव से एक टक लगे हुए थे, नटाशा ने कुछ न कुछ बातचीत शुरू करने के लिए उससे पूछा कि उसे मास्को कैसा पसन्द आया। और यह सवाल करने के साथ ही वह लजा गई। उसके हृदय में बराबर यही भाव उठते रहे कि उसके साथ बातचीत करके वह कुछ अनुचित और अवैध कार्य्य कर रही है। अनातोले मुस्कराया, मानो उसे प्रोत्साहित करने के लिए।

उसने उसकी ओर भेद भरी दृष्टि से देखकर कहना आरम्भ किया—'शुरू शुरू में तो मुझे यह जगह ज़्यादा अच्छी नहीं लगी, क्योंकि किसी शहर की रौनक़ उसकी सुन्दर स्त्रियों से जानी जाती है। है न यही बात? पर अब मुझे यह जगह बहुत अच्छी लगने

लगी है। तो काउण्टेस, तुम हमारे अभिनय में आओगी न? ज़रूर आना!' और इतना कहकर उसने नटाशा के गुलदस्ते की ओर हाथ बढ़ाया और आवाज़ धीमी करके कहा—'तुमसे वहाँ की रौनक़ कहीं ज्यादा बढ़ जायगी। प्यारी काउण्टेस, ज़रूर आना, और इसके वायदे के लिए मुझे अपना यह गुलदस्ता दे दो।'

अनातोले ने जो कुछ कहा वह सब नटाशा की समझ में नहीं आया पर उसे अनुभूति हुई कि उसमें कुछ न कुछ दुष्प्रवृत्ति निहित है। वह यह न जान सकी कि उसे क्या कहना चाहिए, और उसने इस प्रकार मुँह फेर लिया मानो उसने अनातोले की बात ही न सुनी हो। पर मुँह फेरते ही उसे याद आया कि वह वहीं मौजूद है, और उसके पीछे ही, और इतना निकट।

फिर पर्दा उठा। अनातोले उठकर चला गया, उल्लसित और शांत। नटाशा अपने पिता के वाक्स में चली गई, अब इस नवीन जगत् के आगे वह बिल्कुल परास्त हो गई थी। अब जो कुछ उसके सामने हो रहा था, उसे वह बिल्कुल स्वाभाविक दिखाई देने लगा।

चौथे अंक में एक शैतान ने इधर-उधर हाथ हिलाकर आकर गाना गाया, और फिर नीचे का तख़्ता हटा दिया गया और वह ग़ायब हो गया। बस, नटाशा इस अंक का केवल यही दृश्य देख सकी। कोई चीज़ उसे बराबर उत्तेजित और व्यथित कर रही थी, और इस सारे उत्तेजन का मूल कारण वही कुरागिन था जिसकी ओर उसके नेत्र बलात् उठ जाते थे। जब खेल

समाप्त हो गया तो रोस्टोव परिवार जाने के लिए बाहर निकला। अनातोले ने शीघ्रता से आकर उनकी गाड़ी बुलवाई और सब को भीतर बैठने में सहायता दी। जिस समय वह नटाशा को सहारा दे रहा था, उसने उसकी बाँह को कुहनी से ऊपर दबाया। नटाशा ने उत्तेजित और सलज्ज भाव से उसकी ओर मुँह फेरा। वह उसकी ओर अपने चमकते हुए नेत्रों से देख रहा था, और सुकोमलता के साथ मुस्करा रहा था।

पर जब वह घर पहुँची, तब कहीं उसे होश आया, और आज का सारा व्यापार उसके नेत्रों के आगे चित्र-सा खिंच गया। प्रिंस एण्ड्रयू का स्मरण आते ही वह भयातुर हो उठी। जब चाय के अवसर पर सब नाच से आकर एक स्थान पर एकत्र हुए, तो अकस्मात् वह ज़ोर से चीख़ उठी, उसका मुँह लाल हो गया, और वह कमरे से बाहर भाग गई।

वह मन ही मन कहने लगी—'हे भगवान्! मैं अब कहीं की न रही! मैंने उसे अपनी बाँह क्यों दबाने दी?' वह बहुत देर तक अपना उत्तेजना से लाल मुँह ढके इस सारे व्यापार को समझने की चेष्टा करती रही, पर न वह इस व्यापार को ही समझ सकी, और न अपने मानसिक उद्वेलन का ही रहस्य जान सकी। उसे सब कुछ अंधकारपूर्ण, धुँधला, और भयावह दिखाई पड़ रहा था। वह सोचने लगी—'क्या हुआ? उसको देखकर मेरे हृदय में भय का संचार कैसे हो गया? और अब अनुताप से मेरा कलेजा क्यों जला जा रहा है?'

उसने मन ही मन प्रश्न किया—'तो क्या अब मैं प्रिंस एण्ड्रयू के प्रेम के अयोग्य हो गई ?' और फिर उसने व्यंग्य विद्रूप के साथ उत्तर दिया—'मुझे हुआ ही क्या ? कुछ भी नहीं ! मैंने कुछ भी तो नहीं किया। मैंने उसे अपनी ओर कोई जान-बूझकर थोड़े ही खींचा था। बात आई, गई, छुट्टी हुई; किसी को कानों कान खबर तक न होगी, और मैं अब उसकी सूरत तक न देखूँगी।' वह मन ही मन कहने लगी—'तो, कोई नई बात नहीं हुई, और अनुताप करने का कोई कारण नहीं है। एण्ड्रयू मुझे—मैं जैसी कुछ भी हूँ—उसी तरह प्यार कर सकते हैं। पर "जैसी कुछ भी हूँ" क्यों ? हे भगवान्, हे भगवान्, वह अब क्यों नहीं आ पहुँचते ?' पर उसने एक बार फिर अपने और अनातोले कुरागिन के वार्तालाप को दुहराया, और अपनी कल्पना में अपनी बाँह दबाते समय उस निर्भीक सुन्दर पुरुष की आकृति, भावभङ्गी, और सुकोमल मुस्कराहट चित्रित की।

——

बारहवाँ परिच्छेद

अनातोले कुरागिन को उसके पिता ने पीटर्सबर्ग से मास्को भेज दिया था, क्योंकि वह वहाँ हर साल नक़द बीस हज़ार रूबल फूँक देता था, और इसके अलावा इतनी ही रक़म क़र्ज़ लेकर सिर पर चढ़ा लेता था, और उसे लेने के लिए महाजन उसके पिता की छाती पर सवार होते थे।

उसके पिता ने उससे साफ़-साफ़ कह दिया था कि वह अबकी बार—और अंतिम बार—उसका आधा क़र्ज़ और निबटाये देता है, पर इस शर्त पर कि वह कमाण्डर-इन-चीफ़ का ऐडजूटेण्ट बनकर—और यह पद उसे उसके पिता के प्रयत्न से प्राप्त हो गया था—मास्को चला जाय और वहाँ किसी मालदार घराने में ब्याह करने की कोशिश करे। और साथ ही उसने प्रिंसेज़ मेरी और जूली-कारागिन की ओर निर्देश कर दिया।

अनातोले राज़ी हो गया और मास्को में जाकर पीरी के घर ठहरा। पीरी ने आरम्भ में तो उसे ठहराते हुए अनिच्छा प्रकट की, पर फिर बाद को उससे वह हिल-मिल गया, और कभी-कभी उसके साथ अभिनयों में भी जाने लगा, और उधार के बहाने उसे रक़में ख़र्च करने को भी देने लगा।

अनातोले—शिनशिन ने ठीक ही कहा था—जब से मास्को आया उसने सारी महिलाओं के दिमाग़ फेर दिये—विशेष कर

उनका तिरस्कार करके और नटनियों और नर्तकियों के साथ ताल्लुक़ बढ़ाकर, जिनमें से मेडेम जार्जी के साथ उसका अंतरंग सम्बन्ध बताया जाता था। वह किसी अभिनय को हाथ से न जाने देता, रात-रात भर शराब पीता रहता, दूसरों से बाज़ी मार ले जाता, और उच्च सोसायटी के सारे नाचों और पार्टियों में शरीक होता। उसके कुछ महिलाओं से अंतरंग सम्बन्ध स्थापित करने की चर्चा ज़ोरों से फैली हुई थी, और नाचों में वह कुछ महिलाओं की ओर आकृष्ट भी रहता था। पर वह अविवाहिता कन्याओं, और विशेषकर धनी उत्तराधिकारिणियों के—जिनमें से अधिकांश विरूप होती थीं—पीछे कभी न लगता था। इसका एक विशेष यह कारण था कि उसने दो वर्ष पहले विवाह कर लिया था, और यह भेद सिर्फ़ उसके अंतरंग मित्रों को ही मालूम था। दो वर्ष पहले, जब रेजीमेण्ट पोलेण्ड में थी, एक निधन पोलिश किसान ने उसे अपनी लड़की से विवाह करने को विवश कर दिया था। अनातोले ने अपनी बीबी से बहुत जल्दी पीछा छुड़ा लिया था, और अपने ससुर को हर साल एक ख़ास रक़म भेजते रहने की शर्त पर अपने आपको कुमार बताने की आज़ादी हासिल कर ली थी।

अनातोले अपनी स्थिति से, अपने आप से, और दूसरों से हमेशा सन्तुष्ट रहता था। उसे आत्म-प्रेरणा से और दृढ़रूप से विश्वास था कि इसके सिवाय और किसी प्रकार का जीवन बिताना उसके लिए असम्भव है। उसे दृढ़ विश्वास था कि जिस प्रकार

एक बत्तख़ को इसलिए बनाया गया है कि वह पानी में रहा करे उसी तरह उसके लिए भी तीस हज़ार रूबल वार्षिक पर रहना और सोसायटी में ऊँचा स्थान पाना आवश्यक है। वह कोई जुआरी नहीं था; कम से कम, जीतने की उसे विशेष चिन्ता न रहती थी। वह घमण्डी भी नहीं था और इसकी उसे रत्ती भर भी चिन्ता नहीं थी कि दूसरे उसके बारे में क्या ख़याल करते हैं। वह कोई बड़ा आकांक्षी जीव भी न था।

उस वर्ष डोलोखोव भी अपने निर्वासन और फ़ारस की रोमांचकारिणी घटनाओं के बाद मास्को आ गया था, और आमोद-प्रमोद, जुएबाज़ी और दुराचार की ज़िन्दगी बिता रहा था। उसने अपने पीटर्सबर्ग के पुराने दोस्त से भी दोस्ती गाँठी और अपनी उद्देश-सिद्धि के लिए उसका उपयोग करना शुरू किया।

नटाशा ने कुरागिन पर बड़ी गहरी मोहिनी डाली थी, और नाच के बाद भोजन के समय अनातोले ने एक रसिक विवेचक की तरह डोलोखोव के सामने नटाशा की बाँहों, कन्धों, पैरों, और बालों की मोहकता का विशद चित्र खींचा और उसके साथ प्रेम-सम्पर्क स्थापित करने का इरादा ज़ाहिर किया। इस प्रेम-सम्पर्क का क्या परिणाम होगा, इसका निर्णय करने में अनातोले अशक्त था, इसकी वह कल्पना तक न कर सकता था। वह अपने कार्य्यों के परिणामों की कल्पना न कर सकता था।

डोलोखोव ने कहा—'भई, इसमें तो कोई शक नहीं है कि वह बेहद सुन्दर है, मगर उसे हमारे लिए नहीं बनाया गया है।'

अनातोले ने कहा—'मैं अपनी बहिन से उसे अपने घर दावत देने को कहूँगा। ऐं न ?'

'अगर उसका ब्याह हो जाने तक और रुक जाओ तो ठीक रहेगा .. ।'

'यार इन नन्हीं लौंडियों को देखकर मेरा मन तो हाथ से निकल जाता है—बस ये फ़ौरन ही मतवाली बन जाती हैं।' अनातोले ने कहा।

'तुम पहले भी एक "नन्हीं लौंडिया" के जाल में फँस चुके हो। ख़बरदार !' डोलोखोव ने उत्तर दिया। वह उसके गान्धर्व विवाह की बात जानता था।

'मगर उसके दुबारा होने की बारी न आयेगी ! ऐं न ?' अनातोले ने सहज हँसी हँसकर कहा।

× × ×

ऑपेरा के दूसरे दिन रोस्टोव परिवार कहीं नहीं गया और उनसे भी कोई भेंट करने न आया। मेरी डिमिट्रीव्ना काउण्ट से कुछ बातचीत करती रहीं जिसे उन्होंने नटाशा से छिपाने की चेष्टा की। नटाशा जान गई कि वे वृद्ध प्रिंस के विषय में योजनाएँ स्थिर कर रही हैं, और इस बात को सोचकर वह क्षुब्ध और रुष्ट हो उठी। वह प्रिंस एण्ड्र्यू के आगमन की बड़ी उत्सुकता के साथ बाट देख रहीं थी, और उसने वृद्ध प्रिंस के भवन को दो दफ़ा आदमी को भी यह देखने भेजा कि वह अभी आया या नहीं। वह अभी नहीं आया था। अब नटाशा के लिए दिन काटना

कठिनतर हो उठा। वह निरन्तर यही ख़याल करती रही कि या तो एराड्र्यू कभी आयगा ही नहीं, और या उसके आगमन से पहले ही कोई असाधारण घटना हो जायगी। अब वह प्रिंस एराड्र्यू का ध्यान उस शांत भाव, और उस निरन्तरता के साथ न कर सकती थी। उसके प्रिंस एराड्र्यू के ध्यान करने की देर होती कि वृद्ध प्रिंस, प्रिंसेज़ मेरी, थियेटर, और कुरागिन की स्मृतियाँ भी उसमें आ मिलतीं। उसके मन में बार-बार यही सवाल उठता कि क्या वह वास्तव में निर्दोष है; क्या उसने वास्तव में प्रिंस एराड्र्यू के प्रति अपनी पवित्रता को कलंकित नहीं कर डाला?

भोजन के बाद मेरी डिमिट्रीव्ना गाड़ी तय्यार कराकर प्रिंस बोल्कोन्सकी के घर चली गईं। उनके जाने के बाद नटाशा अपने लिए तय्यार की गई अँगिया पहनकर देख ही रही थी कि ड्राइंग रूम का द्वार खुला। वह अपनी अँगिया को उतारने ही वाली थी कि काउराटेस हैलेन गहरे लाल रंग की ऊँची मख़मली पोशाक पहने सहज मृदुल मुस्कराहट से मुस्कराती हुई आ दाख़िल हुई।

उसने लजाती हुई नटाशा को देखते ही चिल्लाकर कहा—'मेरी जादूगरनी! वाह, क्या रूप है! नहीं काउराट, आप यह बड़ा अत्याचार कर रहे हैं।' उसने काउराट रोस्टोव से कहा, जो उसके पीछे-पीछे चले आये थे 'मास्को में रहते हुए भी कहीं बाहर न निकलना कहाँ का न्याय है? नहीं नहीं, मैं आपको इस तरह हाथ से न निकलने दूँगी! आज मेडेम जार्जी का हमारे यहाँ गाना है, और

अगर आप आज अपनी दोनों लड़कियों को—जिनके सामने लाखों मेडेम जार्जी मात हैं—मेरे घर न लाये, तो मैं फिर आपसे कोई जान-पहचान न रक्खूँगी ! मेरे पति हमेशा क्लब में घुसे रहते हैं, नहीं तो मैं आपको ले जाने को उन्हें ही भेजती। आपको ज़रूर आना पड़ेगा ! ज़रूर ! आठ और नौ के बीच में।'

नटाशा के चेहरे पर मनोल्लास की मुस्कराहट थिरकने लगी। वह आनन्दित हो उठी, मानो वह इस प्यारी काउण्टेस बैज़ूखोवा की प्रशंसा से खिल उठी हो जिसे किसी समय वह इतनी उच्चपदस्थ और महत्त्व-पूर्ण समझती थी, और जो अब उसके साथ इतनी सहृदयता से पेश आ रही थी। नटाशा का चेहरा खिल उठा और उसके हृदय में इस अनुपम सुन्दरी और सहृदया स्त्री के प्रति प्रेम का सा उद्रेक हो उठा। रही हैलेन, सो वह भी नटाशा को देखकर हृदय से आह्लादित हो उठी थी, और उसका मनोविनोद करना चाहती थी। अनातोले ने अपनी बहिन से नटाशा से मिला देने का अनुरोध किया था, और इसी लिए वह आज रोस्टोव परिवार में दिखाई पड़ रही थी। अपने भाई और नटाशा को एक स्थान में कर देने के विचार से वह मन ही मन बड़ी खुश हो रही था।

वैसे किसी ज़माने में वह नटाशा पर उसके बोरिस को अपनी ओर आकृष्ट कर लेने पर मन ही मन क्रुद्ध हुई थी, पर अब वैसी कोई बात न थी, और वह अपने निजी ढंग से नटाशा का हृदय से भला चाहती थी। जब वह वहाँ से जाने लगी तो उसने अपनी लड़ैती को अलग बुलाकर कहा—

'कल मेरे भाई ने मेरे साथ ही भोजन किया था—हम पति-पत्नी दोनों हँसते-हँसते बेदम हो गये—उसने कुछ न खाया, और बराबर तेरी ही याद में ठंडी साँसें लेता रहा। मेरी जादूगरनी, मेरी प्यारी, वह तेरे ऊपर दीवाना हो गया है, वह तेरे पीछे मतवाला बना हुआ है!'

जब नटाशा ने यह सुना तो उसका चेहरा बीरबहूटी की तरह लाल हो गया।

हैलेन कह उठी—'अहा, कैसी लजा रही है, मेरी दुलारी कैसी लजा रही है! जरूर आना! मेरी जादूगरनी, यह माना तू किसी से प्यार करती है, तो क्या इसी लिए तुझे घर में घुसकर बैठ जाना चाहिए? तू सम्बद्ध है, तो भी मुझे पूरा विश्वास है तेरा वर तेरे घर में घुल-घुलकर मरने की अपेक्षा सोसायटी में घूम फिरकर मन बहलाने को अच्छा समझेगा।'

'तो इन्हें मालूम है कि मैं सम्बद्ध हूँ। और यह और इनके पति—वह नेक पीरी—इस पर हँस-हँसकर बेदम भी हो चुके हैं। फिर इसमें क्या बुराई है?' और जो उसे इतना भयंकर दिखाई देता था, हैलेन के प्रभाव से वह सब एक बार फिर सहज और स्वाभाविक दिखाई देने लगा। 'और वैसे यह हैं कितनी बड़ी महिला! और फिर मुझे कितना चाहती हैं, और मुझसे कितना दुलार करती हैं। तब फिर मैं अपना जी क्यों न बहलाऊँ?' नटाशा ने हैलेन की ओर आँखें फाड़कर विस्मय-चकित दृष्टि से देखते हुए सोचा।

मेरी डिमिट्रीव्ना भोजन के समय तक आ पहुँचीं, मौन और गम्भीर; और यह साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें वृद्ध प्रिंस के हाथों मुँह की खानी पड़ी है। इस मुचैंटे से वह अभी तक इतनी उत्तेजित थीं कि बहुत देर तक उसके विषय में शांत भाव बातचीत न कर सकीं। काउएट के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा 'सब ठीक है; किसी दूसरे दिन बात होगी।' काउएटेस वैज़ूखोवा के आगमन और उसके निमंत्रण की बात सुनकर मेरी डिमिट्रीव्ना ने कहा—

'मुझे वैज़ूखोवा से सरोकार रखने की रत्ती भर भी चिंता नहीं, और मैं तुम्हें भी यही सलाह दूँगी; पर जब तुमने वादा कर लिया है तो चले जाना।' इसके बाद उन्होंने नटाशा की ओर देखकर कहा—'इससे तेरा जी भी बहल जायगा।'

——

तेरहवाँ परिच्छेद

शाम के वक्त काउएट रोस्टोव लड़कियों को काउएटेस वैज़ूखोवा के यहाँ ले गये। वहाँ बहुत-से स्त्री-पुरुष थे, पर नटाशा के लिए प्राय: सभी अपरिचित थे। काउएट रोस्टोव को यह देखकर असंतोष हुआ कि सारे समुदाय में ऐसे स्त्री-पुरुष हैं जो अपने उच्छृङ्खल आचरण के लिए ख़ास तौर से कुख्यात हैं। ड्रायंग-रूम के एक कोने में मेडेम जार्जी खड़ी हुई थी और उसके चारों ओर युवक घिरे हुए थे। कई फ्रेंच भी उपस्थित थे जिनमें मिटीवियर भी था जो हैलेन के मास्को आने के बाद से उसका अंतरंग मुलाक़ाती हो गया था। काउएट ने निश्चय किया कि वह ताश खेलने न बैठेंगे, और न लड़कियों को अपनी आँखों से ओझल होने देंगे, और मेडेम जार्जी का अभिनय समाप्त होते ही वहाँ से चले जायेंगे।

अनातोले दरवाज़े पर खड़ा था। वह रोस्टोव परिवार के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। काउएट का अभिवादन करने के बाद ही वह नटाशा के पास जा पहुँचा और उसके पीछे-पीछे चला। उधर उसे देखते ही नटाशा के हृदय में उसकी प्रशंसा पर तुष्ट मिथ्यागर्व की अनुभूति होने लगी और साथ ही दोनों में उस संकोचशीलता की परिधि के अभाव की बात याद करके उसके हृदय में भय का संचार भी हो आया।

हैलेन ने नटाशा को देखते ही प्रसन्नता के साथ हाथों हाथ लिया और उसके रूप और पहनावे-उढ़ावे की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करनी आरम्भ की। उनके आगमन के बाद ही मेडेम जार्जी अपने कपड़े बदलने गईं। ड्रायंगरूम में लोगों ने अपनी कुर्सियाँ सजाकर बैठना आरम्भ किया। अनातोले ने नटाशा के लिए एक कुर्सी सरकाई और दूसरी कुर्सी पर ख़ुद बैठने का प्रयत्न किया, पर इसी समय काउण्ट, जिन्होंने नटाशा को क्षण भर के लिए अपनी निगाह से ओझल न होने दिया था, उस स्थान पर आकर बैठ गये। अनातोले नटाशा के पीछे बैठ गया।

मेडेम जार्जी ने गाना आरम्भ किया और चारों ओर से आवाज़ें आने लगीं—'वाहवा! क्या कहने हैं! कमाल है!'

नटाशा ने मोटी जार्जी को ओर देखा, पर उसे अपने सामने के सारे व्यापार का रहस्य न दिखाई ही पड़ा, न समझ ही में आ सका। उसके पीछे ही अनातोले लगा बैठा था, और उसके सन्निकर्ष की अनुभूति के साथ ही साथ उसके हृदय में आकांक्षा की भी एक भीत अनुभूति हो रही थी।

कुछ और गाने गाने के बाद मेडेम जार्जी चली गईं, और काउण्टेस बैज़ूखोवा ने अपने अतिथियों को नृत्यशाला में आमंत्रित किया।

काउण्ट वापस जाना चाहते थे, पर काउण्टेस बैज़ूखोवा ने उनसे अनुनय भरे स्वर में कहा कि वह इस प्रकार सारे नृत्य का

आनन्द किरकिरा न कर दें। रोस्टोव परिवार रुक गया। अनातोले ने नटाशा से अपने साथ नाचने की याचना की और जब वह उसकी कमर और हाथ कसकर दबाये हुए नाच रहा था, उसने उससे कहा 'तुमने मेरा मन चुरा लिया है। मैं तुम से प्रेम करता हूँ।' दूसरे नाच में भी अनातोले उसी के साथ नाचा, पर अब की बार एकान्त होने पर उसने नटाशा से कुछ नहीं कहा, वह सिर्फ़ उसकी ओर एकटक देखता रहा। नटाशा को सन्देह हो रहा था कि पहले नाच के अवसर पर अनातोले ने जो कुछ कहा था वह कहीं स्वप्न तो नहीं था। इसके बाद फिर नृत्य आरम्भ हुआ और अनातोले ने नटाशा का हाथ दबाया। नटाशा ने उसकी ओर भीत नेत्रों से देखा, पर अनातोले की निगाह और मुस्कराहट से ऐसा विश्वस्त और प्रेमस्निग्ध भाव टपक रहा था कि वह उसकी निगाह से निगाह मिलाकर जो कुछ कहना चाहती थी, न कह सकी। उसने अपने नेत्र नीचे कर लिये।

'ऐसी बात मुझसे फिर मत कहना। मैं सम्बद्ध हूँ और एक दूसरे को प्रेम करती हूँ।' इतना कहकर उसने अपनी दृष्टि फिर उठाई।

पर अनातोले उसकी इस बात से न चकराया, न व्यथित हुआ। बोला—'मुझसे उस बात का ज़िक्र मत करो। मुझे उससे क्या? मैं फिर कहता हूँ मैं तुम्हारे ऊपर दीवाना हो गया हूँ! क्या यह मेरा क़सूर है कि तुम इस तरह दूसरों का दिल चुरा लेती हो? आओ, चलकर नाचें।'

उत्तेजित और सजीव नटाशा उसकी ओर आँखें फाड़कर भीत दृष्टि से देखने लगी। वह पहले से अधिक उल्लसित दिखाई पड़ी। उस दिन शाम को वहाँ जो कुछ व्यापार होता रहा, उसे वह शायद ही समझ सकी हो। उसके पिता ने उससे घर चलने को कहा, पर उसने कुछ देर और ठहरने की प्रार्थना की। वह जहाँ कहीं भी जाती, और जिस किसी से भी बातचीत करती, उसे अपनी ओर बराबर उसी की दृष्टि लगी हुई मालूम होती। उसने अपनी पोशाक दुरुस्त करने के लिए अपने पिता से ड्रायङ्गरूम में जाने की अनुमति माँगी। हैलेन उसके पीछे-पीछे गई और हँसते-हँसते उससे अपने भाई की प्रेम-व्यथा का वर्णन करने लगी। बाहर के कमरे में आकर हैलेन ग़ायब हो गई। अनातोले ने नटाशा का हाथ पकड़कर सुकोमल स्वर में कहा—

'मैं तुमसे वहाँ मिलने तो नहीं आ सकता, मगर क्या सचमुच मैं तुम्हें फिर कभी न देख सकूँगा? मैं तुम्हारे ऊपर दीवाना हो रहा हूँ। तो क्या फिर कभी...?' और उसका रास्ता रोककर वह अपना मुँह उसके मुँह के पास ले गया।

अनातोले की चमकती हुई आँखें उसकी आँखों के इतनी निकट थीं कि उसे उनके सिवाय और कुछ दिखाई न पड़ा।

अनातोले ने प्रश्नात्मक स्वर में फुसफुसाकर कहा—'नैटाली? नैटाली?' और इसी समय नटाशा का हाथ किसी ने ज़ोर से दबाया।

नटाशा के नेत्र कह रहे थे—'मेरी समझ में यह सब कुछ नहीं आता? मुझे कुछ कहना नहीं है।'

उसके ओठों से गर्म-गर्म ओठ आ लगे, पर दूसरे ही क्षण उसे प्रतीत हुआ कि वह आलिङ्गन-पाश से छुट गई है, और कमरे में हैलेन के पैरों की आहट और उसकी पोशाक की खसखसाहट सुनाई दी। नटाशा ने भयभीत होकर दरवाज़े की तरफ़ क़दम बढ़ाया।

अनोतोले चिल्ला उठा—एक बात, सिर्फ़ एक बात, तुम्हें मेरे सिर की क़सम!'

वह रुक गई। वह भी उसकी एक बात सुनने के लिए बेतरह उत्कण्ठित हो रही थी जिससे उसकी समझ में यह सारा व्यापार आ जाय।

अनातोले बराबर चिल्लाता रहा—'नैटाली, सिर्फ़ एक बात, सिर्फ़ एक!' पर शायद वह ख़ुद न जानता था कि वह क्या कहेगा। वह इस प्रकार उस समय तक कहता रहा जब तक हैलेन उनके पास न आ पहुँची।

हैलेन नटाशा को लेकर ड्रायंगरूम में चली गई, और काउण्ट रोस्टोव लड़कियों को लेकर, बिना भोजन की प्रतीक्षा किये, घर चले गये।

घर वापस आने पर नटाशा रातभर न सो सकी। वह बराबर इसी एक जटिल समस्या में व्यथित होती रही कि वह प्रिंस एण्ड्रयू को प्यार करती है या अनातोले को। वह प्रिंस एण्ड्रयू को

प्यार करती थी, उसे याद था कि वह उससे कितना अगाध प्रेम करती थी। पर वह अनातोले को भी प्यार करती थी। वह सोचने लगी—नहीं तो यह सब कैसे हो सकता था? यदि उसके बाद भी मैंने उससे बिदा लेते समय उसकी मुस्कराहट का उत्तर मुस्कुराहट के साथ दिया, यदि मैंने यहाँ तक नौबत पहुँचने दी, तो साफ़ ज़ाहिर है कि मैं उससे शुरू से ही प्रेम करती हूँ।

दूसरे दिन एक दासी ने कमरे में आकर भेदपूर्ण स्वर में फुसफुसाकर कहा—'बेटी रानी, एक आदमी मुझे तुम्हें देने के लिए यह पत्र दे गया है।' इतना कहकर उसने नटाशा के हाथ में एक पत्र पकड़ा दिया।

दासी ने कहा—'पर ईश्वर के लिए मुझ पर दया...।' नटाशा ने बिना कुछ सोचे-समझे मुहर तोड़कर मशीन की तरह पत्र पढ़ना आरम्भ कर दिया, और दासी ने इससे अंदाजा लगा लिया कि पत्र उसके पास से आया है जिसे वह प्यार करती है। 'हाँ, सचमुच यह उसे प्यार करती है, नहीं तो यह सब किस तरह हो सकता था? और नहीं तो क्या यह उसका पत्र अपने हाथ में ले सकती थी?'

नटाशा अपने कंपित हाथ में उस मर्मस्पर्शी प्रेम-पत्र को पकड़े रही जिसे अनातोले के लिए डालोखोव ने लिख दिया था। और उसे पढ़ते-पढ़ते उसे भास हुआ कि जो कुछ वह स्वयं अनुभूति कर रही है, पत्र में उसी का प्रतिबिम्ब मात्र है।

पत्र में लिखा हुआ था: 'बस, कल शाम से मेरे भाग्य का निर्णय हो गया; अब या तो तुम्हें अपने आप से प्रेम करने को विवश कर दूँगा, या मर जाऊँगा। बस, अब मेरे लिए इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है।' इसके बाद उसने लिखा कि उसे मालूम है उसके माता-पिता उसका विवाह उसके साथ नहीं करेंगे। इसके कुछ विशेष कारण हैं जिन्हें केवल उसी से ज़ुबानी कहा जा सकता है; पर यदि वह सचमुच उससे प्रेम करती है तो वह सिर्फ़ "हाँ" कर दे, और फिर संसार की कोई शक्ति उनके उस आनन्द में बाधा न डाल सकेगी। प्रेम सब पर विजय प्राप्त कर लेगा। वह उसे चुराकर ले जायगा और पृथिवी के दूसरे कोने पर जा पहुँचेगा।

नटाशा ने पत्र को कम से कम बीस बार पढ़ा, और हर दफ़ा उसे उसमें कुछ न कुछ नवीन ही अर्थ दिखाई दिया। उसने कहा—'हाँ, हाँ, मैं उससे प्यार करती हूँ।'

उस दिन शाम को मेरी डिमिट्रीव्ना मिलने-जुलने गई और अपने साथ उन्होंने लड़कियों को भी ले जाने की इच्छा प्रकट की। नटाशा सिर-दर्द का बहाना बनाकर घर रह गई।

बहुत रात गये वापस आने पर सोनिया नटाशा के कमरे में पहुँची। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नटाशा उसी प्रकार कपड़े पहने हुए सोफ़ा पर पड़ी सो रही है। उसके पास ही मेज़ पर अनातोले का पत्र पड़ा था। सोनिया ने उसे उठाया और पढ़ा।

उस पत्र को पढ़कर उसने सोती हुई नटाशा के चेहरे की ओर इस आशा से देखा कि वह उसमें पत्र में लिखी हुई बात का समर्थन पा सकेगी, पर वह कुछ न जान सकी। नटाशा का चेहरा शांत, सौम्य, और प्रसन्न था। अपना कलेजा मसोसकर, जिससे आँसुओं से गला बंद न हो जाय, सोनिया, पीली ज़र्द पड़ी, काँपती हुई एक आराम-कुर्सी पर गिरकर सुबक-सुबक-कर रोने लगी।

'क्या मेरी आँखें फूट गई थीं? बात इतनी दूर कैसे बढ़ गई? क्या इसने सचमुच प्रिंस एण्ड्र्यू से प्रेम करना बंद कर दिया? कुरागिन को इसने इतना आगे कैसे बढ़ने दिया? वह तो पूरा विश्वासघातक और लुच्चा है, यह इसी पत्र से स्पष्ट है! जिस समय निकोलस—प्यारे भोले-भाले निकोलस—यह सुनेंगे तो क्या कुछ कर डालेंगे? तो परसों, कल, और आज जो इसकी मुद्रा इतनी उत्तेजित, दृढ़, और अस्वाभाविक दिखाई पड़ती थी उसका यह अर्थ है?' सोनिया सोचने लगी। 'नहीं जी, यह उससे कभी प्रेम न करती होगी! इसे क्या मालूम होगा पत्र किसके पास से आया है, भोली नटाशा ने बिना जाने खोल लिया होगा। यह काम यह नहीं कर सकती!'

सोनिया ने अपने आँसू पोंछे, और नटाशा के पास जाकर उसके चेहरे की ओर फिर ग़ौर से देखा।

उसने सुन पड़नेवाले स्वर में पुकारा—'नटाशा?'

नटाशा जाग उठी और उसने अपने सामने सोनिया को देखा।

'अरे! तुम आ गईं ?'

और उसने अपनी सहेली का उस सहृदयता और निश्चय के साथ आलिंगन किया जो अक्सर जागने के बाद उत्पन्न हो जाता है। पर सोनिया की क्षुब्ध मुद्रा को देखकर उसका चेहरा भी अस्त-व्यस्तता और संदेह व्यक्त करने लगा।

उसने पूछा—'सोनिया, तुमने पत्र पढ़ा है ?'

सोनिया ने मृदुलता के साथ उत्तर दिया—'हाँ।'

नटाशा हर्षातिरेक के साथ मुस्कराई।

बोली—'नहीं सोनिया, बस और नहीं सहा जाता! अब मैं तुमसे अपने जी की बात न छिपाऊँगी। तुम जान ही गईं कि हम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हैं!...सोनिया, प्यारी, वह लिखते हैं...सोनिया...।'

सोनिया को मानो अपने कानों पर विश्वास न हुआ। वह आँखें फाड़-फाड़कर नटाशा की ओर देखती रही।

बोली—'और बोल्कोन्सकी ?'

नटाशा चिल्ला उठी—'सोनिया, जो तुम कहीं जान पातीं कि मुझे कितना हर्ष मालूम हो रहा है! तुम क्या जानो प्रेम क्या चीज़ है!...'

'पर नटाशा, क्या वह सब सचमुच समाप्त हो जायेगा ?'

नटाशा ने सोनिया की ओर आँखें फाड़कर देखा, मानों वह उसकी बात का अर्थ न समझ सकी हो।

सोनिया ने पूछा—'तो क्या तुम प्रिंस एण्ड्र्यू से नाता तोड़ रही हो ?'

नटाशा ने क्षणिक व्यस्त भाव से कहा—हाय, तुम्हारी समझ को क्या पत्थर पड़ गये! बैरंगी बातें मत करो; ज़रा सुनो तो!'

सोनिया ने हठ-पूर्वक कहा—'नहीं, मुझे इस बात पर विश्वास ही नहीं आता। मेरी समझ में नहीं आता, तुम साल भर तक एक पुरुष को प्रेम करती रहीं, और फिर यकायक...। इसे तो तुमने सिर्फ़ तीन ही बार देखा है! नटाशा, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं आता, तुम हँसी कर रही हो! तीन ही दिन में सब कुछ इस तरह भुला देना, और फिर...।'

नटाशा ने कहा—'तीन दिन? मुझे तो ऐसा लग रहा है मानों मैं इन्हें सौ बरसों से प्रेम करती आ रही हूँ। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है मानों मैंने और किसी को कभी प्रेम किया ही न हो। पर तुम्हारी समझ में ख़ाक न आयगा। अच्छा, आओ, यहाँ बैठ जाओ।' और इतना कहकर उसने उसका आलिंगन किया और चुम्बन किया।

'मैंने पहले यह सुना ही था कि कभी-कभी ऐसा संयोग हो जाता है, और तुमने भी ज़रूर सुना होगा, पर ऐसा प्रेम मेरे हृदय में अब ही उत्पन्न हुआ है। पहले जैसी कोई बात ही नहीं है। जब से मैंने इन्हें देखा है, मुझे ऐसा लगने लगा कि वह मेरे स्वामी हैं और मैं उनकी बन्दी हूँ और मुझे उस समय से उन्हें ज़बदस्ती प्रेम करना पड़ा। हाँ, उनकी बन्दी! वह जो हुक्म देंगे मैं वही करूँगी! तुम्हारी समझ में यह बात न आयगी। हाय, मैं

अब क्या करूँ ? सोनिया, बताओ मैं क्या करूँ ?' नटाशा प्रफुल्लित पर भीत मुद्रा के साथ चिल्ला उठी।

सोनिया चिल्ला उठी—'पर कुछ सोचो तो सही तुम क्या कर रही हो। मैं इस तरह चुप न बैठी रहूँगी। यह छिपे-छिपे पत्र-व्यवहार...तुम इतनी आगे कैसे बढ़ सकीं ?' उसने भीति और घृणा के साथ—जिसे वह प्रयत्न करने पर भी न छिपा सकी—कहा।

नटाशा ने उत्तर दिया—'मैं तुमसे कह ही चुकी हूँ कि अब मुझ में अपनी कोई इच्छा-शक्ति नहीं रही है। तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नहीं आती ? मैं उन्हें प्यार करती हूँ !'

सोनिया ने शर्म और दया के आँसू बहाते हुए पूछा—'पर तुम्हारे बीच में क्या कुछ हो चुका है ? तुम से उसने क्या-क्या कहा ? वह यहाँ क्यों नहीं आता ?'

नटाशा ने कोई उत्तर न दिया।

उसने अनुनय भरे स्वर में कहा—'सोनिया, ईश्वर के नाम पर किसी से कह मत उठना; मुझे इस तरह पीड़ा पहुँचाने से तुम्हें क्या मिल जायगा ? याद रक्खो, ऐसी बातों में किसी दूसरे को दखल न देना चाहिए ! मैंने तुम्हारे आगे अपना कलेजा निकाल-कर रख दिया है...।'

सोनिया ने पूछा—'पर फिर यह छिपाव-दुराव क्यों ? वह यहाँ क्यों नहीं आता ? वह खुले आम तुम से विवाह-प्रस्ताव क्यों नहीं करता ? प्रिंस एण्ड्र्यू ने तो तुम्हें पूरी स्वतंत्रता दे दी

है—यदि सचमुच यही बात हो तो...। पर मैं इसमें रत्ती भर भी विश्वास नहीं करती। नटाशा, भला तुमने यह भी सोचा कि ये "विशेष कारण" क्या हो सकते हैं?'

नटाशा ने सोनिया की ओर विस्मय-चकित मुद्रा से देखा; यह साफ़ ज़ाहिर था कि यह समस्या उसके सामने पहली बार ही उपस्थित हुई थी, और वह इसका कोई उत्तर न जानती थी।

'यह मैं क्या जानूँ, क्या कारण हैं, पर कुछ कारण हैं ज़रूर!'

सोनिया ने लम्बी साँस ली और अविश्वास भाव से अपना सिर हिलाया।

उसने कहना आरम्भ किया—'अगर कोई कारण हैं भी...।'

पर नटाशा ने उसकी आशंका का अनुमान लगाकर भीत भाव से उसे बीच ही में रोक दिया।

वह चिल्ला उठी—'सोनिया, उनकी बात पर संदेह करना असम्भव है। असम्भव, बिल्कुल—असम्भव—समझती हो न?'

'वह तुम्हें प्यार करता है?'

'प्यार करता है?' नटाशा ने अपनी सहेली की नासमझी पर दयाभाव प्रकट करते हुए कहा—'तुमने सारा पत्र पढ़ डाला और उन्हें देख भी लिया फिर भी...।'

'और जो कहीं वह कमीना निकला?'

नटाशा चिल्ला उठी—'वह! कमीना? अगर तुम एक बार जान पाओ!'

'अगर वह सचमुच कमीना नहीं है तो या तो उसे खुले आम तुम्हारे लिए अपना प्रेम प्रकट करना चाहिए, या तुमसे मिलना-जुलना बंद कर देना चाहिए; और अगर तुम यह काम न करोगी तो मैं करूँगी। मैं उसे लिखूँगी। मैं पापा से कहूँगी!' सोनिया ने दृढ़ स्वर में कहा।

नटाशा चिल्ला उठी--'फिर मैं उनके बिना कैसे जीती रहूँगी?'

'नटाशा तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती। तुम क्या कह रही हो! अपने पापा की बात सोचो—निकोलस की बात सोचो!'

'मुझे किसी से कोई सरोकार नहीं, मुझे उन्हें छोड़कर और किसी से कोई सरोकार नहीं! तुम्हारी इतनी मजाल कि उन्हें कमीना कहो! तुम यह नहीं जानतीं कि मैं उनके पीछे मतवाली बनी जा रही हूँ?' नटाशा चीख़ उठी। 'सोनिया, जाओ, यहाँ से चली जाओ। मैं तुमसे लड़ाई-झगड़ा मोल लेना नहीं चाहती, बस, तुम सीधी यहाँ से चली जाओ! तुम जो कहीं जान पातीं कि मेरे कलेजे में कैसी वेदना हो रही है!' नटाशा क्रोध के साथ हताशा और चिड़चिड़ेपन को दबाकर चीख़ उठी। सोनिया फफक-फफककर रोती हुई कमरे में से भाग गई।

नटाशा सीधी मेज़ के पास पहुँची और प्रिंसेज़ मेरी को पत्र लिख डाला। उस पत्र में उसने संक्षेप में बताया कि उसने प्रिंस एण्ड्रयू की उस उदारहृदयता से लाभ उठा लिया है जो उन्होंने विदेश में जाते समय उसे अपनी इच्छा में स्वतन्त्र रहने के रूप में

दिखाई थी। अब वह प्रिंसेज़ मेरी से सब पिछली बातों को भुला देने की प्रार्थना करती है, और उनसे यह भी प्रार्थना करती है कि यदि उसका कोई अपराध हो तो उसे वह क्षमा करें, क्योंकि वह उनके भाई की स्त्री न हो सकेगी। उस समय नटाशा को यह सब बिल्कुल सहज, सरल, और साफ़ दिखाई पड़ रहा था।

चौदहवाँ परिच्छेद

शुक्रवार के दिन रोस्टोव परिवार देहात को वापस जानेवाला था। बुध के दिन काउण्ट अपने गाहक के साथ अपनी ज़मींदारी में चले गये।

जिस दिन वह वहाँ गये उसी दिन नटाशा और सोनिया को जूली कारागिन के एक विशाल भोज में आमन्त्रित किया गया और मेरी डिमिट्रीव्ना दोनों को वहाँ अपने साथ ले गई। इस अवसर पर भी नटाशा की अनातोले के साथ भेंट हुई।

जिस दिन काउण्ट वापस आनेवाले थे उससे एक दिन पहले सोनिया ने नटाशा को सारे प्रातःकाल ड्रायङ्गरूम की खिड़की से लगे बैठे देखा, मानों किसी की प्रतीक्षा कर रही हो। उसने एक सैनिक अफ़सर की ओर संकेत किया जो खिड़की के पास से घोड़ा दौड़ाता निकल गया।

सोनिया अपनी सहेली की गति-विधि की ओर भी सतर्कता के साथ देखने लगी। भोजन के समय और बाक़ी सारी सन्ध्या के समय उसने देखा कि वह एक विचित्र और अस्वाभाविक दशा में है। वह सवालों का बेतुका जवाब देती, अधकहे वाक्य बिना पूरे किये छोड़ देती, और ज़रा-ज़रा सी बात पर खिलखिलाकर हँस पड़ती।

चाय पीने के बाद सोनिया ने देखा कि एक उद्विग्न सी दासी नटाशा के कमरे में जाने का अवसर देख रही है। सोनिया ने

उसे भीतर जाने दिया, और तब दरवाज़े पर कान लगाकर सुना तो उसे मालूम हुआ कि एक दूसरा पत्र हवाले किया गया है।

और तत्काल ही सोनिया की समझ में साफ़-साफ़ आ गया कि उस रात के नटाशा कुछ भयंकर काम करनेवाली है। सोनिया ने उसका दरवाज़ा खटखटाया, पर नटाशा ने उसे भीतर न आने दिया।

सोनिया मन ही मन सोचने लगी—'बस, यह उसके साथ भाग जायगी! यह सब कुछ कर सकती है! आज सुबह से ही इसका चेहरा इतना दृढ़ और करुणोत्पादक बना हुआ था। जब यह फूफा से बिदा माँग रही थी तो यकायक रो उठी थी' सोनिया के याद आया। 'हाँ, ठीक, यही बात है; यह उसके साथ भागना चाहती है। पर मैं क्या करूँ? और वह नटाशा के उन सारे संकेतों और भावभङ्गियों के याद करने लगी जिनसे साफ़ प्रकट होता था कि वह कोई भीषण काम करने पर उतारू है। 'काउण्ट बाहर हैं। मैं क्या करूँ? कुरागिन के चिट्ठी लिखूँ कि वह सारी बातों का साफ़-साफ़ जवाब दे? पर वह जवाब न दे तो उसका कोई क्या कर सकता है? पीरी के लिखूँ—प्रिंस एण्ड्रयू जाते समय मुझसे कह गये थे कि संकट के समय पीरी के याद करूँ। पर शायद इसने बोल्कोन्सकी से नाता तोड़ भी दिया है। कल इसने प्रिंसेज़ मेरी के नाम एक पत्र भेजा था और फूफा घर नहीं हैं।' फिर उसके जी में आई कि मेरी डिमिट्रीव्ना से कह दें, पर उसे याद आया कि वह नटाशा के कैसे दुलार की निगाह

से देखती है, और यह बात उसे बड़ी भयंकर दिखाई दी। वह अन्धेरे मार्ग में खड़ी होकर सोचने लगी—'ख़ैर, कुछ भी हो, मेरे लिए यही एक अवसर है जब मैं दिखा दूँगी कि मैं इस परिवार की कृपाओं की कितनी कृतज्ञ हूँ और मैं निकोलस को कितना प्यार करती हूँ। हाँ! चाहे मुझे तीन रात बराबर जागना पड़े, मैं यहीं खड़े-खड़े समय बिता दूँगी और उसे ज़बर्दस्ती रोक रक्खूँगी और इसके परिवार को कलंक का टीका न लगने दूँगी।'

× × × ×

इधर कुछ दिनों से अनातोले डोलोखोव के घर जाकर रहने लगा था। नैटाली रोस्टोवा को भगा ले जाने की योजना स्थिर की जा चुकी थी और उसका सारा प्रबन्ध डोलोखोव ने पहले ही से कर लिया था। उस योजना को प्रकृत रूप देने का दिन वही निश्चित किया गया जिस दिन सोनिया ने नटाशा पर कड़ी चौकसी करने का दृढ़ निश्चय किया था। नटाशा ने रात के दस बजे पिछले दरवाज़े से निकलकर कुरागिन के पास जा पहुँचने का वादा किया था। कुरागिन उसे एक गाड़ी में बिठाकर—जिसे नियत समय पर नियत स्थान पर तैनात रखने की बात थी—वहाँ से चालीस मील दूर कमेंका नामक गाँव में ले जानेवाला था जहाँ एक पादरी उन दोनों का गान्धर्व विवाह करनेवाला था। कमेंका में घोड़े तैयार रक्खे गये थे जिनके सहारे वे वारसा की सड़क पर पहुँच जायँ और वहाँ से डाक के घोड़ों की सहायता से विदेश जा पहुँचें।

पोर्च के सामने दो गाड़ियाँ खड़ी थीं और दो नवयुवक ड्राय-वर घोड़े सम्हाले हुए थे। शराबी गाड़ीवान बालागा आगे की गाड़ी में बैठ गया और अपनी कुहनियाँ उठाकर निश्चयात्मक भाव से लगाम ठीक करने लगा। उसके साथ ही अनातोले और डोलो-खोव भी सवार हो गये। मैकेरिन, खोस्टिखोव, और एक अर्दली पिछली गाड़ी में बैठे। बालागा ने पूछा—'तैयार हो गये!'

उसने अपने हाथों में लगामें लपेटकर कहा—'चल दो!' और उसने घोड़े सरपट दौड़ा दिये। अब केवल बालागा और उसके पीछे की गाड़ी हाँकनेवाले नवयुवक की आवाज़ें 'टिख-टिख! हट जाओ बच जाओ! टिख-टिख!' सुनाई देने लगीं। एक स्थान पर गाड़ी एक बन्द गाड़ी से अड़ गई, कुछ चटखने की आवाज़ सुनाई दी, चीख़ें भी सुन पड़ीं, और बालागा अपनी गाड़ी को लेकर साफ़ निकल गया। निर्दिष्ट स्थान से कुछ दूर रहने पर बालागा ने लगामें रोकनी शुरू कीं, और उसके पास पहुँचने पर गाड़ियाँ रुक गईं। नवयुवक घोड़ों को पकड़ने के लिए गाड़ी से कूद पड़ा, और अनातोले और डोलोखोव दरवाज़े की तरफ़ बढ़े। दरवाज़े के पास पहुँचकर डोलोखोव ने सीटी बजाई; सीटी का उत्तर सीटी से मिला, और एक दासी दौड़कर बाहर निकल आई।

उसने कहा—'बाड़े के भीतर आ जाओ, नहीं तो कोई देख लेगा; वह भी एक मिनट में आई।'

डोलोखोव दरवाजे पर खड़ा हो गया। अनातोले दासी के साथ सहन में चला गया, मुड़ा, और फिर पोर्च में पहुँच गया।

वहाँ उसका सामना मेरी डिमिट्रीव्ना के बृहत्काय अर्दली जिब्राईल से हुआ।

उसने उसकी गति का अवरोध करते हुए गम्भीर गूँजते हुए स्वर में कहा—'अन्दर चलिए। आपको मालकिन बुलाती हैं।'

अनातोले ने श्वास रोककर धीरे से पूछा—'कौन मालकिन ? तुम कौन हो ?'

'अन्दर आइए; मुझे आपको अन्दर ले आने का हुक्म मिला है !'

डोलोखोव ने चिल्लाकर कहा—'कुरागिन ! चले आओ ! धोखा है ! जल्दी !'

डोलोखोव दरवाज़े पर एक चौकीदार से धींगा-मुश्ती कर रहा था जो अनातोले के बाद दरवाज़ा बन्द करने की कोशिश कर रहा था। अंत में डोलोखोव ने प्रयत्न करके चौकीदार को पीछे ढकेल दिया, और अनातोले की बाँह पकड़कर—जो अर्दली के चंगुल से भागकर वहाँ आ पहुँचा था—उसे बाहर खींच लिया। दोनों गाड़ी की ओर भागे।

मेरी डिमिट्रीव्ना ने सोनिया को अँधेरे में खड़े-खड़े रोते हुए देख पाया था। सोनिया ने उन्हें सारा वृत्तान्त सुना दिया और वह पत्र भी उनके हवाले कर दिया। पत्र हाथ में लेकर मेरी डिमिट्रीव्ना दृढ़ चाल से नटाशा के कमरे में जा पहुँचीं और उससे बोलीं—

'बेशर्म, बेग़ैरत कहीं की ! तेरी एक बात न सुनूँगी !'

नटाशा ने उनकी ओर विस्मित, पर अश्रुविहीन नेत्रों से देखा; मेरी डिमित्रीव्ना ने उसे एक ओर ढकेलकर दरवाज़े का ताला लगा दिया और चौकीदार को यह आज्ञा देकर कि वह आदमियों को भीतर आने दे, पर बाहर न निकलने दे, और अर्दली को यह आदेश करके कि वह उन्हें पकड़कर उनके पास ले आये, वह ड्रायंगरूम में बैठकर भगानेवालों के आगमन की प्रतीक्षा करने लगीं।

जब जिब्राईल ने आकर उन्हें सूचना दी कि जो आदमी अन्दर आ गये थे, फिर बाहर निकल भागे, तो वह तेवर बदलकर उठीं और बहुत देर तक कमरे में अपनी कमर के पीछे हाथ बाँधे चहलक़दमी करती हुई निश्चय करने लगीं कि उन्हें क्या करना चाहिए। आधी रात के समय वह अपनी जाकेट की जेब में तालीं टटोलती हुई नटाशा के कमरे की ओर गईं। सोनिया बरामदे में बैठी रो रही थी। उसने अनुनय भरे स्वर में कहा—'मेरी डिमित्रीव्ना, ईश्वर के नाम पर मुझे भी भीतर जाने दो!' मेरी डिमित्रीव्ना उसकी बात का कुछ उत्तर दिये विना दरवाज़ा खोलकर भीतर चली गईं। वह अपने क्रोध को वश में करने की चेष्टा करती हुई सोचने लगीं: 'कैसी शर्म की बात है!...छीः छीः... और मेरे ही घर में!...कैसी बेशर्म छोकरी है! वैसे यह बात छिपी थोड़े ही रहेगी; पर मैं सबको अपनी ज़ुबानों में ताले लगाने की ताक़ीद कर दूँगी और काउण्ट से भरसक छिपाऊँगी।' वह दृढ़ गति के साथ कमरे में पहुँची। नटाशा सोफ़ा पर पड़ी थी,

उसका सिर अपने हाथों में छिपा हुआ था। उसने जुम्बिश तक न की। जिस दशा में मेरी डिमिट्रीव्ना उसे छोड़ गई थीं वह उसी दशा में पड़ी हुई थी।

मेरी डिमिट्रीव्ना ने कहा—'वाह! क्या कहने हैं! कैसी नेक लड़की है! मेरे घर में! बहाने बनाने से काम थोड़े ही चला; मेरी बात कान देकर सुन!' और उन्होंने उसकी बाँह छुई। 'मेरी बात कान देकर सुन! तूने अपने नाम पर एक निर्लज्ज छोकरी की तरह बट्टा लगा दिया! मैं तो तेरे साथ दूसरे ही ढंग से पेश आता, पर क्या करूँ, तेरे बाप पर तरस आता है, इसलिए इस बात को छिपा दूँगी।'

नटाशा ने अपनी मुद्रा नहीं बदली, पर उसका सारा शरीर निःशब्द आलोड़नकारी सुबकियों से काँप उठा। मेरी डिमिट्रीव्ना ने मुँह फेरकर सोनिया की ओर देखा और नटाशा के पास सोफ़ा पर बैठ गई।

नटाशा का शरीर सुबकियों से काँप उठा।

'सोचने की बात है, जो कहीं उसे पता लग गया, और तेरे भाई को और तेरे पति को, तो!'

नटाशा चिल्ला उठी—'मेरा कोई पति नहीं है। मैंने उनसे नाता तोड़ दिया! हाय, तुम टाँग न अड़ातीं! हे भगवान्! यह सब क्या है? यह सब क्या हो रहा है? सोनिया, क्यों?...निकल जाओ...!'

और वह इस प्रकार हताशा-व्यंजक प्रबलता के साथ फूट-फूटकर रोने लगी जिस प्रकार वे लोग रोते हैं जो समझते हैं कि यह आफ़त ख़ुद उन्होंने ही मोल ली है। मेरी डिमिट्रीव्ना फिर कुछ कहनेवाली थीं, पर नटाशा चिल्ला उठी--

'जाओ ! चली जाओ ! तुम सब मुझे गिरी निगाह से देखती हो !' और वह फिर सोफ़ा पर गिर पड़ी।

दूसरे दिन काउण्ट रोस्टोव अपनी जायदाद से भोजन के समय वापस आ गये। वह बड़े प्रफुल्लित दिखाई पड़ते थे क्योंकि गाहक के साथ सौदा बड़ी अच्छी तरह पट रहा था, और अब उनके मास्को में और अधिक रुकने का कोई कारण नहीं था। उन्हें अब तक काउण्टेस का अभाव बहुत खल रहा था। मेरी डिमिट्रीव्ना ने उनसे मिलकर कहा कि कल से नटाशा बीमार पड़ गई है।

नटाशा खिड़की के पास बैठी-बैठी उधर से गुज़रनेवाले आदमियों की ओर एकटक शुष्क नेत्रों से देख रही थी, और जब कोई उसके कमरे में आता था तो चौंककर पीछे निहार लेती थी। यह स्पष्ट था कि वह अनातोले के आनें की, या उसके पत्र की प्रतीक्षा कर रही थी।

जब काउण्ट कमरे में आये तो उसने उत्सुकता के साथ मुँह फेरकर देखा और फिर वही शुष्क, कुत्सापूर्ण मुद्रा धारण कर ली। वह उन्हें अभिवादन करने के लिए उठी तक नहीं।

काउण्ट ने पूछा—'क्या है मेरी शाहज़ादी ? क्या जी अच्छा नहीं है ?'

नटाशा ने क्षण भर चुप रहकर कहा—'हाँ, जी अच्छा नहीं है।'

काउण्ट ने नटाशा की तथाकथित रुग्णावस्था से, उसके संताप से, और सोनिया और मेरी डिमिट्रीव्ना की क्षुब्ध मुद्राओं से अनुमान लगाया कि उनकी अनुपस्थिति में कुछ न कुछ दुर्घटना अवश्य हुई है; पर उन्हें इस बात का विचार तक करना कि उनकी दुलारी लड़की के संबंध में कोई कलंक लगानेवाली बात हुई है, भयावह प्रतीत हुआ। साथ ही वह अपनी आनन्दपूर्ण शांति पर जान देते थे। इसी लिए उन्होंने अधिक पूछ-ताँछ जान-बूझकर न की। वह केवल इसलिए असंतुष्ट अवश्य हुए कि उसकी बीमारी से उनका देहात वापस जाना स्थगित हो गया।

———

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

जिस दिन से पीरी की स्त्री मास्को आ पहुँची थी, पीरी बराबर कहीं और खिसक चलने का इरादा कर रहा था, जिससे वह उसके निकट न रह सके।

एक दिन मेरी डिमिट्रीव्ना ने उसे प्रिंस वोलकोन्सकी के संबंध में बातचीत करने को बुला भेजा। पीरी अब तक नटाशा से बराबर कन्नी काटता रहा था क्योंकि उसे प्रतीत हुआ कि उसके संबंध में उसके भाव उन भावों से प्रबलतर हैं जो किसी विवाहित व्यक्ति को अपने मित्र की भावी पत्नी के संबंध में रखने चाहिए। पर फिर भी भाग्य-चक्र से दोनों का आमना-सामना हो ही जाता था।

उसने मेरी डिमिट्रीव्ना के वहाँ जाने के लिए अपने कपड़े पहनते हुए मन ही मन कहा—'ऐसी क्या नई बात हो गई? और मुझसे उनका क्या काम अटका हुआ है?' फिर उनके घर को रवाना होते हुए वह मन ही मन सोचने लगा—'काश, प्रिंस एण्ड्र्यू झटपट आकर उसके साथ शादी कर डालता!'

रास्ते में उसे किसी ने आवाज़ दी।

एक परिचित स्वर ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा—'पीरी!' पीरी ने अपना सिर उठाया। एक खुली गाड़ी में, जिसमें दो भूरे घोड़े जुते हुए थे जिनके खुरों से उड़-उड़कर बर्फ़ गाड़ी के आगे के तख़्ते पर जम रहा था, अनातोले और उसका हमेशा का संगी मैकेरिन तेज़ी

के साथ उसके पास से निकल गये। अनातोले छँटे हुए सैनिक छैल की तरह तना हुआ बैठा था; उसके मुँह का नीचे का भाग कालर से कुछ ढक गया था, और सिर ज़रा तिरछा था। उसका चेहरा खिला हुआ और ताज़ा था, और उसका सफ़ेद कलँगीवाला टोप सिर पर तिरछा रक्खा हुआ था जिससे उसके पोमेड किये हुए बाल दिखाई पड़ते थे।

पीरी सोचने लगा—'हाँ, यह है पूरा निर्लेप महात्मा! यह क्षणिक सुखों के परे और कुछ नहीं देखता, किसी चीज़ का इसे कष्ट नहीं होता, और इसी लिए यह इतना उल्लसित, संतुष्ट, और शांत रहता है।' उसने डाह के साथ सोचा—'मैं भी ऐसा ही होने के लिए क्या कुछ न दे डालूँ!'

मेरी डिमिट्रीव्ना के मुलाक़ाती कमरे में अर्दली ने उसका कोट उतारते हुए कहा कि मालकिन उनसे अपने शयनागार में मिलना चाहती हैं।

जब पीरी ने नृत्यशाला का द्वार खोला तो उसने देखा कि नटाशा खिड़की के पास बैठी हुई है, और उसका चेहरा पीला, पतला और कुत्सापूर्ण दिखाई पड़ता है। उसने मुँह फेरकर देखा, तेवर बदले, और बड़े रोब के साथ कमरे से चली गई।

पीरी ने मेरी डिमिट्रीव्ना के कमरे में जाते हुए पूछा—'क्या हुआ?'

मेरी डिमिट्रीव्ना ने कहा—'अच्छी करतूतें हैं! मेरी साठी आ लगी, पर मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी में ऐसी डूब मरने की

बातें पहले कभी कानों से भी नहीं सुनी थीं, आँखों से देखना तो दरकिनार।'

और पीरी से यह शपथ ले लेने के बाद कि वह बात को पेट ही में रक्खेगा, मेरी डिमिट्रीव्ना ने उसे बताया कि नटाशा ने अपने माता-पिता की अनभिज्ञता में प्रिंस एण्ड्र्यू से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है, और इसका एक मात्र कारण अनातोले है। अनातोले के सहवास में उसे उसकी स्त्री ने फँसा दिया था। वह उसके साथ रात में, अपने पिता की अनुपस्थिति में, घर से निकल भागना चाहती थी जिससे दोनों का गांधर्व विवाह हो जाय।

पीरी ने अपने कन्धे उचकाये और अपने कानों पर विश्वास न करके वह मुँह फाड़कर मेरी डिमिट्रीव्ना की बात सुनता रहा। नटाशा को वह बचपन से जानता था। उसके विषय में उसकी बड़ी मनोहारिणी धारणा थी। अब वह अपने मन ही मन कहने लगा कि एक बुरी औरत के पाले पड़नेवाला सिर्फ वही एक आदमी नहीं है। 'ये सब एक जैसी होती हैं।' फिर भी प्रिंस एण्ड्र्यू के प्रति समवेदना से उसका हृदय भर गया और आँखों में आँसू आ गये। उसने अपने मित्र के अपमानित गर्व के साथ समवेदना की। अपने मित्र के लिए उसकी समवेदना जितनी बढ़ती गई उतना ही अधिक उसके हृदय में उस नटाशा के प्रति, जो अब से क्षणभर पहले बड़े रोष के साथ चली गई थी, क्षोभ और घृणा उत्पन्न होती गई। वह यह न समझ सका कि नटाशा का हृदय क्षोभ, ग्लानि और आत्म-वेदना से भरा हुआ है, और यदि उसके

चेहरे पर शान्त रोष और कठोरता की मुद्रा आ विराजी है तो इसमें उसका कोई दोष नहीं है।

उसने मेरी डिमिट्रीव्ना के उत्तर में कहा – 'मगर वह शादी कैसे कर सकता था ? उसका तो व्याह हो भी चुका है।'

मेरी डिमिट्रीव्ना कह उठी—'हे मेरे भगवान्! बात और भी संगीन होती जाती है। वाह! क्या लायक़ लड़का है! लुच्चा कहीं का! और वह उसकी बाट जोह रही है, कल से बराबर उसकी बाट जोह रही है; उसे यह बता देना चाहिए!'

मेरी डिमिट्रीव्ना ने पीरी से अनातोले के गान्धर्व विवाह की कथा सुनने, अपना ग़ुस्सा उतारने के बाद उसे बताया कि उसने उसे क्यों बुलाया है। उन्हें आशंका थी कि कहीं वृद्ध काउण्ट या बोल्कोन्सकी, जो किसी घड़ी आ सकता है, इस बात को सुनकर अनातोले को द्वंद्व युद्ध के लिए चुनौती न दे दें; अतः उन्होंने पीरी से अनुरोध किया कि वह अपने साले से उनकी ओर से कह दें कि वह उसी दम मास्को छोड़कर चल दे और फिर कभी उन्हें सूरत दिखाने का दुःसाहस न करे। अब पीरी की समझ में भी आया कि वृद्ध काउण्ट, निकोलस, और प्रिंस एण्ड्र्यू पर क्या विपत्ति आने की संभावना है। उसने उनके इच्छानुसार कार्य्य करने का वचन दिया। उसे संक्षेप में अपनी इच्छा सुनाने के बाद वह उसे ड्रायंगरूम में ले गईं।

उन्होंने कहा—'ख़बरदार, काउण्ट के कान में भनक न पड़ने पाये। ऐसा रंग-ढंग दिखाना मानो ख़ुद तुम्हें भी कानोकान ख़बर

नहीं है। मैं जाकर नटाशा को बताये देती हूँ कि उसकी बाट में आँखें फोड़ने से कुछ हाथ न आयगा! और यदि रुक सको तो भोजन के लिए रुक जाना।' उन्होंने जाते हुए कहा।

पीरी की भेंट वृद्ध काउएट से हुई जो लुब्ध और उद्विग्न दिखाई दे रहे थे। नटाशा ने उस दिन सुबह उन्हें बता दिया था कि उसने बोल्कोन्सकी से नाता तोड़ दिया है।

वह भोजन के समय तक नहीं रुका और फ़ौरन चला गया। उस समय अनातोले की बात सोच-सोचकर पीरी के हृदय में आग लग रही थी और उसे साँस तक लेने में कष्ट हो रहा था। उसने अनातोले को जगह-जगह तलाश किया—अड्डों में और नटनियों के वहाँ; पर वह कहीं न मिला। इसके बाद वह सीधा क्लब घर पहुँचा। क्लब में सब कुछ यथापूर्व जारी था। सदस्य भोजन के लिए एकत्र थे और अलग-अलग गुट्ट बना-बनाकर बातें कर रहे थे। उसके एक परिचित सदस्य ने ऋतु-सम्बन्धी चर्चा करते हुए पूछा कि उसने सुना है कि रोस्टोवा को कुरागिन भगा ले गया। यह ख़बर आज शहर के बच्चे-बच्चे की ज़ुबान पर है। क्या यह बात ठीक है? पीरी हँसा और बोला कि यह किसी ने ऐसे ही उड़ा दी है, और वह रोस्टोव परिवार से अभी वापस आ रहा है। वह नृत्यशाला में चहलक़दमी करता रहा, पर जब फिर भी अनातोले न आया तो वह बिना भोजन किये ही घर की तरफ़ रवाना हो गया।

उधर अनातोले ने आज डोलोखोव के घर भोजन किया था और उसके साथ वह यह मशवरा कर रहा था कि इस बिगड़े हुए

मामले को किस तरह दुरुस्त किया जाय। उसे एक बार नटाशा से मिलना नितान्त आवश्यक मालूम पड़ता था। शाम के वक्त वह, यह तय करने के लिए कि दोनों का मिलन किस प्रकार हो सकेगा, गाड़ी में सवार होकर अपनी बहिन के घर पहुँचा। जब पीरी सारे मास्को में तलाश करने के बाद घर वापस आया, तो उसके वैलेट ने उसे सूचित किया कि अनातोले काउण्टेस के पास मौजूद है। काउण्टेस का ड्रायङ्गरूम मुलाक़ातियों से खचाखच भरा हुआ था।

पीरी अपनी पत्नी को अभिवादन किये बिना—जब से वह ट्रेवर से वापस आया था, उससे उसकी भेंट नहीं हुई थी, और इस समय वह उसे पहले से कहीं अधिक घृणित और गर्हित दिखाई दे रही थी—ड्रायङ्गरूम में गया, और अनातोले को देखकर उसके पास पहुँचा।

काउण्टेस पीरी की तरफ़ बढ़ती हुई बोली—'आह! पीरी, तुम्हें पता नहीं है, हमारा अनातोले किस झंझट में...।'

पर इसी समय उसकी निगाह अपने पति की आगे को निकली हुई गर्दन, जलते हुए नेत्रों और दृढ़ चाल की ओर गई और उसने इन सब में उस क्रोध और प्रबलता के भयावह लक्षण देखे जिसका उसे डोलोखोव के द्वंद्व युद्ध के बाद अनुभव हो चुका था।

पीरी ने अपनी स्त्री से कहा—'जहाँ तुम्हारे क़दम जायँगे, वहीं भ्रष्टता और अमङ्गल मौजूद रहेंगे।' इसके बाद उसने अना-

तोले से फ्रेंच में कहा—'अनातोले, चलो इधर, मुझे तुमसे बात करनी है !'

अनातोले ने मुँह फेरकर अपनी बहिन की ओर देखा, और चुपचाप उठकर साथ हो लिया। पीरी उसकी बाँह पकड़कर उसे खींचता हुआ कमरे से ले चला।

हैलेन ने धीरे से कहा—'मेरे ड्रायङ्गरूम में तुम क्या...।' पर पीरी ने कोई उत्तर न दिया और अनातोले को लेकर वह कमरे से बाहर चला गया।

अनातोले उसके पीछे-पीछे अपनी स्वाभाविक लचकती हुई चाल से जाने लगा। पर, उसके चेहरे से अस्त-व्यस्तता टपक रही थी।

पीरी ने अपनी अध्ययनशाला में जाकर दरवाज़ा बन्द कर दिया और अनातोले के चेहरे की ओर बिना देखे कहना आरम्भ किया—

'तुमने काउण्टेस रोस्टोवा से शादी करने का वादा किया था और उसे तुम भगाकर ले जानेवाले थे।'

अनातोले ने कहा—'हज़रत, जिस ढंग से आप सवाल कर रहे हैं, उसका जवाब देने को मैं कोई मजबूर तो हूँ नहीं।' (बात-चीत फ्रेंच में हो रही थी।)

पीरी का चेहरा वैसे ही पीला पड़ा हुआ था, अब क्रोध से विकृत हो उठा। उसने अपने लम्बे चौड़े पंजे से अनातोले की वर्दी का कालर पकड़ लिया और उसे इधर-उधर इतनी ज़ोर से

हिलाया कि अनातोले के चेहरे से भय पर्य्याप्त मात्रा में दिखाई देने लगा।

पीरी ने कहा—'जब मैं तुमसे एक दफ़ा कह चुका हूँ कि मुझे तुमसे बात करनी है !...'

अनातोले ने अपने कालर का एक बटन, जो कुछ कपड़े के साथ इमठकर बाहर आ गया था, दबाते हुए कहा—'क्या कर रहे हो ? बेहूदी-सी बात ! ऐं ?'

'बदमाश कहीं का, हरामज़ादा ! पता नहीं मुझे तेरा सिर इससे चकनाचूर करने में क्यों संकोच हो रहा है।' पीरी फ्रेंच में बोल रहा था, अतः इस प्रकार कृत्रिम ढंग से अपने भाव व्यक्त करना उसके लिए स्वाभाविक था।

उसने एक भारी सा पेपरवेट उठा लिया और उसकी ओर फेंकने का भाव दिखाते हुए हिलाया, पर फिर उसे शीघ्रता से यथा-स्थान रख दिया।

बोला—'हाँ तो, तुमने उससे ब्याह करने का वादा किया था ?'

'मैं...मैं...मैं...ब्याह करना थोड़े ही चाहता था—न मैंने कभी वादा किया,...क्योंकि...।'

पीरी ने बाधा दी—'तुम्हारे पास उसके पत्र-वत्र हैं ? कोई ख़त ?' उसने अनातोले की तरफ़ क़दम बढ़ाया।

अनातोले ने उसकी ओर दृष्टिपात किया, और जल्दी से अपनी जेब में हाथ डालकर पाकेट-बुक निकाली।

पीरी ने पत्र ले लिया, बीच में खड़ी हुई एक मेज़ को एक ओर ढकेल दिया, और अपने आप सोफ़ा पर पौढ़ गया। अनातोले ने भयसूचक भाव दिखाया, जिसके उत्तर में पीरी ने कहा—'डरो मत, डरने की कोई बात नहीं है। मैं तुम पर ज़ोर जब्र नहीं करूँगा। हाँ तो, पहली बात, ख़त,' पीरी ने कहा, मानो वह अपने आप कोई सबक़ दुहरा रहा हो। 'दूसरी बात,' और यहाँ वह रुका, और उठकर चहलक़दमी करने लगा। 'दूसरी बात, कल तक तुम मास्को से अपने पहरे दफ़ान कर जाओ!'

'मगर मैं किस तरह...?'

पर पीरी ने उसकी बात पर ध्यान न देकर कहना जारी रक्खा—'तीसरी बात, तुम में और काउण्टेस रोस्टोवा में जो कुछ हुआ है, उसका तुम ज़िक्र तक ज़ुबान पर न लाओ! मैं जानता हूँ, मैं इसे नहीं रोक सकता, मगर अगर तुम में ज़रा सी भी इन्सा-नियत है तो...'पीरी चुप होकर फिर टहलने लगा।

अनातोले एक मेज़ के सामने बैठा हुआ तेवर बदलता और ओठ चबाता रहा।

पीरी ने फिर कहना आरम्भ किया—'तुम्हें कम से कम यह समझ लेना चाहिए कि तुम्हारे आमोद-प्रमोद के अलावा एक ऐसी भी चीज़ है जिसे दूसरों की शांति और सुख कहते हैं, और तुम उस शांति और सुख को सिर्फ़ इसलिए भंग कर देना चाहते हो क्योंकि तुम अपने मनोरंजन के बिना नहीं रह सकते! तुम मनोरंजन करना चाहते हो?—मेरी बीबी जैसी स्त्रियों के साथ जी

खोलकर करो; ऐसी स्त्रियों के साथ तुम अपने अधिकार की सीमा में रहोगे, क्योंकि वे जानती हैं कि तुम उनसे क्या चाहते हो। और उनके पास भी तुम्हारे ही जैसा व्यभिचार का अस्त्र है। मगर एक क्वाँरी कन्या से ब्याह करने का वादा करना ..उसे धोका देना, उसे भगा ले जाना...तुम्हारी समझ में इतना तक नहीं आता कि यह इतनी ही बड़ी नीचता है जितनी किसी बुड्ढे आदमी को, या किसी बच्चे को मारना है !'

पीरी रुका और अनातोले की ओर देखने लगा, और अब क्रोध से नहीं, प्रश्नात्मक दृष्टि से !

पीरी को अपना गुस्सा क़ाबू में करते देखकर अनातोले का साहस बढ़ा। उसने कहा—'मैं यह सब कुछ नहीं जानता, समझे ? मैं यह सब कुछ नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता,' पर पीरी की ओर से उसने दृष्टि नीची कर ली, और उसका नीचे का जबड़ा कुछ कुछ काँपने लगा। 'मगर तुमने मेरी शान में "नीच", और इसी तरह के लफ़्ज़ों का इस्तेमाल किया है जिसे मैं एक इज्ज़तदार आदमी की हैसियत से हर्गिज़ हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

पीरी ने उसकी ओर विस्मय के साथ देखा, और उसकी समझ में न आ सका कि वह क्या चाहता है।

अनातोले ने कहना जारी रक्खा—'वैसे यह एक घरेलू बात थी, मगर मैं फिर भी...।'

पीरी ने व्यंग्य विद्रूप के साथ कहा—'तो जनाब क्या चाहते हैं ?'

'तो, अगर आप मुझे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलाना चाहते हैं तो कम से कम अपने लफ़्ज़ वापस ले लीजिए। समझे ?'

पीरी ने कहा—'मैं वापस लेता हूँ, मैं वापस लेता हूँ।' पीरी ने कहा, और उसकी निगाह उसके टूटे हुए बटन पर आकर जम गई। 'और मैं तुमसे माफ़ी माँगता हूँ। और अगर सफ़र ख़र्च के लिए कुछ रुपया चाहिए तो...।'

अनातोले मुस्कराया। पीरी इस भीत और क्षुद्र मुस्कराहट को अपनी पत्नी के चेहरे पर अनेक बार देख चुका था, और अकस्मात् फिर उसके हृदय में क्रोध का संचार हो आया।

वह बड़बड़ाया—'अधम और हृदयहीन पिशाच कहीं का !' और वह कमरे से चला गया।

दूसरे दिन अनातोले पीटर्सबर्ग को चला गया।

——

सोलहवाँ परिच्छेद

जब पीरी मेरी डिमिट्रीव्ना को सूचना देने गया कि कुरागिन मास्को से चला गया तो सारे घर में हलचल और भीति का आतंक छाया हुआ था। नटाशा की हालत बड़ी नाज़ुक थी। मेरी डिमिट्रीव्ना ने पीरी को बताया कि यह मालूम होने के बाद कि अनातोले का विवाह हो चुका है, नटाशा ने उस रात को संखिया चुराकर खा लिया था। थोड़ा सा संखिया खाने के बाद नटाशा इतनी भयभीत हो गई कि उसने सोनिया को जगाकर बता दिया कि उसने क्या कर डाला है। समय पर सारे आवश्यक उपचार कर दिये गये थे, और अब वह ख़तरे से बाहर थी; पर वह इतनी कमज़ोर थी कि काउण्टेस को बुला भेजा गया था। पीरी ने क्षुब्ध काउण्ट और ज़ार ज़ार रोती हुई सोनिया को तो देखा, पर नटाशा को वह न देख सका।

उस दिन पीरी ने क्लब में भोजन किया, और उसके कानों में चारों ओर से रोस्टोवा को भगा ले जाने के प्रयास की किंवदंती सुनाई पड़ने लगी; और उसने ज़ोरों के साथ इस किंवदंती का खण्डन किया, और सबको आश्वासन दिया कि इसके सिवाय और कुछ नहीं हुआ था कि उसके साले ने रोस्टोवा से विवाह प्रस्ताव किया था, और उसे अस्वीकार कर दिया गया था। पीरी ने सारे मामले को भरसक छिपा डालने

और नटाशा की प्रख्याति फिर से स्थापित करने को अपना कर्त्तव्य समझा।

वह भीति के साथ प्रिंस एण्ड्र्य के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था, और वृद्ध प्रिंस से उसके विषय में खैर-खबर लेने रोज़ जाता था।

शहर की यह किंवदंती मेडेम बोरीन के द्वारा वृद्ध प्रिंस के कानों में भी जा पहुँची थी, और उन्होंने नटाशा का प्रिंसेज़ मेरी के नाम पत्र भी पढ़ा था जिसमें उसने अपने भावी पति से सम्बंध-विच्छेद करने की बात लिखी थी। अब वह पहले से कहीं अधिक प्रफुल्लित दिखाई पड़ते थे, और अपने पुत्र की वापसी की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता के साथ कर रहे थे।

अनातोले के जाने के कुछ दिन बाद पीरी को प्रिंस एण्ड्र्य का पत्र मिला जिसमें उसने अपने आ पहुँचने की बात लिखी थी, और उससे मिलने की इच्छा प्रकट की थी।

प्रिंस एण्ड्र्य के मास्को पहुँचते ही वृद्ध प्रिंस ने उसे नटाशा की प्रिंसेज़ मेरी के नाम वह पत्र दिया जिसमें सम्बंध विच्छेद करने की बात लिखी हुई थी (मेडेम बोरीन ने वह पत्र उभार-कर वृद्ध प्रिंस के हवाले कर दिया था), और नटाशा के भागने की कहानी नमक-मिर्च लगाकर सुनाई।

प्रिंस एण्ड्र्य रात को आया था। पीरी उससे मिलने दूसरे दिन सुबह पहुँचा। पीरी को आशा थी कि वह प्रिंस एण्ड्र्य को भी उसी स्थिति में देखेगा जिसमें नटाशा थी। पर जब

ड्रायंगरूम में पहुँचने पर उसने अध्ययनशाला में से आती हुई उसकी ज़ोरदार और सजीवतापूर्ण आवाज़ सुनी तो उसे कम आश्चर्य नहीं हुआ। प्रिंस एण्ड्र्यू पीटर्सबर्ग के किसी प्रेम-षड्यंत्र की बात कर रहा था।

पीरी को देखकर वह रुका। उसका चेहरा कम्पित हो उठा और उस पर विषण्ण मुद्रा आ विराजी।

उसने सजीवता के साथ कहा—'अच्छा! कहो कैसे हो? मुटापे का सिलसिला बराबर जारी है?' पर उसके माथे की सिकुड़न सघनतर होती गई। 'हाँ, मैं अच्छी तरह हूँ।' उसने पीरी के उत्तर में कहा, और मुस्कराया।

पीरी को वह मुस्कराहट साफ़ शब्दों में कहती दिखाई दी—'हाँ, मैं अच्छा हूँ। मगर मेरे स्वास्थ्य से किसी को कोई फ़ायदा अब न पहुँच सकेगा।'

पीरी को मालूम पड़ा कि उसके मित्र के लिए अपने वेदनाकारी और अन्तरंग विचारों को दबाये रखने के लिए बाहरी बातों में ज़ोर के साथ तर्क-वितर्क करना और उत्तेजित होना कितना आवश्यक है।

जब प्रिंस चले गये तो प्रिंस एण्ड्र्यू ने पीरी की बाँह पकड़ी और उसे वह उस कमरे में ले गया जो उसके लिए नियत किया गया था। वहाँ एक बिछौना बिछा हुआ तैयार था, और चारों ओर अनेक सन्दूक़ खुले हुए रक्खे थे। प्रिंस एण्ड्र्यू ने एक सन्दूक़ के पास जाकर उसमें से एक छोटी सी सन्दूक़ची निकाली

और उसमें से काग़ज़ में लिपटा हुआ एक पैकेट निकाला। यह सब उसने चुपचाप और शीघ्रता के साथ किया। इसके बाद वह खड़ा हो गया और खखारा। उसका चेहरा शोकमग्न था, और ओंठ एक-दूसरे से भिँचे हुए थे।

'तुम्हें कष्ट दिया, क्षमा करना।'

पीरी जान गया कि प्रिंस एण्ड्र्यू नटाशा के विषय में बात चलाना चाहता है, और उसके चेहरे पर करुणा और समवेदना की मुद्रा अंकित हो गई। इस मुद्रा से प्रिंस एण्ड्र्यू चिढ़ गया, और उसने निश्चयात्मक, गूँजती हुई और कठोर आवाज़ में कहना आरम्भ किया।

'मुझे काउण्टेस रोस्टोवा के सम्बन्ध विच्छेद करने का पत्र मिला है, और मुझे तुम्हारे साले के उनसे विवाह-प्रस्ताव करने, या इसी तरह की कुछ बात करने की ख़बर मिली है। तो यह ठीक है न?'

पीरी ने कहना आरम्भ किया—'ठीक भी है, और ग़लत भी।' पर प्रिंस एण्ड्र्यू ने बीच ही में बाधा दी।

उसने कहा—'ये उनके पत्र हैं। और यह उनका चित्र है।'

और इतना कहकर उसने वह पैकेट मेज़ पर से उठाकर पीरी के हवाले कर दिया।

'यह काउण्टेस रोस्टोवा को दे देना...अगर वहाँ जाओ तो।'

पीरी ने कहा—'वह बड़ी बीमार है।'

प्रिंस एण्ड्र्यू बोला—'तो वह अभी यहीं हैं? और प्रिंस कुरागिन?' उसने शीघ्रता से कहा।

'उसे यहाँ से गये हुए बहुत ज़माना हुआ। वह तो मौत के दरवाज़े पर पड़ी है।'

'मुझे उनकी बीमारी की बात सुनकर बड़ा अफ़सोस हुआ।' और वह अपने पिता की तरह मुस्करा उठा—शुष्कता, कुत्सा, और तीव्रता के साथ।

प्रिंस एण्ड्रयू बोला—'तो कुरागिन महोदय ने काउण्टेस रोस्टोवा से विवाह करने की कृपा नहीं की?'

और उसने अपनी नाक कई बार बजाई।

पीरी ने कहा—'वह विवाह न कर सका; क्योंकि उसका विवाह हो चुका है।'

प्रिंस एण्ड्रयू क्षोभकारी ढंग से हँसा, बिल्कुल अपने पिता की तरह।

उसने पूछा—'हाँ, तो यह तो बताओ, तुम्हारा साला आजकल है कहाँ?'

पीरी ने कहा—'वह पीटर्स...मुझे पता नहीं है।'

प्रिंस एण्ड्रयू ने कहा—'ख़ैर, कोई बात नहीं है। काउण्टेस रोस्टोवा से कह देना कि वह पूरी स्वतंत्र थीं और हैं, और मैं उनका मंगल चाहता हूँ।'

पीरी ने पैकेट उठा लिया। प्रिंस एण्ड्रयू—या तो इसलिए कि वह कोई बात याद करके कहना चाहता हो, या इसलिए कि वह पीरी की बात सुनने की आशा में हो—उसकी ओर एकटक दृष्टि से देखता रहा।

पीरी ने कहा—'तुम्हें याद है, हमने एक बार पीटर्सबर्ग में क्या बातें की थीं ?'

प्रिंस एण्ड्रय़ू ने शीघ्रता से कहा—'हाँ, मैंने कहा था कि—पतित स्त्री को क्षमा कर देना चाहिए, मगर मैंने यह नहीं कहा था कि मैं भी उसे क्षमा कर सकूँगा। मैं नहीं कर सकता।'

पीरी ने कहा—'मगर क्या तुम उसकी तुलना...?'

प्रिंस एण्ड्रय़ू ने बाधा दी और तीव्र स्वर में चिल्लाकर कहा—'उससे फिर पाणिग्रहण की याचना करूँ, विशाल-हृदयता का परिचय दूँ, आदि इत्यादि ?...हाँ, इससे अच्छा और काम हो ही क्या सकता है, मगर मैं वैसा महापुरुष नहीं बनना चाहता। अगर तुम चाहते हो कि हमारी तुम्हारी मित्रता ऐसी ही रहे, तो इसका जिक्र फिर कभी मत करना...यह सारी बातें फिर कभी मेरे सामने मत करना! अच्छा सलाम। तुम उन्हें पैकेट दे दोगे न ?'

पीरी कमरे से चला गया और वृद्ध प्रिंस और फिर प्रिंसेज़ मेरी के पास पहुँचा।

वृद्ध प्रिंस पहले से अधिक सजीव दिखाई पड़ते थे। प्रिंसेज़ मेरी पहले ही जैसी दिखाई पड़ती थी, पर अपने भाई के प्रति अपनी सहानुभूति के नीचे वह पीरी से इस सम्बन्ध के टूट जाने पर अपने सन्तोष को न छिपा सकी। उन्हें देखकर पीरी जान गया कि रोस्टोव-परिवार के लिए सब के हृदय में कितनी घृणा और कुत्सा भरी हुई है, और इनके सामने उसका—उसका, जो और

किसी के एवज़ में प्रिंस एण्ड्र्यू से नाता तोड़ सकी—नाम तक लेना कितना असम्भव है।

भोजन के समय आसन्न युद्ध का प्रसंग चला। प्रिंस एण्ड्र्यू लगातार बात करता गया; कभी वह अपने पिता से वादविवाद करता, कभी अपने पुत्र के स्विस शिक्षक डेसाले से, और हर एक बात में अस्वाभाविक सजीवता प्रकट करता जिसका कारण पीरी अच्छी तरह जानता था।

उसी दिन शाम को पीरी अपने सिपुर्द किये गये काम को पूरा करने के लिए मेरी डिमिट्रीव्ना के यहाँ गया। नटाशा कमरे के बीच में खड़ी हुई थी। उसका रंग पीला पड़ गया था, और मुद्रा कठोर थी। पर पीरी ने जो आशा की थी कि वह उसे आत्मग्लानि-सन्तप्त देखेगा, वैसी कोई बात न थी। जब पीरी शीघ्रता से उसके पास पहुँचा, उसने शीघ्रता से कहना आरम्भ किया—'पीटर किरिलिच! प्रिंस बोल्कोन्सकी तुम्हारे मित्र थे—तुम्हारे मित्र हैं' उसने वाक्य शुद्ध किया। (उसे ऐसा प्रतीत होता था कि पहली सारी बातें अब बिल्कुल विभिन्न हो जानी चाहिए।) उन्होंने मुझसे एक बार कहा था कि मैं संकट के समय तुमसे ...।'

पीरी ने कोई उत्तर न दिया। वह नाक के द्वारा साँस लेता हुआ उसकी ओर चुपचाप देखता रहा। अब तक वह अपने हृदय में उसका तिरस्कार करता रहा था और उसे घृणा की दृष्टि से देखने की कोशिश करता रहा था, पर अब उसके लिए उसके हृदय में इतना खेद भर गया कि तिरस्कार-भावना को स्थान ही न रहा।

नटाशा ने कहा—'वह अब यहाँ आ पहुँचे हैं—उनसे कहना कि वह मुझे...क्षमा...कर दें!'

वह रुक गई और पहले से भी अधिक शीघ्रता के साथ साँस लेने लगी, पर रोई नहीं।

पीरी ने कहा—'हाँ, मैं उनसे कह दूँगा, मगर...।'

पर वह स्वयं ही नहीं जानता था कि वह क्या कहे।

नटाशा यह देख कर कि वह उसकी बात का कुछ और ही अनुमान लगाने लगा, क्षुब्ध हो उठी।

उसने आतुरता के साथ कहा—'नहीं नहीं, मैं जानती हूँ, अब सब समाप्त हो गया। नहीं, वह अब कभी नहीं हो सकता। मुझे केवल यही दुख खाये डालता है कि मैंने उनका बड़ा अपराध किया है। उनसे यही कहना कि मैं उनसे क्षमा चाहती हूँ, क्षमा चाहती हूँ, सब बातों की क्षमा चाहती हूँ।'

उसका सारा शरीर काँप उठा और वह एक कुर्सी पर बैठ गई।

पीरी ने कहा 'मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या तुम'.. पीरी निश्चय न कर सका कि वह अनातोले को किस नाम से अभिहित करे, और उसके विचार मात्र से उसका चेहरा लाल हो गया—'क्या तुम उस कमीने आदमी को प्रेम करती थी?'

नटाशा ने कहा—'उसे कमीना मत कहो। पर मैं कुछ नहीं जानती...मैं कुछ नहीं जानती...।'

वह रोने-चिल्लाने लगी, और पीरी के हृदय में करुणा, कोमलता और प्रेम का पहले से भी प्रबल उद्रेक हो उठा। उसे बोध हुआ

कि चश्मे के भीतर उसकी आँखों में आँसू आ गये हैं, और उसने आशा की कि वह उन्हें न देख सकेगी।

पीरी ने कहा—'अच्छा, जाने दो, इसका प्रसंग ही नहीं उठाना चाहिए।' उसकी मृदुल, कोमल और सहृदयतापूर्ण आवाज़ नटाशा को अकस्मात् बड़ी विचित्र दिखाई पड़ी। पीरी ने फिर कहना आरम्भ किया—

'हाँ, अब इस प्रसंग को जाने ही दो। मैं उनसे सारी बातें कह दूँगा; पर मैं तुमसे एक बात कह देना चाहता हूँ—मुझे अपना हितू समझना—और जब कभी तुम्हें किसी तरह की सहायता या सलाह की ज़रूरत हो, या तुम किसी के आगे अपने दिल का गुबार निकालना चाहती हो—अब नहीं, फिर कभी, जब तुम शांत हो जाओ—तो मुझे याद रखना!' उसने नटाशा का हाथ पकड़ कर चूमा। 'मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी अगर मैं...।' पीरी अस्त-व्यस्त हो गया।

'मुझसे यह सब कुछ मत कहो—मैं इस योग्य नहीं हूँ!'

नटाशा चिल्ला उठी और कमरे में से जाने को उद्यत हुई, पर पीरी उसका हाथ पकड़े रहा।

वह जानता था कि उसे कुछ और भी कहना है। पर जब उसके मुँह से वह बात निकल गई तो उसे स्वयं आश्चर्य्य हुआ।

उसने उससे कहा—'ज़रा रुको, अभी तुम्हारे आगे तुम्हारा सारा जीवन पड़ा हुआ है।'

नटाशा ने शर्म और आत्मग्लानि के साथ कहा—'मेरे आगे? मेरे लिए अब सब कुछ समाप्त हो गया।'

पीरी ने दुहराया--'सब कुछ समाप्त हो गया ? अगर मैं मैं न होता, बल्कि संसार का सबसे सुन्दर, सबसे चतुर, और सबसे अच्छा आदमी होता, और साथ ही आज़ाद भी होता, तो मैं इसी घड़ी अपने घुटने टेक कर तुम्हारे हाथ और तुम्हारे प्रेम की याचना करता !'

इन कई दिनों में नटाशा ने आज पहली बार कृतज्ञता और भावावेश के आँसू बहाये, और पीरी की ओर दृष्टिपात करके वह कमरे से चली गई।

——

सत्रहवाँ परिच्छेद

१८११ के अंत से पश्चिमी योरुप की सेनाओं का एक विशद और केन्द्रित एकीकरण आरम्भ हुआ, और १८१२ में इस सुविशाल सैन्यशक्ति ने—यदि सेना भेजने वाले और उसका पालन-पोषण करने वाले भी मिला लिये जायँ तो लाखों आदमियों ने—पश्चिम-पूर्व की ओर से रूसी सीमा की ओर यात्रा करनी आरम्भ की, और इसी सीमा पर १८११ ही से रूसी सेनाएँ भी एकत्र होनी आरम्भ हुई। १२ जून १८१२ को पश्चिमी योरुप की शक्तियों ने रूसी सीमा पार की और युद्ध आरम्भ हो गया, अर्थात् कुछ ऐसा कार्य्यकलाप आरम्भ हुआ जो मानवी विवेक और मानवी स्वभाव के सर्वथा विपरीत था। असंख्य जन-समुदाय ने एक-दूसरे के विरुद्ध ऐसे असंख्य अपराध—जालसाज़ियाँ, विश्वासघात, चोरियाँ, झूठे नोट चलाना, घरों में सेंध लगाना, आग लगाना, और हत्याएँ करना—किये जिनका विवरण इन सारी शताब्दियों में विश्व के किसी न्यायालय के इतिहास में नहीं मिलता, और जो इतने पर भी उन लोगों की दृष्टि में अपराध नहीं थे जिन्होंने उनमें भाग लिया था।

इस असाधारण घटना का क्या कारण था? यह क्यों हुई? इतिहासकार हमें सरल आश्वासन के साथ बताते हैं कि इसका कारण ड्यूक आफ़ ओल्डेनबर्ग के साथ किया गया अन्याय था,

औपनिवेशिक व्यवस्था का भंग करना था, नैपोलियन की महत्त्वाकांक्षा थी, ऐलेक्ज़ण्डर की हठधर्मी थी, राजनीतिज्ञों की भूलें थीं, और आदि, इत्यादि ।

यदि तत्कालीन लोगों को वस्तुस्थिति इस रूप में दिखाई दी तो इसमें आश्चर्य की कोई बात न थी । नैपोलियन का यह समझना स्वाभाविक था कि युद्ध का कारण इँगलैण्ड का षड्यंत्र था (और जब वह सेंट हेलेना में बंदी था तो उसने यही बात कही थी ।) ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के एक सदस्य को भी यह दीखना स्वाभाविक था कि युद्ध का कारण नैपोलियन की महत्त्वाकांक्षा थी—ड्यूक आफ़ ओल्डेनबर्ग को यह कि युद्ध उनके ऊपर किये गये अत्याचार का परिणाम था; व्यापारियों को यह कि युद्ध का कारण औपनिवेशिक व्यवस्था थी जो सारे योरुप को बर्बाद कर रही थी; पुराने सैनिकों और जनरलों को यह कि मुख्य कारण उनका कहीं न कहीं उपयोग होना था; और तत्कालीन राजनीतिज्ञों को यह कि युद्ध का कारण रूस और आस्ट्रिया का १८०९ का गुप्त संघ था जिसे नैपोलियन की तीव्र दृष्टि से बचाया नहीं जा सका था । जब कोई कार्य्य कर लिया जा चुका होता है तो उसमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन-परिवर्द्धन करना असम्भव हो जाता है, और उसका परिणाम, तत्कालीन शेष असंख्य जन-समुदाय के कार्य्यों से टक्कर खाकर, एक ऐतिहासिक महत्ता प्राप्त कर लेता है । आदमी सामाजिक स्थिति में जितना ही ऊँचा

होगा, उतने ही अधिक आदमियों से उसका सम्पर्क होगा, और दूसरे आदमियों पर उसका जितना अधिक प्रभुत्व होगा, उसके प्रत्येक कार्य्य की भवितव्यता और अनिवार्य्यता भी उतनी ही अधिक स्पष्ट होगी।

'राजा के हृदय में भगवान् वास करते हैं।'

राजा इतिहास का क्रीतदास है।

इतिहास—अर्थात् मानव जाति का अचेतन, स्मृतिगत, अधीन जीवन-प्रवाह—राजा के जीवन के प्रत्येक क्षण पर अपनी मुहर लगा कर उसे अपनी लक्ष्यसिद्धि का साधन बनाता है।

पश्चिम के आदमी पूर्व की ओर हत्याकाण्ड करने बढ़े और अनेकानेक कारणों के परस्पर टकराने के उस अच्युत विधान से प्रेरित होकर असंख्य छोटे-छोटे कारणों ने उस हत्याकाण्ड और युद्ध के अनुरूप रूप धारण करके उस हत्याकाण्ड और उस युद्ध को प्रकृत रूप देने के लिए परस्पर सामंजस्य स्थापित कर लिया—औपनिवेशिक व्यवस्था भंग करने की भर्त्सना; ड्यूक आफ़ ओल्डेन-वर्ग के साथ किया गया अन्याय; सेनाओं की प्रशिया में गति-विधि—जिसका उद्देश (नैपोलियन की धारणा के अनुसार) केवल सशस्त्र शांति स्थापित करना था—.फ्रेंच सम्राट् की युद्ध-विषयक लिप्सा और व्यसन—जिसके साथ उसकी प्रजा की तद्विषयक सहमति भी आ मिली थी—युद्ध-संबंधी तैयारियों के वैभव की मुग्धा; उन तैयारियों का व्यय, और उसकी पूर्ति करने के लिए धनकी उपलब्धि की आवश्यकता; उसका ड्रेस्डन में किया गया

उन्मत्तकारी स्वागत; राजनीतिक-संधि चर्चा, जो तत्कालीन व्यक्तियों की राय में वास्तविक शांति स्थापन करने की इच्छा से अभिभूत होकर चलाई गई थी, पर जो केवल दोनों पक्षों की आत्मगरिमा को आघात पहुँचाने का कारण बनी; और लाखों करोड़ों अन्य ऐसे कारण जिन्होंने या तो इस आसन्न घटना के अनुरूप रूप धारण कर लिया, या उसके साथ वे टकरा गये।

जब एक पका हुआ सेब गिरता है—तो क्यों गिरता है? इसलिए कि पृथिवी ने उसे अपनी आकर्षणशक्ति द्वारा खींच लिया; इसलिए कि उसकी चेंपी सूख गई; इसलिए कि वह सूर्य की रश्मियों से पककर तैयार हो गया; इसलिए कि वह अधिक बोझल हो गया; इसलिए कि हवा ने चलकर उसे हिलाया-डुलाया; या इसलिए कि उसके नीचे खड़ा हुआ लड़का उसे खाना चाहता था।

कोई कारण नहीं है। ये सारी बातें स्थितियों का आकस्मिक संघर्षमात्र हैं जिसके द्वारा सारी महत्त्वपूर्ण, आवश्यक और तात्त्विक घटनाएँ होती हैं और जब एक Botanist यह निर्णय करता है कि सेब इसलिए गिरा कि उसकी चेंपी सूख गई थी, तो वह भी उतनी ही सत्य बात कहता है जितनी वह नीचे खड़ा हुआ लड़का कहता है कि सेब इसलिए गिरा कि वह उसे खाना चाहता था और उसके लिए उसने प्रार्थना की थी। और जब कोई यह कहता है कि नैपोलियन मास्को इसलिए गया कि वह जाना चाहता था और फलतः वह नष्ट हो गया और इसलिए कि ऐलेक्ज़ण्डर

उसका विनाश चाहता था, तो वह भी उतनी ही सही या ग़लत बात कहता है जितना वह आदमी, जो कहता है कि लाखों टनों के बोझवाली, नीचे से खोखली पहाड़ी इसलिए गिर पड़ी कि अन्तिम जहाज़ी बेड़े के मस्तूल से उसे आघात पहुँचा था। ऐतिहासिक घटनाओं में महान् पुरुष कहलाये जानेवाले व्यक्ति एक लेबिलमात्र हैं जिनसे घटनाओं का नाम पड़ जाता है; और अन्य लेबिलों की तरह, उनका भी स्वयं घटना से अत्यन्त नगण्य सा सम्पर्क होता है।

उनका प्रत्येक कार्य—जिसे वह अपने दृष्टिकोण से अपना किया हुआ समझते हैं—ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उनका किया हुआ नहीं रहता, बल्कि सारी ऐतिहासिक शृङ्खला से सम्बद्ध और नित्यता से निर्णीत बन जाता है।

× × ×

नैपोलियन ने रूस के साथ युद्ध छेड़ दिया क्योंकि वह ड्रेस्डन जाने से न रुक सका, वहाँ के पुरतपाक स्वागत से उन्मत्त हुए बिना न रह सका, एक पोलिश वर्दी पहने बिना न रह सका और जून के प्रातःकालीन स्फूर्तिदायक प्रभाव से न बच सका, और कुराकिन और फिर बालाशेव की उपस्थिति में अपना क्रोध न रोक सका।

ऐलेक्ज़ण्डर ने संधि-चर्चा करने से साफ़ इन्कार कर दिया; क्योंकि उन्होंने अपने आपको नैपोलियन के हाथों अपमानित हुआ समझा। बार्कले डी टाली ने अपना कर्त्तव्य पालन करने और एक महान्

सेनानायक की प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए रूसी सेना का संचालन पूरी दक्षता के साथ किया। रोस्टोव फ्रेंच सेना पर धावा बोलने को दौड़ पड़ा क्योंकि वह एक मैदान में घोड़ा दौड़ाने की अपनी अदम्य इच्छा को न रोक सका। और इसी प्रकार अपने व्यक्तिगत स्वभाव, परिस्थिति और लक्ष्यों से प्रेरित होकर और सारे असंख्य लोगों ने युद्ध में भाग लेकर अपने अपने कार्य्य किये। किसी के हृदय पर भय का सिक्का जमा हुआ था, किसी पर मिथ्या गर्व का; कोई उल्लसित था, कोई क्रुद्ध; और सब यह समझकर काम कर रहे थे कि वे जो कुछ कर रहे हैं, अपनी स्वतंत्र इच्छा से प्रेरित होकर, पर वास्तव में वे सब थे इतिहास के यन्त्र, जो परस्पर सहयोग से एक ऐसा महान् कार्य्य कर रहे थे जो उनकी दृष्टि से छिपा हुआ था, पर जो हमारे सामने स्पष्ट रूप से मौजूद है। बस, सारे कार्य्यशील व्यक्तियों को इसी अनिवार्य्य परिणाम का सामना करना पड़ता है, और इस मानव-समाज में जो जितनी ही ऊँची स्थिति पर होता है, उतना ही वह परतंत्र होता है।

१८१२ के अभिनेता बहुत पहले स्टेज को छोड़ चुके हैं; और उनके व्यक्तिगत हित पूरी तरह से नष्ट हो चुके हैं, और अब हमारे सामने केवल उस समय का ऐतिहासिक तथ्य रह गया है।

पर हमें यह मान लेना चाहिए कि योरप के आदमी नैपोलियन के नेतृत्व में रूस के अंतराल में कूद पड़ने और वहीं नष्ट हो जाने को विवश हो गये थे—और फिर हमारी समझ में उन लोगों के

सारे निरर्थक, परस्पर-विरोधी और निर्मम कार्य्य-कलाप आ जाते हैं जिन्होंने उस युद्ध में भाग लिया था।

अदृष्ट ने अपनी अपनी व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि करने में प्रयत्नशील उन सारे व्यक्तियों को एक ऐसे बृहद् फल की सिद्धि के लिए प्रयत्न करने को विवश कर दिया था, जिसका उनमें से न नैपोलियन को, और न ऐलेक्ज़ण्डर को ही तनिक सा भी आभास था।

अब हमारे सामने यह अच्छी तरह स्पष्ट है कि १८१२ में फ्रेंच सेना के ध्वस्त होने का क्या कारण था। इस बात से कोई इन्कार न कर सकेगा कि इसका एक कारण, बिना शरद ऋतु की तैयारी किये, असमय आगे बढ़ते चले जाना था, और दूसरा कारण रूसी जनता की वह घृणा थी जो रूसी शहरों और गाँवों के जलने से उनके हृदय में विदेशियों के प्रति प्रज्वलित हो उठी थी। पर उस समय यह किसी ने अनुमान न किया था (जो हमें अब इतना सहज स्पष्ट दिखाई देता है) कि ८००००० आदमियों की सेना— संसार की सबसे दक्ष सेना और संसार के सबसे महान् जनरल द्वारा संचालित—रूसी सेना जैसी अपने से आधी और अनुभव-हीन सेना के मुक़ाबले में आकर किसी अन्य उपाय द्वारा ध्वस्त नहीं की जा सकती थी। न केवल कोई इसका अनुमान ही न कर सका, बल्कि स्वयं रूसियों की ओर से उस होतव्यता को—जो रूस की रक्षा का एकमात्र उपाय था—रोकने के निरन्तर हर तरह के प्रयत्न किये जाते रहे।

१८१२ के संबंध में फ्रेंच इतिहास-लेखकों ने जो पुस्तकें लिखी हैं उनमें उन्होंने बड़े शौक़ के साथ बताया है कि किस प्रकार नैपोलियन अपनी सैन्यपंक्ति विस्तृत करने के ख़तरे को पहले से ही जानता था, किस प्रकार वह एक मुठभेड़ लेने के लिए उत्कण्ठित था, किस प्रकार उसके मार्शलों ने उसे स्मोलेन्स्क ही में रुक जाने की सलाह दी थी। इधर कुछ रूसी इतिहास-लेखक और भी शौक़ के साथ बताते हैं कि किस प्रकार इस युद्ध-यात्रा के आरम्भ ही से नैपोलियन को रूस के भीतर ले जाने की युद्ध-योजना स्थिर कर ली गई थी। पर प्रत्येक घटना के ऊपर हमेशा इतनी सम्मतियाँ एकत्र हो जाती हैं कि घटना चाहे किसी रूप में फलित हो, कुछ यह कहनेवाले निकल ही आते हैं—'देखो, मैंने तो यह पहले ही कहा था'—और यह भूल जाते हैं कि उनकी असंख्य सम्मतियों में कुछ सम्मतियाँ बिलकुल विपरीत बात भी कह रही थीं।

नैपोलियन हमारी सेना को खंडों में विभाजित कर देता है, देश में बढ़ा चला जाता है, और एक खुल्लमखुल्ला युद्ध करने के कई अवसर हाथ से निकाल देता है। अगस्त में वह स्मोलेन्स्क पहुँच जाता है, और उसे केवल किसी प्रकार आगे बढ़े चले जाने की चिंता रहती है, और उसके आगे बढ़ने ही से उसके सर्वनाश का सूत्रपात आरम्भ हो जाता है।

न नैपोलियन को ही मास्को की ओर बढ़ने का ख़तरा समझ में आया था न ऐलेक्ज़ण्डर और रूसी कमांडरों ने ही उसे देश में बहला ले जाने की बात सोची थी। नैपोलियन का बहकावे में

आकर आगे बढ़ना किसी की योजना का परिणाम न था (किसी ने उसकी सम्भावना तक पर विचार नहीं किया था); यह उन लोगों के षड्यंत्रों, लक्ष्यों और महत्त्वाकांक्षाओं के विचित्र योग का परिणाम था जिन्होंने उस युद्ध में भाग लिया था। यह सब आकस्मिक संयोग का फल था। युद्धयात्रा के आरम्भ में हमारी सेनाएँ बँटी हुई थीं, और हमने उन्हें एकत्र करना चाहा। हमारा उद्देश था कि शत्रु-सेना से युद्ध करके उसकी गति का अवरोध किया जाय, पर सेनाओं को एकत्र करने के इस प्रयास से शत्रुसेना को स्मोलेन्स्क तक चले जाने का अवसर मिल गया।

सम्राट् और सारी प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल स्मोलेन्स्क को त्याग दिया गया। पर स्मोलेन्स्क में आग स्वयं उसके निवासियों ही ने लगाई; और ये बर्बाद नगरनिवासी, दूसरे रूसियों के लिए उदाहरण उत्पन्न करके मास्को की ओर चले गये। उन्हें अपनी क्षति के सिवाय और किसी बात की चिन्ता न थी, और वह जहाँ पहुँचते थे, शत्रु के विरुद्ध लोगों में घृणा उद्दीप्त करते जाते थे। नैपोलियन आगे बढ़ा, हम पीछे हटे। इस प्रकार अपनी पराजय का सामान उसने स्वयं कर लिया।

———

अठारहवाँ परिच्छेद

नटाशा पहले की अपेक्षा शांत तो हो चली थी, पर प्रफुल्लित न थी; वह न केवल सारे आमोद-प्रमोद के पदार्थों--नृत्यों, सैर-सपाटों, गानों और थियेटरों--से ही बचती रहती, बल्कि वह जब कभी हँसती, उसके हास्य के पीछे अश्रु दिखाई दिये बिना न रहते। वह गा न सकती। जब कभी वह गाने या हँसने की चेष्टा करती, अश्रुओं से उसका कण्ठ अवरुद्ध हो आता : अनुताप के अश्रुओं से; उन पवित्र दिनों की स्मृति के अश्रुओं से जिनका वापस आना अब असम्भव था—जिस युवा जीवन को वह इतना सुखमय बना सकती थी उसे अपने ही हाथों इस तरह बर्बाद कर डालने के क्षोभ के अश्रुओं से। हास परिहास और संगीत से उसका शोक विशेष रूप से प्रबल हो जाता था।

जौलाई के आरम्भ में मास्को में युद्ध की प्रगति के विषय में अधिकाधिक क्षोभकारी समाचार आने लगे; जनता की ज़ुबान पर सम्राट् की अपील और स्वयं उनके सेना से मास्को आने की ख़बर के सिवाय और कुछ न सुनाई पड़ता था। यह कहा जा रहा था कि सम्राट् सेना से इसलिए चले आये कि वह ख़तरे में थी; यह भी कहा जा रहा था कि स्मोलेन्स्क शत्रु के अधिकार में आ गया है, और नैपोलियन के पास दस लाख सेना है, और रूस की रक्षा केवल किसी आकस्मिक घटना से ही होनी सम्भव है।

११ जौलाई को सनीचर के दिन सम्राट् की विज्ञप्ति मिल गई, पर अभी प्रकाशित न हो सकी, और पीरी ने उस दिन रोस्टोव परिवार से वादा किया कि वह रविवार के दिन जब उनके यहाँ भोजन करने आयगा तो उक्त विज्ञप्ति की एक प्रतिलिपि काउएट रोस्टोपचिन से लेता आयगा।

रोस्टोव परिवार इस रविवार को सदा की तरह राजूमोव्स्की के निजी गिर्जे में प्रार्थना में सम्मिलित होने गया। जौलाई का महीना था ही, अतः काफ़ी गर्मी थी। और जब रोस्टोव परिवार सुबह के दस बजे गिर्जे के दरवाज़े पर गाड़ी में से उतरा तो वहाँ चारों ओर ग्रीष्म ऋतु-सुलभ अलस भाव छाया हुआ था। मास्को के सारे सम्भ्रांत व्यक्ति, रोस्टोव परिवार की जान-पहचान के सारे कुलीन व्यक्ति, उस गिर्जे में मौजूद थे; क्योंकि उन गर्मियों के मौसम में बहुत से धनी-मानी परिवार—जो वैसे हमेशा अपनी देहाती रियासतों को चले जाते थे—किसी असा-धारण घटना की प्रतीक्षा में रुक गये थे। जब नटाशा अपनी माँ के साथ भीड़ में से होकर एक वर्दी पहने अर्दली के पीछे-पीछे, जो उनके लिए रास्ता साफ़ करता जा रहा था, जा रही थी तो उसे एक युवक ज़रा ज़ोर से फुसफुसाता हुआ कहता सुनाई पड़ा।

'यह रोस्टोवा, वही...।'

'पहले से कितनी दुबली हो गई है, पर फिर भी ख़ूबसूरती वही है!'

नटाशा ने कुरागिन और वोल्कोन्सकी के नाम लिये जाते सुने, या उसे ख़याल हुआ कि उसने सुने। पर वह हमेशा इसी की चिन्ता में रत रहती थी। उसे हमेशा यही ख़याल बना रहता था कि जो कोई उसकी ओर देखता है उसे उसके उस प्रेम-व्यापार का पहले ख़याल आ जाता है। इस प्रकार व्यथित और सशंकित हृदय के साथ नटाशा रेशमी पोशाक पहने आगे बढ़ी।

प्रार्थना एक सुन्दर, सजीव सा वृद्ध पुरुष कर रहा था, और उस मृदुल शान्ति-संयम के साथ, जिसका आराधकों की आत्माओं पर बड़ा उन्मेषकारी और सांत्वनादायक प्रभाव पड़ता है। वेदी के दरवाज़े बन्द कर दिये गये थे, और पर्दे धीरे धीरे डाल दिये गये थे, और उसके पीछे से मृदुल रहस्य-पूर्ण आवाज़ कुछ मन्त्रोच्चार कर रही थी। आँसुओं से नटाशा का कलेजा उछलने लगा, और एक उल्लासकारी, पर साथ ही प्रबल भाव ने उसे उत्तेजित कर दिया।

उसने प्रार्थना की : 'मुझे बताओ मैं क्या करूँ, मैं अपने जीवन का क्या उपयोग करूँ, और मैं सदैव के लिए किस प्रकार पवित्र बन सकूँ !'

काउण्टेस ने कई बार मुड़-मुड़कर अपनी लड़की के करुणा-व्यंजक चेहरे और चमकते हुए नेत्रों की ओर देखा, और ईश्वर से उसकी सहायता करने की याचना की।

अकस्मात् प्रार्थना के बीच में—और नियम के विरुद्ध—पादरी एक छोटा स्टूल लाया जिस पर से प्रार्थना की जाती थी और उसे

वेदी के पर्दे के सामने रख गया। इसके बाद प्रधान पादरी सिर पर बैंजनी रङ्ग का मखमली टोपा पहने आया, और अपने बाल ठीक करके कुछ कष्ट के साथ स्टूल पर घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा जो उसे अभी-अभी राजपरिषद् से प्राप्त हुई थी। और सब ने भी उसके अनुकरण में घुटने टेक दिये। प्रार्थना नैपोलियन की इस उद्दण्डतापूर्ण चढ़ाई से रूस की रक्षा करने के सम्बन्ध में थी।

उसने कहा—'हे सर्वशक्तिमान् परमात्मा, हे मुक्तिदाता! आज तू अपने इन दीनजनों की ओर कृपा और आशीर्वाद की दृष्टि फेर, और हम पर दया कर! यह शत्रु तेरी इस पवित्र भूमि को ध्वस्त करना चाहता है, यह सारे संसार को विनष्ट करना चाहता है, और इस प्रकार तेरे विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठा रहा है। ये अवैध मनुष्य तेरे राज्य को उठा फेंकने के लिए, तेरे मन्दिरों का विध्वंस करने के लिए, तेरी मूर्तियों को उठा फेंकने के लिए, और हमारे पवित्र मन्दिरों को अपवित्र करने के लिए एक जगह एकत्र हो गये हैं। भगवन्, पापी की और कितने दिनों तक विजय होती रहेगी? भगवन्, यह अन्याय का राज्य और कितने दिनों तक रहेगा?

'हमारे पिताओं के पिता! हमें उस मातृभूमि की रक्षा के लिए जो तूने हमें और हमारे पूर्वजों को प्रदान की है, एकता का अस्त्र प्रदान कर, और पापी की शक्ति को उनके भाग्य के विरुद्ध प्रबल न होने दे, जिन्हें तूने स्वयं पूत किया है।

'हे भगवान्, हमारे शत्रु, हमारे सनातन धर्म को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, । आज तू हमें अपनी दया का प्रमाण दे । अपने सेवकों के हृदयों में अपनी दया के प्रति उल्लासभावना भर दे; हमारे शत्रुओं को व्यथित कर, और उन्हें अपने सेवकों के पैरों तले शीघ्रता से रौंद डाल !'

नटाशा के धर्मलोलुप हृदय पर इस प्रार्थना का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा । उसने अपने हृदय के पूरे योग के साथ न्यायपरता की भावना प्रदान करने, आस्था और आशा से हृदय को बलवान् बनाने, और प्रेम से उत्पन्न सजीवता प्रदान करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की । वह यह प्रार्थना तो न कर सकी कि उसके शत्रु पैरों तले रौंदे जायँ क्योंकि जब कि अब से थोड़ी ही देर पहले वह इच्छा कर रही थी कि उसके और अधिक शत्रु होते जिससे वह उनके लिए प्रार्थना करती । पर साथ ही वह उस प्रार्थना के औचित्य में भी सन्देह न कर सकी जो घुटने टेककर पढ़ी जा रही थी । और उसे ऐसा बोध हुआ कि परमात्मा ने उसकी प्रार्थना सुन ली है ।

——

उन्नीसवाँ परिच्छेद

पीरी ने रविवार के दिन—जिस दिन वह विशेष प्रार्थना पढ़ी गई थी—रोस्टोव परिवार के लिए जनता के प्रति की गई सम्राट् की अपील और सेना-संबंधी ताज़े समाचार लाने का वादा किया था जिन्हें वह काउएट रोस्टोपचिन से लेनेवाला था। काउएट रोस्टोपचिन पीरी से अच्छी तरह परिचित थे। जब पीरी सुबह के वक्त काउएट रोस्टोपचिन के भवन में पहुँचा तो उसे एक पत्र-वाहक मिला जो सेना से अभी चला आ रहा था। यह पत्र-वाहक एक नर्तक था जिसकी उससे मास्को के नृत्यों में जान-पहचान हो गई थी।

पत्र-वाहक ने कहा—'काउएट, ईश्वर के लिए मेरा कुछ बोझ हल्का कर दीजिए। मेरे पास माता-पिताओं के नाम पत्रों का थैला भरा हुआ है!'

इन पत्रों में एक पत्र निकोलस रोस्टोव का अपने पिता के नाम था। पीरी ने पत्र ले लिया और काउएट रोस्टोपचिन ने उसे सम्राट् की अपील, सेना संबंधी अंतिम आदेश और अपना ताज़ा बुलेटिन दिया। पीरी ने सेना संबंधी आदेशों के पत्र में हत-आहत, और पुरस्कृत व्यक्तियों की सूची में निकोलस रोस्टोव का नाम देखा जिसे ओस्ट्रोव्ना युद्ध में अपूर्व धैर्य्य प्रदर्शित करने के उपलक्ष्य में चौथी श्रेणी का सेंट जार्ज क्रास मिला था, और उसी आदेशपत्र

में प्रिंस एराड्रयू बोल्कोन्सकी का नाम देखा जिसे चार्ल्स सेना का कमाराड मिला था। पीरी रोस्टोव परिवार को बोल्कोन्सकी का स्मरण नहीं कराना चाहता था, पर वह उन्हें उनके पुत्र के पुरस्कृत होने का समाचार देकर उन्हें आनन्दित करने का लोभ संवरण न कर सका। अतः उसने वह छपा हुआ आदेश और निकोलस का पत्र रोस्टोव परिवार के पास भेज दिये, और अपील, बुलेटिन, और अन्य आदेश अपने साथ भोजन के अवसर पर ले जाने के लिए रख लिये।

पीरी रोस्टोव परिवार में समय से पहले आया जिससे एकांत में मिल सके।

इस वर्ष वह इतना मोटा हो गया था कि यदि वह इतना लम्बा न होता, उसके घुटने इतने चौड़े न होते, और उसमें अपना दीर्घ शरीर इतनी आसानी से ले जाने योग्य बल न होता, तो वह भोंड़ा दिखाई देने लगता। वह सीढ़ियों पर हाँफता हुआ और बड़बड़ाता हुआ चढ़ा। उसके कोचवान ने उससे यह भी पूछने की आवश्यकता न समझी कि क्या उसे उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए, क्योंकि वह जानता था कि जब कभी उसका स्वामी रोस्टोव परिवार में आता है, आधी रात तक वहीं रहता है।

सबसे पहले उसकी निगाहतले जो प्राणी आया वह नटाशा थी। वह अब नटाशा को प्रेम करने लग गया था। जिस समय वह मुलाक़ाती कमरे में अपना चोगा उतार रहा था, उस समय भी उसने उसे बिना देखे जान लिया था कि वही बोल रही है।

वह गानशाला में गाने का अभ्यास कर रही थी। वह जानता था कि जब से वह बीमार पड़ी है, उसके गाने का यह पहला अवसर है, अतः वह उसके स्वर को सुनकर विस्मित भी हुआ, और उल्लसित भी। उसने आहिस्ता से दरवाज़ा खोला और देखा कि वह रेशमी गुलाबी पोशाक पहने कमरे में इधर-उधर टहलती हुई गा रही है। यह वही पोशाक थी जिसे पहनकर वह उस दिन गिर्जे में गई थी। जिस समय पीरी ने दरवाज़ा खोला, उस समय उसकी ओर नटाशा की पीठ थी; पर जब उसने शीघ्रता से मुड़कर पीरी का चौड़ा विस्मित चेहरा देखा, तो वह लजा गई और शीघ्रता से उसके पास आकर, मानो बहाना बनाने के लिए...बोली—

'मैं फिर गाना चाहती हूँ। कुछ न कुछ करना तो चाहिए ही।'

'इसमें क्या शक है।'

'मुझे कैसी .खुशी हो रही है कि तुम आ गये! आज मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है,' नटाशा ने कहा, और उसी पुरानी सजीवता के साथ जो पीरी ने उसमें बहुत दिनों से नहीं देखी थी। 'तुम्हें मालूम है निकोलस को सेंटजार्ज का क्रास मिला है। मुझे उन पर इतना गर्व हो रहा है!'

'हाँ! वह सैनिक आदेश मैंने ही भेजा था। अच्छा, गाओ, मैं बाधा नहीं देना चाहता।' और इतना कहकर वह ड्रायंगरूम की ओर जाने को मुड़ा।

नटाशा ने उसे रोक लिया।

'काउण्ट, क्या मेरा गाना बुरी बात है ?' उसने लजाते हुए, और पीरी की ओर से दृष्टि नीची न करते हुए कहा।

'नहीं तो...क्यों ?...यह तो अच्छी ही बात है...पर तुम मुझसे क्यों पूछती हो ?'

नटाशा ने शीघ्रता से उत्तर दिया—'यह मैं स्वयं नहीं जानती, पर मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहती जो तुम्हें नापसन्द हो। मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है। तुम जानते नहीं हो तुम मेरी निगाह में कितना ऊँचा स्थान रखते हो, तुमने मेरे साथ क्या कुछ उपकार किया है !' वह जल्दी-जल्दी बोल रही थी और उसने यह नहीं देखा कि पीरी का चेहरा इन शब्दों को सुनकर किस प्रकार लाल हो आया था। 'मैंने सैनिक आदेश में देखा है कि वह, बोल्कोन्सकी' (उसने शीघ्रता के साथ धीरे से उसका नाम लिया) 'रूस ही में हैं, और फिर सेना में पहुँच गये हैं। तुम्हारा क्या विचार है ?'—वह जल्दी-जल्दी बोल रही थी जिससे कहीं उसकी शक्ति जवाब न दे दे—'क्या वह मुझे कभी क्षमा न करेंगे ? क्या वह हमेशा मेरे प्रति अपने हृदय में कटुभाव रक्खे रहेंगे ? तुम्हारा क्या विचार है ? तुम्हारा क्या विचार है ?'

पीरी ने उत्तर दिया—'मेरी समझ में तो उनके क्षमा करने योग्य कोई बात नहीं है...अगर उनकी जगह मैं होता...।'

और पीरी की विचार-धारा उसे अपने प्रवाह में बहाकर फिर उस दिन की ओर ले गई जब उसने नटाशा को सांत्वना देने की चेष्टा में कहा था कि यदि वह वह न होता, और यदि वह संसार

का सबसे उत्तम पुरुष होता, और स्वतन्त्र होता, तो घुटने टेककर उसके पाणि-ग्रहण की याचना करता; और उसके हृदय पर उसी सहृदयता, कोमलता, और प्रेम ने अधिकार जमा लिया, और उसके ओठों पर निकलने के लिए वही पहले जैसे शब्द आये। पर नटाशा ने उसे उन शब्दों को व्यक्त करने का अवसर न दिया।

'हाँ, तुम—तुम'—उसने हर्षातिरेक के साथ 'तुम' शब्द का उच्चारण करते हुए कहा—'मैं जानती हूँ, इस संसार में तुमसे अधिक दयालु, सहृदय और उत्तम पुरुष दूसरा नहीं है; दूसरा कोई हो ही नहीं सकता! जो तुम उस समय वहाँ न होते, और इस समय भी, तो न जाने मुझे क्या हो जाता, क्योंकि—।'

उसकी आँखों में आँसू आ गये, उसने गाने की किताब से मुँह ढककर पीठ फेर ली और गुनगुनाते हुए टहलना शुरू कर दिया।

भोजन के बाद काउण्ट आराम के साथ एक आराम-कुर्सी में लेट गये, और फिर उन्होंने गम्भीर मुद्रा के साथ सोनिया से—जो पढ़ने में घर भर में प्रसिद्ध थी—विज्ञप्ति पढ़ सुनाने को कहा।

'मास्को, हमारी प्राचीन राजधानी!

'शत्रु विशाल सेना के साथ रूस की सीमा पार करके चला आ रहा है और हमारे प्यारे देश का विध्वंस करने पर उतारू है।' सोनिया ने उद्योग के साथ अपने ऊँचे स्वर में पढ़ा। काउण्ट नेत्र बन्द किये सुनते रहे, बीच-बीच में लम्बी साँसें ले लेते थे।

नटाशा तनकर बैठी हुई अनुसन्धानात्मक नेत्रों से कभी अपने पिता की ओर देखती, कभी पीरी की ओर। पीरी जानता था कि

उसकी ओर नटाशा की दृष्टि लगी हुई है, वह इधर-उधर निगाह न डालने की चेष्टा कर रहा था। काउण्टेस अपील के हर एक मर्म-स्पर्शी उद्‌गार पर अपना सिर रोष और असहमति के साथ हिलातीं। उन्हें इन सारे शब्दों से केवल यही प्रकट हो रहा था कि उनके पुत्र पर आनेवाला ख़तरा जल्दी दूर न होगा। शिनशिन व्यंग्य भाव से मुस्कराता हुआ किसी भी चीज़ का मज़ाक उड़ाने के लिए तैयारी कर रहा था—चाहे वह सोनिया का पढ़ना हो, चाहे काउण्ट का कोई उद्‌गार हो, और यदि और कुछ नहीं तो स्वयं विज्ञप्ति ही सही।

काउण्ट बार-बार नाक से साँस चढ़ाते हुए—मानो उनकी नाक के आगे कोई तेज़ सुँघनी लगा दी गई हो—अश्रु-पूरित नेत्र खोलकर चिल्ला उठे—'हाँ, ठीक! बस सम्राट् के मुँह से आधा शब्द निकलने की देर है और हम सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हो जायेंगे, और किसी का मोह न करेंगे।'

पर शिनशिन ने काउण्ट की देश-भक्ति के संबंध में जो व्यंग्य सोच रक्खा था, उसका उसे उच्चारण करने का समय न मिला और नटाशा अपने स्थान से कूदकर सीधी अपने पिता के पास पहुँची।

उसने उनका चुम्बन करके चिल्लाकर कहा—'आहा! हमारे पापा कैसे प्यारे आदमी हैं!' और उसने पीरी की ओर फिर अचेतनता के साथ उसी रूपमोहिनी डालनेवाली दृष्टि से देखा जो उसके उल्लसित होने के बाद से उसे वापस मिल गई थी।

शिनशिन ने कहा—'वाह! ज़रा इस देशभक्तिन को तो देखो!'

नटाशा ने आहत स्वर में कहा—'देशभक्तिन की कोई बात नहीं है, बस केवल...। आपको हर बात में हँसी सूझती है, पर इसमें दिल्लगी की तनिक भी बात नहीं है।'

काउण्ट ने कहा—'दिल्लगी, बेशक! बस उनके मुँह से एक शब्द निकलने की देर है, और हम सब चले...। हम क्या कोई जर्मन हैं?'

इसी अवसर पर पीटिया, जिसकी ओर अब तक किसी का ध्यान न गया था, लाल मुँह किये अपने पिता के पास आया और असम्बद्ध स्वर में—जो कभी तीव्र हो जाता, कभी गम्भीर—बोला—'देखिए पापा, मैं आप से और मामा, तुमसे भी, साफ़-साफ़ कहे देता हूँ कि या तो तुम मुझे सेना में भर्ती करा दो, नहीं तो... क्योंकि मैं अब और चुप नहीं बैठ सकता...बस, इतनी-सी बात है...।'

काउण्टेस ने बेतरह भयभीत होकर आकाश की ओर नेत्र उठाये, अपने हाथ जोड़े, और रोष के साथ अपने पति की ओर देखकर कहा—

'देखा, यह तुम्हारी बातों का नतीजा है!'

मगर काउण्ट अपनी उत्तेजना से इससे पहले ही संयत हो चुके थे। बोले—

'आया कहीं का बहादुर बनकर! बेहूदी बातें नहीं करते हैं। तुम्हें अभी पढ़ना है।'

'नहीं पापा, यह बेहूदी बात बिलकुल नहीं है ! फीडिया ओबो-लेन्स्की तो मुझसे भी छोटा है, पर वह जा रहा है। और इसके अलावा मैं अब और नहीं पढ़ सकता जब...।' पीटिया रुक गया, लजाया—इतना कि उसके माथे पर पसीने की बूँदें निकल आईं—और फिर किसी प्रकार बोला...'जब हमारी मातृभूमि संकट में है।'

'बस, बहुत हुआ—बेहूदा कहीं का !'

'पर आप ख़ुद कह रहे थे कि आप अपना सब कुछ बलिदान कर देंगे।'

'पीटिया, ख़ामोश रह, नहीं तो...।' काउण्ट ने चिल्लाकर कहा और अपनी स्त्री की ओर देखा जो पीले ज़र्द चेहरे के साथ अपने लड़के के चेहरे की ओर आँखें फाड़-फाड़कर देख रही थीं।

पीटिया बोला—'मैं आप से कहे देता हूँ, और पीटर किरि-लिच भी यही कहेंगे...।'

'बेहूदा कहीं का ! ज़ुबान बन्द कर ! अभी माँ का दूध ओठों से सूखा नहीं, और बनने चला है बहादुर ! बस, फिर कभी ऐसी बात न कहना !' काउण्ट ने काग़ज़ उठाये—शायद सोने से पहले उन्हें एक बार फिर पढ़ने के लिए—और कमरे से जाने को तैयार हुए।

उन्होंने कहा—'आओ पीटर किरिलिच, चलकर कुछ सिगरेट-विगरेट पियें।'

पीरी उत्तेजित और अनिश्चित हो रहा था। उसकी ऐसी दशा का दोष नटाशा के वे प्रोज्ज्वल कान्त नेत्र थे जो उसे बराबर ताक रहे थे।

उसने कहा—'नहीं, अब घर जाऊँगा।'

काउण्ट—'घर? अभी से? और तुम तो हमारे ही यहाँ सायंकाल बिताने का इरादा कर रहे थे...तुम आजकल कई कई दिन ग़ायब रहते हो, और मेरी यह लड़की', काउण्ट ने मृदुलभाव से नटाशा की ओर संकेत किया—'तभी हँसती बोलती है जब तुम यहाँ मौजूद रहते हो।'

पीरी ने शीघ्रता से कहा—'हाँ, मैं भूल गया था...मुझे सचमुच घर जाना चाहिए...ज़रूरी काम है..!'

'अच्छा तो फिर सलाम', काउण्ट ने कहा, और वह कमरे से चले गये।

नटाशा ने पीरी के नेत्रों में चुनौती देते हुए देखकर कहा—'क्यों जा रहे हो? और इतने घबराये हुए से क्यों हो?'

पीरी कहना चाहता था—'क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ' पर वह यह न कह सका, और वह इतना लजाया कि उसके नेत्रों में आँसू आ गये। और उसने निगाह नीची कर ली। बोला—

'क्योंकि अब मुझे यहाँ कम आना चाहिए..क्योंकि...नहीं, कोई बात नहीं...मुझे सिर्फ़ एक ज़रूरी काम है...।'

नटाशा ने हठपूर्वक कहा—'क्यों? नहीं मुझे बता दो!' पर अकस्मात् वह रुक गई। दोनों ने एक-दूसरे की ओर

भीत और अस्त-व्यस्त दृष्टि से देखा। पीरी ने मुस्कराने की चेष्टा की, पर वह मुस्करा न सका। उसकी मुस्कराहट से हृदय-वेदना व्यंजित हुई; उसने सिर्फ़ नटाशा के हाथ का चुम्बन किया, और बाहर चला गया।

पीरी ने निश्चय कर लिया कि वह रोस्टोव परिवार में फिर कभी न जायगा।

——

बीसवाँ परिच्छेद

पीरी से भेंट करने के बाद प्रिंस एण्ड्रथ्यू पीटर्सबर्ग गया। घर तो उसने कहा कि वह काम से जा रहा है, पर वस्तुतः वह कुरागिन की तलाश में जा रहा था। वह अनातोले से मुठभेड़ करना नितान्त आवश्यक समझता था। पीटर्सबर्ग पहुँचने पर उसने अनातोले के विषय में पूँछताँछ की, पर उसे पता चला कि वह पहले ही शहर से चला गया। पीरी ने अपने साले को सूचना दे दी थी कि प्रिंस एण्ड्रथ्यू उसका पीछा कर रहा है। अनातोले कुरागिन ने झटपट युद्धसचिव से सेना में अपनी नियुक्ति करा ली, और तत्काल मोल्डेविया की सेना में चला गया। पीटर्सबर्ग में प्रिंस एण्ड्रथ्यू अपने भूतपूर्व कमाण्डर कुटूज़ोव से मिला, जो उससे हमेशा सहृदयता से पेश आते थे, और उन्होंने सलाह दी कि वह उनके साथ मोल्डेविया चले। वृद्ध जनरल कुटूज़ोव मोल्डेविया की सेना के कमाण्डर-इन-चीफ़ नियुक्त किये गये थे। अतः प्रिंस एण्ड्रथ्यू हेड कार्टर्स स्टाफ़ में नियुक्त होकर टर्की को रवाना हो गया।

प्रिंस एण्ड्रथ्यू अनातोले को लिखकर चुनौती देना उचित न समझता था। उसने सोचा कि यदि वह बिना किसी नवीन कारण के उसे चुनौती देगा तो इससे युवती काउण्टेस नटाशा रोस्टोवा की बदनामी होगी, अतः वह उससे व्यक्तिगत रूप से भेंट

करना चाहता था और उसने सोचा था कि उस अवसर पर वह चुनौती के लिए कोई न कोई नया बहाना निकाल लेगा। पर कुरागिन उसे टर्की में भी न मिल सका, क्योंकि उसके वहाँ पहुँचते ही वह रूस वापस आ गया। प्रिंस एण्ड्र्यू को एक नवीन देश और नवीन परिस्थितियों में अपना जीवन भार सम न लगा। अपनी सम्बद्ध पत्नी के भ्रष्ट आचरण के प्रभाव को वह जितना ही छिपाना चाहता था, उतनी ही अधिक तीव्रता के साथ वह उसके हृदय पर आघात पहुँचाता जाता था। और इस बात की चेतनता कि अभी अपमान का बदला नहीं लिया गया है, उसकी तीव्र कुत्सा का अभी तक उपयोग नहीं हुआ है, और वह उसी प्रकार उसके हृदय को अपने भार से कुचले डालती है, उसकी उस कृत्रिम शांति के वातावरण को निरन्तर दूषित करती रहती थी जिसे उसने टर्की में संलग्नतापूर्ण, और कुछ कुछ महत्त्वाकांक्षापूर्ण, कार्यशीलता के रूप में उत्पन्न कर लिया था।

जब १८१२ में नैपोलियन के साथ युद्ध छिड़ने का समाचार बुखारेस्ट पहुँचा तो प्रिंस एण्ड्र्यू ने कुटूज़ोव से उसकी तब्दीली पश्चिमी सेना में करने की प्रार्थना की। इधर कुटूज़ोव प्रिंस एण्ड्र्यू की ऐसी अथक कार्यशीलता से ऊब गये थे। अतः उन्होंने उसे बड़ी ख़ुशी से जाने की आज्ञा दे दी और उसे बारक्ले डी टॉली के नाम एक कार्य सौंप दिया।

प्रिंस एण्ड्र्यू पश्चिमी सेना में जाने से पहले एक बार बाल्ड-हिल्स में होता गया जो स्मोलेन्स्क की सड़क से कुछ ही मील की

दूरी पर स्थित था। इन पिछले तीन वर्षों में उसके जीवन में इतने परिवर्त्तन हुए थे, कि जब वह बाल्डहिल्स पहुँचा तो वह वहाँ के दैनिक जीवन का कार्य्यक्रम पूर्ववत् और अपरिवर्त्तित देखकर आश्चर्य्य-चकित रह गया। प्रिंसेज़ मेरी वहाँ पहले जैसी थी—एक कातर सौन्दर्य्य-विहीन कुमारी। वह अपने जीवन का सर्वोत्तम अंश निरन्तर भीति और व्यथा के वातावरण में निरर्थक और उल्लास-विहीन रूप से व्यतीत कर रही थी। मेडेम बोरीन पहले ही जैसी मनोहारिणी, आत्मविश्वासपूर्ण, लड़की थी जो अपने जीवन का प्रत्येक क्षण उल्लास के साथ उपयोग में ला रही थी। हाँ, प्रिंस एण्ड्रयू की धारणा के अनुसार, वह पहले से अधिक आत्मगरिमापूर्ण हो चली थी। बाहर से देखने में वृद्ध प्रिंस केवल इतने बदले थे कि उनके मुँह का एक दाँत टूट गया था जिससे उनके मुँह में एक रिक्त स्थान दिखाई पड़ता था। आचरण में वह वही पहले जैसे थे, हाँ, वह संसार के इस दैनिक कार्य्यकलाप में पहले से कुछ अधिक अविश्वास और क्रोध प्रकट करने लगे थे।

केवल एक नन्हा निकोलस बदला था। वह अब बड़ा हो गया था, चेहरा गुलाब की तरह चमकता था, बाल काले-काले और घुँघराले थे, और जब वह मौज में आकर हँसता तो उसके नन्हें से प्यारे चेहरे का ऊपर का ओंठ अनजान में ठीक उसी प्रकार उठता जिस प्रकार नन्हीं प्रिंसेज़ उठाया करती थी।

जब तक प्रिंस एण्ड्रयू बाल्डहिल्स में रहा, सब एकत्र भोजन करते रहे, पर सब परस्पर एक-दूसरे से क्षुब्ध थे, और प्रिंस एण्ड्रयू

जान गया कि वह वहाँ एक अतिथि की हैसियत से है जिसकी ख़ातिर पारिवारिक नियम में यह अपवाद किया गया है। पहले दिन भोजन के अवसर पर अकस्मात् यही विचार उसके मस्तिष्क में उठा, और वह चुप हो गया, और वृद्ध प्रिंस भी उसकी इस अस्वाभाविक चुप्पी को देखकर बिल्कुल गूंगे बन गये, और भोजन के बाद तत्काल ही अपने कमरे में चले गये। जब शाम को वह अपने पिता के पास गया और अपने पिता में स्फूर्ति संचरित करने के लिए युवक काउण्ट केमेन्स्की के युद्ध की चर्चा करने लगा, तो अकस्मात् वृद्ध प्रिंस प्रिंसेज़ मेरी की बात करने लगे, और उसे उसकी मिथ्या धार्मिक धारणाओं का और मेडेम बोरीन के प्रति अरुचि रखने का दोष देने लगे। उन्होंने कहा कि घर भर में मेडेम बोरीन ही एक ऐसी व्यक्ति है जो उनकी हृदय से भक्ति करती है।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने अपने पिता की ओर बिना दृष्टि किये कहना आरम्भ किया (प्रिंस एण्ड्र्यू अपने पिता के आचरण की आलोचना अपने जीवन में आज पहली बार कर रहा था)—'मैं तो चाहता था कि इस बारे में अपनी ज़ुबान ही न खोलूँ; पर जब आप मुझ से पूछते हैं तो मुझे साफ़-साफ़ बात कहनी पड़ेगी। अगर आप के और मेरी के बीच में किसी तरह का फ़र्क़ है तो इसका दोष मैं उसके माथे हर्गिज़ नहीं मढ़ सकता। मैं जानता हूँ वह आपको कितने स्नेह और श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। पर जब आप मुझ से पूछते हैं', प्रिंस एण्ड्र्यू ने चिड़चिड़ाहट के साथ कहा—क्योंकि आज कल वह हमेशा चिढ़ जाया करता था—'तो

मैं सिर्फ़ इतना कह सकता हूँ कि अगर आप में और उसमें किसी तरह की ग़लतफ़हमी है तो उसका एक मात्र कारण वह घृणित फ़्रेंच औरत है जो मेरी बहिन की संगिनी होने के क़ाबिल नहीं है।'

आरम्भ में वृद्ध प्रिंस ने अपने पुत्र की ओर एक टक दृष्टि से देखा, और एक अस्वाभाविक मुस्कराहट से उनके मुँह का वह रिक्त स्थान दिखाई देने लगा जिसके प्रति प्रिंस एण्ड्रयू अपने आपको अभ्यस्त न बना सका था।

'कैसी संगिनी? ऐं? तुमने तो बात का बतंगड़ बना दिया! ऐं?'

प्रिंस एण्ड्रयू ने कठोर और विषाद-पूर्ण स्वर में कहा—'पिताजी, मैं कोई राय नहीं देना चाहता था; मगर जब आपने मुझे चुनौती दी, तो मैंने भी कह दिया, और अब मैं फिर दुहराता हूँ कि मेरी का कोई क़सूर नहीं है, बल्कि क़सूर उनका है, क़सूर उसका है...उस फ़्रेंच औरत का है!'

'आह, इसने तो फ़ैसला कर दिया, फ़ैसला कर दिया!' वृद्ध प्रिंस ने धीमे और—जैसा कि प्रिंस एण्ड्रयू को प्रतीत हुआ—अस्त-व्यस्ततापूर्ण स्वर में कहा—पर फिर वह अकस्मात् उछल पड़े और चिल्ला उठे—'निकल जा! निकल जा! तेरा यहाँ निशान तक बाक़ी न रहे!...'

× × ×

प्रिंस एण्ड्रयू फ़ौरन चला जाना चाहता था, पर प्रिंसेज़ मेरी ने कह-सुनकर उसे एक दिन के लिए और रोक लिया। अपनी

दैनिक संलग्नता त्यागते ही, और विशेष कर अपने जीवन की उन पुरानी परिस्थितियों में—जिनमें वह उस समय रहता था जब वह सुख में था--वापस आते ही प्रिंस एण्ड्रयू पर जीवन की नीरसता नें अपनी पहले जैसी प्रबलता के साथ उस पर अधिकार कर लिया, और वह उन विषादपूर्ण स्मृतियों से निकल भागने और किसी कार्य्यशीलता में यथासम्भव शीघ्रता से संलग्न होने का अवसर देखने लगा।

उसकी बहिन ने पूछा—'तो एण्ड्रयू भय्ये, फिर जाओगे ही?'

प्रिंस एण्ड्रयू ने कहा—'हाँ, ईश्वर का धन्यवाद, मैं जाने में समर्थ हूँ। मुझे यही खेद है कि तुम नहीं जा सकतीं।'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'ऐसी बात मुँह से क्यों निकाल रहे हो? ऐसी बात मुँह से क्यों निकाल रहे हो? तुम ऐसे भयंकर युद्ध में जा रहे हो और वह इतने बूढ़े हो चले हैं! मेडेम बोरीन कह रही थी कि उन्होंने तुम्हारे संबंध में कई बार पूछा...।'

इस बात का ज़िक्र चलाते ही प्रिंसेज़ मेरी के ओंठ काँप उठे और आँखों से आँसू टपटप गिरने लगे। प्रिंस एण्ड्रयू मुँह फेरकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

'हे भगवान्! हे भगवान्! जब याद आती है कि एक नगण्य सी चीज़ किस तरह आदमी का जीवन दुःखमय बना देती है तो...!' उसने ऐसे क्रोध के साथ कहा जिससे प्रिंसेज़ मेरी भयातुर हो उठी।

वह जान गई कि 'नगण्य' शब्द कहते हुए उसका ध्यान केवल मेडेम बोरीन की ओर ही नहीं था जिसने उसके जीवन को दुःख-

मय बना दिया था, बल्कि उस आदमी की ओर भी था जिसने स्वयं प्रिंस एण्ड्र्यू के जीवन को भी विषादमय बना डाला था।

उसने प्रिंस एण्ड्र्यू की कुहनी छूकर उसकी ओर अश्रुपूरित चमकते हुए नेत्रों से देखकर कहा—'एण्ड्र्यू! मैं तुमसे एक प्रार्थना करती हूँ, एक अनुनय करती हूँ! मैं तुम्हारे जी की बात जानती हूँ।' उसने अपने नेत्र नीचे कर लिये। 'यह मत समझो कि आदमी आदमी को दुःख दे सकता है। आदमी तो भगवान के अस्त्र मात्र हैं। दुःख-कष्ट वही भेजता है, आदमी में इतनी सामर्थ्य कहाँ से आई। मनुष्य उसके अस्त्र मात्र हैं—उनका कोई दोष नहीं है। यदि तुम समझते हो कि किसी ने तुम्हारा कोई अपराध किया है, तो उसे भूल जाओ और क्षमा कर दो! हमें किसी को दण्ड देने का कोई अधिकार नहीं है। और फिर तुम्हें क्षमा करने का सुख प्राप्त होगा।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उत्तर दिया—'मेरी, अगर मैं औरतज़ात होता तो ऐसा ही करता। यह स्त्री का गुण है। मगर आदमी को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए—वह क्षमा कर ही नहीं सकता।' और यद्यपि वह उस समय तक कुरागिन की बात नहीं सोच रहा था, अकस्मात् उसका संचित क्रोध उसके हृदय को बींधने लगा।

'अच्छा भय्ये, तुम्हें भगवान् कुशल से रक्खें। याद रक्खो संकट परमात्मा ही देता है, मनुष्य का इसमें कोई दोष नहीं है।' बस, प्रिंस एण्ड्र्यू को विदा करते समय मेरी ने यही शब्द कहे।

अपने पुत्र की बिदा के दूसरे दिन प्रिंस निकोलस ने प्रिंसेज़ मेरी को अपनी अध्ययनशाला में बुलाया और कहा—

'कहिए ? अब आप की तसल्ली हो गई ? मेरे बेटे से आख़िर लड़ा ही दिया न ! तसल्ली हो गई, ऐं न ? बस, यही आप चाहती थीं ! तसल्ली हो गई ?—इससे मुझे तकलीफ़ हो रही है, मुझे तकलीफ़ हो रही है। मैं बुड्ढा आदमी ठहरा, कमज़ोर वैसे हूँ, और आप यही चाहती थीं। अच्छी बात है फिर, ख़ुशियाँ मनाइए, ख़ुशियाँ मनाइए !'

इसके बाद प्रिंसेज़ मेरी ने अपने पिता को पूरे एक सप्ताह तक नहीं देखा। वह बीमार थे और अपने कमरे से बाहर न निकलते थे।

और यह बात देखकर प्रिंसेज़ मेरी के अचरज का ठिकाना न रहा कि अपनी बीमारी में वृद्ध प्रिंस ने न केवल उसे ही कमरे में न घुसने दिया, बल्कि उन्होंने मेडेम बोरीन को भी अन्दर न बुलाया। सिर्फ़ तीखन ऐसा था जो उनकी सेवा शुश्रूषा कर रहा था।

एक सप्ताह के बाद वृद्ध प्रिंस बाहर निकले और पहले की तरह दैनिक जीवन व्यतीत करने लगे। अब वह मकान बनवाने और बाग़ों का प्रबंध करने में विशेष कार्यशीलता के साथ लग गये। पर मेडेम बोरीन से उन्होंने अपना सारा पहला सम्पर्क तोड़ दिया था। अपनी पुत्री के प्रति उनकी मुद्रा और शुष्क स्वर

स्पष्ट रूप से व्यंजित करता था—'देखा ! देखती है ? तूने मेरे खिलाफ़ तरह-तरह की बातें गढ़ ली थीं; प्रिंस एण्ड्र्यू से मेरे और इस फ्रेंच औरत के बारे में तरह-तरह की झूठी बातें कही थीं, और उसे मुझसे लड़ा दिया था, पर तू देखती है, मुझे न तेरी ज़रूरत है न उसकी !'

——

इक्कीसवाँ परिच्छेद

प्रिंस निकोलस की रियासत—बाल्डहिल्स—स्मोलेन्स्क से चालीस मील की दूरी पर मास्को को जाने वाली सड़क से दो मील परली ओर थी।

एक दिन शाम को प्रिंस ने अपने पुराने सेवक आल्पेटिच को हिदायतें देकर स्मोलेन्स्क भेजा। उन्होंने उसे प्रांतीय गवर्नर से भेंट करने की ताकीद की थी और सौदा-सुलफ़ लाने की भी आज्ञा दी थी, पर अपनी रक्षा का कोई प्रबंध न किया था। नन्हें निकोलस के शिक्षक डेसाले ने प्रिंसेज़ मेरी से भेंट करके कहा कि प्रिंस की तबीयत अच्छी नहीं है और वह अपनी रक्षा का प्रबंध नहीं कर रहे हैं। उसने यह भी कहा कि प्रिंस एण्ड्रयू के पत्र से यह साफ़ प्रकट है कि बाल्डहिल्स में और अधिक दिनों तक रहना ख़तरे से ख़ाली न होगा। अतएव आल्पेटिच के द्वारा स्मोलेन्स्क स्थित प्रांतीय गवर्नर के पास अपनी ओर से एक पत्र भेजा जाय जिसमें बाल्डहिल्स पर आनेवाले ख़तरे की सम्भावना की बात पूछी जाय। डेसाले ने प्रिंसेज़ मेरी की तरफ़ से गवर्नर को पत्र लिखा, और प्रिंसेज़ मेरी ने उस पर हस्ताक्षर करके आल्पेटिच को इस हिदायत के साथ दे दिया कि वह उसे गवर्नर को दे, और यदि कोई ख़तरे की बात हो, तो उल्टे पाँव वापस आ जाय।

इस प्रकार सारी हिदायतें पाने के बाद, आल्पेटिच, वृद्ध प्रिंस का दिया हुआ एक चौड़ी सी पूँछ का सफ़ेद टोप पहनकर और वृद्ध प्रिंस की तरह हाथ में एक छड़ी लेकर, घर से निकला, और उसके साथ ही उसका परिवार भी आया।

उसकी स्त्री ने प्रचलित युद्ध-संबंधी किंवदन्तियों की ओर निर्देश करके चिल्ला कर कहा—'याकोव आल्पेटिच, कोई ऐसी-वैसी बात हो तो रुकना मत, ईश्वर के लिए हमारा भी ध्यान रखना!'

आल्पेटिच बड़बड़ाया—'औरतज़ात, औरतज़ात! वही रोना-चीख़ना!' और उसके बाद रवाना हो गया। वह राई और जई के अब तक हरे हरे खेतों को प्रसन्नता के साथ देखता हुआ आगे बढ़ा चला गया। वह उस साल की सुन्दर फ़सल को देख देखकर मन ही मन मगन हो रहा था, और बोने और काटने का अपना तोड़-जोड़ लगा रहा था, और बीच-बीच में प्रिंस की हिदायतों को भी दुहरा लेता था।

अपने घोड़ों को रास्ते में दो बार दम देकर वह ४ अगस्त की शाम को स्मोलेन्स्क जा पहुँचा।

आल्पेटिच मार्ग में लाव-लश्कर की गाड़ियों और सेनाओं को छोड़ता चला आ रहा था। स्मोलेन्स्क के निकट पहुँचते पहुँचते उसके कानों में दूर की फ़ायरिंग की आवाज़ें आने लगीं पर इनका उस पर कुछ प्रभाव न पड़ा। उसके ऊपर सबसे अधिक प्रभाव केवल एक बात का पड़ा। उसने देखा कि जई के एक हरे-भरे खेत में सैनिकों ने डेरा गाड़ रक्खा है और घोड़ों के चारे के लिए

उसे काटा जा रहा है। इस दृश्य का आल्पेटिच पर बड़ा प्रभाव पड़ा, पर अपने काम की सुध में वह उसे शीघ्र ही भूल गया।

४ अगस्त की शाम को स्मोलेन्स्क पहुँचकर आल्पेटिच फेरापोन्टोव नामक एक व्यक्ति की सराय में ठहरा जहाँ वह पिछले तीस वर्षों से ठहरता आ रहा था।

फेरापोन्टोव छपी हुई कमीज़ पर वास्कट चढ़ाये अपनी दूकान के सामने सड़क पर खड़ा हुआ था। आल्पेटिच को देखकर वह उसके पास पहुँचा।

उसने कहा—'आओजी, याकोव आल्पेटिच। लोग-बाग शहर छोड़-छोड़ भाग रहे हैं और तुम उल्टे आ रहे हो।'

आल्पेटिच ने कहा—'क्यों, शहर छोड़-छोड़कर क्यों भाग रहे हैं ?'

'मैं ख़ुद इसी अचम्भे में हूँ। सब गधे हैं। वही फ्रेंच हौए का डर!'

आल्पेटिच ने कहा—'औरतों की चीख़-चिल्लाहट, औरतों की चीख़-चिल्लाहट!'

'बस, तुमने मेरे जी की बात कह दी। मैं तो यही कहता हूँ। और इधर देहाती लोग गाड़ी लादने के तीन-तीन रूबल वसूल कर रहे हैं—बोलो, है अन्धेर या नहीं ?'

याकोव आल्पेटिच ने बात ध्यान से नहीं सुनी। उसे घोड़े के आगे घास डलवाने की आज्ञा दी और अपने लिए चाय लाने को कहा। चाय पीकर वह सोने चला गया।

रात भर सराय के आगे से पल्टनें गुज़रती रहीं। सुबह को आल्पेटिच ने एक जाकट पहनी, जिसे वह केवल शहर आने पर निकालता था, और अपना काम पूरा करना शुरू किया। सूर्य ख़ूब निकला हुआ था। आठ बजते-बजते काफ़ी गर्मी पड़ने लगी। आल्पेटिच ने सोचा—'आहा! खेती काटने का क्या अच्छा मौक़ा है!'

सुबह तड़के से शहर के उस ओर से गोली चलने की बराबर आवाज़ आ रही थी, और आठ बजे से बन्दूक़ की गोलियों के साथ तोपों की गड़गड़ाहट भी सुनाई पड़ने लगी। बहुत से आदमी सड़कों पर से होकर तेज़ी से इधर-उधर जा रहे थे। गव्र्नर के बँगले के आगे बहुत से आदमी एकत्र थे। आल्पेटिच सीधा भीतर चला गया।

उसने कहा —'जनरल-इनचीफ़ बोल्कोन्सकी के पास से हिज़-आनर बैरनऐश्च के नाम।' अफ़सर पत्र लेकर चला गया।

कुछ क्षण बाद गवर्नर ने आल्पेटिच को भीतर बुलाया और उससे जल्दी-जल्दी कहा—

'प्रिंस और प्रिंसेज़ से कहना कि मुझे कुछ पता नहीं था। मैं अब तक ऊँचे अफ़सरों के हुक्म के मुताबिक़ ही काम करता रहा हूँ—पर जब प्रिंस अच्छे नहीं हैं तो मैं सलाह दूँगा कि वे मास्को चले जायँ। मैं ख़ुद वहाँ जा रहा हूँ। उन्हें सूचना देना कि ..।'

पर गवर्नर को अपना वाक्य समाप्त करने का अवसर न मिला। एक धूल में लिपटे हुए, पसीने से तर अफ़सर ने शीघ्रता

से कमरे में आकर फ्रेंच में कुछ कहा। गवर्नर के चेहरे से भीति के लक्षण टपकने लगे।

जब आल्पेटिच कमरे से बाहर निकला तो उसकी ओर लुब्ध, भीत, असहाय दृष्टियाँ उठ गईं। आल्पेटिच फ़ायरिंग की आवाज़ सुनता हुआ सराय की तरफ़ चला। फ़ायरिंग अब और निकट से होने लगी थी, और पहले से अधिक प्रबलता के साथ।

लोग-बाग सड़कों के ऊपर इधर-उधर व्यग्र भाव से चक्कर काट रहे थे।

घरों की चहारदीवारियों में से निकल-निकलकर गाड़ियाँ घर के बर्तनों, कुर्सियों और अल्मारियों से लदी हुई प्रति क्षण सड़कों पर जा रही थीं।

आल्पेटिच स्वाभाविक चाल से ज़रा तेज़ चलकर सराय के अहाते में पहुँचा और गाड़ी जोतने को कहा। सराय के मालिक के कमरे से एक बच्चे के चीख़ने की, एक स्त्री के हताश रोदन की, और फेरापोन्टोव के भर्राये हुए स्वर में गर्जने की आवाज़ें आ रही थीं। रसोई पकाने वाली आल्पेटिच को आते देख कर एक भय-भीत मुर्ग़ी की तरह इधर-उधर दौड़ने लगी।

'मालकिन को मार डाला! मारते-मारते बेदम कर दिया... उन्हें इधर-उधर ऐसी बेदर्दी से खदेड़ रहे हैं!...

आल्पेटिच ने पूछा—'क्यों?'

'वह जाना चाहती थीं। फिर भी हैं तो स्त्री ही! कहने लगीं "मुझे यहाँ से ले चलो", बोलीं, "मुझे अपने नन्हें-नन्हें बच्चों के

साथ यहाँ मरना मंज़ूर नहीं", कहने लगीं "जब सब जा रहे हैं तो मैं यहाँ क्यों रहूँ ?" और इतनी सी बात पर उन्होंने उन्हें इतनी बेदर्दी से मारना पीटना शुरू कर दिया !'

आल्पेटिच ने अपने पार्सल उठाये और उन्हें कोचवान को सौंप कर सरायवाले से हिसाब तय किया। दरवाज़े पर से पहियों, और खुरों, और घण्टियों की आवाज़ें आईं और गाड़ी दरवाज़े पर निकलकर खड़ी हो गई।

तीसरे पहर का समय बीत चुका था। सड़क का एक भाग साये में था और दूसरा भाग सूर्य्य के प्रखर प्रकाश से आलोकित हो रहा था। आल्पेटिच ने खिड़की में से झाँककर देखा और दरवाज़े की तरफ़ क़दम बढ़ाया। अकस्मात् उसने दूर से आती हुई एक तीव्र सनसनाहट की आवाज़ सुनी जिसके क्षण भर बाद ही तोप का गर्जन हुआ और सारी खिड़कियाँ खड़खड़ा उठीं।

वह सराय से निकलकर सड़क पर पहुँचा—दो आदमी दौड़ते हुए पुल की तरफ़ बढ़े। चारों ओर से उसी प्रकार की सनसनाहट, और उसी प्रकार का तोप-गर्जन सुनाई पड़ा और शहर में गोले आ-आकर गिरने लगे। इस शहर को नैपोलियन की आज्ञा से एक सौ तीस तोपों से तोप-दम किया जा रहा था। शुरू-शुरू में लोगों की समझ में ही न आ सका कि तोप-दम करना क्या होता है।

अब तक फ़ैरापोन्टोव की स्त्री बराबर रोदन कर रही थी; पर अब वह बच्चे को गोदी में उठाकर दरवाज़े के पास आ गई और चुपचाप लोगों की ओर देखती हुई उनकी बातचीत सुनती रही।

रसोई पकानेवाली, और फेरापोन्टोव का एक मातहत भी दरवाजे पर आ गये। सब सजीव कौतूहल के साथ अपने सिर के ऊपर से जाते हुए गोलों को देखना चाहते थे।

अब की बार फिर सनसनाहट की आवाज़ सुनाई दी—पर पहले से बहुत निकट—और एक गोला आदमियों के सिरों से लगता हुआ बीच सड़क में फट पड़ा और सड़क धुएँ से भर गई।

सरायवाला रसोई पकानेवाली की तरफ़ झपटता हुआ चिल्ला उठा—'हरामज़ादे कहीं के! यह कर क्या रहे हैं!'

इसी समय चारों ओर से स्त्रियों के रोदन के स्वर सुनाई पड़ने लगे। इन सब में सब से अधिक तीव्र रोदन रसोई पकानेवाली का था।

'ओह-ह-ह! मेरे नन्हें बच्चे, मेरे नन्हें बच्चे! मुझे इस तरह मत मरने दो! मेरे गोरे बच्चे!'...

पाँच मिनट के भीतर-भीतर सड़क जन-शून्य हो गई। रसोई पकानेवाली की पिंडुली बम के टुकड़े से टूट गई थी, और लोग-बाग उसे उठाकर सराय के भीतर ले गये थे। आल्पेटिच, उसका कोचवान, फेरापोन्टोव की स्त्री और बच्चे, और गृहदासी शराब के कमरे में बैठे हुए सुन रहे थे। तोप-गर्जन, गोलों की सनसनाहट, और रसोई पकानेवाली का कातर रोदन—क्षण भर के लिए भी नहीं रुका।

अँधेरा होते-होते गोलाबारी धीमी होनी शुरू हो गई। आल्पेटिच कमरे से निकलकर द्वार पहुँचा। जो संध्याकाश

इतना स्वच्छ था अब धुएँ से भरा हुआ दिखाई दे रहा था, और उसको भेद कर पूर्ण चंद्रमा की क्षीण रेखा दिखाई पड़ रही थी। अब तोपों की गड़गड़ाहट समाप्त होने पर सारे नगर में नीरवता का राज्य दिखाई देने लगा। बीच-बीच में यह नीरवता, पैरों की आहट, दूरस्थ रोदन, और चारों ओर फैलते हुए अग्निकाण्ड से भंग हो जाती थी।

आल्पेटिच बाहर निकला तो उसने दस-बारह सिपाहियों को फेरापोन्टोव की खुली दुकान में से आटा ले-लेकर अपने थैले भरते देखा। इसी समय फेरापोन्टोव भी वापस आता हुआ दुकान में घुसा। सिपाहियों को देखकर वह चीख़ मारनेवाला था, पर अकस्मात् वह रुक गया और अपने बालों को मुट्ठी में भरते हुए एक साथ ही सुबकियाँ लेने और हँसने लगा।

'शाबाश जवानो! जो कुछ चाहो लूट लो! उन हरामज़ादों के हाथ में कुछ न पड़ने पाये!' उसने चिल्लाकर कहा, और कुछ बोरे दूकान में से उठाकर सड़क पर फेंक दिये।

कुछ सिपाही भयभीत होकर भाग गये, बाक़ी उसी प्रकार अपने थैले भरते रहे। आल्पेटिच को देखकर फेरापोन्टोव ने चिल्लाकर कहा—'बस, रूस बर्बाद हो गया! आल्पेटिच, मैं ख़ुद अपने हाथों से यहाँ आग लगाऊँगा। बस, सब ख़ात्मा हो गया!' और इतना कहकर फेरापोन्टोव अहाते के भीतर भागा।

आल्पेटिच एक बड़ी सी भीड़ के पास पहुँचा जो एक बड़े से खलिहान के सामने खड़ी थी। खलिहान में ख़ूब ज़ोर की आग

लगी हुई थी। दीवारों में आग लग चुकी थी और एक दीवार गिर भी चुकी थी; छत गिरनेवाली थी और बल्लियों में आग जा पहुँची थी। भीड़ स्पष्टतया ही छत गिरने की बाट जोह रही थी।

अकस्मात् वृद्ध पुरुष को एक सुपरिचित कण्ठ ने पुकारा—'आल्पेटिच !'

आल्पेटिच ने अपने छोटे प्रिंस की आवाज़ तुरंत पहचान ली। उसने कहा—'हज़ूर ! योर ऐक्सीलेंसी !'

प्रिंस एण्ड्रयू घुड़सवारों का चोग़ा पहने, एक काले घोड़े पर सवार था और भीड़ के पीछे से आल्पेटिच की ओर देख रहा था।

उसने पूछा—'तुम यहाँ कैसे आये ?'

'योर—योर ऐक्सोलेंसी', उसने हकलाकर कहा, और फिर वह सुबकियाँ लेने लगा—'क्या हम सचमुच कहीं के न रहे ? पिता !...'

प्रिंस एण्ड्रयू ने फिर पूछा—'तुम यहाँ कैसे आये ?'

इसी अवसर पर आग की रश्मियाँ प्रज्वलित हो उठीं और उसमें आल्पेटिच के छोटे स्वामी का पीला सुता हुआ चेहरा साफ़ दिखाई देने लगा।

आल्पेटिच ने फिर पूछा—'योर ऐक्सीलेंसी, क्या हम सचमुच कहीं के न रहे ?'

प्रिंस एण्ड्रयू ने बिना कुछ उत्तर दिये अपनी जेब से नोटबुक निकाली और घुटना उठाकर उस पर नोटबुक रखकर पेंसिल से अपनी बहिन को लिखा—

'स्मोलेन्स्क शत्रु के सिपुर्द किया जा रहा है। एक हफ़्ते के अन्दर-अन्दर बाल्डहिल्स पर शत्रु का अधिकार हो जायगा। फ़ौरन मास्को को रवाना हो जाओ। जब रवाना होओ तो मुझे ख़बर कर देना।'

जब वह यह लिख चुका तो आल्पेटिच को समझाने लगा कि प्रिंस, प्रिंसेज़, उसके पुत्र और उसके शिक्षक के जाने का प्रबंध कैसे करना होगा, और इसकी ख़बर उसे कैसे और कहाँ पहुँचानी होगी।

'उनसे कह देना कि मैं उनके पत्र की बाट १० तारीख़ तक देखूँगा, और अगर दस तारीख़ तक मुझे उनका पत्र न मिला कि वे सब चले गये, तो मुझे सब कुछ छोड़छाड़कर बाल्डहिल्स ख़ुद जाना पड़ेगा।'

अग्नि की ज्वाला में कोई चीज़ फटी। आग क्षण भर के लिए कम भयंकर हो गई, छत के नीचे से धुओं के बादल के बादल निकल-निकलकर फैलने लगे। इसके बाद फिर कोई चीज़ ज़ोर से चटख़ी, और कोई भारी सी चीज़ गिरी।

'अरेरेरेरेरे!' जनसमुदाय ने खलिहान की गिरती हुई छत की आवाज़ की प्रतिध्वनि करते हुए कहा। अन्न में से रोटियों जैसी सुगंधि निकलकर चारों ओर फैल रही थी। अग्नि की रश्मियाँ और ऊँची उठीं, और दर्शकों के उल्लसित, सजीव और उतरे हुए चेहरे आलोकित हो उठे।

जो आदमी सैनिकों को जलती हुई बल्ली खींच ले जाने में सहायता दे रहा था उसने अब अपने हाथ ऊँचे किये और चिल्लाकर कहा—

'बहुत अच्छे ! .खूब सुलग रही है ! बहुत अच्छे !' और यह वही फेरापोन्टोव था जो अब अपने खलिहान को जलते देखकर उल्लसित हो रहा था।

कुछ आवाज़ों ने कहा—'और यही इसका मालिक है !'

प्रिंस एण्ड्रयू ने आल्पेटिच से कहना जारी रक्खा—'हाँ तो, ख़याल रखना, जो कुछ मैंने कहा है, वह सब कह देना।' और इतना कहकर वह घोड़े को ऐंड़ लगाकर वहाँ से चल दिया।

———

बाइसवाँ परिच्छेद

प्रिंसेज़ मेरी अभी मास्को नहीं गई थी, और न अभी ख़तरे से बाहर ही थी।

आल्पेटिच के स्मोलेन्स्क से वापस आने पर वृद्ध प्रिंस इस प्रकार होश में आ गये मानों किसी स्वप्न से जाग पड़े हों। उन्होंने गाँवों से सैनिक एकत्र किये, उन्हें हथियार दिये और कमान्डर-इन-चीफ़ को एक पत्र लिखकर सूचित किया कि उन्होंने बाल्डहिल्स में रहकर उसकी आख़िरी दम तक रक्षा करने का निश्चय किया है। उन्होंने यह भी लिखा कि यह कमाण्डर-इन-चीफ़ के बुद्धि-विवेक पर निर्भर है कि वह चाहें तो बाल्डहिल्स की रक्षा का भार अपने ऊपर लें, या तटस्थ रहकर रूस के एक सबसे पुराने जनरल को शत्रु के हाथों पकड़े जाने दें या मरने दें। उन्होंने घर में सब से कह दिया कि वह बाल्डहिल्स ही में रहेंगे।

वह अपने आप तो वहीं रहे, पर साथ ही उन्होंने प्रिंसेज़ मेरी डेसाले, और नन्हें प्रिंस के मास्को भेजे जाने की आज्ञा दे दी। प्रिंसेज़ मेरी अपने पिता के इस प्रकार अनेक दिनों तक निर्जीव रहने के बाद यकायक सजीव और अथक कार्य्यशील हो उठने पर सशंकित हो उठी, और उसे उन्हें अकेले छोड़ जाने का साहस न हुआ। उसने अपने जीवन में पहली बार उनकी आज्ञा का उल्लं-

घन किया। उसने जाने से इन्कार कर दिया और उसके पिता के सारे कोप का तूफ़ान उस पर फट पड़ा। उन्होंने यह कहते हुए कि चाहे वह रहे चाहे जाय, उन्हें उससे कोई सरोकार नहीं, उसे अपनी अध्ययनशाला से बाहर खदेड़ दिया। उन्होंने कहा कि वह उनके नज़दीक मर गई, और घोषित किया कि वह उन्हें अपनी सूरत दिखाने का दुःसाहस न करे। पर इस बात को सोचकर प्रिंसेज़ मेरी को सांत्वना मिली—उसकी आशंका के विरुद्ध—कि उन्होंने उसके बलपूर्वक ले जाये जाने की आज्ञा नहीं दी, बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा कि वह उन्हें अपनी सूरत न दिखाये। और उनके इस आचरण को प्रिंसेज़ मेरी ने इस बात का प्रमाण समझा कि वह उसके न जाने और उनके पास रहने पर मन ही मन ख़ुश हैं।

नन्हें निकोलस के जाने के दूसरे दिन सुबह को वृद्ध प्रिंस ने पूरी वर्दी पहनी और कमान्डर-इन-चीफ़ से मिलने को जाने की तैयारी की। उनकी गाड़ी दरवाज़े पर पहले से ही लगी हुई थी। प्रिंसेज़ मेरी ने उन्हें वर्दी पहने, और निरे तमग़े लगाये घर से निकलकर बाग़ में अपने सशस्त्र देहातियों का निरीक्षण करने जाते देखा। वह खिड़की के पास बैठी बैठी बाग़ में से आती हुई आवाज़ें सुनती रही। अकस्मात् कुछ आदमी भय-विकृत मुद्रा के साथ भवन के मार्ग पर दौड़ते हुए आये।

प्रिंसेज़ मेरी भागकर पोर्च में पहुँची, 'बाग़' के फुटपाथ की ओर गई, और फिर भवन के मार्ग के सामने पहुँची। नौकरों

और सैनिकों का एक बड़ा सा गिरोह उसकी तरफ़ को बढ़ रहा था, और उन सब के बीच में कुछ लोग वर्दी और तमग़े पहने एक छोटे से वृद्ध पुरुष को बग़लों में हाथ डालकर खींचते हुए ला रहे थे। वह दौड़कर उनके पास पहुँची। वह केवल इतना ही देख सकी कि उनकी पहली कठोर और निश्चयात्मक मुद्रा अब कातर और आत्मसमर्पण की मुद्रा में परिणत हो गई है। अपनी लड़की को देखकर उन्होंने अपने निर्जीव ओंठ चलाये और भरी हुई आवाज़ में कराहा। यह समझना असम्भव था कि वह क्या कह रहे थे। उन्हें उठाकर अध्ययन-शाला में ले जाया गया और वहाँ उन्हें कोच पर लिटा दिया गया।

उसी रात को डाक्टर बुलाया गया और उसने उनकी फ़स्द खोली और कहा कि दाहिनी तरफ़ फ़ालिज गिरा है।

वाल्डहिल्स में रहना अधिकाधिक संकटापन्न होता जा रहा था। दूसरे दिन प्रिंस को बोगूचेरोवो ले जाया गया। डाक्टर उनके साथ गया।

नन्हा प्रिंस और उसका शिक्षक मास्को चले भी गये थे।

वृद्ध प्रिंस बोगूचेरोवो के प्रिंस एण्ड्र्यू के नवीन भवन में तीन सप्ताह तक पक्षाघात से पीड़ित हुए एक जैसी दशा में पड़े रहे। उन्हें होश-हवास बिल्कुल न था, और वह एक विकृत शव की तरह बेसुध पड़े रहते थे। वह बराबर बड़बड़ाते रहते और उनकी भवें और ओंठ इमठती रहतीं। यह बताना असम्भव था कि वह अपने चारों ओर के व्यापार को समझते थे या नहीं। एक बात निश्चित

थी—वह व्यथित हो रहे थे, और अपने हृदय की बात प्रकट करना चाहते थे। पर वह क्या बात थी जिसे वह कहना चाहते थे, यह कोई न बता सकता था। क्या वह एक रोगी और अर्धविक्षिप्त पुरुष की बहकमात्र थी, क्या उसका संबंध देश-व्यापी स्थिति से था, या कोई पारिवारिक बात थी?

डाक्टर ने कहा कि उनकी इस बेचैनी का और कोई अर्थ नहीं है। यह सब केवल शारीरिक कष्ट के कारण है, पर प्रिंसेज़ मेरी की धारणा थी कि वह उससे कुछ कहना चाहते हैं। और इस बात से उसकी यह धारणा और भी पुष्ट हो गई कि जब कभी वह उनके सामने आती, उनकी बेचैनी बढ़ जाती।

यह साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें भौतिक और मानसिक, दोनों प्रकार का कष्ट हो रहा था। उनके आरोग्य-लाभ की कोई आशा नहीं थी। उनका यात्रा करना भी सम्भव न था। अगर कहीं उनका रास्ते में ही प्राणान्त हो गया तो क्या होगा? कभी-कभी प्रिंसेज़ मेरी सोचती—'यदि उनका अन्त जल्दी हो जाय तो क्या अच्छा न होगा?' वह रात-दिन, बिना आँख बन्द किये, उनकी चौकसी करती रहती, और—कैसी भयानक बात थी!—अक्सर आरोग्यता के लक्षण पाने की आशा से चौकसी न करती, बल्कि उस अन्त के आगमन के लक्षण देख पाने की इच्छा से। यद्यपि स्वयं उसे यह बात स्वीकार करने में बड़ा संकोच होता, पर वस्तु-स्थिति यही थी। एक बात उसे इससे भी अधिक भयंकर प्रतीत होती। जब से उसके पिता बीमार हुए थे और शायद उससे

पहले से भी, जब से वह कोई नई घटना घटित होने की आशा में अपने पिता के पास रह गई थी उस समय से, उसके हृदय में उसकी भूली हुई या सुषुप्त व्यक्तिगत आशाओं-आकांक्षाओं ने फिर से ज़ोर पकड़ लिया था। जो विचार उसके दिमाग़ में वर्षों से न घुस सके थे—अपने पिता के आतंक से स्वतंत्र एक पारिवारिक आनन्द-पूर्ण जीवन के विचार—अब वे शैतान के प्रलोभनों की तरह एक-एक करके उसके दिमाग़ में फिर आने लगे।

बोगूचेरोवो में अधिक दिन रहना अब ख़तरनाक होता जाता था। फ़्रेंचों के निकटतर आने की ख़बरें चारों ओर से आ रही थीं, और बोगूचेरोवो से दस मील की दूरी पर एक गाँव के एक घर को फ़्रेंचों ने लूट लिया था।

डाक्टर की हठ थी कि प्रिंस को और आगे ले जाया जाय; ज़िमींदारों के प्रांतीय मार्शल ने प्रिंसेज़ मेरी को शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से चल देने को राज़ी करने के लिए एक अफ़सर भेजा, और देहाती पुलिस के प्रधान ने भी स्वयं बोगूचेरोवो आकर यही बात कही, और कहा कि फ़्रेंच सिर्फ़ बीस मील की दूरी पर रह गये हैं, और गाँवों में फ़्रेंच घोषणाएँ वितरित की जा रही हैं। यदि प्रिंसेज़ और उसके पिता उस स्थान से १५ तारीख़ तक न चले गये तो उसके फल का उत्तरदायी वह न होगा।

अतः प्रिंसेज़ ने १५ तारीख़ को रवाना होने का निश्चय कर लिया। यात्रा की तैयारियाँ करने की चिंता और आज्ञाएँ देते रहने की संलग्नता से वह दिन भर घिरी रही। उसने १४ तारीख़

की रात सदैव की तरह बिना कपड़े उतारे, प्रिंस के कमरे के बग़ल-वाले कमरे में जाग जागकर बिता दी। उसने कई बार जाग जागकर उनकी कराहट और बड़बड़ाहट और उन्हें करवटें देते हुए तीखन और डाक्टर के पैरों की आहट सुनी। वह कई बार उठ उठकर दरवाज़े पर गई और कान लगाकर सुनने लगी। उसको मालूम हुआ कि वह और दिनों की अपेक्षा आज अधिक कराह रहे हैं और उन्हें थोड़ी थोड़ी देर बाद करवटें दी जा रही हैं। उसकी आँख न लग सकी, वह बार बार दरवाज़े पर जाती और कान लगाकर सुनती। उसकी इच्छा होती कि अन्दर जाये, पर जाने का साहस न कर पाती। यद्यपि प्रिंस बोलने में असमर्थ थे, पर प्रिंसेज़ इस बात को अच्छी तरह देख रही थी कि उन्हें अपने विषय में दूसरों का उद्विग्न होना कितना बुरा लगता था। वह जानती थी कि वह रात को अनुपयुक्त समय पर उसे वहाँ देखकर चिढ़ जायँगे।

वह देर से जागी—जागने के बाद मनुष्य में जो अविकार हार्दिक प्रेरणा जागृत हो उठती है, उसने उसे साफ़ बता दिया कि अपने पिता की बीमारी भर में उसके हृदय में किस चीज़ ने प्रमुखता पकड़ी थी। जागकर उसने दूसरे कमरे का हालचाल जानने के लिए कान लगाये और उनकी कराहट सुनकर लम्बी साँस लेकर कहा कि सब पूर्ववत् है।

'पर इसके सिवाय और हो ही क्या सकता था? मैं क्या चाहती थी? मैं उनकी मृत्यु चाहती हूँ!' उसने आत्म-भर्त्सना के साथ कहा।

उसने स्नान करके कपड़े पहने और प्रार्थना करने के बाद वह पोर्च में पहुँची। उसके आगे बिना घोड़ों की गाड़ियाँ खड़ी थीं और उनमें सामान लादा जा रहा था।

उस दिन ख़ूब ताज़ी गर्मी पड़ रही थी। प्रिंसेज़ मेरी पोर्च में खड़ी खड़ी, अपनी मानसिक क्षुद्रता पर भयभीत हुई, पिता के पास जाने से पहले वह अपने विचारों पर अधिकार कर पाने की चेष्टा करने लगी।

डाक्टर नीचे उतरा और उसके पास पहुँचा।

उसने कहा—'आज तबीयत अच्छी है। मैं आपकी तलाश कर रहा था। उनकी बात तो कुछ समझ में आती नहीं, पर वैसे वह होश-हवास में हैं। चलिए, आपको याद कर रहे हैं।'

यह बात सुनकर प्रिंसेज़ मेरी का हृदय इतनी ज़ोर से धड़कने लगा कि उसका चेहरा पीला ज़र्द पड़ गया। अपने आपको गिरने से रोकने के लिए वह दीवार का सहारा लेकर खड़ी हो गई। इस समय—जब कि उसका हृदय उन भयंकर, क्षुद्रतापूर्ण प्रलोभनों से भरा हुआ है—उनके पास जाने में, उनसे बात करने में, और उनकी दृष्टि अपनी ओर लगे रहने की अनुभूति करने में उसे हर्ष और भय की सम्मिलित वेदना की अनुभूति हुई।

डाक्टर ने कहा—'आइए।'

प्रिंसेज़ मेरी अपने पिता के कमरे में पहुँची और उनके पलँग की ओर बढ़ी। वह पीठ के बल तकियों के सहारे ऊँचे पड़े हुए थे, और इमठी हुई नीली नसोंवाले उनके छोटे-छोटे हाथ रज़ाई

पर फैले हुए थे। उनकी बाईं आँख ठीक अपने सामने ताक रही थी, दाहिनी आँख निर्जीव थी, भवें और ओंठ स्थिर थे। वह पहले की अपेक्षा कहीं कृश, कहीं छोटे, और कहीं दयनीय दिखाई देते थे। उनका चेहरा उतर गया या सुंत गया सा मालूम होता था। अवयव पहले से छोटे हो गये दिखाई देते थे। प्रिंसेज़ मेरी ने उनके पास जाकर उनका हाथ चूमा। उन्होंने उसका हाथ दबाया जिससे प्रिंसेज़ मेरी ने जान लिया कि वह उसके आगमन की प्रतीक्षा बहुत देर से कर रहे थे। उन्होंने उसका हाथ झटका और उनकी भवें और ओंठ रोष के साथ हिलने लगे।

उसने उनकी ओर भीति के साथ देखा और यह अनुमान करने का प्रयत्न किया कि वह क्या कहना चाहते थे। जब वह ऐसे स्थान पर बैठ गई जहाँ से उनकी बाईं आँख उसे अच्छी तरह देख सकती थी, तो वह कुछ क्षणों के लिए शांत हो गये और उसके चेहरे की ओर अपनी दृष्टि जमाये रहे। इसके बाद उनके ओंठ हिले और गले से कुछ आवाज़ निकली और वह उसकी ओर भीति और अनुनय भरी दृष्टि से देखते हुए बोलने लगे। यह स्पष्ट था कि उन्हें आशंका हो रही थी कि कहीं वह उनकी बात न समझ सके।

प्रिंसेज़ मेरी अपनी सारी शक्ति संचित करके उनकी ओर देखती रही। जिस अभिनयपूर्ण ढंग से वह अपनी ज़ुबान हिला रहे थे उसे देखकर प्रिंसेज़ मेरी ने अपने नेत्र नीचे कर लिये और अपने गले में उठते हुए आँसुओं को बड़ी कठिनता से रोका।

वृद्ध प्रिंस कुछ बोले। उसी वाक्य को उन्होंने कई बार दुहराया। प्रिंसेज़ मेरी उसका अर्थ न समझ सकी, पर उसने अनुमान करने की चेष्टा की कि वह क्या कह रहे हैं, और कई बार उनके शब्दों को प्रश्नात्मक भाव से दुहराया।

उन्होंने कई बार कहा—'मे मे मे.. सि...च च च...।'

इन शब्दों का समझना असम्भव था। डाक्टर ने समझा कि वह उनका आशय समझ सका है। 'मेरी, क्या तुझे डर लग रहा है?' प्रिंस ने नकारोक्ति-सूचक सिर हिलाया और फिर वही शब्द दुहराये।

प्रिंसेज़ मेरी ने पूछा—'मेरा सिर, मेरा सिर चकरा रहा है?'

प्रिंस ने इसकी पुष्टि में एक धीमी आवाज़ की, उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने वक्षःस्थल के विभिन्न स्थलों पर दबाना शुरू किया, मानों वह उसके लिए एक उपयुक्त स्थान खोज रहे हों।

जब उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी बात समझी जा सकेगी तो उन्होंने पहले से कहीं अधिक स्पष्टता के साथ कहना आरम्भ किया—'चिंता...तेरी चिंता...चिंता...।'

प्रिंसेज़ मेरी ने अपनी सुबकियाँ और आँसू छिपाने की चेष्टा करते हुए अपना सिर उनके हाथ से दबाया।

उन्होंने अपना हाथ उसके सिर पर फेरा।

उन्होंने किसी प्रकार मुँह से निकाला—'मैं तुझे रात भर बुलाता रहा।'

प्रिंसेज़ मेरी ने आँसुओं में से कहा—'हाय, जो मुझे पता लग जाता...। मुझे भय था कि...।'

उन्होंने उसका हाथ दबाया।

'तू रात सोई नहीं ?'

प्रिंसेज़ मेरी ने सिर हिलाकर कहा—'न, मैं नहीं सोई।'

प्रिंसेज़ मेरी ने अचेत भाव से अपने पिता का अनुकरण करते हुए अपनी बात यथासम्भव संकेतों के द्वारा समझाने की चेष्टा की। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी ज़ुबान भी इमठी जा रही है।

वृद्ध प्रिंस ने कहा—'बेटी...दुलारी...आँखों की पुतली...।' प्रिंसेज़ मेरी ठीक-ठीक न समझ सकी कि वह क्या कह रहे हैं, पर उनकी दृष्टि से यह स्पष्ट था कि उन्होंने एक ऐसे कोमल स्नेह-स्निग्ध शब्द का उच्चारण किया है जिसे उन्होंने इससे पहले आज तक मुँह से नहीं निकाला था। 'तू अन्दर क्यों नहीं आई ?'

प्रिंसेज़ मेरी सोचने लगी—'और मैं इनकी मृत्यु की कामना कर रही थी !'

वृद्ध प्रिंस कुछ देर तक चुप रहे।

'धन्यवाद...मेरी लाड़ो बेटी...धन्यवाद···क्षमा...सब बातों की क्षमा...धन्यवाद...क्षमा ..धन्यवाद !' और उनकी आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे। अकस्मात् वह कह उठे—'एण्ड्र्यू को बुला दो !' और उनके चेहरे पर संशय की शिशु-सुलभ कातर मुद्रा अंकित हो गई।

ऐसा दिखाई पड़ता था कि वह अपनी इस इच्छा की निरर्थकता स्वयं समझते हैं। कम से कम प्रिंसेज़ मेरी को ऐसा ही प्रतीत हुआ।

उसने कहा—'मुझे उनका पत्र मिला है।'

उन्होंने उसकी ओर अति विस्मय के साथ देखा।

'तो अब वह कहाँ होगा ?'

'पिताजी, स्मोलेन्स्क में सेना के साथ।'

उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये और बहुत ही देर तक वह कुछ न बोले। फिर—मानो अपने संशयों का उत्तर देने के लिए, और इस बात की पुष्टि के लिए कि अब उनकी समझ में सब बातें अच्छी तरह आ रही हैं—उन्होंने सिर हिलाया और नेत्र खोले।

उन्होंने स्पष्ट और मृदुल स्वर में कहा—'हाँ रूस तबाह हो गया। उन लोगों ने इसे बर्बाद कर दिया।'

और वह सुबकियाँ लेने लगे और उनके नेत्रों से फिर आँसू गिरने लगे। प्रिंसेज़ अब और अधिक संयत न रह सकी और उनके चेहरे की ओर देख देखकर बिसूर बिसूरकर रोने लगी।

इसके बाद उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये। उनकी सुबकियाँ रुक गईं, उन्होंने अपने नेत्रों की ओर संकेत किया, और तीखन ने अभिप्राय समझकर उनके आँसू पोंछ डाले।

इसके बाद उन्होंने आँखें खोलीं और कुछ ऐसी बात कही जो किसी की समझ में न आ सकी। अन्त में तीखन ने बात समझ ली और दुहराई। प्रिंसेज़ मेरी ने सोचा था कि बात कुछ उसी

मनोवृत्ति से सम्बन्ध रखनेवाली होगी जिसमें वह अभी बात कर रहे थे। उसने सोचा कि वह रूस या प्रिंस एण्ड्रयू, या अपनी मृत्यु, या उसके विषय में कुछ कह रहे होंगे। फलतः उसकी समझ में उनके शब्द ठीक तौर से न आ सके।

उन्होंने कहा था—'अपने सफ़ेद कपड़े पहन लो, मुझे वह अच्छे लगते हैं।'

जब प्रिंसेज़ मेरी की समझ में यह बात आई तो वह और भी ज़ोर से सुबकियाँ लेने लगी। डाक्टर उसे अपनी बाँह का सहारा देकर बरामदे में ले गया और सान्त्वना देते हुए उसे यात्रा की तैयारी करने को राज़ी करने लगा। जब वह कमरे से चली गई तो प्रिंस फिर अपने पुत्र के युद्ध के और सम्राट् के विषय में कहने लगे, उनकी भवें इमठ गईं और उनकी भर्राई हुई आवाज़ ऊँची हो गई; और फिर उनपर एक दूसरा—और अन्तिम—दौरा पड़ा।

प्रिंसेज़ मेरी बरामदे में खड़ी रही। दिन स्वच्छ था—ख़ूब धूप निकल रही थी और गर्मी पड़ रही थी। वह अपने पिता के प्रति अपने प्रबल प्रेम के—ऐसे प्रेम के, जैसा उसकी समझ में इसके पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ था—अतिरिक्त और कुछ अनुभूति न कर सकी, कुछ न समझ सकी, और कुछ न सोच सकी। वह सुबकियाँ लेती हुई दौड़कर बाग़ में पहुँची और प्रिंस एण्ड्रयू के लगाये हुए छोटे छोटे नीबू के वृक्षों के पास झील तक पहुँचकर रुक गई।

प्रिंसेज़ मेरी उद्यान में जल्दी जल्दी क़दम रखकर टहलती हुई और अश्रुओं के प्रबल उद्रेक से प्रकम्पित अपने वक्षःस्थल को दोनों हाथों से मसोसती हुई ओठों में कहने लगी—'हाँ... मैं ... मैं मैं उनकी मृत्यु की कामना कर रही थी! हाँ, मैं यह सब कुछ जल्दी समाप्त हो जाने की अभिलाषा कर रही थी... मैं निश्चिन्त होना चाहती थी... हाय, अब मैं कैसे करूँगी? ऐसी निश्चिन्तता किस काम की जब वह ही न रहे?'

जब उसने सारे बाग़ का चक्कर काट लिया तो वह वृद्ध प्रिंस के द्वार पर पहुँची। डाक्टर भीतर से उत्तेजित मुद्रा के साथ आया और बोला कि उसे भीतर न जाना चाहिए।

'प्रिंसेज़, जाओ जाओ!'

वह बाग़ में पहुँचकर एक पहाड़ी के नीचे झील के पास हरी हरी घास में बैठ गई जहाँ उसे कोई न देख सकता था। वह स्वयं न जान सकी कि वह वहाँ कितनी देर तक बैठी रही। इतने ही में उसे अपनी ओर आती हुई एक स्त्री की आहट सुनाई पड़ी। प्रिंसेज़ मेरी उठी और उसे दासी डुन्याशा दिखाई पड़ी जो स्पष्टतया ही उसी की खोज में निकली थी। डुन्याशा अपनी मालकिन को देखकर अकस्मात् भयभीत होकर खड़ी हो गई।

उसने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा—प्रिंसेज़, जल्दी चलो! प्रिंस...।' पर वह बात पूरी न कर सकी।

प्रिंसेज़ मेरी ने डुन्याशा को बात पूरी करने का अवसर न देकर और उसकी ओर से निगाह चुराये रखने की चेष्टा करते

हुए शीघ्रता से कहा -'अभी लो, अभी लो, तुरन्त, मैं अभी आई।' और वह भवन की ओर दौड़ पड़ी।

डाक्टर ने उसे रोकने की चेष्टा की। प्रिंसेज़ मेरी उसे धक्का देकर सीधी अपने पिता के द्वार पर पहुँची। उसने सोचा—'ये लोग डरी हुई सूरतें बना बनाकर मुझे रोकने की चेष्टा क्यों करते हैं? मुझे किसी से कोई सरोकार नहीं है! और इन सबका यहाँ काम ही क्या है?' और उसने द्वार खोला। अब से कुछ देर पहले कमरा सूर्य के प्रकाश से जगमगा रहा था, अब उसमें अँधेरा देखकर वह भयातुर हो उठी। उस कमरे में उसकी धाय और और स्त्रियाँ थीं। उसे देखकर सब पलँग के पास से हट गईं। वह पहले ही की तरह पलँग पर पड़े थे। पर उनके चेहरे की कठोर मुद्रा को देखकर मेरी दरवाजे ही पर ठिठक गई।

'नहीं, अभी नहीं मरे हैं—यह हो ही नहीं सकता!' उसने कहा, और वह पलँग के पास पहुँची और अपनी अधिकाधिक बढ़ती हुई भीति को दबाकर उसने उनके गालों से अपने ओंठ लगाये। पर तुरन्त ही वह पीछे हट गई। अब तक उसके हृदय में उनके प्रति जितनी कोमल स्नेह-पूरित वृत्तियाँ जग रही थीं, वे अकस्मात् ग़ायब हो गईं और उनका स्थान इस दृश्य की प्रबल भीति ने ले लिया। 'नहीं, वह अब नहीं रहे! अब नहीं रहे; उनका स्थान एक भयङ्कर, भीषण और गर्हित रहस्यपूर्ण वस्तु ने ले लिया!' और अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा-कर वह डाक्टर के हाथों में गिर पड़ी।

तीखन और डाक्टर की उपस्थिति में स्त्रियों ने उस वस्तु को स्नान कराया जो किसी समय प्रिंस थी, उसका सिर रूमाल से बाँधा जिससे उनका चेहरा अकड़ न जाय, और एक दूसरे रूमाल से उनकी दोनों टाँगें बाँधीं जो अकड़नी आरम्भ भी हो गई थीं। इसके बाद उस सुँते हुए नन्हे से शरीर को उन्होंने पूरी वर्दी पहनाई और उसे मेज़ पर रख दिया। ईश्वर ही जाने यह सारा व्यापार कब और कैसे हो गया, यह सब मानों अपनी ही इच्छा से सम्पन्न हो गया। रात के समय शव के चारों ओर क़न्दील जल रहे थे, एक बड़ा सा पाल कफ़न पर ढक दिया गया था, फ़र्श पर सुगन्धि छिड़क दी गई थी, एक छपी हुई प्राथना उस निर्जीव सिर के नीचे रख दी गई थी, और एक कोने में बैठा हुआ मन्त्रोच्चारक प्रार्थनाएँ पढ़ रहा था।

जिस प्रकार किसी मरे हुए घोड़े के चारों ओर अन्य घोड़े झिझकते हुए और हिनहिनाते हुए आ खड़े होते हैं, उसी प्रकार सारे घरवाले और ग़ैर लोग ड्रायङ्ग रूम में कफ़न के चारों ओर जमा हो गये; मार्शल, गाँव का मुखिया, ग्रामीण स्त्रियाँ—और सब एक ओर लगी हुई भीत दृष्टि के साथ क्रास का चिह्न बनाकर झुके और वृद्ध प्रिंस के निर्जीव कठोर हाथ का चुम्बन करने लगे।

——

तेईसवाँ परिच्छेद

बोगूचेरोवो में प्रिंस एण्ड्र्यू के आकर रहने तक उसके स्वामी हमेशा से वहाँ से अनुपस्थित रहे। वहाँ के निवासियों का चरित्र बाल्डहिल्स के देहातियों के चरित्र से बिल्कुल विभिन्न रहा। ये लोग बातचीत, पहनावे-उढ़ावे, और मनोवृत्ति सब में अलग थे। ये लोग जब कभी खेती कराने, या तालाब और खाइयाँ खोदने में सहायता देने के लिए बाल्डहिल्स जाते तो वृद्ध प्रिंस उनके अध्य-वसाय की जी खोलकर प्रशंसा करते, पर साथ ही उनके जंगलीपन पर उनसे घृणा भी करते।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने अन्तिम बार वहाँ रहकर जो अस्पताल और स्कूल खुलवाये थे, और लगान में जो कमी कर दी थी उससे उनकी मनोवृत्ति में किसी प्रकार का अनुकूल परिवर्तन हुआ हो, सो बात न थी। उल्टे उनके आचरण की वे प्रमुख विशेषताएँ और दृढ़ हो गईं जिन्हें वृद्ध प्रिंस जंगलीपन के नाम से अभिहित करते थे।

उनमें कोई न कोई किंवदंती सदैव प्रचलित रहती। एक बार यह किंवदन्ती फैली कि वे सब कज्ज़ाक सेना में भर्ती कर लिये जायँगे; दूसरी बार यह कि एक नया धर्म स्थापित किया जायगा जिसमें वे सब मिला लिये जायँगे। नैपोलियन की चढ़ाई को उन्होंने नैपोलियन के धर्म-विरोधी होने, संसार का अन्त आने और पूर्ण स्वतन्त्रता मिलने से सम्बद्ध कर लिया था।

अब से बीस वर्ष पहले देहाती लोगों पर किन्हीं अज्ञात 'गर्म नदियों' के किनारे जा बसने की धुन सवार हुई थी। अकस्मात् सैकड़ों देहातियों ने—जिनमें कुछ बोगूचेरोवो के देहाती भी थे—अपने ढोर-डङ्गर बेच-बेचकर अपने बाल-बच्चों सहित दक्षिणपूर्व की ओर जाना आरम्भ कर दिया। जिस प्रकार पक्षी समुद्र पार बसेरा लेने के लिए उड़ जाते हैं, उसी प्रकार ये देहाती भी अपने बीबी-बच्चों के साथ झुण्ड के झुण्ड बना-बनाकर दक्षिणपूर्व की ओर चल दिये। वहाँ पहले उनमें से कभी कोई नहीं गया था। उन्होंने सौ-सौ दो-दो सौ के झुण्ड बनाये, और तब उन 'गर्म नदियों' की ओर बढ़े चले गये। कुछ को दण्ड दिया गया और साइबेरिया भेज दिया गया; कुछ मार्ग ही में भूख और सर्दी से मर गये, और बाक़ी अपनी ही इच्छा से वापस आ गये।

जिस दिन आल्पेटिच ने गाँव के मुखिया को प्रिंसेज़ का सामान लादने के लिए गाड़ियाँ इकट्ठी करने की आज्ञा दी उस दिन गाँव में एक सभा की गई जिसमें निश्चय किया गया कि उन्हें वहाँ से न टलना चाहिए बल्कि रहकर फ्रेंचों की बाट देखनी चाहिए।

पिछले तीस वर्षों से बोगूचेरोवो का प्रबंध ड्रोन नामक एक व्यक्ति के हाथ में था जिसे वृद्ध प्रिंस 'ड्रोनुश्का' के नाम से पुकारते थे। आल्पेटिच ने ध्वस्त बाल्डहिल्स से आकर वृद्ध प्रिंस की समाधि के दिन इसी ड्रोन को बुलाकर प्रिंसेज़ की गाड़ियों के लिए बारह घोड़ों और बोगूचेरोवो से हटाये जानेवाले सामान के लिए अठारह गाड़ियों का प्रबन्ध करने को कहा। बोगूचेरोवो में

२३० परिवार काम करते थे और देहाती अच्छे खाते पीते थे। पर यह आदेश सुनकर ड्रोन ने निगाह नीची करके चुप्पी साध ली। आल्पेटिच ने कहीं अपनी जान-पहचान के देहातियों का नाम लिया और कहा कि गाड़ियाँ उनसे ले लेनी चाहिएँ।

ड्रोन ने कहा कि उन देहातियों के घोड़े हमेशा गाड़ियाँ लादते रहते हैं। इस पर आल्पेटिच ने और देहातियों का नाम लिया, पर ड्रोन के कथनानुसार उनके पास भी कोई खाली घोड़े नहीं थे; कुछ घोड़े सरकारी माल लादने में लगे हुए थे, कुछ बहुत कमज़ोर थे, और बाक़ी चारा न मिलने के कारण मर चुके थे। ऐसा प्रकट होता था कि प्रिंसेज़ की सवारी-गाड़ियों के लिए भी घोड़े न मिल सकेंगे, लादनेवाली गाड़ियों की तो बात ही क्या।

आल्पेटिच ने ड्रोन की ओर ध्यानपूर्वक देखा और भृकुटी बदली। यदि ड्रोन बड़ा अच्छा देहाती मुखिया था, तो आल्पे-टिच ने भी पिछले बीस वर्षों से प्रिंस की रियासत का प्रबन्ध कोई भाड़ झोंककर नहीं कर लिया था। जिन लोगों के साथ उसे व्यवहार करना पड़ता, उनकी आवश्यकताओं और मनोवृत्तियों को ताड़ जाने की शक्ति उसमें प्रचुर मात्रा में थी। उसने ड्रोन की सूरत को ध्यानपूर्वक देख लेने के बाद यह जान लिया कि ड्रोन के उत्तर स्वयं उसी के विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि सारे बोगूचेरोवो के संघ की व्यापक मनोवृत्ति की अभिव्यक्ति हैं जिनसे वह स्वयं भी प्रभावान्वित हो गया है। उसने कहा:—

'देखो ड्रोनुश्का, सुनो, इन बेकार बातों में क्या रक्खा है? हिज़ ऐक्सीलेंसी एण्ड्र्यू मुझे .खुद तुम सब लोगों को यहाँ से ले चलने की आज्ञा दे गये थे। उन्होंने कहा कि तुम लोगों को दुश्मनों के साथ न रहना चाहिए। इसी तरह का एक हुक्म ज़ार के पास से भी मिला है। अब जो कोई यहाँ रुका रहेगा उसे ज़ार का विद्रोही समझा जायगा। सुनते हो न?'

ड्रोन ने उसी प्रकार नीची निगाह किये कहा—'मैं सब सुन रहा हूँ।'

इस उत्तर से आल्पेटिच का संतोष न हुआ। उसने सिर हिलाकर कहा—'देखो ड्रोन, यह सब तुम्हारे हक़ में बुरा होगा।'

ड्रोन ने विषाद के साथ कहा—'आपको अख़्तियार है।'

आल्पेटिच बोला—'यह तुम्हारे दिमाग़ में क्या समाया है? ऐं?...तुम लोग क्या इरादे कर रहे हो?'

ड्रोन ने कहा—'मेरा इन लोगों से चारा ही क्या है? सब मतवाले हो रहे हैं; मैंने तो उनसे यहाँ तक कह दिया है कि...।'

आल्पेटिच बोला—' "कह दिया है"—बेशक! क्या सब शराब पीकर मतवाले हो रहे हैं?'

'बिल्कुल मतवाले, याकोव आल्पेटिच! अब सब एक दूसरा पीपा उठा लाये हैं।'

'अच्छा तो देखो, कान लगाकर सुनो! मैं पुलिस अफ़सर के पास चला जाऊँगा, यह उनसे कह देना, और उन्हें जता देना कि वे यह सारी शरारत बन्द कर दें और सीधे सीधे गाड़ियों का बन्दोबस्त कर दें।'

'अच्छी बात है।'

पर आल्पेटिच अच्छी तरह जानता था कि सेना की सहायता के बिना गाड़ियाँ न आएँगी।

और वास्तव में ऐसा ही हुआ भी; शाम हुई, पर गाड़ियों का पता तक न था। गाँव में शराब की दूकान के बाहर एक दूसरी सभा की गई जिसमें निश्चय किया गया कि घोड़ों को जङ्गलों में हाँक देना चाहिए और गाड़ियों का कोई प्रबन्ध न करना चाहिए। आल्पेटिच ने प्रिंसेज़ से इसके विषय में कुछ नहीं कहा, उसने बाल्डहिल्स की गाड़ियों में से अपना सामान उतारकर प्रिंसेज़ की सवारी-गाड़ियों का प्रबन्ध कर दिया था। इसके बाद वह पुलिस अफ़सरों के पास पहुँचा।

प्रिंस की समाधि के बाद मेडेम बोरीन प्रिंसेज़ के पास पहुँची। बोली—'प्यारी मेरी, तुम जानती ही हो कि हम ख़तरे में हैं। हम चारों ओर से फ़्रेंचों से घिरे हुए हैं; यहाँ से चलना ख़तरे से खाली न होगा। अगर हम यहाँ से चले तो हमें ज़रूर क़ैद कर लिया जायगा, और फिर ईश्वर जाने...।'

प्रिंसेज़ मेरी ने अपनी सहेली की ओर, बिना उसकी बात समझे, ताका।

उसने कहा—'जो तुम यह जान पातीं कि मैं इन सारी बातों से कितनी उदासीन हो गई हूँ...। निश्चय ही मैं उनके पास से नहीं जाना चाहती ... आल्पेटिच ने कुछ कहा था...उनसे कह देना कि मैं कुछ नहीं चाहती, मैं कुछ नहीं चाहती...।'

मेडेम बोरीन बोली—'मैंने उससे कह दिया है। उसने कहा कि कल तक हमें जाने को तैयार हो जाना चाहिए; पर मेरी समझ में तो अब यहीं रहना ठीक होगा। क्योंकि, प्यारी मेरी, सिपाहियों के या उपद्रवी देहातियों के हाथों में जा पड़ना बड़ा भयानक होगा।'

इतना कहकर मेडेम बोरीन ने अपने बेग में से जनरल रेम्यू का घोषणापत्र (जो सादे से रूसी काग़ज़ पर छपा हुआ नहीं था) निकाला जिसमें उक्त जनरल ने जनता को सलाह दी थी कि वे अपने घर छोड़कर न जायँ, और आश्वासन दिया था कि फ़्रेंच अधिकारी उनकी रक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगे। यह घोषणापत्र उसने प्रिंसेज़ मेरी के हाथ में पकड़ा दिया और कहा—

'मेरी समझ में तो तुम्हें इस जनरल से प्रार्थना करनी चाहिए, और मुझे विश्वास है कि वह आपका उचित आदर-मान करेंगे।'

प्रिंसेज़ मेरी ने वह घोषणापत्र पढ़ा और उसका चेहरा अवरुद्ध अश्रुओं से प्रकम्पित हो उठा।

उसने पूछा—'यह काग़ज़ तुम्हें किसने दिया?'

मेडेम बोरीन ने लजाते हुए उत्तर दिया—'शायद उन लोगों ने मेरे नाम से जान लिया होगा कि मैं फ़्रेंच हूँ।'

प्रिंसेज़ मेरी हाथ में काग़ज़ पकड़े खिड़की के पास से उठी और पीले ज़र्द चेहरे के साथ उस ओर से—जो किसी ज़माने में प्रिंस एण्ड्रयू की अध्ययनशाला थी—बाहर चली गई।

उसने एक दासी से कहा—'डुन्याशा, आल्पेटिच या ड्रोनुश्का या और किसी को मेरे पास भेज दे।' 'और मेडेम बोरीन से कह दे कि वह मेरे पास न आये।' 'मैं अभी—इसी दम रवाना होना चाहती हूँ!' वह फ्रेंचों के हाथों में जा पड़ने के विचार मात्र से व्यथित हो गई।

'प्रिंस एण्ड्र्यू जब सुनेंगे कि मैं फ्रेंचों के अधिकार में आ गई तो वह अपना क्या हाल कर डालेंगे! जब सोचेंगे कि मैंने—प्रिंस निकोलस वोल्कोन्सकी की कन्या ने—जनरल रेम्यू से अपनी रक्षा की याचना की थी और उनकी कृपा से लाभ उठाया भी तो उनकी क्या दशा होगी!' इस बात के विचार मात्र से वह भयभीत हो गई, और उसे प्रकम्प, ग्लानि, गर्व और रोष के भावातिरेक की ऐसी प्रबल अनुभूति हुई जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। उसकी स्थिति में जो कुछ सबसे अधिक व्यथाकारी हो सकता था, और विशेषकर जो कुछ सबसे अधिक अपमानजनक हो सकता था उस सब का चित्र उसके मस्तिष्क में खिंच गया। वे, फ्रेंच लोग, इस घर में आकर रहेंगे। मोशिये जनरल रेम्यू प्रिंस एण्ड्र्यू की अध्ययनशाला में प्रतिष्ठित होंगे और भय्ये के ख़त-पत्र पढ़कर अपना मनोविनोद करेंगे; मेडेम बोरीन बोगूचेरोवो की ओर से उनका आदर-मान करेंगी, मुझे भी कृपा करके एक छोटा-सा कमरा प्रदान कर दिया जायेगा; सिपाही मेरे पिता की नई समाधि को भ्रष्ट करके उसमें से उनके तमग़े और क्रास निकालेंगे; मुझे अपनी वीरता की गाथाएँ सुनायेंगे कि किस किस प्रकार उन्होंने रूसियों

को परास्त किया; मेरे दुःख में समवेदना प्रकट करने का ढोंग रचेंगे।' वह अपने पिता और भाई की तरह सोचने को बाध्य थी। वैसे व्यक्तिगत रूप से उसे इसकी कोई चिन्ता न थी कि वह कहाँ रहेगी और उसका क्या होगा; पर साथ ही वह यह भी न भूल सकती थी कि वह अपने मृत पिता की पुत्री और प्रिंस एण्ड्र्यू की बहिन है। इस प्रकार अनायास भाव से वह उन्हीं की तरह सोचने और उन्हीं की तरह अनुभूति करने लगी। उसके स्थान में जो कुछ वे कहते, वही कहना और करना उसने भी अपना कर्त्तव्य समझा। वह प्रिंस एण्ड्र्यू के विचारों से अनुप्राणित होने के लिए उसकी अध्ययनशाला में चली गई और अपनी स्थिति पर विचार करने लगी।

और जीवन की उन आशा-आकांक्षाओं ने, जो पिता की मृत्यु के बाद से सदैव के लिए नष्ट हो गई प्रतीत होती थीं, एक बार फिर अकस्मात् नई और पहले से कहीं अधिक प्रबल शक्ति के साथ उस पर अधिकार जमा लिया।

गाँव का मुखिया ड्रोन बुलाया गया और प्रिंसेज़ मेरी को झुककर सलाम करने के बाद दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

अब प्रिंसेज़ मेरी बोली—ड्रोनुश्का, आल्पेटिच तो पता नहीं कहाँ चले गये, और अब मुझे तुम्हारे सिवाय और अपना कोई दिखाई नहीं देता। तो क्या यह सच्ची बात है कि मैं यहाँ से जा भी नहीं सकती?'

ड्रोन ने कहा—'बेटी रानी, जा क्यों नहीं सकतीं? आप फ़ौरन जा सकती हैं।'

'मैंने तो सुना है कि जाने में ख़तरा है, क्योंकि शत्रु चारों ओर घिरे हुए हैं। भाई, मेरी कुछ समझ में नहीं आता, मैं क्या करूँ? मेरा कोई अपना नहीं है। मुझे या तो आज रात ही को चला जाना चाहिए या कल सुबह तक।

ड्रोन रुका, और प्रिंसेज़ मेरी को कनखियों से देखकर बोला—'पर घोड़े तो हैं ही नहीं, मैंने यह बात याकोव आल्पेटिच से भी कह दी थी।'

प्रिंसेज़ ने पूछा—'क्यों?—कहाँ गये?'

ड्रोन बोला—'परमात्मा का सराप है, और क्या! यह साल इतना कम्बख़्त आया कि हमारे पास जितने घोड़े थे उनमें से कुछ सरकार ने फ़ौज के लिए ले लिये और बाक़ी मर गये! और जब हमारे ही पेटों को नहीं है तो घोड़ों के खाने को कहाँ से लाते! आज ही कल की बात है, हम में से बहुत से तीन तीन दिन के फ़ाके से हैं। हमारे पास कुछ नहीं रहा, हम बर्बाद हो गये।'

प्रिंसेज़ मेरी ने पूछा—'देहाती बर्बाद हो गये? उनके पास खाने को नहीं है?'

ड्रोन बोला—'भूखों के मारे उनकी जान निकल रही है। कोई गाड़ी जोतने की बात ही थोड़े ही है...।'

'तो फिर ड्रोनुश्का, तुमने यह बात मुझसे पहले क्यों नहीं कही? क्या उन्हें किसी तरह की सहायता नहीं पहुँचाई जा

सकती ? जो कुछ मुझसे हो सकता है, मैं करूँगी...। मेरे भय्ये का अन्न भी तो यहाँ होगा ?'

ड्रोन ने गर्व के साथ उत्तर दिया—'ज़िमींदार का खलिहान दूध पी रहा है। हमारे प्रिंस ने उसे बेचने का हुक्म नहीं दिया था।'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'वह सब देहातियों को दे डालो; उन्हें जिस जिस चीज़ की ज़रूरत हो वह सब दो, मैं तुम्हें अपने भय्ये की ओर से अनुमति देती हूँ।'

ड्रोन ने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि एक गहरी साँस ली।

प्रिंसेज़ मेरी ने फिर कहा—'वह सारा अन्न बाँट दो। पूरा पड़ जायगा न ? सब बाँट दो। मैं इस बात की तुम्हें अपने भाई की ओर से आज्ञा देती हूँ, और उनसे कहना कि जो कुछ हमारे पास है वह सब उनका है। हम उन्हें सब कुछ देने को तैयार हैं। यह ज़रूर कह देना।'

जिस समय प्रिंसेज़ बोल रही थी, ड्रोन उसकी ओर मनोयोग के साथ देख रहा था।

उसने कहा—'मेरी बेटी रानी, ईश्वर के लिए मुझे बर्ख़ास्त कर दो। मुझसे ताली कुञ्जी समझ लेने की आज्ञा दे दो। मैं पिछले तेईस बरस से काम करता आ रहा हूँ, और मैंने आज तक कोई क़सूर नहीं किया। ईश्वर के नाम पर मुझे बर्ख़ास्त कर दो।'

प्रिंसेज़ मेरी की समझ में न आ सका कि वह क्या चाहता है।

वह अपना सिर नीचे डालकर बाहर चली गई, आज्ञा दी कि उसके जाने के लिए सुबह तक घोड़े तैयार हो जायँ, और इसके बाद वह अपनी विचार-धारा में निमग्न हो गई।

चौबीसवाँ परिच्छेद

१७ तारीख़ को रोस्टोव और उसका युवक भक्त इलिन एक हुसार अर्दली के साथ बोगूचेरोवो से दस मील की दूरी पर थान्कोपो नामक पड़ाव से इलिया का नया घोड़ा चलाकर देखने और आसपास के गाँवों में घास तलाश करने निकल पड़े।

पिछले तीन दिनों से बोगूचेरोवो दो प्रतिपक्षी सेनाओं के बीच में घिरा हुआ था, अतः इस गाँव में आ घुसना जितना रूसी सेना के लिए सहज था, उतना ही फ़्रेंच अग्रगामिनी सेना के लिए भी था। अतः रोस्टोव ने एक सुचतुर स्क्वाडरन कमाण्डर की हैसियत से फ़्रेंचों से पहले ही बोगूचेरोवो से आवश्यक पदार्थ ले आने की बात सोची।

रोस्टोव को यह पता न था—और न उसने कभी गुमान ही किया था-कि जिस गाँव में वह जा रहा है यह उसके बोल्कोन्स्की का है जिसके साथ उसकी बहिन सम्बद्ध थी।

रोस्टोव और इलिन ने बोगूचेरोवो पहुँचने से पहले एक झुकाव पर अपनी अन्तिम दौड़ के लिए घोड़ों को तेज़ किया और रोस्टोव का घोड़ा इलिन के घोड़े को पीछे छोड़कर गाँव की सड़क पर सबसे पहले जा पहुँचा।

इलिन ने उत्तेजित भाव से कहा—'तुम अव्वल रहे।'

रोस्टोव ने अपने घोड़े को थपथपाकर कहा—'यह क्या कोई नई बात है ? चाहे घास में दौड़ा लो चाहे सड़क पर— मैं हमेशा आगे रहूँगा ।'

इसके बाद सब धीरे धीरे घोड़े चलाते हुए खलिहान के पास पहुँचे जहाँ देहातियों का एक बड़ा सा गिरोह खड़ा हुआ था ।

उनमें से कुछ ने अपने सिर नङ्गे कर लिये, बाक़ी उसी प्रकार टोपियाँ पहने हुए, आगन्तुकों की ओर ताकने लगे। दो लम्बे क़द के पतली सी दाढ़ीवाले बुड्ढे देहाती शराब की दूकान में से मुस्कराते हुए और लड़खड़ा-लड़खड़ाकर कुछ असम्बद्ध गीत गाते हुए निकले। दोनों इन अफ़सरों के पास पहुँचे ।

रोस्टोव ने हँसते हुए कहा—'वाह ! क्या मौजी लोग हैं ! बोलो, कहीं घास-वास भी मिल जायगी ?'

इलिन ने कहा—'और दोनों एक दूसरे से कितने मिलते-जुलते हैं !'

एक देहाती ने उल्लसित मुस्कराहट के साथ गाना आरम्भ किया —'खूब गुज़रेगी जो मिल... ।'

उस जनसमुदाय में से एक आदमी निकलकर रोस्टोव के पास पहुँचा और बोला—

'आप कौन हैं ?'

इलिन ने मज़ाक करते हुए कहा—'फ़्रेंच हैं ! और यह नैपोलियन मौजूद है ।' इतना कहकर उसने दास की ओर संकेत किया ।

देहाती ने फिर पूछा—'तो आप रूसी हैं ?'

एक दूसरे नाटे से देहाती ने पास आकर पूछा—'और आपकी फ़ौज क्या यहाँ बहुत बड़ी है ?'

रोस्टोव ने कहा—'बहुत बड़ी। मगर तुम लोग यहाँ इकट्ठे क्यों हो ? क्या कोई त्योहार मना रहे हो ?'

देहाती ने वहाँ से जाते हुए कहा—'गाँव के बड़े बूढ़े पञ्चायत की चर्चा करने को इकट्ठे हुए हैं।'

इसी अवसर पर एक विशाल भवन से आनेवाली सड़क पर दो स्त्रियाँ और एक सफ़ेद टोप पहने आदमी इन अफ़सरों की ओर आते दिखाई दिये।

इलिन ने डुन्याशा को ठीक अपनी ओर भागकर आते हुए देखकर कहा—'यह गुलाबी मेरी है, इससे किसी का कोई सरोकार नहीं।'

लैवरुश्का ने इलिन की ओर आँख मारकर कहा—'बस, यह हमारे साथ में रहेगी।'

इलिन ने मुस्कराकर कहा—'क्या बात है मेरी सुन्दरी ?'

'प्रिंसेज़ ने मुझे आपकी रेजीमेण्ट और आपके नाम पूछ आने की आज्ञा दी है।'

'ये काउण्ट रोस्टोव, स्क्वाडरन कमाण्डर हैं, और मैं तुम्हारा बेमोल का गुलाम हूँ।'

उस मदमत्त देहाती ने उल्लसित भाव से मुस्कराकर इलिया को उस बालिका से बातचीत करते देखते हुए ज़ोर से कहा—'खूब

गुज़रेगी जो मिल...!' डुन्याशा के पीछे आल्पेटिच भी आ पहुँचा। उसने कुछ दूर ही से अपना टोप उतार लिया और रोस्टोव के पास आकर अदब के साथ—पर साथ ही उसकी युवावस्था के प्रति तिरस्कार भावना के साथ—अपने कोट में हाथ घुसेड़कर कहा—

'महोदय, आपको कष्ट देने की क्षमा चाहता हूँ ! मेरी मालकिन, जनरल-इन-चीफ़ प्रिंस निकोलस वोल्कोन्सकी की—जिनकी मृत्यु १५ तारीख़ को हुई है—सुपुत्री इन लोगों के जंगलीपन के कारण बड़ी विपत्ति में फँस गई हैं।' और इतना कहकर उसने देहातियों की ओर संकेत किया। 'वह आपको ज़रा घर बुला रही हैं।'

रोस्टोव ज़रा आगे बढ़कर बोला—'हाँ क्या मामला है ?'

'महोदय, मुझे यह सूचना देने की अनुमति दीजिए कि इस स्थान के उद्दण्ड लोग हमारी मालकिन को यहाँ से जाने नहीं देना चाहते, और उनकी गाड़ियों से घोड़े खोल लेने की धमकी देते हैं; इसलिए यद्यपि सुबह से ही सारा सामान तैयार रक्खा है, प्रिंसेज़ महोदया अभी तक न जा सकीं।'

रोस्टोव चिल्ला उठा—'असम्भव !'

'मैं श्रीमान् से सच्ची सच्ची बात ही कह रहा हूँ।'

रोस्टोव घोड़े से उतर पड़ा, उसकी लगाम अपने अर्दली के हाथ में पकड़ाइ, और आल्पेटिच के साथ भवन में जाते जाते उससे सारे मामले की ख़ास ख़ास बातें पूछने लगा। पिछले दिन प्रिंसेज़ के अन्न देने की तत्परता ने और ड्रोन से बातचीत करने

२५

ने सारा मामला इतना ख़राब कर दिया था कि ड्रोन ने ताली कुंजी सौंपकर अन्त में देहातियों का पक्ष ले लिया था और आल्पेटिच के बुलाने पर उसके सामने आने से इंकार कर दिया था। अतः जब सुबह को प्रिंसेज़ ने घोड़े जोतने की आज्ञा दी तो एक बड़ी संख्या में आकर देहातियों ने प्रिंसेज़ के पास कहला भेजा कि वे प्रिंसेज़ को गाँव से बाहर न निकलने देंगे, और घोड़ों को गाड़ी से ज़बर्दस्ती खोल लेंगे।

जिस समय रोस्टोव मुलाक़ाती कमरे में से होता हुआ भीतर पहुँचा तो चारों ओर से भावावेश-पूर्ण स्त्री-कण्ठ सुनाई पड़ने लगे—'पिता! उद्धार-कर्ता! भगवान ही ने तुम्हें भेजा है!'

जिस समय रोस्टोव को भीतर पहुँचाया गया तो प्रिंसेज़ मेरी नृत्यशाला में भीत-चकित और असहाय भाव से बैठी हुई थी। वह यह न समझ सकी कि यह कौन है, और क्यों आया है, और स्वयं उसका क्या होगा। पर जब उसने उसका रूसी चेहरा देखा और उसकी पहली ही बात से पहचान लिया कि वह उसकी ही जैसी उच्च श्रेणी का है तो उसने उसकी ओर अपने कान्त उज्ज्वल नेत्रों से देखा और भावावेश से प्रकम्पित और लड़खड़ाते हुए स्वर में बात करनी आरम्भ की। यह मिलन रोस्टोव को एक अद्भुत घटनापूर्ण प्रतीत हुआ। 'एक असहाय शोक से जर्जर लड़की और शैतानी पर तुले हुए देहातियों की दया पर छोड़ दी गई! और मैं भी किस भाग्यचक्र से इधर आ निकला! और इसके अवयवों में और चाल-ढाल में कितनी मृदुलता और कुली-

नता टपकती है !' उसने प्रिंसेज़ मेरी की कातर गाथा को सुनते सुनते उसकी ओर निगाह किये बिना मन ही मन कहा।

जब उसने रोस्टोव को बताना आरम्भ किया कि यह सब उत्पात उसके पिता की समाधि के बाद ही से आरम्भ हुआ है, तो उसका स्वर कम्पित हो उठा। उसने मुँह फेर लिया, और फिर यह समझकर कि कहीं आगन्तुक यह न समझे कि उसने यह शब्द केवल उसकी दया को उत्तेजन देने के लिए कहे हैं, उसने उसकी ओर संदिग्ध प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। रोस्टोव के नेत्रों में आँसू भरे हुए थे। प्रिंसेज़ मेरी ने यह बात देखी और उसकी ओर कृतज्ञता के साथ अपने कान्त नेत्रों से देखा।

रोस्टोव ने उठते हुए कहा--'प्रिंसेज़, मैं अपनी प्रसन्नता का वर्णन नहीं कर सकता कि मैं यहाँ अकस्मात् आ निकला। मैं आपकी सेवा करने को तैयार हूँ। आप .खुशी से जाइए, और मैं अपने सम्मान की शपथ खाकर कहता हूँ कि किसी की क्या मजाल जो आपकी ओर आँख तक उठाकर देख सके। बस इतनी अनुमति दीजिए कि मैं आपकी गाड़ी के पीछे पीछे जा सकूँ।' और उसका इस प्रकार आदर के साथ अभिवादन करके, मानो वह कहीं की सम्राज्ञी हो, उसने दरवाजे की ओर क़दम बढ़ाया।

रोस्टोव के आदर-पूर्ण स्वर से यह व्यंजित हुआ कि यद्यपि उससे परिचय प्राप्त करने में उसे अवश्य प्रसन्नता होती, पर वह उसकी विपत्ति के कारण प्राप्त हुई सुविधा से लाभ उठाकर उससे हठपूर्वक मेलजोल बढ़ाना नहीं चाहता।

प्रिंसेज़ मेरी इस भाव को समझ गई और उसने रोस्टोव की इस सहृदयता की मन ही मन प्रशंसा की।

उसने फ़्रेंच में कहा—'मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ, पर मुझे आशा है कि उन्हें वैसे ही कुछ भ्रान्ति हो गई है, और दोष किसी का नहीं है।' और इतना कहकर वह अकस्मात् रोने चिल्लाने लगी।

फिर प्रिंसेज़ मेरी बोली—'मुझे क्षमा कीजिए।'

रोस्टोव ने तेवर बदले और एक बार फिर झुककर अभिवादन करने के बाद वह कमरे से चला गया।

इलिन ने कहा—'बोलो, है न सुन्दर? दोस्त, मेरी गुलाबी गालोंवाली बड़ी ग़ज़ब की है; उसका नाम डुन्याशा...'

पर रोस्टोव के चेहरे की ओर देखकर इलिन चुप हो गया। उसने देखा कि उसका उपास्य देव और कमाण्डर इस समय बिल्कुल भिन्न ही प्रकार की विचार-धारा में निमग्न है।

रोस्टोव ने इलिन की ओर रोब के साथ देखा, और बिना कुछ उत्तर दिये गाँव की ओर लम्बे लम्बे डग रखता हुआ बढ़ा चला गया।

उसने स्वगत कहा—'मैं इन्हें सबक़ सिखाऊँगा, हरामज़ादे डाकू कहीं के!'

आल्पेटिच उछल उछलकर चलता हुआ रोस्टोव की चाल के साथ बड़ी कठिनता के साथ लगा रह सका।

उसने कहा—'महोदय, आपने क्या निश्चय किया?'

रोस्टोव रुक गया, और अपनी मुट्ठियाँ मींचकर कठोर भाव से आल्पेटिच की ओर बढ़ा और चिल्लाकर बोला—'निश्चय ? कैसा निश्चय ? क्या बुढ़ापे में अक्ल सठिया गई है ! तुम अब तक क्या करते रहे ? एं ? देहाती शरारत पर तुले हुए हैं और तुम उनको क़ाबू में नहीं रख सकते ? तुम ख़ुद धोखेबाज़ हो ! मैं तुम सब को रग रग से वाक़िफ़ हूँ और सब की जीते जी खाल खिंचवा लूँगा !'...और मानों इस आशंका से कि कहीं उसके क्रोध का भण्डार इसी प्रकार ख़ाली न हो जाय, उसने आल्पेटिच को छोड़ दिया और आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

गाँव में इन हुसारों के आने और रोस्टोव के प्रिंसेज़ से मिलने के लिए जाने के बाद से इस जन-समुदाय में अस्तव्यस्तता और अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी। कुछ देहातियों ने कहा कि ये नये आगन्तुक रूसी हैं और मालकिन के इस तरह रोके जाने पर नाराज़ होंगे। ड्रोन की भी यही सम्मति थी, पर उसके मुँह से यह निकलते ही कार्प ने और अन्य कई देहातियों ने उसकी बुरी तरह ख़बर ली।

जब रोस्टोव, इलिन, लैवरुश्का और आल्पेटिच के साथ भीड़ के पास आ पहुँचा तो कार्प ने अपनी पेटी में अँगुलियाँ ठूँसकर मुस्कराते हुए आगे क़दम रक्खा। पर ड्रोन भीड़ के पीछे जा पहुँचा और भीड़ पास पास खड़ी हो गई।

रोस्टोव ने भीड़ के पास शीघ्रता के साथ पहुँचकर ज़ोर से चिल्लाकर कहा—'अरे तुम्हारा मुखिया कौन है ?'

कार्प ने पूछा—'मुखिया ? मुखिया से तुम्हें क्या सरोकार ?'...

पर उसके मुँह से शब्द अच्छी तरह निकलने से पहले ही उसकी टोपी दूर जा गिरी और घूँसे के एक भीषण आघात से उसका सिर एक ओर को टँग गया।

रोस्टोव ने क्रुद्ध स्वर में चिल्लाकर कहा—'टोपियाँ उतारो विद्रोहियो!' और फिर उसने भयंकर स्वर में कहा—'मुखिया कहाँ है ?'

भीड़ में से विनत और कम्पित आवाजें आने लगीं—'मुखिया। वह मुखिया को बुलाते हैं। ड्रान ज़खरियच! तुम्हें बुलाते हैं!' और सबके सिरों पर से टोपियाँ आ आकर गिरने लगीं।

कार्प ने कहा—'हम विद्रोह नहीं कर रहे हैं, हम शान्त हैं।' और इसी समय भीड़ में बहुत सी आवाज़ें एक साथ बोलने लगीं।

'जो कुछ इन बड़े बूढ़ों ने कह दिया है वही ठीक है—आप लोगों से पार पाना कठिन है!'

रोस्टोव ने कार्प का टेंटुआ झकझोड़ते हुए किसी दूसरी ही आवाज़ में चिल्लाकर अनर्गल रूप से कहना आरम्भ किया—'बहस ? ग़दर...डाकू!...धोकेबाज़! इसे बाँधो, इसे बाँधो।' पर वहाँ बाँधने के लिए लैवरुश्का और आल्पेटिच के सिवाय और कोई न था।

लैवरुश्का ने दौड़कर कार्प की कलाई पकड़ ली।

उसने ज़ोर से कहा—'आप कहें तो पहाड़ी के पीछे से अपने आदमियों को बुला लूँ ?'

आल्पेटिच देहातियों की ओर मुड़ा और उनमें से दो का नाम लेकर उसने कार्प को बाँधने की आज्ञा दी। आदमी चुप-चाप भीड़ से निकल आये और अपनी पेटियाँ निकालने लगे।

रोस्टोव ने ऊँचे स्वर में पूछा—'मुखिया कहाँ है?'

पीले ज़र्द चेहरे के साथ ड्रोन भीड़ से बाहर निकल आया।

'तुम्हीं हो मुखिया? लैवरुश्का, इसे बाँधो!' रोस्टोव ने चिल्लाकर कहा, मानो उस आज्ञा के पूरा होने के सिवाय अन्यथा होना सम्भव ही न था।

और सचमुच ही भीड़ में से दो और देहाती निकल आये, और ड्रोन को बाँधने लगे। ड्रोन ने भी मानो उनके काम में सहायता देने के लिए अपनी पेटी खोलकर उन्हें पकड़ा दी।

दो घण्टे बाद बोगूचेरोवो के भवन के सहन में गाड़ियाँ तैयार खड़ी थीं। देहाती लोग फुर्ती के साथ भीतर से सामान ला लाकर गाड़ियों में लगा रहे थे, और ड्रोन जिसे प्रिंसेज़ मेरी ने मुक्त करा दिया था, ख़ुद खड़ा होकर उन्हें बताता जाता था।

——

तीसरा खंड

पहला परिच्छेद

—:o:—

प्रिंस एराड्र्यू न्याज़कोवो नामक गाँव में अपनी रेजीमेराट के पड़ाव के साथ एक टूटे हुए झोंपड़े में कुहनियों के बल पड़ा हुआ था। उसके सिपुर्द एक रेजीमेराट कर दी गई थी, और उसकी व्यवस्था सैनिकों की हित-चिन्ता और आदेश देने और ग्रहण करने की आवश्यकता ने उसे पूरी तरह संलग्न कर लिया था। स्मोलेन्स्क का अग्निकाराड और उसका परित्याग प्रिंस एराड्र्यू के जीवन में क्रांति उत्पन्न कर देनेवाली घटनाएँ थीं। शत्रु के प्रति उसके हृदय में एक नवीन क्रोध का प्रादुर्भाव हो आया था और उनमें वह अपने व्यक्तिगत दुःख शोक को भूल गया था। वह अपनी रेजीमेराट की व्यवस्था में पूरी तरह से लग्न रहता और अपने मातहतों और अफ़सरों से सहृदयता और विवेक के साथ पेश आता। रेजीमेराट के सैनिक उसे 'हमारे प्रिंस' के नाम से पुकारते, उस पर गर्व करते, और उसे प्रेम की दृष्टि से देखते। पर प्रिंस एराड्र्यू केवल उन्हीं लोगों के साथ सहृदयता से पेश आता

जो उसके निकट बिल्कुल नवीन जगत् से सम्बन्ध रखते थे। अतीत की याद दिलानेवाली हर एक चीज़ उसे गर्हित प्रतीत होती। अपने जीवन की तीन महती शोक-घटनाओं की ओर उसका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट था—एक स्त्री से उसका प्रेम, अपने पिता की मृत्यु, और फ्रेंच आक्रमण जिसके प्रवाह में आधा रूस रौंद डाला गया था। 'प्रेम!..वह नन्ही छोकरी जो मुझे रहस्यमयी शक्ति से ओतप्रोत दिखाई देती थी! हाँ, सचमुच मैं उसे प्यार करता था! मैंने उसके साथ प्रेम और आनन्द की कवित्वमयी योजनाएँ बनाई थीं! और मैं भी कैसा नासमझ छोकरा बन गया था!'

"मेरे पिता ने भी जब बाल्डहिल्स बनाई होगी तो सोचा होगा कि वह स्थान उनका है, वह पृथिवी उनकी है, वह वायु उनकी है, वे देहातो उनके हैं। पर नैपोलियन आया, और उनके अस्तित्व की ओर से बिल्कुल अचेत भाव से उसने उन्हें इस प्रकार उठाकर फेंक दिया जिस प्रकार कोई सड़क से कंकड़ उठाकर फेंक देता है। उनकी बाल्डहिल्स, और उनका सारा जीवन खण्ड खण्ड हो गया। कल को मैं मारा जाऊँगा, और सो भी शायद किसी फ्रेंच के हाथों नहीं, बल्कि अपने ही एक सिपाही के हाथों। फिर फ्रेंच आयँगे और मेरी टाँग पकड़कर एक गड्ढे में फेंक देंगे जिससे मेरी दुर्गंधि उनकी नाक में न पहुँचे। फिर जीवन की नवीन नवीन परिस्थितियाँ उदित हो उठेंगी, पर मेरा अस्तित्व न रहेगा।'

बाहर से कुछ आवाज़ सुनाई पड़ी। प्रिंस एण्ड्र्यू ने चिल्लाकर कहा—'कौन है?'

उसने झोपड़े के बाहर झाँककर देखा तो उसे पीरी दिखाई पड़ा। पीरी ज़मीन में गड़े हुए एक बाँस से लड़खड़ा गया था। प्रिंस एएड्र्यू को अपनी श्रेणी के आदमियों से मिलना बड़ा क्षोभकारी लगता था, और विशेष कर पीरी से, जिसकी सूरत देखते ही उसकी अपने मास्को जाने और वहाँ वेदनाकारी समय बिताने की स्मृति ताज़ी हो आई थी। पीरी युद्ध में शरीक होने आया था।

प्रिंस एएड्र्यू ने कहा—'आह! तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे? कैसे ताज्जुब की बात है?'

और इतना कहते कहते उसके नेत्रों से और आकृति से शुष्कता से भी कुछ अधिक व्यंजित हुआ—वैपरीत्य भाव व्यंजित हुआ, और पीरी ने उसे तत्काल देख लिया। पीरी झोंपड़े तक बड़ा उल्लसित होता हुआ आया था, पर प्रिंस एएड्र्यू को देखते ही वह क्षुब्ध और संकुचित हो उठा।

पीरी ने कहा—'मैं भी ऐसे ही आ गया...ऐसे ही...तुम जानते ही हो...ज़रा मनोरञ्जन हो जायगा।' उस दिन उसने 'मनोरञ्जन' शब्द का कई बार उपयोग किया था। 'मैं ज़रा लड़ाई देखना चाहता था।'

प्रिंस एएड्र्यू ने तीव्र व्यंग्य के साथ कहा—'ठीक!'

दोनों में युद्ध-सम्बन्धी बातचीत चल पड़ी।

पीरी ने पूछा—'तो तुम्हारी राय में कल का मैदान हमारे हाथ में रहेगा?'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने अन्यमनस्क भाव से कहा—'हो, हो।' इसके बाद उसने कहना आरम्भ किया—'अगर मेरे हाथ में ताक़त होती तो मैं एक बात करता; मैं क़ैद न करता। क़ैद क्यों किया जाय? यही विशालहृदयता है! फ़्रेंचों ने मेरा घर तहस-नहस कर दिया है, और अब वे मास्को तहस-नहस करने जा रहे हैं; इन्होंने मेरा अपमान किया है और हर-एक क़दम पर मेरा अपमान कर रहे हैं। ये मेरे शत्रु हैं, और मेरी राय में सब अपराधी हैं। सारी सेना का ख़याल यही है। उन सबको फाँसी पर लटका देना चाहिए। जब वे मेरे दुश्मन हैं तो दोस्त कभी हो नहीं सकते।

पीरी ने चमकते हुए नेत्रों से प्रिंस एण्ड्र्यू की ओर देखकर कहा—'हाँ ठीक है, मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ!'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहना जारी रक्खा—'बस, क़ैद नहीं करना चाहिए; इससे युद्ध की एक दूसरी ही शक्ल हो जायगी और फिर इतनी नृशंसता न करनी पड़ेगी। मगर हम कर क्या रहे हैं?—हम लड़ाई से खिलवाड़ कर रहे हैं—और यही क्षुद्रता है! हम उदाराशयता और ऐसी ही निरर्थक बात के खिलवाड़ करते हैं। ऐसी उदाराशयता और भावुकता एक ऐसी महिला की उदाराशयता और भावुकता की तरह है जो किसी बकरे को हलाल होते देखकर मूर्च्छित हो जाती है; वह इतनी कोमलहृदया है कि उसके रक्त की ओर देख तक नहीं सकती, पर जब वही बकरा उसकी मेज़ पर परोसा जाता है तो ख़ूब

आनन्द ले लेकर खाती है। ये लोग हमें युद्ध के प्रेमियों की उदाराशयता की, अस्थायी शान्ति-पताकाओं की, अभागों के प्रति दया करने की, और इसी तरह की और शिक्षाएँ देते हैं—पर मैं कहता हूँ कि यह सब अनर्गल प्रलाप है। मैं उदाराशयता और अस्थायी शान्ति की लीला १८०५ में देख चुका हूँ; उन्होंने हमें धोका दिया और हमने उन्हें धोका दिया। वे घर द्वारों में लूट-पाट करते हैं, जाली नोट चलाते हैं, और—सबसे बुरी बात—मेरे बच्चों और पिता को तलवार के घाट उतारते हैं, और फिर युद्ध के नियमों की और शत्रु के प्रति उदाराशयता से काम लेने की शिक्षा देते हैं! बस, क़ैद नहीं करना चाहिए; मर गये और मार डाला! जो कोई मेरी ही तरह व्यथाएँ उठा चुका होगा, वह...।'

अकस्मात् उसके गले की एक नस खड़ी हो गई और उसे अपना वक्तव्य बीच ही में समाप्त करना पड़ा। वह चुपचाप कुछ देर तक चहलक़दमी करता रहा, पर जब उसने दुबारा बोलना आरम्भ किया तो उसके नेत्र आग की चिनगारियों की तरह चमक उठे, और ओंठ काँप उठे।

'अगर लड़ाई में यह उदाराशयता न दिखाई जाती तो हम लड़ाई में तभी शरीक होते जब उसमें शरीक होना वास्तव में आवश्यक होता—जैसा कि इस समय है। उस दशा में केवल इसी लिए युद्ध न छिड़ जाता कि पाल इवानिच ने माइकल इवानिच को नाराज़ कर दिया था। जब इस तरह का युद्ध छिड़ेगा तब उसे हम वास्तव में युद्ध के नाम से पुकार सकेंगे! और तब इन

सेनाओं का निश्चय फिर कुछ दूसरे ही ढङ्ग का महत्त्व रखने लगेगा। तब ये वैस्ट फालियन और हेसियन नैपोलियन के पीछे पीछे आज की तरह रूस में न घुस आयँगे, और हम पहले की तरह आस्ट्रिया और प्रूशिया में बिना किसी कारण के लड़ाइ करने न चले जायँगे। युद्ध किसी प्रकार का अभिवादन नहीं है, बल्कि जीवन की परम भयावह और गर्हित वस्तु है, और हमें इसका वास्तविक महत्त्व समझकर इससे खिलवाड़ करना छोड़ देना चाहिए। हमें इस भयावह आवश्यकता को बड़ी गम्भीरता और कठोरता के साथ स्वीकार करना चाहिए। और यह केवल इस तरह सम्भव है; प्रवञ्चना को दूर करो और युद्ध के साथ युद्ध की तरह पेश आओ, खिलवाड़ की चीज़ की तरह नहीं। पर अब क्या दशा है?—अब युद्ध कुछ आलसी और छिछोरे आदमियों के मनोरञ्जन का साधन है। आज कल सैनिक पेशा सबसे अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

'मगर युद्ध क्या है, युद्ध-व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए क्या कुछ आवश्यक है, और सैनिक पेशा लोगों के क्या व्यसन होते हैं? युद्ध का उद्देश्य हत्याकाण्ड है; युद्ध के साधन जासूसी, विश्वासघात, और उनका प्रोत्साहन, किसी देश के निवासियों को बर्बाद करना, उन्हें लूटना या उनका माल-मता चुराना—जिससे सेना का भरण-पोषण हो सके—जालसाज़ी करना और धोकेबाज़ी करना है जिन्हें युद्ध-कौशल के नाम से पुकारा जाता है। सैनिक पेशा लोगों के व्यसन हैं स्वच्छन्दता का अभाव;

अर्थात् नियन्त्रण, निश्चेष्टता, अज्ञान, निर्दयता, व्यभिचार और शराबख़ोरी। पर इतना सब होते हुए भी लोग बाग इसी पेशे का सबसे अधिक आदर-मान करते हैं। संसार भर के बादशाह — चीनी बादशाहों को छोड़कर— सैनिक पोशाक पहनते हैं, और जो सबसे अधिक आदमियों की हत्या कर सकता है उसी को सबसे बड़ा पुरस्कार दिया जाता है। जिस तरह हम कल मिलेंगे, उसी तरह वे भी एक दूसरे की हत्या करने को मिलते हैं; वे हज़ारों लाखों आदमियों को मारते हैं, उन्हें विनष्ट करते हैं, और फिर इतना नरसंहार करने के बाद ईश्वर का धन्यवाद करते हैं (और उस धन्यवाद में वे संख्या तक में वृद्धि करत हैं) और फिर विजय की घोषणा करते हैं, और समझते हैं कि जितने मनुष्य मारे जायँगे उतनी ही अधिक सफलता होगी। भला ईश्वर उन्हें किस दृष्टि से देखता होगा, और उनकी प्रर्थना किन कानों से सुनता होगा ?' प्रिंस एण्ड्र्यू ने तीखी, मर्मभेदिनी आवाज़ में कहा। 'आह, मेरे दोस्त, इधर कुछ दिनों से मुझे अपने दिन काटना कठिन हो गया है। मैं देख रहा हूँ कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा समझने लगा हूँ। मनुष्य को भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल चाखना निषिद्ध बताया है...ख़ैर, यह अधिक दिनों तक न रहेगा !' उसने कहा।

अकस्मात् प्रिंस एण्ड्र्यू कह उठा—'ख़ैर, तुम्हें नींद आ रही होगी, और मेरे सोने का भी समय हो गया है। जाओ, गोर्की वापस लौट जाओ !'

पीरी ने प्रिंस एण्ड्र्यू की ओर भीत दयार्द्र नेत्रों से देखते हुए कहा —'नहीं जी'।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'जाओ, जाओ! लड़ाई से पहले अच्छी तरह सो लेना चाहिए।' और उसने पीरी के पास शीघ्रता से आकर उसका आलिङ्गन और चुम्बन किया और चिल्लाकर कहा—

'अच्छा सलाम, जाओ! अब हम फिर चाहे मिलें या न मिलें...।' और फिर जल्दी से पीठ फेर ली।

उस समय चारों ओर अँधेरा छा गया था और पीरी निश्चय न कर सका कि प्रिंस एण्ड्र्यू के चेहरे की मुद्रा क्रुद्ध है या कोमल। वह कुछ देर तक वहीं खड़ा खड़ा निश्चय करता रहा कि उसे प्रिंस एण्ड्र्यू के पास रहना चाहिए या नहीं। अन्त में पीरी ने निश्चय किया—'नहीं, वह यह नहीं चाहता! और मैं जानता हूँ, हमारी यह अन्तिम भेंट है।' और वह दीर्घ निःश्वास परित्याग करके वापस चला गया।

——

दूसरा परिच्छेद

दूसरे दिन युद्ध था। प्रिंस एराड्र्यू की रेजीमेराट रिज़र्व में थी। यह रेजीमेराट एक बजे तक सेमेनोवस्क के पीछे गोलों की घनी वर्षा में निश्चेष्ट खड़ी रही। दो बजे के लगभग रेजीमेराट के दो सौ आदमी हताहत हो चुके थे। अब उसे जई के खूँदे हुए खेत में आगे बढ़ने का हुक्म मिला। यह स्थान सेमेनोवस्क और उस मोर्चेबन्दी के बीच में था जहाँ उस दिन हज़ारों आदमियों के प्राण गये थे और जिस पर एक और दो बजे के बीच में कई सौ तोपों का मुँह फेरकर भयङ्कर गोलाबारी की गई थी।

यहाँ आकर रेजीमेराट ने बिना एक गोली चलाये और बिना अपने स्थान से हिले अपने बाक़ी बचे हुए सैनिक खो दिये। सामने की ओर से, और विशेष कर दाहिनी ओर से, धुएँ के सघन आवरण में तोपें लगातार गर्ज रही थीं, और इस रहस्यपूर्ण धुएँ के बादल में से गोले और बम लगातार सनसनाते हुए आ आकर गिर रहे थे। कभी कभी—मानों उन्हें अवकाश देने के लिए सारे गोले उनके सिरों पर से निकलते रहते; पर फिर पन्द्रह मिनट बाद ही एक एक मिनट में कई कई आदमी घायल हो जाते, और मरे हुओं को खींचकर अलग डाल दिया जाता और आहतों को स्ट्रैचरों पर डालकर ले जाया जाता। और प्रत्येक नये आघात के बाद बाक़ी बचे हुए सैनिकों के जीवन का अवसर कम होता जाता।

प्रिंस एण्ड्र्यू भी और सारे सैनिकों की तरह पीला और विषादपूर्ण चेहरा बनाये जई के खेत के पास एक घास के मैदान में कमर के पीछे दोनों हाथ बाँधे सिर झुकाये इधर से उधर और उधर से इधर टहल रहा था। गत दिवस की विचारधारा का अब कोई चिह्न अवशिष्ट नहीं रहा था। वह इस समय कुछ नहीं सोच रहा था। वह ऊबे हुए कानों से गोलों की सनसनाहट और तोपों की गड़गड़ाहट में भेद करने की चेष्टा करता, पहले नम्बर की बटालियन के परिचित चेहरों की ओर शान्त भाव से देखता और अपनी बारी की प्रतीक्षा करता। एक सनसनाहट और फिर धड़ाका! उसके पाँच क़दम की दूरी पर एक गोला आकर गिरा और पृथिवी का कुछ अंश उड़ाकर ग़ायब हो गया। उसकी कमर में सनसनी सी दौड़ गई। उसने फिर क़तारों की तरफ़ दृष्टिपात किया। शायद उस गोले से कई आदमी घायल हुए थे; दूसरी बटालियन के पास बहुत से सिपाही आकर एकत्र हो गये थे।

उसने चिल्लाकर कहा—'ऐडजूटेण्ट! उनसे कहो कि एक जगह इकट्ठे न हों!'

ऐडजूटेण्ट ने आज्ञा का पालन किया और फिर वह प्रिंस एण्ड्र्यू के पास पहुँचा। एक बटालियन कमाण्डर घोड़ा दौड़ाकर उसके पास आया।

एक भयभीत सैनिक की आवाज़ आई—'ख़बरदार!' और उसी क्षण तेज़ी की उड़ान में चारों ओर चक्कर काटती हुई और ज़मीन पर उतरती हुई एक चिड़िया की तरह प्रिंस एण्ड्र्यू से

दो क़दम की दूरी पर, और बटालियन कमाण्डर के बिल्कुल पास, एक बम थोड़ा सा शोर मचाता हुआ गिर पड़ा। घोड़ा इस बात की ज़रा भी परवाह न करके कि भय-प्रदर्शन करना ठीक होगा या नहीं—हिनहिनाया, उछला, और एक ओर को भाग चला। घोड़े का भय सिपाहियों में भी संचरित हो गया।

ऐडजूटेण्ट ने ज़मीन पर चारों ख़ाने चित लेटते हुए चिल्लाकर कहा 'लेट जाओ।' प्रिंस एण्ड्रयू सङ्कोच में पड़ गया। वह बम लेटे हुए ऐडजूटेण्ट और प्रिंस एण्ड्रयू के बीच में खेत और मैदान की बटिया पर एक जङ्गली पौदे के पास धुँआ देता हुआ लट्टू की तरह नाचने लगा।

प्रिंस एण्ड्रयू ने घास, उस नाचते हुए काले गोले से उठते हुए छल्लेदार धुँए की ओर एक नवीन, उत्सुक दृष्टि से देखा और मन ही मन कहा—'क्या इससे मृत्यु सम्भव है ? मैं नहीं मर सकता—मैं मरना नहीं चाहता : मैं जीवन को प्यार करता हूँ—इस घास को प्यार करता हूँ, इस पृथिवी को प्यार करता हूँ, इस वायु को प्यार करता हूँ...' उसके मस्तिष्क में इसी प्रकार की विचार-धारा उत्पन्न होने लगी, और साथ ही उसे याद आया कि लोग उसकी ओर देख रहे हैं।

उसने ऐडजूटेण्ट से कहा--'महोदय, आपको शर्म आनी... !' पर उसका वाक्य पूरा न हो सका। तत्क्षण एक भड़ाके की आवाज़--मानो किसी खिड़की का शीशा टूटा हो--और बारूद की तीव्र विषाक्त गन्ध आई, प्रिंस एण्ड्रयू कूदकर एक ओर को

उछला, अपना हाथ उठाया, और सीने के बल गिर पड़ा। कई अफ़सर दौड़कर उसके पास जा पहुँचे। उसके पेडू के दाहिनी ओर से रक्त के फ़व्वारे निकल रहे थे जिससे घास पर बड़ा सा चकत्ता बन गया था।

स्ट्रैचर वाहक आकर अफ़सरों के पास खड़े हो गये। प्रिंस एण्ड्रयू सीने के बल घास में मुँह किये पड़ा था और उसका साँस भर्राया हुआ और भारी था।

'अरे तुम वहाँ क्या देख रहे हो? इधर चलो!'

देहाती आगे बढ़े और उन्होंने प्रिंस एण्ड्रयू के कन्धे और टाँगें पकड़ीं, पर वह इतने कातर भाव से कराहा कि उन्होंने एक दूसरे की ओर देखकर उसे फिर ज़मीन पर रख दिया।

किसी ने चिल्लाकर कहा—'इन्हें पकड़ो, उठाओ, परवाह मत करो!'

उन्होंने उसे फिर पकड़ा, और अबकी बार उठाकर स्ट्रैचर पर रख दिया।

अफ़सर कह रहे थे—'हे भगवान्, हे भगवान्! यह क्या ग़ज़ब हुआ? पेट! मौत बनी बनाई है! हे भगवान्!'

प्रिंस एण्ड्रयू ने आँखें खोलीं और फिर उसके पलक झँप गये।

देहाती सैनिक प्रिंस एण्ड्रयू को जङ्गल में से होकर, जहाँ गोली बारूद की गाड़ियाँ खड़ी हुई थीं, शफ़ाख़ाने में ले गये। शफ़ाख़ाना तीन तम्बुओं में था जिनके पर्दे ऊपर कर दिये गये थे। जङ्गल में गाड़ी और घोड़े खड़े हुए थे। तम्बू के आस पास आहत

सैनिकों से भूमि पटी पड़ी थी। तम्बुओं में से कभी ऊँची क्रुद्ध चिल्लाहटें आतीं, कभी कातर और वेदना-पूर्ण कराहटें। बीच बीच में मरहम पट्टी करनेवाले पानी लेने के लिए, या यह संकेत करने के लिए कि किसकी बारी है, बाहर निकलते। तम्बुओं के बाहर सैनिक अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए कराहते, लम्बी साँसें लेते, रोते, चीख़ते, शपथें खाते, या वोडका पीने को माँगते। कुछ मूर्च्छित थे। प्रिंस एण्ड्र्यू के वाहक इन आहत सैनिकों के ऊपर से होकर तम्बू के पास पहुँच गये और प्रतीक्षा करने लगे।

तम्बू में से एक डाक्टर रक्त से रँगा हुआ चोग़ा पहने बाहर निकला। उसने रक्त से भीगे हुए छोटे से हाथ में अँगूठे और कनी अँगुली के बल एक सिगार पकड़ रक्खा था, जिससे वह रक्त से भीग न जाय। उसने अपना सिर उठाया और चारों ओर देखना आरम्भ किया, पर आहतों के सिरों से ऊपर की ओर। वह कुछ दम लेना चाहता था। उसने कुछ देर तक इधर उधर देखकर लम्बी साँस ली, और नीचे की ओर दृष्टि की।

एक मरहम पट्टी करनेवाले ने प्रिंस एण्ड्र्यू की ओर संकेत किया। डाक्टर ने कहा—'लो अभी लो।' और उसे अन्दर ले जाने की आज्ञा दी।

जो आहत सैनिक प्रतीक्षा कर रहे थे, उनमें बड़बड़ाहट सुनाई दी। एक ने कहा—'ऐसा मालूम पड़ता है कि दूसरी दुनिया में भी सिर्फ़ बड़े आदमी ही रह सकेंगे।'

तम्बू में तीन मेज़ें थीं। दो घिरी हुई थीं और तीसरी पर प्रिंस एण्ड्र्यू लेटा हुआ था। कुछ देर के लिए वह अकेला रह गया और उन दोनों मेज़ों पर जो कुछ हो रहा था उसकी ओर देखने लगा। उसके पासवाली मेज़ पर एक तातार क़ज्ज़ाक बैठा हुआ था। उसे चार सिपाही पकड़ रहे थे, और चश्मा लगाये एक डाक्टर उसकी भूरी कमर के एक सुदृढ़ पुट्ठे को काट रहा था।

क़ज्ज़ाक कराहता दिखाई दिया—'ऊह! ऊह!' और अकस्मात् उसने अपनी चौड़ी नाकवाले साँवले चेहरे को ऊपर उठाकर दाँत निकालकर अपने शरीर के इधर उधर हिलाना और लगातार गूँजती हुई कलेजे को बींधनेवाली आवाज़ में कराहना शुरू कर दिया। दूसरी मेज़ के चारों ओर बहुत से आदमी एकत्र थे और उस पर एक लम्बा चौड़ा काले सिरवाला आदमी कमर के बल लेटा हुआ था। प्रिंस एण्ड्र्यू को वह घुँघराला सिर, उसका रङ्ग, उसकी बनावट, सब आश्चर्य्य-जनक ढङ्ग से परिचित सी दिखाई दी। कई मरहम-पट्टी करनेवाले उसके सीने पर ज़ोर लगाकर उसे बलपूर्वक लिटाये हुए थे। उसकी एक बड़ी सी, सफ़ेद मांसल टाँग बराबर काँप रही थी। वह आदमी बुरी तरह फफक फफककर रो रहा था और आँसुओं से उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया था। जब डाक्टर ने तातार का काम समाप्त कर दिया और उसे एक ओवरकोट से ढक दिया, तो वह अपने हाथ पोंछता हुआ प्रिंस एण्ड्र्यू के पास आया।

उसने प्रिंस एण्ड्र्यू के चेहरे की ओर दृष्टिपात किया और झटपट वहाँ से हटते हुए मरहम पट्टी करनेवालों से चिल्लाकर कहा—'इसके कपड़े उतारो! तुम लोग खड़े हुए क्या मुँह देख रहे हो?'

जिस समय एक मरहम पट्टी करनेवाले ने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर उसके कपड़े उतारने आरम्भ किये तो प्रिंस एण्ड्र्यू के मस्तिष्क में बिल्कुल आरम्भ की—शैशवकालीन—स्मृतियाँ जागृत हो उठीं। डाक्टर ज़ख़्म के ऊपर झुका, उसे उसने हाथ से छुआ, और लम्बी साँस ली। इसके बाद उसने किसी की ओर कुछ संकेत किया; और प्रिंस एण्ड्र्यू अपने पेड़ू की दारुण वेदना से मूर्च्छित हो गया। जब उसे होश आया तो उसकी जाँघ की आहत हड्डी काटी जा चुकी थी, कटे हुए मांस के चीथड़े अलग कर दिये गये थे, और ज़ख़्म पर पट्टी बाँध दी गई थी। उसके चेहरे पर पानी छिड़का जा रहा था। प्रिंस एण्ड्र्यू के आँखें खोलते ही डाक्टर ने झुककर उसका चुम्बन किया और फिर वह वहाँ से शीघ्रता से चला गया।

इस दारुण वेदना के बाद से प्रिंस एण्ड्र्यू एक ऐसी स्वर्गीय भावना की अनुभूति करने लगा जो इधर बहुत दिनों से उसके हृदय में उत्पन्न नहीं हुई थी। उसके स्मृति-पटल पर अंकित उसके जीवन की सुन्दरतम स्मृतियाँ—विशेषकर शैशवकाल की, जब उसे बिछौने पर लिटा दिया जाता था, और जब नर्स उसके बिछौने पर झुक झुककर उसे सुलाने के लिए लोरियाँ गाती थी और वह अपना

सिर तकिये में छिपाकर जीवन की चेतनता मात्र से आनन्द में मग्न हो जाता था—अङ्कित हो आईं, और वे केवल अतीत की सम्पत्ति ही प्रतीत न हुईं, बल्कि वर्तमान की वस्तु-स्थिति।

डाक्टर उस आदमी की चीरा-फाड़ी करने में बेतरह संलग्न थे जिसका सिर प्रिंस एण्ड्र्यू को परिचित दिखाई देता था। वे लोग उसे उठा रहे थे और शांत करने की चेष्टा कर रहे थे।

उसने वेदना से दबी हुई और सुबकियों से टूटी हुई कराहट के साथ कहा—'मुझे दिखा दो...ऊ,ऊह...ओह! ऊ, ऊह!'

आहत व्यक्ति को उसकी ख़ून से लथपथ बूट चढ़ी कटी हुई टाँग दिखाई गई।

वह स्त्रियों की तरह रोदन करने लगा—'ओह! ओ, ऊह!'

डाक्टर उसके पास खड़ा हुआ था, अतः प्रिंस एण्ड्र्यू उसका चेहरा न देख सकता था। अब डाक्टर हट गया।

प्रिंस एण्ड्र्यू स्वगत कहने लगा—'हे भगवान्! यह क्या? यह यहाँ कैसे आ पहुँचा?'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उस अभागे, सुबकते हुए, अनातोले कुरागिन को पहचान लिया! आदमी उसे अपनी बाहों में पकड़े हुए थे और उसके मुँह में पानी का गिलास लगा रहे थे, पर वह अपने कम्पित सूजे हुए ओठों में उसका किनारा न पकड़ पाता था। अनातोले बुरी तरह रोदन कर रहा था। प्रिंस एण्ड्र्यू ने मन ही मन कहा (पर अभी उसकी समझ में वह सारा व्यापार अच्छी तरह न आया था)—'हाँ, यह वही है; हाँ, यह आदमी किसी

न किसी रूप में मुझसे घनिष्ठ और व्यथाकारी ढंग से सम्बद्ध है। इस आदमी का मेरे शैशवकाल से और मेरे जीवन से क्या सम्बन्ध है ?' पर वह इसका उत्तर न पा सका। और अकस्मात् शैशवकाल और प्रेम के राज्य से उसके मस्तिष्क में एक नई स्मृति जागृत हो उठी। उसे उस समय की नटाशा का स्मरण हो आया जब उसने उसे १८१० में नृत्य में उसके पतले दुबले कन्धों और गर्दन और सलज्ज, आनन्दपूर्ण और हर्ष के लिए तत्पर मुखमण्डल के साथ देखा था। उसके प्रति हृदय में ऐसा प्रबल प्रेम और सहृदयता उद्दीप्त हो उठी जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। अब उसे याद आया कि उसमें और उस आदमी में जो अपने सूजे हुए नेत्रों में से उसकी ओर ताक रहा है क्या सम्बन्ध है। उसे सारी बातें याद हो आईं और उस आदमी के लिए उसका आनन्दोल्लसित हृदय भावावेश-पूर्ण करुणा और प्रेम से ओत-प्रोत हो गया।

प्रिंस एण्ड्र्यू अपने आपको अब और संयत न रख सका और अपने देशवासियों के लिए, अपने लिए, और अपने और उनके अपराधों के लिए सुकोमल, स्नेहपूरित आँसू बहाने लगा।

'दया, अपने भाइयों के प्रति प्रेम, उनके प्रति प्रेम जो हमसे प्रेम करते हैं, और उनके प्रति जो हमसे घृणा करते हैं, अपने शत्रुओं के प्रति प्रेम; हाँ, यही वह प्रेम था जिसका उपदेश भगवान् ईसु ने पृथिवी पर अवतरित होकर दिया था, जिसका पाठ प्रिंसेज़ मेरी ने मुझे पढ़ाने की चेष्टा की थी और जो मेरी समझ

में न आ सका था—और यही कारण था जो मैं अपने जीवन में आनन्दित न रह सका—और यही मेरे जीवन का एक मात्र अवशिष्ट पदार्थ था। पर अब समय जाता रहा। मैं यह जानता हूँ !'

तीसरा परिच्छेद

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक पन्द्रह वर्षों में योरुप के असंख्य मनुष्यों ने एक बिल्कुल अस्वाभाविक और नवीन कार्य-कलाप का प्रदर्शन किया। लोगों ने अपने स्वाभाविक कार्य छोड़ दिये, योरुप के एक सिरे से दूसरे सिरे पर जाकर लूट-मार और हत्याएँ कीं और बाद को दुःख शोक के आगे आत्मसमर्पण किया। और इस प्रकार जीवन का सारा कार्यक्रम कुछ वर्षों के लिए बिल्कुल बदल गया। उसने एक ऐसे व्यापक आन्दोलन को जन्म दिया जो प्रारम्भ में प्रबल से प्रबलतर होता गया, और फिर शनैः शनैः शान्त होता गया। इस आन्दोलन का क्या कारण था, या यह किन विधानों से संचालित हुआ था ?—मानवी बुद्धि जिज्ञासा करती है।

इस प्रश्न के उत्तर में इतिहासज्ञ हमारे सामने पैरिस की एक इमारत में बैठकर कुछ दर्जन लोगों ने जो कुछ किया और कराया उनकी कार्यवाही रख देते हैं जिसे 'विप्लव' के नाम से पुकारा जाता है। इसके बाद वे नैपोलियन और उसके कुछ स्वपक्षी अथवा प्रतिपक्षी लोगों की विस्तृत जीवनी देते हैं, और बताते हैं कि उनमें से किनका किन पर कितना और कैसा प्रभाव था, और अन्त में कहते हैं कि इसी लिए यह आन्दोलन हुआ था, और ये उस आन्दोलन के नियम हैं।

पर मानवी बुद्धि न केवल इस विवरण को स्वीकार करने से इन्कार ही कर देता है, बल्कि स्पष्टतया घोषित करती है कि यह ढङ्ग नितान्त भ्रामक है, क्योंकि इसमें दुर्बल प्रदर्शन को प्रबल प्रदर्शन का कारण माना है। मानवी इच्छाओं के सामूहिक रूप से विप्लव और नैपोलियन का जन्म हुआ, और इच्छाओं के इस सामूहिक रूप ही ने इन दोनों को प्रश्रय दिया और नष्ट कर दिया।

'पर जब कभी विजय हुई तभी विजेता भी हुए; जब कभी किसी देश में विप्लव हुआ, तभी महान् पुरुष भी हुए', इतिहास यह कहता है। और मानवी बुद्धि भी उत्तर देती है कि सचमुच जब कभी विजेता हुए तभी युद्ध भी हुए, पर इससे यह कहाँ सिद्ध हुआ कि वे विजेता ही युद्धों के जन्मदाता थे, या यह कि युद्ध-सम्बन्धी विधानों को किसी व्यक्तिविशेष के कार्य्य-कलाप में पाना सम्भव है? जब कभी मैं अपनी जेबी घड़ी की ओर दृष्टि डालकर उसकी सुई को दस पर पहुँचते देखता हूँ, तभी मेरे कानों में पड़ोस के एक गिर्जे की घड़ी के दस बजाने की आवाज़ आती है; पर चूँकि जब कभी मेरी घड़ी की सुइयाँ दस पर पहुँचती हैं तभी गिर्जे का घण्टा बजना आरम्भ होता है, इसी लिए मुझे यह निष्कर्ष निकालने का कोई अधिकार नहीं है कि मेरी जेबी घड़ी की सुइयों की स्थिति ही गिर्जे की घड़ी के सञ्चालन का कारण है।

जब कभी मैं किसी इञ्जिन को चलते देखता हूँ, मेरे कानों में सीटी की आवाज़ आती है, मैं उसकी दराज़ों को खुलते देखता हूँ और पहियों को घूमते देखता हूँ, पर मुझे यह निष्कर्ष निकालने

का कोई अधिकार नहीं है कि इञ्जिन के चलने का कारण सीटी बजना और पहियों का घूमना है।

देहाती कहते हैं कि वसन्त ऋतु के अन्तिम दिनों में शीतल वायु इसलिए चलती है कि उस समय शाहवलूद में कोंपल निकलती हैं। पर यद्यपि मैं यह तो नहीं जानता कि शाहवलूद की कोंपलें खिलने के दिनों में शीतल वायु के चलने का क्या कारण है, पर मैं देहातियों के साथ इस बात में कदापि सहमत नहीं हो सकता कि शीतल वायु चलने का कारण शाहवलूद की कोंपलों का खिलना है, क्योंकि वायु की प्रबलता कोंपलों के प्रभाव से बिल्कुल स्वतन्त्र सत्ता रखती है। मैं इसमें प्रकृति में निरन्तर घटित होनेवाली घटनाओं का आकस्मिक संघर्ष मात्र देखता हूँ, और यह देखता हूँ कि मैं घड़ी की सुइयों और इञ्जिन के पहियों, और शाहवलूद की कलियों को चाहे जितने ध्यान से और चाहे जितना देखूँ, मैं यह कभी न जान सकूँगा कि गिर्जे की घड़ी के बजने, या इंजिन के पहियों के घूमने, या वसंत ऋतु के अन्त में शीतल वायु के बहने का वास्तविक कारण क्या है। इसके लिए मुझे अपना दृष्टिकोण पूर्णतया बदल देना होगा और मुझे बड़ी घड़ियों, और इंजिन के पहियों, और वायु के चलने के विधानों का अध्ययन करना पड़ेगा। इतिहास को भी यही करना चाहिए। और इस ओर को प्रगति आरम्भ हो गई है।

एक दर्जन योरुपीय राष्ट्रों ने रूस पर धावा किया। रूसी सेना और रूसी जनता ने संघर्ष से बचने के लिए

स्मोलेन्स्क, और स्मोलेन्स्क से बोरोडिनो का मार्ग लिया। फ्रेंच सेना अपने लक्ष्य—मास्को—की ओर अधिकाधिक प्रबलता से बढ़ती गई और उसकी वह उत्तरोत्तर बढ़ती हुई प्रबलता उस प्रबलता की तरह थी जिसकी अनुभूति कोई ऊँचे स्थान से गिरता हुआ आदमी पृथिवी के अधिकाधिक निकट पहुँचते समय करता है। फ्रेंच सेना के पीछे बुभुक्षित और क्रुद्ध जनता से घिरा हुआ हज़ारों मील लम्बा चौड़ा देश फैला हुआ था—सामने उनके लक्ष्य तक पहुँचने में केवल कुछ दर्जन मील शेष रह गये थे। नैपोलियन की सेना का प्रत्येक सैनिक इस बात की अनुभूति कर रहा था, अत: आक्रमण अपनी निजी प्रबलता के साथ स्वत: आगे बढ़ता चला गया।

रूसी सेना ज्यों ज्यों भागती गई, उसी परिमाण में उसमें शत्रु के प्रति घृणा की भावना अधिकाधिक प्रज्वलित होती गई; ज्यों ज्यों वह पीछे हटती गई, यह भावना अधिकाधिक केन्द्रित और प्रबल होती गई। बोरोडिनो के निकट एक मुठभेड़ हो गई। दोनों में से कोई सेना ध्वस्त नहीं हुई, पर रूसी सेना इस मुठभेड़ के बाद उतनी ही अनिवार्य्यता के साथ पीछे हटी जितनी अनिवार्य्यता के साथ एक ऐसी गेंद का हटना सम्भव था जिस पर किसी दूसरी गेंद का आघात अपेक्षा-कृत प्रबल वेग के साथ किया गया हो। और उतनी ही अनिवार्य्यता के साथ आक्रमण-कारिणी गेंद (यद्यपि इस मुठभेड़ से उसकी शक्ति नष्ट हो चुकी थी) अपनी प्रगति के प्रबल वेग में स्वयं ही एक ख़ास दूरी तक लुढ़कती हुई चली गई।

रूसी सेना अस्सी मील दूर—मास्को के दूसरी ओर—भाग गई, फ्रेंच सेना मास्को पहुँची और वहाँ निश्चेष्ट भाव से रुक गई। इसके बाद पाँच सप्ताह तक फिर कोई लड़ाई नहीं हुई। फ्रेंच सेना आगे न बढ़ी। वह—किसी सांघातिक रूप से आहत पशु की तरह जो अपने सङ्गीन आघात को चाट रहा हो—मास्को में पाँच सप्ताह तक बिना कुछ किये बनी रही और फिर, बिना किसी कारण के भाग निकली। वह काल्गा रोड पर वापस झपटी और एक विजय के बाद फिर कोई युद्ध किये बिना पहले से भी अधिक शीघ्रता के साथ स्मोलेन्स्क, स्मोलेन्स्क के बाद वैरेज़िना, वैरेज़िना के बाद विल्ना और उसके आगे भागती चली गई।

———

चौथा परिच्छेद

हैलेन आज कल पीटर्सबर्ग में थी और बड़े असमंजस में पड़ी हुई थी।

पीटर्सबर्ग में उसे एक ऐसे अमीर का संरक्षण प्राप्त था जो सारे साम्राज्य भर में उच्चतम पदाधिकारियों में से समझा जाता था। जब वह विदेश गई थी तो वहाँ उसने एक विदेशी युवक प्रिंस से अंतरंग सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। जब वह पीटर्सबर्ग वापस लौटी तो वह अमीर और वह प्रिंस दोनों वहीं मौजूद थे। अब दोनों अपने अपने अधिकारों का दावा करने लगे। फलतः हैलेन को एक ऐसी समस्या का सामना करना पड़ा जो उसके लिए नई चीज़ थी। वह दोनों से अंतरंग सम्बन्ध अक्षुण्ण रखना चाहती थी और दोनों में से किसी को नाराज़ नहीं करना चाहती थी।

जो बात अन्य किसी स्त्री को कठिन या असम्भव प्रतीत होती उसी से काउण्टेस हैलेन तनिक भी संकुचित न हुई। वह सारे समाज में अत्यंत बुद्धिमती स्त्री के नाम से प्रसिद्ध थी, और इस प्रसिद्धि का वह स्वयं भी काफ़ी आदर करती थी। यदि वह लुका-छिपो करने की चेष्टा करती, या अपनी इस बुरी स्थिति से बुद्धि-कौशल से निकलने का प्रयत्न करती तो वह अपने अपराधिनी होने की बात प्रतिपादित करके अपना मामला बिगाड़ डालती। पर

हैलेन ने तुरन्त ही—किसी सचमुच के महान् पुरुष की तरह जो स्वच्छन्दतापूर्वक कार्य्य करता है—यह धारणा कर ली थी कि उसकी स्थिति अच्छी ख़ासी है—और वास्तव में वह इसमें हृदय से विश्वास भी करती थी—और सारा दोष औरों के सिर पर है।

एक बार युवक विदेशी ने उसकी भर्त्सना करने का साहस कर ही डाला; और इसके उत्तर में उसने गर्व के साथ अपना सुन्दर सिर ऊपर उठाया, और दृढ़ स्वर में कहा:—

'हाँ, पुरुष जाति ही ऐसी होती है—स्वार्थी और निर्मम! मुझे तुमसे और किसी बात की आशा थोड़े ही थी? एक स्त्री तुम्हारे ऊपर अपना बलिदान करती है, पीड़ित होती है, और उसे यह पुरस्कार मिलता है! महोदय, मेरी मैत्रियों और अंतरंग संबंधों की सफ़ाई माँगने का आपको क्या अधिकार है? वह मेरे लिए पिता से भी अधिक हैं!'

प्रिंस कुछ कहनेवाला था, पर हैलेन ने बाधा दी।

उसने कहा—'हाँ, यह हो सकता है कि उनके भाव मेरी ओर एक पिता के भावों से भिन्न हैं, पर केवल इसी कारण मुझे उनके लिए अपना द्वार बंद न कर लेना चाहिए। मैं कोई पुरुष तो हूँ नहीं, जो किसी की कृपा का एवज़ कृतज्ञता से चुकाऊँ! महोदय, यह समझ रखिए कि जिन-जिन बातों का मेरे अंतरंग भावों से संबंध है उनकी सफ़ाई मैं केवल भगवान् और अपनी आत्मा को देती हूँ।' और उसने स्वर्ग की ओर दृष्टि उठाकर अपना हाथ अपने पूर्ण विकसित वक्षःस्थल पर रक्खा।

'पर ईश्वर के लिए मेरी बात भी तो सुनो !'

'मुझसे व्याह कर लो और मैं तुम्हारी दासी हो जाऊँगी !'

'पर यह असम्भव है !'

'तुम मुझसे व्याह करके पतित होने को तैयार नहीं होना चाहते ! तुम......।' और हैलेन ने रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया।

प्रिंस ने आत्म-समर्पण करते हुए कहा—'पर क़ानून...धर्म।'

हैलेन ने उत्तर दिया—'क़ानून, धर्म...उन्हें किस लिए बनाया गया है ?'

विदेशी प्रिंस को बड़ा विस्मय हुआ कि इतनी साधारण सी बात उसे ख़ुद न सूझी।

सारे पीटर्सबर्ग में किंवदन्ती फैल गई, यह नहीं कि हैलेन अपने पति से त्यक्त होना चाहती है—यदि ऐसी किंवदन्ती फैलती तो इस दोषपूर्ण विचार का विरोध करने को बहुत से निकल आते—बल्कि केवल यह कि अभागी और रोचक हैलेन द्विधा में पड़ी हुई है कि दोनों में से वह किसके साथ विवाह करे। अब सवाल यह नहीं था कि यह बात सम्भव है या असम्भव, बल्कि केवल यह था कि दोनों में से कौन सा वर अच्छा है और राजदरबार इस सम्बन्ध को किस दृष्टि से देखेगा। पहले पति के जीवित रहते विवाह करना अच्छा है या बुरा, इसका कोई ज़िक्र न था।

हैलेन ने अपने विचक्षणमति मित्र बिलिबिन से पूछा :—

'सुनो बिलिबिन' (हैलेन अपने इस ढंग के मित्रों को इसी प्रकार आधे नाम से पुकारती थी) और उसने अपनी अँगूठियों

से ढकी हुई अँगुलियों से उसकी आस्तीन छुई—'तुम मुझे अपनी बहिन समझकर बताओ मुझे क्या करना चाहिए। दोनों में से किसको ?'

बिलिबिन ने मुस्कराते हुए भँवों में बल डालकर सोचते हुए कहा 'तुम यह मत समझना कि तुम यह प्रश्न अचानक ही पूछ बैठी हो। मैंने तुम्हारे सच्चे हितैषी की हैसियत से इस समस्या पर एक से अधिक बार विचार किया है। देखो, अगर तुम प्रिंस से व्याह करती हो'—उसका मतलब विदेशी युवक से था, और उसने अपनी एक अँगुली मोड़ी—'तो तुम्हें दूसरे के साथ व्याह करने की आशा हमेशा के लिए छोड़ देनी पड़ेगी, और इसके अलावा राजदरबार भी तुमसे अप्रसन्न हो जायगा। (तुम जानती ही हो कि कुछ रिश्तेदारी है।) पर अगर तुम इस वृद्ध से शादी करोगी तो उसके अन्तिम दिवस भी सुख में कट जायेंगे, और फिर एक बड़े अमीर की विधवा की हैसियत से तुम प्रिंस से विवाह करोगी तो कुछ बेजोड़ न रहेगा।' और उसके माथे की सिल्वटें साफ़ हो गईं।

हैलेन ने दमककर उसकी आस्तीन फिर छूकर कहा—'तुम्हारी बात नपी-तुली है मित्र! पर मैं दोनों से प्यार करती हूँ और दोनों में से किसी को कष्ट नहीं देना चाहती। मैं उन दोनों के सुख के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार हूँ।'

बिलिबिन ने अपने कन्धे उचकाये, जिसका आशय था कि वह भी इस समस्या को सुलझाने में असमर्थ है।

वह सोचने लगा—'वाह, क्या बेढब औरत है ! इसी को मैं नाप जोख कर मामला ठीक करना कहता हूँ। इसका बस चले तो तीनों से एक साथ शादी कर डाले।'

पर उसकी तीक्ष्ण बुद्धि की प्रसिद्धि इतने दृढ़ रूप से स्थापित हो चुकी थी कि उसे निम्नलिखित सरलतापूर्ण प्रश्न करने में किसी प्रकार की आशङ्का न हुई—

'पर यह तो बताओ, तुम्हारा पति इस मामले को किस दृष्टि से देखेगा ? वह सहमत हो जायगा ?'

'ओह, वह मुझे इतना प्यार करते हैं कि मेरे लिए सब कुछ करने को तैयार हो जायँगे।' हैलेन ने किसी प्रकार कल्पना कर ली कि वास्तव में पीरी भी उसे प्यार करता है।

बिलिबिन ने कुछ चुभती हुई बात कहने के लिए अपने गाल फुलाये।

बोला—'तलाक़ तक देने को ?'

हैलेन हँस पड़ी।

अगस्त का आरम्भ होते होते हैलेन का मामला बिल्कुल स्पष्ट हो गया और उसने अपने पति को—जो उसकी समझ में उससे बेहद प्रेम करता था—पत्र लिखा जिसमें उसने उसे सूचित किया कि वह एन० एन० से विवाह करना चाहती है, और उसने एक-मात्र शाश्वत धर्म का आलिंगन कर लिया है, और उससे अनुरोध किया कि वह तलाक़ के लिए आवश्यक सारे रीति-रिवाजों को पूरा

कर डाले। उसने लिखा कि तलाक़ के विषय में सारी आवश्यक बातें पत्रवाहक बतावेगा।

'और अन्त में मैं—मेरे मित्र—ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वह तुम्हारे ऊपर अपना पवित्र और शक्तिशाली हस्त रक्खे रहे—तुम्हारी मित्र हैलेन।'

यह पत्र पीरी के घर उस समय लाया गया जब वह बोरोडिनो के युद्ध में था।

——

पाँचवाँ परिच्छेद

पीरी युद्धक्षेत्र से मास्को जा पहुँचा। नगर के द्वार पर ही उसे नगररक्षक काउण्ट रोस्टोपचिन का ऐडजूटेंट मिला।

उसने पीरी से कहा—'वाह, हम लोग चारों तरफ़ आपकी खोज करते फिर रहे हैं। काउण्ट आपसे ख़ास तौर से मिलना चाहते हैं। उन्होंने आपसे अनुरोध किया है कि आप उनसे फ़ौरन् जाकर मिलें। कोई बड़ी आवश्यक बात है।'

पीरी घर न जाकर एक किराये की गाड़ी में सवार होकर मास्को के कमाण्डर-इन-चीफ़ की ओर रवाना हो गया।

जिस समय पीरी ने मुलाक़ाती कमरे में प्रवेश किया उस समय काउण्ट रोस्टोपचिन के कमरे से एक संवाद-वाहक बाहर निकल रहा था। उसने अनेक प्रश्नों के उत्तर में एक क्षोभपूर्ण संकेत किया और कमरे से बाहर चला गया।

पीरी मुलाक़ाती कमरे में प्रतीक्षा करता हुआ वहाँ उपस्थित अनेक—युवक और वृद्ध, सैनिक और नागरिक—अफ़सरों को देखता रहा। वे सब असन्तुष्ट और क्षुब्ध दिखाई देते थे। पीरी भी इस समुदाय के पास पहुँचा और उसमें उसका एक परिचित व्यक्ति भी निकल आया। पीरी का अभिवादन करके उन्होंने फिर वार्तालाप आरम्भ कर दिया।

पीरी ने पूछा—'क्या मामला है ?'

'अजी एक नया घोषणापत्र जारी किया गया है।'

पीरी ने उसे लेकर पढ़ना आरम्भ किया।

'हिज़ सीरीन हाईनेस प्रिंस कुटूज़ोव ने एक ऐसी मोर्चेबन्दी क़ायम की है जहाँ शत्रुसेना उन पर शीघ्र ही आक्रमण न करेगी। उनकी सहायता के लिए गोले-बारूद के साथ चालीस तोपें यहाँ से भी भेजी गई हैं, और हिज़ सीरीन हाईनेस कहते हैं कि वह मास्को की रक्षा अपने शरीर में एक बूँद रक्त बाक़ी रहते तक करते रहेंगे और सड़कों पर लड़ते रहने से मुँह न मोड़ेंगे। भाइयो, न्यायालयों के बंद होने से घबराने की कोई बात नहीं है; उन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है, और दुष्ट नैपोलियन से हम अपने निराले ही ढंग से पेश आयेंगे। जब समय आयगा तो मुझे नगर और देहात, दोनों स्थानों के जवानों की आवश्यकता पड़ेगी। मैं भी अब अच्छा हूँ; मेरी एक आँख में पीड़ा हो रही थी, पर अब मैं दोनों आँखों से सतर्कतापूर्वक देख रहा हूँ।'

'पर मुझे तो सैनिक व्यक्तियों ने बताया है कि नगर में युद्ध करना असम्भव है और कि मोर्चेबंदी...।' पीरी बोला।

पहले वक्ता ने कहा—'हम ख़ुद यही कह रहे थे। इसमें शक ही क्या है !'

पीरी ने पूछा—'और इसका क्या अर्थ है—"मेरी एक आँख में पीड़ा हो रही थी, पर अब मैं दोनों आँखों से सतर्कतापूर्वक देख रहा हूँ" ?'

ऐडजूटेएट ने मुस्कराकर कहा—'काउएट की आँख ज़रा सूज आई थी। और जब मैंने उनसे कहा कि आदमी यह पूछने आये हैं कि उनकी तबीयत कैसी है, तब वह बहुत घबराये। और हाँ, काउएट, यह तो बताइए,' उसने मुस्कराकर पीरी से कहा, 'हम लोगों ने आपके पारिवारिक झंझटों के विषय में कुछ सुना है। सुना है कि आपकी पत्नी काउएटेस...।'

पीरी ने अन्यमनस्क भाव से कहा—'मैंने कुछ नहीं सुना। आपने क्या सुना है ?'

'अजी आदमी भी इसी तरह उड़ा देते हैं। मैं भी सुनी-सुनाई ही कह रहा था।'

"हाँ, तो आपने क्या सुना ?'

'अजी लोग-बाग कहते हैं कि' उसने उसी प्रकार मुस्कराते हुए कहा—'आपकी पत्नी काउएटेस विदेश जाने की तैयारी कर रही हैं। ऐसे ही उड़ा दी होगी।'

पीरी ने उसी प्रकार अन्यमनस्क भाव से देखते हुए कहा—'मुमकिन है। हाँ, और यह कौन आदमी है ?' उसने एक नीला कोट पहने हुए सफ़ेद लम्बी दाढ़ी, सफ़ेद भँवों और खिले चेहरे-वाले वृद्ध की ओर संकेत करके कहा।

'यह ? यह एक व्यापारी है, यानी एक होटलवाला है—वैरेश्चेगिन। आपने वह घोषणापत्रवाला मामला तो सुना ही होगा ?'

पीरी ने वृद्ध के दृढ़ शान्त चेहरे की ओर देखते हुए और उसमें उसके विश्वासघातक होने का कोई चिह्न पाने की चेष्टा करते हुए कहा—'अच्छा, वह वैरेश्चेगिन यही है!'

ऐडजूटेंट ने कहा—'नहीं यह ख़ुद नहीं है। यह उस आदमी का पिता है जिसने वह घोषणापत्र लिखा था। लड़का जेल में पड़ा हुआ है और जहाँ तक मेरा ख़याल है, उस पर कड़ी बीतेगी।'

स्टार पहने हुए एक वृद्ध पुरुष, और एक जर्मन अफ़सर अपने गले में क्रास पहने, वक्ता के पास आ खड़े हुए।

ऐडजूटेण्ट ने कहा—'अजी, मामला बड़ा पेचीदा है। घोषणा-पत्र अब से दो महीने पहले हाथ लगा था। इसकी सूचना काउण्ट को दी गई। उन्होंने इस मामले की खोज करने की आज्ञा दी। अब जिब्राईल इवानिच ने छानबीन की। घोषणा-पत्र ठीक तरेसठ हाथों से निकलकर आया था। हम पता लगाते-लगाते वैराश्चेगिन के पास पहुँचे। आप जानते ही होंगे, अर्ध-शिक्षित व्यापारी—टटपूंजिया सौदागर।' ऐडजूटेण्ट ने मुस्करा-कर कहा। उससे पूछा गया, "तुम्हें यह किसने दिया?" और असली मामला यह है कि हम अच्छी तरह जानते हैं कि वह उसे कहाँ से मिला। उसे वह सिर्फ़ डायरेक्टर आफ़ दी पोस्ट आफ़िस के पास से मिला होगा। पर यह साफ़ ज़ाहिर था कि दोनों में पहले से ही कुछ साँठ-गाँठ हो गई थी। उसने उत्तर दिया, "किसी ने नहीं, मैंने यह ख़ुद बनाया।" और काउण्ट को इसकी सूचना दे दी गई। उन्होंने इस आदमी को बुलवा भेजा

और पूछा—"तुम्हें यह घोषणा-पत्र कहाँ से मिला ?" "मैंने यह .खुद बनाया।" और "आप काउएट को जानते ही हैं।" ऐडजूटेएट ने गर्व-पूर्ण और उल्लसित मुस्कराहट के साथ कहा—'वह बेतरह बिगड़ उठे, और ज़रा सोचिए तो, कितनी हिम्मत, झूठ और ज़िद है !'

पीरी ने पूछा—'और काउएट उससे यह कहलाना चाहते थे कि उसे वह डायरेक्टर आफ़ पोस्ट आफ़िस से मिला था ?'

ऐडजूटेएट ने हताश भाव से कहा—'नहीं जी, ज़रा भी नहीं। डायरेक्टर ने इसके अलावा और ही बहुत से पाप किये हैं, और इसी लिए उसे निर्वासित कर दिया गया। .खैर, मैं कह रहा था कि काउएट बिगड़ खड़े हुए। उन्होंने अपनी मेज़ पर से हैम्बर्ग गज़ट उठाते हुए कहा—"तू भला यह बना सकता था ? यह देख, यह मौजूद है। तूने यह खुद नहीं बनाया, तूने इसका अनुवाद किया है, और सो भी बिल्कुल भद्दा; क्योंकि हरामज़ादे, तू .फ्रेंच समझ तक नहीं सकता।" और इसके बाद क्या हुआ ? वह बोला—"नहीं, मैंने कोई समाचारपत्र नहीं पढ़ा, मैंने यह खुद बनाया था।" "अगर यह बात है तो तू विद्रोही है, और मैं तेरे ऊपर मुक़दमा चलाऊँगा और तुझे फाँसी पर लटका दूँगा ! अपना भला चाहता है तो अब भी बता दे, तुझे किसने दिया।" "मैंने कोई समाचारपत्र नहीं पढ़ा और मैंने यह .खुद बनाया है।" बस, बात आई, गई, खतम हुई। काउएट ने बाप को बुलाया, पर वह अपनी बात पर अड़ा रहा। उस पर मामला चलाया गया

और वहाँ से उसे सपरिश्रम कारावास का दण्ड मिला—मेरा तो यही ख़याल पड़ता है। अब उसका बाप उसकी सिफ़ारिश उठाने आया है। मगर वह ठहरा बिल्कुल निकम्मा लड़का !'

इतने ही में पीरी को मास्को के कमाण्डर-इन-चीफ़ रोस्टोपचिन के पास बुला लिया गया।

जिस समय वह उनके निजी कमरे में पहुँचा तो वह अपने गाल फुलाये एक हाथ से अपना माथा और नेत्र मल रहे थे। वह ठिगना सा वृद्ध आदमी (वैराश्चेगिन का पिता) कुछ कह रहा था, पर पीरी को आते देखकर वह रुक गया और कमरे के बाहर चला गया।

उस वृद्ध के बाहर जाते ही काउण्ट रोस्टोपचिन ने कहा—'कहो मेरे बाँके बहादुर, क्या हाल-चाल है ? मुझे तुम्हारी चुस्ती की सारी ख़बर मिल गई है। पर इस बात को छोड़ो। देखो भाई, घर की बात है। तुम्हें यह तो मालूम हो हो गया होगा कि मैसर्स स्पेरन्स्की और मैग्निट्स्की को उनके यथोचित स्थानों पर निर्वासित कर दिया गया है। डायरेक्टर आफ़ पोस्ट आफ़िस मि० क्ल्यूचारेव के साथ भी कुछ इसी ढंग का व्यवहार किया गया है। अब मुझे यह पता चला है कि उसके नगर से बाहर ले जाये जाने के लिए तुमने अपनी गाड़ी भेजी थी, और तुमने उसके कुछ काग़ज़-पत्र भी सम्हालकर रखने के लिए ले लिये थे। देखो, मैं तुम्हें चाव की निगाह से देखता हूँ और तुम्हें किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचाना चाहता और वैसे भी तुम मुझसे उम्र में आधे हो,

इसलिए मैं तुम्हें पिता की तरह नसीहत देना चाहता हूँ कि इस ढंग के आदमियों से संबंध रखना बिल्कुल छोड़ दो, और जितनी जल्दी बन पड़े यहाँ से चले जाओ।'

पीरी ने पूछा—'मगर क्ल्यूचारेव ने क़सूर क्या किया था ?'

रोस्टोपचिन ने चिल्लाकर कहा—'यह मेरे जानने की बात है, तुम्हारे पूछने की नहीं।'

पीरी ने रोस्टोपचिन की ओर बिना देखे कहा—'उन पर यह अभियोग लगाया गया है कि उन्होंने नैपोलियन के घोषणा-पत्र वितरण किये, पर यह सिद्ध कहाँ हुआ ? और इसके अलावा वैराश्चेगिन...।'

अकस्मात् रोस्टोपचिन ने तेवर बदलकर पहले से भी ज़ोर से चिल्लाकर कहा—'देखो, वैराश्चेगिन एक विश्वासघातक और विद्रोही है और उसे उसके अपराध के अनुसार ही दण्ड दिया जायगा। हाँ, भई यह तो बताओ, तुम ख़ुद क्या कर रहे हो ?'

'जी, कुछ नहीं !' पीरी ने अपने नेत्र उठाये बिना कहा, और उसकी ध्यानमग्न मुद्रा भी वैसी ही बनी रही।

काउण्ट रोस्टोपचिन ने भृकुटी बदली।

'देखो भाई, मैं नेक सलाह देता हूँ। जितनी जल्दी हो सके यहाँ से चले जाओ, बस मुझे तुमसे इतना ही कहना है। जिसके सुनने को कान हैं उसका मंगल होगा। अच्छा भाई सलाम। और हाँ !' उन्होंने दरवाज़े से निकलते हुए पीरी से चिल्लाकर

कहा—'क्या यह ठीक है कि काउएटेस धर्म-परिषद् के सदस्यों के हाथ में जा पड़ी है ?'

पीरी ने कोई उत्तर नहीं दिया, और पहले से भी अधिक विषण्ण और क्रुद्ध मुद्रा बनाकर काउण्ट रोस्टोपचिन के कमरे से चला गया।

जिस समय वह अपने घर पहुँचा तो अँधेरा हो चला था। उस दिन उससे मिलने के लिए कोई आठ आदमी आये थे; कमेटी का मंत्री, उसकी बटालियन का कर्नल, उसका स्टीवार्ड, उसका मेजर डोमो, और अन्य कई प्रार्थी! उन सबको पीरी से काम था और सब पीरी की आज्ञाएँ लेना चाहते थे। पीरी की समझ में इनमें से कोई बात नहीं आई, और न उसने किसी में रोचकता ही प्रकट की,. और किसी प्रकार पीछा छुड़ाने के लिए जो जी में आया कह दिया। जब वह अकेला रह गया तो उसने अपनी स्त्री का पत्र खोलकर पढ़ा।

'वे, मोर्चेबन्दी के सिपाही...प्रिंस एण्ड्रयू...मारे गये...वह वृद्ध आदमी...सरलता ईश्वर के आगे आत्मनिवेदन है। कष्ट उठना आवश्यक है...इन सबके अर्थ...बस, जोतना चाहिए... मेरी स्त्री विवाह करना चाहती है...हमें भूल जाना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि..' वह ऊपर अपने शयनागार में चला गया और बिना कपड़े उतारे पलँग पर पड़कर सो गया।

जब वह दूसरे दिन जागा तो उसके मेजर डोमो ने आकर सूचना दी कि काउण्ट रोस्टोपचिन के पास से एक विशेष

संदेशवाहक, एक पुलिस अफ़सर, पूछने आया है कि काउण्ट बैज़ूखोव चले गये, या जा रहे हैं।

कोई दस कामकाजी आदमी पीरी से मिलने के लिए ड्रायंगरूम में एकत्र थे। पीरी ने शीघ्रता से कपड़े पहने, और उन प्रतीक्षा करते हुए आदमियों से भेंट करने के लिए जाने के बजाय वह पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गया।

उस दिन से मास्को के विध्वंस के अन्त तक बहुत कुछ खोज करने पर भी, बै.ज़ूखोव के नौकर-चाकरों में से कोई भी पीरी को न देख सका, न कोई यह जान सका कि वह कहाँ है।

——

छठा परिच्छेद

रोस्टोव-परिवार मास्को में पहली सितम्बर तक—अर्थात् शत्रु-सेना के आने तक—रहा।

पीटिया ओबोलेनस्की की कज्ज़ाक रेजीमेंट में भर्ती होकर बेलायाज़ेरकोव को चला गया था। काउण्टेस पर भीति ने बेतरह अधिकार कर लिया था। दोनों पुत्र युद्ध में हैं, क्या पता आज या कल में दोनों में से किसी एक के या दोनों के मारे जाने की ख़बर आ जाय। उन्होंने निकोलस को वापस बुलाने की चेष्टा की, और पीटिया के पास स्वयं जा पहुँचने की इच्छा की, या उसे पीटर्सबर्ग ही में कहीं नियुक्त कराने की कोशिश की, पर उनके ये सारे प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए। पीटिया उस समय तक वापस न आ सकता था जब तक उसकी रेजीमेण्ट न आये, या उसे किसी और जगह अग्रसर रूप से काम करने का अवसर न दिया जाय। निकोलस सेना के साथ किसी स्थान पर था और उसने अपने अन्तिम पत्र के बाद--जिसमें उसने प्रिंसेज़ मेरी के साथ अपनी भेंट का सविस्तर वर्णन किया था--फिर कोई पत्र नहीं भेजा था। काउण्टेस को रात को नींद न आती, और नींद आती भी तो स्वप्न में उन्हें अपने दोनों पुत्र मरे हुए पड़े दिखाई देते। अन्त में बहुत से सलाह-मशविरों के

बाद काउण्ट ने उन्हें शान्त करने का एक उपाय निकाला। उन्होंने पीटिया का तबादला ओबोलेन्स्की की रेजीमेंट से बैजूखोव की रेजीमेंट में करा लिया जो मास्को के निकट शिक्षा पा रही थी। इससे यद्यपि पीटिया सैनिक नौकरी में ही रहेगा, पर इस तबादले से कम से कम काउण्टेस को अपने एक पुत्र को अपने परों के नीचे देखने की सान्त्वना रहेगी।

२० अगस्त तक रोस्टोव-परिवार का सारा परिचित वर्ग मास्को से चला गया था; और हर एक ने काउण्टेस को भी शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से निकल चलने की सलाह दी, पर उन्होंने अपने लाड़ले पीटिया के आने से पहले जाने की ओर ध्यान तक न दिया। अन्त में २८ अगस्त को वह आ ही गया। जिस मातृ-सुलभ स्नेह से उसकी माता ने उसे लिया उससे वह सोलह वर्ष का अफ़सर प्रसन्न न हुआ।

काउण्ट की स्वाभाविक लापरवाही के कारण २८ अगस्त तक बिदा होने के लिए कोई तैयारी न की जा सकी, और जो गाड़ियाँ उनका सामान ले जाने के लिए रयाज़न रियासत से आनेवाली थीं, वे भी ३० अगस्त से पहले न आ सकीं।

२८ से ३१ तक सारा मास्को अस्तव्यस्तता और चहल-पहल का केन्द्र बना रहा। प्रतिदिन बोरोडिनो के युद्ध के आहत सैनिक सहस्रों की संख्या में डोरोगोमिलोव द्वार से मास्को के विभिन्न भागों में ले जाये जाते और हज़ारों की तादाद में गाड़ियाँ मास्को के निवासियों और उनके माल-असबाब को ढो ढोकर बाहर ले

जातीं। रोस्टोपचिन के घोषणापत्रों के जारी होते रहने पर भी, उनसे बिल्कुल स्वतन्त्र रूप से, या उनके फल-स्वरूप नगर में विचित्र से विचित्र और घोर परस्पर-विरुद्ध किंवदंतियाँ फैली हुई थीं। कोई कहता कि नगर से जाने का बिल्कुल निषेध कर दिया गया है; दूसरे इसके विरुद्ध कहते कि सारे गिर्जों से मूर्तियाँ हटा ली गई हैं और हर एक को नगर से बलपूर्वक निकाल दिया जायगा। कोई कहते कि बोरोडिनो के बाद एक और युद्ध हुआ था जिसमें फ्रेंच हरा दिये गये। दूसरे कहते कि नहीं, रूसी सेना की हार हुई। कोई कहते कि मास्को की नागरिक सेना पादरी को अपने आगे कर थ्रीहिल्स पर जायगी; दूसरे कानाफूसी में कहते कि आगस्टिन को जाने की मुमानियत कर दी गई है, कि विश्वासघातक पकड़ लिये गये हैं, कि देहाती उन सबको लूट-खसोट रहे हैं जो मास्को से भाग रहे हैं, और आदि इत्यादि। पर ये सब बातें ही बातें थीं, वस्तुस्थिति यह थी (यद्यपि अभी फिली की युद्ध-परिषद् नहीं हुई थी जिसमें मास्को को शत्रु के हाथों में सौंपना निश्चित किया गया था) कि जो लोग मास्को से चले गये थे, और जो मास्को ही में रह गये थे उन सबको यह बोध हो रहा था—यद्यपि इसे वे प्रकट न करते थे—कि मास्को को निश्चय ही शत्रु के हाथ में सौंप दिया जायगा, और उन्हें जितनी जल्दी सम्भव हो, अपना मालमता लेकर वहाँ से चला जाना चाहिए। इस बात का सबको बोध हो रहा था कि कुछ आकस्मिक प्रस्फोटन और परिवर्त्तन परिवर्द्धन होनेवाला है, पर पहली सितम्बर तक किसी

२८

प्रकार का परिवर्त्तन न हुआ। जिस प्रकार किसी अपराधी को फाँसी के तख़्ते पर जाते समय मालूम रहता है कि उसे उसी दम मरना पड़ेगा, पर फिर भी वह इधर-उधर देखता है और अपनी टोपी सीधी करता है, ठीक उसी प्रकार मास्को ने भी अपना अभ्यस्त जीवन सहज रूप से बिताना जारी रक्खा यद्यपि वह जानता था कि उसके विध्वंस का समय निकटतर आ रहा है, जब जीवन की सारी अभ्यस्त परिस्थितियों को अलग तोड़ फेंका जायगा।

मास्को पर शत्रुसेना के अधिकार होने से पहले बराबर तीन दिन तक सारा रोस्टोव परिवार विभिन्न कार्य्यों में संलग्न रहा। परिवार के प्रधान, काउण्ट इलिया रोस्टोव, लगातार नगर में चक्कर लगाते रहते और चारों ओर से प्रचलित किंवदन्तियाँ संग्रह करके घर आते और बिदा होने के लिए अनावश्यक और शीघ्रता-पूर्ण आदेश देते।

काउण्टेस चीज़ों की सम्हाल सुधार देखती रहतीं, हर एक प्रबन्ध से असंतुष्ट रहतीं, और लगातार पीटिया की खोज में लगी रहतीं। पर वह उनकी छाया तक से भागता, और नटाशा के साथ ही दिन भर व्यतीत करना पसन्द करता। सोनिया ने सारी चीज़ों को सन्दूक़-पिटारों में बन्द कराकर सारे प्रबन्धों को प्रकृत रूप देना जारी रक्खा। पर इधर कुछ दिनों से सोनिया चुप और विषण्ण बनी रहती। निकोलस का पत्र प्राप्त होने पर, जिसमें उसने प्रिंसेज़ मेरी का ज़िक्र किया था, काउण्टेस ने उसके

सामने हर्षोल्लास-पूर्ण उद्गार व्यक्त किये थे। काउण्टेस प्रिंसेज़ और निकोलस के इस आकस्मिक मिलन में विधाता का हाथ देखतीं।

काउण्टेस ने कहा था—'मैं नटाशा और बोल्कोन्सकी के संबंध पर कभी ठंढी नहीं हुई, पर निकोलस का ब्याह प्रिंसेज़ के साथ हो जाने की कामना मैं हृदय से कर रही थी और मेरे जी में विश्वास-सा था कि ऐसा ही होगा। यह हो जाय तो कैसी अच्छी बात हो!'

सोनिया समझ गई कि बात बिल्कुल ठीक है—रोस्टोव परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक करने का केवल एक उपाय है, और वह यह कि निकोलस का विवाह किसी धनी स्त्री से करा दिया जाय, और प्रिंसेज़ बड़ी अच्छी बहू रहेगी। पर सोनिया के लिए यह सब कुछ बड़ा क्षोभकारी था। इस प्रकार शोक-संतप्त होते हुए भी, या इसी के परिणाम-स्वरूप उसने सारी चीज़ों की सम्हाल सुधार अपने ऊपर ली और सारे सामान को सन्दूक़-पिटारों में बन्द कराते कराते उसका सारा दिन बीत जाता। जब कभी काउण्ट या काउण्टेस को कोई आदेश देना होता तो वे उसी की अपेक्षा करते। इसके विपरीत पीटिया और नटाशा किसी काम के न थे और सबके कामों में अव्यवस्था और व्याघात उपस्थित करते फिरते। दिन भर सारा भवन उनके चारों ओर दौड़ने, उनके चीख़ने-चिल्लाने और अकारण खिलखिलाकर हँसने से गूँजता रहता। वे हँसते थे और उल्लसित थे, इसलिए नहीं

कि इसका कोई विशेष कारण था, बल्कि इसलिए कि उल्लास और प्रफुल्लता उनके हृदय में भरी हुई थी, और फलतः उन्हें जिस किसी चीज़ से पाला पड़ता वही उनके हास-परिहास और उल्लास का कारण बन जाती। पीटिया के पैर सजीवता के मारे उस समय ज़मीन पर न पड़ते, क्योंकि वह घर से बिल्कुल लड़का गया था, और अब वापसी में (जैसा कि उससे हर कोई कहता) बढ़िया युवक बन आया था, क्योंकि वह अब घर आ पहुँचा था, क्योंकि वह बेलायाज़ रकोव छोड़ आया था जहाँ युद्ध में भाग लेने की निकट भविष्य में कोई सम्भावना न थी, और अब मास्को आ पहुँचा था जहाँ शीघ्र ही युद्ध होनेवाला था। पर उसके पैर ज़मीन पर न पड़ने का एक मुख्य कारण था—वह यह कि नटाशा भी सजीव थी, और नटाशा की प्रवृत्ति के अनुकूल ही उसकी प्रवृत्ति भी रहती। नटाशा प्रफुल्लित थी क्योंकि वह बहुत दिनों तक उदास रह चुकी थी और अब उसे उसकी उस उदासी का स्मरण दिलाने-वाली कोई बात न थी, और क्योंकि वह अपने अन्दर सजीवता की अनुभूति करती थी। वह इसलिए भी प्रफुल्लित थी क्योंकि कोई उसकी आराधना-उपासना कर रहा था, क्योंकि दूसरों की आरा-धना एक ऐसा तेल था जो उसकी मशीन के पहियों को अबाध रूप से चलाते रहने के लिए आवश्यक था, और पीटिया उसकी आराधना-उपासना करता था। पर उन दोनों के प्रफुल्लित होने का मुख्य कारण यह था कि मास्को के निकट युद्ध हो रहा था, नगर के फाटकों पर शीघ्र ही लड़ाई होने की सम्भावना थी,

शस्त्रास्त्र वितरण किये जा रहे थे, सब निकल निकलकर जिस ओर को मुँह उठता उधर को भाग रहे थे, और—संक्षेप में—साधारण परिस्थिति में किसी असाधारण घटना का जन्म हो रहा था जो सदैव स्फूर्तिकारक होता है, और विशेष कर युवा समाज के लिए।

नटाशा को और सबको कार्य में संलग्न देखकर अपनी अकर्मण्यता पर लज्जा आती, और उसने सुबह से काम में लगने की कई बार कोशिश भी की थी; पर उसमें उसका जी न लगता था, और उस समय तक वह किसी कार्य में लगना जानती ही न थी जब तक उसके हृदय की सारी शक्ति उसके साथ सहयोग न देती।

अंत में वह दूसरे कमरे में दासियों की बातचीत और उनके जल्दी जल्दी दरवाज़े की ओर जाने की आहट का शोर सुनकर होश में आई और उठकर खिड़की के पास पहुँची। सड़क पर आहतों की गाड़ियों की एक लम्बी चौड़ी पंक्ति खड़ी हुई थी।

दासियाँ, अर्दली, गृह-रक्षिका, वृद्धा धाय, बावर्चिनें, कोचवान, बालगीर और टहलुए दरवाज़े पर खड़े हुए, आहतों की ओर ताक रहे थे।

नटाशा एक सफ़ेद सा रूमाल सिर पर डालकर, और उसके दोनों सिरे दोनों हाथों में पकड़कर बाहर सड़क पर जा पहुँची।

भूतपूर्व गृहरक्षिका वृद्धा मेव्रा कुज़मिनिचना इस समय इस समुदाय से निकलकर एक गाड़ी के पास जा पहुँची थी और उसमें पड़े हुए एक पीले ज़र्द अफ़सर से बातें कर रही थी। नटाशा

कुछ क़दम आगे बढ़ी और सलज्ज भाव से रुककर, अपने हाथों में रूमाल उसी प्रकार पकड़े हुए, गृह-रक्षिका की बातें सुनने लगी।

वह कह रही थी—'तो यहाँ मास्को में तुम्हारा कोई सगा नहीं है? तुम किसी घर में...जैसे हमारे ही घर में बड़े सुख से रहोगे... मालिक लोग तो जा रहे हैं न!'

अफ़सर ने क्षीण स्वर में कहा—'पता नहीं मालिक लोग इसकी आज्ञा भी देंगे या नहीं। यह हमारे कमांडिंग अफ़सर हैं।' और उसने एक मोटे से मेजर की ओर संकेत किया जो सड़क पर से होकर आहतों की गाड़ियों की क़तार देखता हुआ जा रहा था।

नटाशा ने भयभीत नेत्रों से आहत अफ़सर की ओर देखा, और फिर तत्काल ही वह मेजर के पास पहुँची।

उसने पूछा—'ये घायल हमारे घर में ठहर जायँ तो क्या बुराई है?'

मेजर ने मुस्कराकर अपनी टोपी पर हाथ लगाया।

उसने अपने नेत्र सिकोड़कर मुस्कराते हुए कहा—'महोदया, आपको इनमें से किसकी दरकार है?'

नटाशा ने शान्त भाव से अपना प्रश्न दुहराया, और उसके चेहरे और सारे व्यवहार से उस समय इतनी गम्भीरता टपक रही थी—यद्यपि रूमाल वह उसी प्रकार दोनों हाथों से पकड़े हुए थी—कि मेजर ने मुस्कराना बन्द कर दिया, और कुछ देर सोचने के बाद—मानो वह यह निर्णय कर रहा हो कि यह बात कहाँ तक सम्भव है—उसने स्वीकारोक्ति-सूचक उत्तर दिया।

उसने कहा—'हाँ, क्यों नहीं ? कोई बुराई नहीं है।'

नटाशा थोड़ा सा सिर झुकाकर शीघ्रता से मेव्रा कुज़मिनिचना के पास आई जो उसी अफ़सर से करुणापूर्ण सहानुभूति के साथ बातचीत कर रही थी।

नटाशा ने फुसफुसाकर कहा—'ठहर सकते हैं, उन्होंने कहा है, ठहर सकते हैं।'

वह अफ़सरवाली गाड़ी रोस्टोव-भवन के सहन में घुसी और दर्जनों अन्य गाड़ियाँ, निवासियों के निमन्त्रण पर पोवार्स्कोचा स्ट्रीट के घरों में के प्रवेशद्वारों से जा लगीं। यह स्पष्ट था कि नटाशा को इन जीवन की दैनिक गति से असम्पृक्त लोगों के साथ व्यवहार करने में विशेष रोचकता प्रतीत हो रही थी। उसने और मेव्रा कुज़मिनिचना ने अपने सहन में आहतों की अधिक से अधिक संख्या ले जाने की चेष्टा की।

मेव्रा कुज़मिनिचना ने कहा—'पर फिर भी तेरे पापा को यह ज़रूर बता देना चाहिए।'

'नहीं जी, कोई बात भी हो। एक दिन के लिए हम ड्रायंग-रूम में जा रहेंगे। इनसे कोई सारा घर थोड़े ही घिर जायगा।'

'फिर भी है तो बच्ची ही, समझ की बात कहाँ से करे! अरी दुलारी, इन्हें बग़ल के धाय के, या नौकरों के कमरे में भी रखना हो तो भी उनसे ज़रूर पूछ लेना चाहिए।'

उस दिन रात को एक और आहत व्यक्ति की गाड़ी पोवा-र्स्कोचा सड़क पर से होकर गुज़री। दरवाज़े पर खड़ी हुई

कुज़मिनिचना ने उसे रोस्टोव-भवन के सहन में बुला लिया। मेव्रा कुज़मिनिचना ने निष्कर्ष निकाला कि वह कोई बहुत बड़ा आदमी है। उसे बढ़िया गाड़ी में ले जाया जा रहा था और उसके सिर से पैर तक चोग़ा ढका हुआ था। कोचबक्स के ऊपर ड्रायवर के पास एक आदरणीय वृद्ध सेवक बैठा हुआ था। गाड़ी के पीछे एक साधारण गाड़ी में एक डाक्टर और दो सिपाही आ रहे थे।

वृद्धा स्त्री ने कहा—'अजी यहाँ आ जाओ। मालिक लोग जा रहे हैं और सारा घर ख़ाली हो जायगा।'

सेवक ने लम्बी साँस लेकर कहा—'देखो, भगवान् क्या करता है। घर तक पहुँचते पहुँचते प्राण शायद ही रहें! वैसे तो मास्को में हमारा अपना घर भी है, पर यहाँ से दूर है, और आजकल सूना पड़ा हुआ है।'

मेव्रा कुज़मिनिचना ने कहा—'यहाँ आ जाओ जी, यहाँ तुम्हें हर तरह का सुख मिलेगा, किसी बात की कमी नहीं है। आओ। क्यों जी, क्या बहुत बीमार हैं?'

सेवक ने हताशा-व्यञ्जक सिर हिलाया।

'घर तक जीते न पहुँच सकेंगे। डाक्टर से पूछ लूँ।'

और वृद्ध सेवक गाड़ी से उतरकर डाक्टर की गाड़ी के पास पहुँचा।

डाक्टर ने कहा—'अच्छी बात है।'

वृद्ध सेवक गाड़ी के पास आया। उसने भीतर झाँककर देखा और बड़े शोक के साथ सिर हिलाकर ड्रायवर से गाड़ी सहन में ले जाने को कहा और वह स्वयं मेव्रा कुज़मिनिचना के पास खड़ा हो गया।

वृद्धा स्त्री बड़बड़ाई—'हे भगवान्!'

उसने आहत व्यक्ति को भवन के भीतर ले चलने को कहा और कहा कि मालिक लोग नाराज़ न होंगे। पर वे लोग आहत व्यक्ति को सीढ़ियों पर न चढ़ाना चाहते थे, अतः वह उसे बग़ल के कमरे में ले गये।

और यह आहत व्यक्ति प्रिंस एण्ड्र्यू बोल्कोन्सकी था।

सातवाँ परिच्छेद

मास्को का अन्तिम दिवस आ पहुँचा। हेमंत का सुन्दर स्वच्छ दिवस था। रविवार का दिन था। सदैव की तरह उस दिन भी गिर्जे की घण्टियाँ बज बजकर प्रार्थना के लिए एकत्र होने को बुला रही थीं। ऐसा दिखाई पड़ता था कि अभी किसी को नगर की आसन्न विपत्ति का बोध नहीं हुआ है।

हाँ, दो बातें ऐसी भी थीं जिनसे मास्को की तत्कालीन सामाजिक स्थिति का पता लगता था—जन-कोलाहल, और पदार्थों का मूल्य। हथियारों की, सोने की, गाड़ियों की, और घोड़ों की क़ीमतें चढ़ती गईं, और नोटों की और शहरी चीज़ों की क़ीमतें गिरती गईं; फलतः मध्याह्न तक कई ऐसे उदाहरण उपस्थित हो गये जिनमें गाड़ीवानों ने कपड़ों वग़ैरा के लादने के किराये स्वरूप उसका आधा सामान ले लिया था। उधर देहाती घोड़े ५०० रूबलों को बिक रहे थे, और साज सामान, शीशों और मूर्तियों को तो कोई पूछता तक न था।

रोस्टोव परिवार के पुराने भवन में जीवन की स्वाभाविक गति का यह परिवर्तन बहुत कम अंशों में दिखाई पड़ सका।

काउण्ट इलिया रोस्टोव सुबह को उठकर अपने शयनागार में से आहिस्ता से–जिससे काउण्टेस न जाग जायँ, क्योंकि उनकी आँख सुबह के वक्त ही लगी थी—निकल आये और अपना गुलाबी

रेशम का ड्रेसिंग गाउन पहने पोर्च में पहुँचे। सहन में गाड़ियाँ कसी कसाई तैयार खड़ी हुई थीं। सामने के पोर्च में सवारी गाड़ियाँ खड़ी हुईं थीं। मेजर डोमो पोर्च के पास खड़ा हुआ एक वृद्ध अर्दली और हाथ में पट्टी बाँधे हुए एक पीले अफ़सर से बातें कर रहा था। काउण्ट को देखकर मेजर डोमो ने दोनों की ओर वहाँ से चले जाने का कठोरता-व्यञ्जक संकेत किया।

काउण्ट को देखकर दोनों ने अभिवादन किया। काउण्ट ने दोनों की ओर मृदुल स्वभाव से देखते हुए अपना माथा सहलाकर मेजर डोमो से कहा—'कहो वैसिलिच, सब तैयार है?' (काउण्ट को नई सूरतें देखकर बड़ी प्रसन्नता होती थी।)

मेजर डोमो ने उत्तर दिया—'बस हजूर, जोतने भर की देर है।'

'ठीक, ठीक! बस, काउण्टेस की आँख खुली और हम रवाना हो जायँगे।' इसके बाद वह अफ़सर की ओर मुड़कर बोले—'क्या है महोदय? मेरे घर में टिके हुए हैं?'

अफ़सर उनके पास आ गया और अकस्मात् उसका चेहरा लाल सुर्ख़ हो उठा।

'काउण्ट, मेहरबानी करके, ईश्वर के लिए, मुझे एक गाड़ी में बैठने भर को जगह दे दीजिए! मेरे पास और कुछ नहीं है। मैं लदी लदाई गाड़ी पर बैठ जाऊँगा...।'

अफ़सर की बात समाप्त होने से पहले ही अर्दली ने भी अपने स्वामी की ओर से काउण्ट से ऐसी ही प्रार्थना की।

काउण्ट ने शीघ्रता से कहा—'हाँ जी, हाँ जी। मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। वैसिलिच, तुम इस बात की निगरानी रखना। दो-एक गाड़ियाँ ख़ाली करा लेना। बस जी, जो कुछ ज़रूरी हो, करना...' काउण्ट ने कोई अस्पष्ट आज्ञा बड़बड़ाते हुए कहा। पर तत्क्षण अफ़सर के चेहरे पर उदित हार्दिक कृतज्ञता की मुद्रा से उनकी उस आज्ञा पर मुहर लग गई। काउण्ट ने अपने चारों ओर देखा। सहन में, दरवाज़े पर, बाजू की खिड़की पर आहत अफ़सर और उनके अर्दली घिरे हुए थे। वे सब काउण्ट की ओर देख रहे थे और पोर्च की ओर बढ़ रहे थे।

मेजर डोमो ने कहा—'हजूर ज़रा गेलेरी में तो चलें। तसवीरों के बारे में क्या हुक्म है ?'

काउण्ट मेजर डोमो के साथ भवन के भीतर चले गये, पर जाने से पहले अपनी आज्ञा को दुहरा गये कि आहतों को गाड़ी में सवार करने से मना न किया जाय।

उन्होंने मृदुल विश्वासपूर्ण स्वर में कहा—मानों उन्हें आशंका हो रही हो कि कहीं उनकी बात अनसुनी न कर दी जाय—'अजी, फ़िक्र मत करो, कुछ चीज़ें उतार ली जायँगी।'

नौ बजे काउण्टेस उठीं। उन्होंने अपने पति को बुलवाया।

'क्योंजी, मैंने सुना है कि सामान उतारा जा रहा है ?'

'तुम जानती हो, प्रिये, काउण्टेस...मैं तुम्हें ख़ुद ही बतानेवाला था ..प्रिये, एक अफ़सर मेरे पास आया और घायल अफ़सरों के लिए कुछ गाड़ियाँ माँगने लगा। हमारी चीज़ें फिर भी ऐसी हैं

जिन्हें दुबारा ख़रीदा जा सकता है, पर ज़रा सोचो तो, उन्हें यहाँ छोड़ दिया जायगा तो बेचारों पर क्या बीतेगी? अब देखो न... हमारे सहन ही में...हमने उन्हें ख़ुद ही बुलाया था; उनमें अफ़सर भी हैं—तुम समझती हो न प्रिये,—पहले उन्हें जाने दो— अभी क्या जल्दी है?'

काउण्ट भीत विनत स्वर में बोल रहे थे, और जब कभी वह आर्थिक विषय पर वार्तालाप करते थे तो इसी ढङ्ग से बात किया करते थे। काउण्टेस इस लहजे को सुनते ही जान जातीं कि यह बच्चों को बर्बाद करने—जैसे नई गैलेरी, या कंजरवेटरी बनवाना, या प्राइवेट आर्चेस्ट्रा या थियेटर की योजना—का पूर्वाभास है। वह इस लहजे की अभ्यस्त थीं, और इस लहजे में कही गई हर एक बात का विरोध करना अपना कर्त्तव्य समझती थीं।

उन्होंने विषाद-व्यञ्जक विनत भाव धारण किया और कहा—

'देखो काउण्ट, तुमने ऐसा प्रबन्ध किया कि हमें अब इस घर का पैसा नहीं मिलेगा, और अब तुम हमारी—हमारे बच्चों की—सारी सम्पत्ति को बहा देना चाहते हो! तुमने ख़ुद ही कहा था कि इस घर में हमारा एक लाख रुपये का सामान है। नहीं जी, मैं तुमसे कभी सहमत न होऊँगी, कभी नहीं! जो तुम्हारे जी में आये करो! घायलों की देखभाल करना सरकार का काम है। और वे लोग ख़ुद भी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं। ज़रा अपने घर के सामने लोपूखिन की ओर निगाह उठाकर देखो, दो दिन हुए घर की ज़रा ज़रा सी चीज ढोकर ले गये। दूसरे लोग

इस तरह करते हैं। एक हम ही ऐसे नासमझ हैं! जो तुम्हें मेरे ऊपर तरस न आता हो तो बच्चों पर ही थोड़ा सा तरस खाओ!'

काउण्ट हताश भाव से हाथ हिलाकर बिना उत्तर दिये कमरे से बाहर चले गये।

नटाशा भी अपनी माँ के कमरे में उनके पीछे पीछे गई थी। उसने उनके साथ साथ आकर कहा—'पापा, क्या बात है ?'

काउण्ट ने क्रुद्ध भाव से बड़बड़ाकर कहा—'कुछ भी नहीं, बात क्या होती! तुझसे इन बातों का क्या सरोकार ?'

नटाशा ने कहा—'पर मैंने सारी बातें सुन ली हैं। मामा क्यों आपत्ति कर रही हैं ?'

काउण्ट ने चिल्लाकर कहा—'तुझसे इन बातों का क्या सरोकार ?'

नटाशा खिड़की के पास खड़ी होकर सोचने लगी।

पीटिया पोर्च में खड़ा हुआ सामान के साथ जानेवाले नौकरों को हथियार बाँट रहा था। भरी हुई गाड़ियाँ अब भी सहन में खड़ी हुई थीं। उनमें से दो ख़ाली कर दी गई थीं और उनमें से एक में वह आहत अफ़सर एक अर्दली का सहारा लेकर चढ़ रहा था।

पीटिया ने नटाशा से पूछा—'बहिन, तुम्हें मालूम है यह क्या क़िस्सा है ?'

नटाशा समझ गई कि उसके कहने का आशय यह है कि उनके माता पिता किस बात पर लड़ झगड़ रहे हैं। पर उसने उत्तर कोई नहीं दिया।

पीटिया ने कहा—'मैं जानता हूँ, यह सारा झमेला इसलिए है कि पापा सारी गाड़ियाँ घायलों को दे डालना चाहते थे। वैसिलिच ने मुझे सब बता दिया है। मेरी समझ में तो ...।'

नटाशा ने क्रुद्ध मुखमण्डल से पीटिया की ओर देखकर चिल्लाकर कहा—'मेरी समझ में इतनी बुरी बात है, इतनी गन्दी है, इतनी नीच है...क्या कहूँ, इतनी गर्हित है! क्या हम गर्हित जर्मन हैं?'

उसका गला ज़ोर-ज़ोर की सुबकियों से काँपने लगा, और इस आशङ्का से कि कहीं उसके क्रोध का भाण्डार यों ही समाप्त न हो जाय, वह सीधी ऊपर को भागी। उसकी बड़ी बहिन वीरा का पति बर्ग काउण्टेस के पास बैठा हुआ एक रिश्तेदार की हितैषिता के साथ उन्हें धीरज दे रहा था। काउण्ट अपने हाथ में पाइप लिये कमरे में इधर उधर चहलक़दमी कर रहे थे। इसी समय नटाशा क्रोध से विकृत चेहरा किये तूफ़ान की तरह कमरे में आ पहुँची और अपनी माँ के पास पहुँचकर गर्ज कर बोली—

'कितनी गर्हित बात है! कितनी घृणित बात है! तुमने इसकी आज्ञा कभी न दी होगी!'

बर्ग और काउण्टेस क्षुब्ध और सशङ्कित भाव से नटाशा की ओर देखने लगे।

'घायल क्यों नहीं ! मामा, यह असम्भव है ! मामा, यह क़साईपन है...नहीं मामा, मेरी अच्छी मामा ! यह बात नहीं है; मुझे क्षमा करो !...मामा, हम क्या ले गये, क्या नहीं ले गये, इससे हमें क्या लेना है ? देखो, सहन में तो झाँककर देखो ! मामा !...यह असम्भव है !'

काउण्ट खिड़की के पास खड़े खड़े बिना मुँह फेरे चुपचाप सुन रहे थे। अकस्मात् उनकी नाक बज उठी और उन्होंने अपना मुँह खिड़की में और भी आगे कर दिया।

काउण्टेस ने अपनी पुत्री की ओर दृष्टिपात किया और देखा कि उसका चेहरा अपनी माँ के लिए लज्जा से तमतमा रहा है, उसकी उत्तेजना देखी, और उनकी समझ में आ गया कि उनके पति मुँह फेरे क्यों खड़े हैं, और उन्होंने चारों ओर अत्यन्त क्षुब्ध भाव से देखा।

पर उन्होंने तत्काल ही आत्मसमर्पण नहीं किया। कहा— 'जो जी में आये करो। मैं क्या किसी को रोकती हूँ।'

'मामा, प्यारी मामा, मुझे क्षमा करो।'

पर काउण्टेस अपनी लड़की को एक ओर हटाकर अपने पति के पास पहुँचीं। उन्होंने आत्मग्लानि के साथ नेत्र नीचे करके कहा—'तुम जो करते हो ठीक ही करते हो। मेरी समझ में बात नहीं आई थी।'

काउण्ट ने हर्षाश्रु बहाते हुए कहा—'अंडे ..अंडे मुर्गी को सिखा रहे हैं !'...और इतना कहकर उन्होंने अपनी स्त्री का आलिंगन

किया, और काउण्टेस ने अपनी ग्लानि की मुद्रा को उनके वक्षःस्थल में छिपा लिया।

नटाशा ने पूछा—'पापा, मामा! ..तो मैं जाकर ठीक कर दूँ? मैं जाऊँ? हम बहुत आवश्यक वस्तुएँ अपने साथ ले चलेंगे।'

काउण्ट ने सहमति-सूचक सिर हिलाया और नटाशा दौड़ती हुई—इस प्रकार, जिस प्रकार वह रस्साखींची खेलते समय दौड़ा करती थी—नाट्यशाला में से होती हुई मुलाक़ाती कमरे में पहुँची, और वहाँ से सीधी नीचे जा मौजूद हुई।

सारा घर बार—मानो अपने पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए—आहतों को सवार कराने के कार्य में बड़े चाव और उत्साह से लग गया। आहत घिसट-घिसटाकर कमरों से निकल आये और गाड़ियों के चारों ओर पीले पर प्रसन्न चेहरों के साथ आ खड़े हुए।

सोनिया भी लगातार संलग्न रही; पर उसकी संलग्नता का लक्ष्य नटाशा के लक्ष्य से भिन्न था। वह उन सब चीज़ों को अलग उठवाकर रख रही थी जिन्हें पीछे छोड़ा जा रहा था, और काउण्टेस की इच्छा के अनुसार उसने उन सबकी एक सूची बनाई थी, और यथासम्भव अधिकाधिक चीज़ें साथ ले चलने की कोशिश की थी।

——

आठवाँ परिच्छेद

दो बजे से पहले पहले रोस्टोव परिवार की चार सवारी-गाड़ियाँ ठसाठस भरी हुई और जुती हुई प्रवेश द्वार के सामने आ खड़ी हुईं। आहतों की गाड़ियाँ एक-एक करके सहन से बाहर निकलने लगीं।

जब प्रिंस एण्ड्र्यू की निजी गाड़ी सामने से गुज़री तो सोनिया का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ। वह दासी की सहायता से काउण्टेस के बैठने के लिए विशाल पारिवारिक गाड़ी में स्थान ठीक कर रही थी।

उसने गाड़ी के भीतर से झाँककर पूछा—'यह गाड़ी किसकी है ?'

दासी ने उत्तर दिया—'बेटी रानी, तुम्हें मालूम नहीं ? घायल प्रिंस रात भर हमारे ही यहाँ रहे थे और अब हमारे साथ जा रहे हैं।'

'पर यह हैं कौन ? क्या नाम है ?'

'वही जी, हमारी बेटी रानीवाले—प्रिंस बोल्कोन्सकी ! सुना है, जीते न बचेंगे।' दासी ने लम्बी साँस लेकर कहा।

सोनिया गाड़ी में से कूदकर काउण्टेस की ओर भागी। काउण्टेस श्रान्त, शाल और टोपा पहने यात्रा के लिए तैयार थीं

और जाने से पहले दरवाज़े बन्द करके सबके एकत्र होकर प्रार्थना करने के समय की प्रतीक्षा में चहलक़दमी कर रही थीं।

सोनिया ने कहा—'मामा, प्रिंस एण्ड्र्यू यहीं हैं, साङ्घातिक रूप से घायल हैं, और हमारे साथ जा रहे हैं।'

काउण्टेस ने भीत विस्मय के साथ अपने नेत्र खोले और सोनिया का हाथ पकड़कर चारों ओर देखा।

उन्होंने धीरे से कहा—'नटाशा ?'

सोनिया ने कहा—'नटाशा को अभी तक तो मालूम नहीं है, पर वह हमारे साथ ही जा रहे हैं।'

'तू कहती है वह जीते न बचेंगे।'

सोनिया ने सिर हिलाया।

काउण्टेस सोनिया के गले में बाँह डालकर रोने लगीं।

उन्हें प्रतीत हुआ कि इस सारे व्यापार में सर्वशक्तिमान् ईश्वर की इच्छा दिखाई देती है जो अब तक छिपी हुई थी। उन्होंने कहा—'भगवान् की लीला को कौन जान सकता है ?'

नटाशा स्फूर्ति-पूर्ण मुखमण्डल के साथ कमरे में दौड़ती हुई आई और बोली—'मामा, क्या देर है ? सब कुछ तैयार हो गया। क्यों, क्या बात है ?'

काउण्टेस ने कहा—'कुछ भी नहीं। जब सब कुछ तैयार हो गया तो हमें अब चल पड़ना चाहिए।'

और काउण्टेस अपनी उत्तेजित मुद्रा छिपाने के लिए अपने बेग पर झुक गईं। सोनिया ने नटाशा का आलिङ्गन किया और चुम्बन किया।

नटाशा ने उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

'क्यों, क्या बात है ? क्या हुआ ?'

'नहीं...कुछ नहीं...।'

नटाशा ने अपनी तीव्र आत्मप्रेरणा से प्रेरित होकर हठपूर्वक कहा—'मेरे लिए कोई बुरी बात है ? क्या बात है ?'

सोनिया ने लम्बी साँस ली और कोई उत्तर न दिया। काउण्ट, पीटिया, मैडेम शौस, मेत्रा कुज़मिनिचना और वैसिलिच ड्रायङ्ग रूम में आ गये और जब दरवाज़े बन्द कर दिये गये तो सब बैठ गये और कुछ देर तक बिना एक दूसरे की ओर देखे चुप रहे।

अन्त में सब के सब गाड़ियों में सवार हो गये।

जब रोस्टोव परिवार की गाड़ी सुखारेव की जल-कल के आगे से निकली तो नटाशा—जो सड़क पर चलते हुए या गाड़ी में जाते हुए लोगों को बड़ी सतर्कता और कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देख रही थी—अकस्मात् उल्लासपूर्ण विस्मय के साथ चिल्ला उठी—

'अरे ! मामा, सोनिया, देखो, वह जा रहे हैं ?'

'वह कौन ? कौन ?'

'देखो न ! हाँ, सचमुच वही हैं—बैज़ूखोव !' नटाशा ने खिड़की के बाहर झुककर एक लम्बे मोटे ताज़े आदमी की ओर

देखकर कहा। यह मोटा ताज़ा आदमी कोचवान की पोशाक पहने सुखारेव की जल-कल के नीचे से गुज़र रहा था और उसके पीछे पीछे एक नन्हा सा बुड्ढा आदमी पतला, दाढ़ी-विहीन चेहरा लिये मोटे से कपड़े का कोट पहने हुए जा रहा था। उस मोटे आदमी की चाल ढाल से साफ़ ज़ाहिर होता था कि वह कोई छद्मवेशी सम्भ्रान्त व्यक्ति है।

नटाशा ने कहा—'हाँ, बैज़ूखोव ही हैं, कोचवान का कोट पहने हुए हैं और उनके पीछे पीछे वह विचित्र सा बुड्ढा लड़का जा रहा है। देखो तो!'

'नहीं, वह यहाँ कहाँ से आये? कैसी बौरङ्गी बातें करती है!'

नटाशा ने चिल्लाकर कहा—'मामा, मैं अपने सिर की बाज़ी लगाकर कह सकती हूँ कि यह वही हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ! अरे, गाड़ी रोको, गाड़ी रोको!' उसने कोचवान से कहा।

पर कोचवान गाड़ी न रोक सका क्योंकि मैश्चेन्सकी की ओर से और गाड़ियाँ आ गईं और रोस्टोव परिवार की गाड़ीवाले कोचवान को और लोग आवाज़ देने लगे कि वह आगे बढ़े और इस तरह रास्ता रोककर खड़ा न हो जाय।

नटाशा का मुखमण्डल खिड़की से बाहर निकला हुआ कौतुकपूर्ण सहृदयता के साथ तमतमा रहा था।

उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाकर कहा—'पीटर किरि-लिच, यहाँ आओ! हम तुम्हें पहचान गये! वाह, क्या वेश

बनाया है! तुमने यह क्या स्वाँग रचा है? इस तरह क्यों फिर रहे हो?'

पीरी ने उसका बढ़ा हुआ हाथ पकड़ लिया और चलती हुई गाड़ी के साथ साथ चलते हुए बड़े भद्दे ढङ्ग से उसके हाथ का चुम्बन किया।

काउण्ट ने विस्मयपूर्ण और करुणा-व्यञ्जक स्वर में कहा— 'क्यों काउण्ट, क्या बात है?'

पीरी ने कहा—'क्या? क्या? क्यों? यह मुझसे न पूछिए।' और उसने नटाशा की ओर देखा जिसका तमतमाया हुआ हर्ष-पूर्ण चेहरा अपने मनोहारी जादू से उसके हृदय को उद्वेलित करने लगा।

'तो तुम अभी मास्को ही में हो?'

पीरी सङ्कोच में पड़ गया।

उसने प्रश्नात्मक स्वर में पूछा—'मास्को ही में? हाँ, मास्को ही में। अच्छा सलाम!'

नटाशा ने कहा—'जो मैं भी कहीं पुरुष होती तो तुम्हारे ही साथ रह जाती। कैसे आनन्द की बात है! मामा, मुझे रहने दो तो मैं यहीं रह जाऊँ।'

पीरी ने अन्यमनस्क भाव से नटाशा की ओर देखा और कुछ कहने की तैयारी की, पर काउण्टेस ने बीच ही में बाधा देकर कहा।

'हमने सुना था तुम लड़ाई में गये थे।'

पीरी ने उत्तर दिया—'जी हाँ, मैं लड़ाई में भो गया था। कल को फिर लड़ाई होगी।' उसने कहना आरम्भ किया, पर नटाशा ने बाधा दी।

'पर काउण्ट तुम्हें हो क्या गया? तुमने यह रूप क्यों बनाया है?'

'बस, यह मुझसे मत पूछो, यह मत पूछो! मैं ख़ुद नहीं जानता। कल को...। पर नहीं! अच्छा सलाम, सलाम!' उसने बड़बड़ाकर कहा। 'कैसा बुरा वक्त आ पहुँचा है!' और गाड़ी के पीछे रुककर वह फ़र्श की ओर हो लिया।

नटाशा उसी प्रकार सहृदयतापूर्ण कौतुक भरी, प्रसन्न मुस्कराहट के साथ उसकी ओर झाँक झाँककर बहुत देर तक देखती रही।

——

नवाँ परिच्छेद

गत दो दिनों से—अपने घर से आने के बाद से—पीरी अपने एक मित्र के ख़ाली मकान में रह रहा था। यह किस प्रकार घटित हुआ ?—इस प्रकार।

जब वह मास्को वापस आने और काउण्ट रोस्टोपचिन से भेंट करने के बाद दूसरे दिन सोकर उठा तो बहुत देर तक निश्चय न कर सका कि वह कहाँ है और उससे किस बात की आशा की जा रही है। जब उसे सूचना मिली कि उसके मुलाक़ाती कमरे में उसकी बाट जोहनेवालों में एक फ़्रेंच भी है जो उसकी पत्नी काउण्टेस हैलेन के पास से पत्र लाया है तो उसके ऊपर एक ऐसी अस्तत्र्यस्तता और हताशा की भावना ने अधिकार जमा लिया जिसके आगे वह कभी कभी आत्मसमर्पण कर दिया करता था। अकस्मात् उसे भास होने लगा कि अब हर एक चीज़ का अन्त आनेवाला है, सब कुछ अस्तव्यस्त है और सारे पदार्थ खण्डशः विभक्त हो रहे हैं, न कोई ठीक रास्ते पर है न ग़लत रास्ते पर, भविष्य के कोई अर्थ नहीं हैं, और इस स्थिति से बचने का कोई उपाय नहीं है। उसके मेजर डोमो ने दूसरी बार आकर सूचित किया जो फ़्रेंच उसकी पत्नी काउण्टेस के पास से पत्र लाया है वह उससे मिलने के लिए अत्यन्त आतुर हो रहा है और कहता है कि चाहे एक मिनट के लिए सही, वह मिलें अवश्य।

पीरी ने मेजर डोमो को उत्तर दिया—'हाँ, अभी लो, ज़रा ठहरो...नहीं ! नहीं, तुम जाओ और कह दो कि मैं अभी आया।'

पर उसके बाहर निकलते ही पीरी ने मेज़ पर से अपना टोप उठाया और चुपचाप अध्ययन-शाला में से पिछले दरवाज़े से निकल गया। रास्ते में उसे कोई न मिला और वह भृकुटी चढ़ाये और दोनों हाथों से अपना माथा रगड़ते हुए नीचे उतर गया।

उसके सामने सबसे पहले जो किराये की गाड़ी आई उसी को लेकर उसने ड्राइवर से पैट्रियार्च के पाण्ड्स में चलने को कहा जहाँ उसके मित्र की विधवा का घर था।

पीरी मास्को की चारों दिशाओं से निकल निकलकर जाती हुई लदी हुई गाड़ियों की ओर निरन्तर रूप से देखता हुआ और अपने भारी भरकम शरीर को उठाता हुआ—जिससे वह उस जीर्ण शीर्ण गाड़ी से न निकल पड़े—किसी स्कूल से भागे लड़के की तरह प्रफुल्लित हो रहा था।

अपने मित्र के घर जाकर उसने सेवक से कहा—

'मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बारे में किसी को मत बताना कि मैं कौन हूँ और मेरे कहे अनुसार ही काम करना।'

वृद्ध सेवक जेरासिम ने कहा—'बहुत अच्छा ! आप कुछ भोजन करेंगे ?'

'न। मगर मुझे एक और चीज़ की ज़रूरत है। मुझे देहाती कपड़े और एक पिस्तौल चाहिए।' पीरी ने अचानक लजाते हुए कहा।

जेरासिम ने कुछ देर सोचने के बाद उत्तर दिया—'बहुत अच्छा।'

बाक़ी सारा दिन पोरी ने अपने मित्र की अध्ययनशाला में बिताया और जेरासिम उसके अस्तव्यस्त भाव से कमरे में स्वगत बातें करते हुए चहलक़दमी करने की आहट सुनता रहा। उसने रात भी वहीं बिताई। जेरासिम ने उसका बिछौना उसी कमरे में कर दिया था।

जनसाधारण की मनोवृत्ति के सञ्चालक का पार्ट काउण्ट रोस्टोपचिन के मन को इतना भाया था, और उसके वह इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जब उस पार्ट का परित्याग करने और मास्को को विना किसी शौर्य्य प्रदर्शन के शत्रु के हाथ में सौंप देने की आवश्यकता का उन्हें अचानक सामना करना पड़ा तो वह निश्चित रूप से यह न जान सके कि उनका क्या कर्त्तव्य कर्म है। वैसे वह यह जानते थे कि मास्को का परित्याग किया जायगा, पर उन्हें इस बात पर अन्तिम घड़ी तक विश्वास न हुआ और इसी लिए उन्होंने उसे परित्याग करने की कोई तैयारी भी न की। नगरवासी उनकी इच्छा के विपरीत मास्को छोड़कर जा रहे थे। पर सरकारी दफ़्तर केवल तब हटाये गये जब उन महकमों के अफ़सरों ने ज़ोर डाला, और इतने पर भी काउण्ट ने उनके हटाये जाने की स्वीकृति बड़े संकोच के साथ दी। वह स्वयं अपने बनाये हुए पार्ट में तल्लीन थे। जैसा कि तीव्र कल्पना शक्तिवाले लोगों के लिए कभी कभी स्वाभाविक होता है, यह जानते हुए भी

कि मास्को का परित्याग किया जायगा, उन्होंने इस पर केवल बुद्धि से विश्वास किया था, हृदय से नहीं।

पर जब घटनाओं ने ऐतिहासिक रूप धारण कर लिया, जब फ़्रेंचों के प्रति केवल शाब्दिक घृणा व्यक्त करना अपर्याप्त सिद्ध हुआ, जब उस घृणा को युद्ध के द्वारा व्यक्त करना असम्भव हो गया, जब मास्को के सामने उपस्थित केवल एक समस्या के आगे आत्मविश्वास कुछ उपयोगी सिद्ध न हुआ, जब सारे नगर-निवासी, एक आदमी की तरह, अपना अपना धन माल छोड़ छोड़कर मास्को से जाने लगे और इस प्रकार निष्क्रिय असहकार से उन्होंने अपनी राष्ट्रीय भावना की पूरी प्रबलता सिद्ध की, तो रोस्टोपचिन ने जो पार्ट चुना था वह अर्थहीन दिखाई देने लगा।

जब सोते से जगाये जाकर उन्हें कुटूज़ोव का शुष्क पत्र दिया गया तो वह अपने आपको जितना दोषी समझते गये उतना ही उत्तरोत्तर चिढ़ते गये। उनके चार्ज में जितनी सरकारी सम्पत्ति थी वह सब अभी मास्को ही में थी। और अब उसका हटाया जाना सम्भव न था।

वह सोचने लगे—'इसका दोष किस पर है? ऐसी परिस्थिति किसने उत्पन्न होने दी? मैंने नहीं! मैंने सब कुछ पहले से ही तैयार कर रक्खा था। सारा मास्को मेरी मुट्ठी में था! और उन लोगों ने मामला यहाँ तक बिगाड़ दिया! बदमाश! धोके-बाज़!' और वह यह तो निश्चित रूप से तय न कर सके कि वे

बदमाश और धोकेबाज़ कौन हैं, पर कोई भी हों, उन बदमाशों को और धोकेबाज़ों को जिन्होंने उन्हें ऐसी भद्दी और उपहासास्पद स्थिति में फँसा दिया था—हृदय से घृणा करना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा।

बाक़ी सारी रात काउण्ट रोस्टोपचिन आदेशपत्र जारी करते रहे जिनके लिए उनके पास मास्को के विभिन्न प्रांतों से आते रहे। जो लोग काउण्ट के पास थे उन्होंने उन्हें इतना शोकमग्न और चिढ़ा हुआ पहले कभी नहीं देखा था।

उन्होंने रैजिस्ट्रार्स डिपार्टमेंट के विषय में कहा—'अरे, उस गधे से कह दो कि उसे काग़ज़-पत्रों की रखवाली करने के लिए यहीं रहना होगा। और तुम फ़ायर ब्रिगेड के बारे में मुझसे बेहूदे सवाल क्यों कर रहे हो? उनके पास घोड़े हैं, उन्हें व्लेडिमिर भेज देना चाहिए जिससे वे दुश्मन के हाथ में न पड़ें।'

'महोदय, पागलख़ाने का सुपरिण्टेण्डेण्ट आया है। क्या हुक्म है?'

'मेरा हुक्म? मेरा हुक्म यह है कि उन सबको छोड़ दो... बस! और सारे पागल शहर में चक्कर लगायें। जब हमारी फ़ौज ही पागलों के हाथ में है तो ईश्वर शायद यही चाहता है कि बाक़ी सारे पागल भी छोड़ दिये जायँ।'

जब उनसे क़ैदियों के विषय में पूछा गया तो उन्होंने जेल के गवर्नर से चिल्लाकर कहा—

'क्या आप यह चाहते हैं कि आपके क़ैदियों के दूसरी जगह भेजे जाने के लिए मैं आपको दो बटालियनें दूँ ? बटालियनें हैं कहाँ ? उन्हें छोड़ दो; बस !'

'श्रीमान् कुछ राजनीतिक क़ैदी भी हैं, मैश्कोप, वेराश्चेगिन... ।'

'वेराश्चेगिन ! अभी उसे फाँसी नहीं दी गई ? अच्छा उसे यहाँ ले आओ !' काउण्ट ने चीख़कर कहा ।

वारवर्का स्ट्रीट के एक अपूर्ण भवन में से उन्मत्त आवाज़ें आ रही थीं। इस भवन की निचली मंज़िल में एक शराब की दूकान थी। एक गन्दे से कमरे में मेज़ के चारों ओर बेंचों पर कोई दस मज़दूर बैठे हुए थे। सब—उन्मत्त और पसीने से तर, अपनी धुँधली आँखों और खुले मुँहों के साथ—कोई न कोई गाना गा रहे थे। वे लोग असम्बद्ध रूप से बड़े प्रयास के साथ गा रहे थे, इसलिए नहीं कि वे गाना चाहते हों, बल्कि यह दिखाने के लिए कि वे मदोन्मत्त हैं और खुले बन्धन मौज उड़ा रहे हैं। एक लम्बा-सा, सुन्दर बालोंवाला युवक नीले रङ्ग का कोट पहने उनके बीच में खड़ा हुआ था। उसकी पतली सी लम्बी नाक के कारण उसका चेहरा सुन्दर कहा जा सकता था, पर उसके हिलते हुए पतले मिंचे हुए ओठ और धुँधली शोक-मग्न आँखों ने उसकी सुन्दरता नष्ट कर दी थी। वह उन गाते हुए मज़दूरों के बीच में खड़ा हुआ—किसी धुन में मस्त—गम्भीरता के साथ आस्तीनें चढ़ाये और अपनी गन्दी अँगुलियों को अस्वाभाविक ढङ्ग से फैलाने की चेष्टा करते हुए—अपनी श्वेत

बाँह को उनके सिरों पर कुछ झटके के साथ घुमा रहा था। उसके कोट की बाँह बार बार फिसल पड़ती थी और हर बार वह सावधानी के साथ बायें हाथ से उसे चढ़ा लेता था मानो यह विशेष रूप से आवश्यक था कि उसका रगोंदार श्वेत हाथ नङ्गा दिखाई दे। इन गाने के सिलसिले में बाहर पोर्च में और प्रवेशद्वार में चीख़-चिल्लाहट और मारने-पीटने की आवाज़ सुनाई दी। उस लम्बे युवक ने अपना हाथ हिलाया।

उसने रोब के साथ चिल्लाकर कहा—'ख़ामोश रहो! जवानो, लड़ाई हो पड़ी है!' और वह आस्तीन चढ़ाता हुआ पोर्च की ओर चला गया।

मज़दूर उसके पीछे पीछे हो लिये। ये लोग इस युवक की अध्यक्षता में शराब पी रहे थे। सुबह उन्होंने शराबवाले को एक चमड़े का टुकड़ा लाकर दिया था, और उसी के एवज़ में ये शराब पी रहे थे। उस भवन के पास ही एक लोहे का कारख़ाना था। वहाँ के लोहारों ने इनके मदोन्मत्त अट्टहास की आवाज़ें सुनीं तो समझा कि शराब की दुकान में लोग बलात् घुस गये हैं, अतः उन्होंने भी बलात् घुसने की चेष्टा की, और फलस्वरूप पोर्च में लड़ाई हो गई।

शराब की दूकानवाला एक लोहार से लड़ रहा था, और जब मज़दूर लोग भी भीतर से निकल आये तो लोहार ने झटका देकर अपने आपको छुड़ा लिया और फ़र्श पर औंधे मुँह गिर गया।

दूसरे लोहार ने अपने सीने से शराबवाले को धक्का देते हुए भीतर घुसने की चेष्टा की ।

उस लम्बे युवक ने उस लोहार के मुँह पर एक घूँसा जमाया और जोर से चिल्लाकर कहा--

'जवानो, देखते क्या हो ! ये हमसे लड़ने आये हैं !'

इसी अवसर पर पहला लोहार फ़र्श पर से उठा और अपने आहत चेहरे को अधिक आहत करने के लिए नोचते हुए अश्रु-पूरित स्वर में चिल्लाकर बोला--

'पुलिस ! ख़ून ! इन्होंने एक आदमी को मार डाला !'

पास ही एक दरवाज़े में से एक स्त्री ने निकलकर चीख़कर कहा--

'ओह ! हे भगवान् ! आदमी को मारते मारते बेदम कर दिया !--मार डाला !'

उस रक्त-रञ्जित लोहार के चारों ओर एक भीड़ एकत्र हो गई ।

एक आदमी ने शराबवाले को सम्बोधन करके कहा--

'क्या लोगों की कमीज़ कोट उतारते रहने पर भी तसल्ली नहीं हुई ? अभी लूट से पेट नहीं भरा ! इस आदमी को तूने क्यों मार डाला, हरामज़ादे ?'

उस लम्बे युवक ने अपने निर्जीव नेत्रों से उस शराबवाले और लोहार की ओर देखना जारी रक्खा, मानो वह यह निश्चय कर रहा हो कि अब वह किसकी ओर से लड़े ।

अकस्मात् उसने शराबवाले की ओर संकेत करके चिल्लाकर कहा—

'.खूनी है ! जवानो, इसकी मुश्कें कस लो !'

कुछ आदमी शराबवाले की तरफ़ बढ़े, इस पर उसने उन सबको धक्का देकर कहा—'वाह, ज़रा सूरत तो देखो ! बाँधने चले हैं !' और उसने अपने सिर से टोपी उतारकर ज़मीन पर फेंक दी।

और मानों यह सोचकर कि उसके इस कार्य में कोई अमङ्गल-कारी रहस्य भरा हो, मज़दूर शराबवाले के चारों ओर द्विधा में पड़े हुए खड़े रह गये।

शराबवाले ने अपनी टोपी उठाते हुए कहा—'बच्चू ! मैं भी क़ानून अच्छी तरह जानता हूँ ! मैं यह मामला पुलिस कप्तान तक ले जाऊँगा ! तुम यह समझते होगे कि मैं उसके पास न जाऊँगा ? आज कल यों ही किसी को लूट लेना आसान थोड़े ही है !'

'आओ तो फिर ! आओ तो फिर !' शराबवाला और लम्बा युवक, एक के बाद दूसरा, चिल्लाते रहे और फिर दोनों सड़क की ओर हो लिये।

वह रक्तरञ्जित लोहार भी उनके साथ हो लिया। मज़दूर और अन्य लोग भी चीख़ते चिल्लाते और बातें करते हुए उनके साथ हो लिये।

इस जन-समुदाय को और रक्तरञ्जित लोहार को देखकर रास्ते में चमार ने बातचीत करना बन्द कर दिया और सारे चमार उत्सुक कौतूहल के साथ इस चलती हुई भीड़ में जा मिले।

'ये सब कहाँ को चल दिये ?'

'हाकिमों के पास, और कहाँ को ?'

'और क्या यह ठीक है कि हमारे साथ चाल चली गई है ?'

'और नहीं तो क्या ? सुन लो, सब क्या कह रहे हैं !'

सवाल पूछे गये और जवाब दिये गये। शराबवाला भीड़ बढ़ती देखकर अवसर पाकर चुपचाप खिसक गया और अपनी दूकान पर वापस जा पहुँचा। वह लम्बा युवक शराबवाले के खिसक जाने को न देख सका और उसी प्रकार अपना नङ्गा हाथ हिला-हिलाकर लगातार बातें करता हुआ सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता रहा। आदमी उसी के पास आ-आकर अधिक संख्या में एकत्र होते। सबको आशा थी कि वे उन प्रश्नों का उत्तर पा सकेंगे जिन्होंने उनके दिलों में उथल-पुथल मचा रक्खी है।

लम्बे युवक ने क्षीण मुस्कराहट के साथ कहा—'उसे अमन क़ायम रखना पड़ेगा, उसे क़ानून के आगे सिर झुकाना पड़ेगा, इसी लिए सरकार है ! क्यों दोस्तो, मैं ठीक कहता हूँ न ? समझता है कि कोई हाकिम ही नहीं है ! मानो हाकिमों के बग़ैर भी काम चल सकता है ! नहीं तो सब दिन दहाड़े लुट जाते !'

एक ने भीड़ में से पूछा—'भई ऐसी फ़ज़ूल बातों में क्या रक्खा है ? क्या वे लोग मास्को से यों ही हाथ उठा लेंगे ? उन्होंने तुम्हारे साथ दिल्लगी करने के लिए कह दिया होगा और तुमने

चुपचाप यक़ीन कर लिया! हमारे पास क्या कोई सेना की कमी है? उसे अन्दर आने देंगे—बेशक! हाकिम होते ही इसलिए हैं। इधर उधर की बातें छोड़कर तुम इसकी बात सुनो।' उसने लम्बे युवक की ओर संकेत करते हुए कहा।

चीना बाज़ार की दीवार के पास एक छोटी सी भीड़ एक मोटे कपड़े का कोट पहने और हाथ में काग़ज़ पकड़े हुए आदमी के पास एकत्र थी।

भीड़ में से आवाज़ें आ रही थीं—'एक आज्ञापत्र! एक आज्ञापत्र!' और लोग उसकी ओर बढ़ने लगे।

वह मोटे कोटवाला आदमी ३१ अगस्त का काउण्ट रोस्टोपचिन का घोषणा-पत्र पढ़ रहा था। जब यह भीड़ भी उसके चारों ओर जा लगी तो वह कुछ घबरा गया, पर उस लम्बे युवक के ज़ोर डालने पर वह किञ्चित् कम्पित स्वर में शुरू से पढ़ने लगा—

'कल तड़के ही मैं हिज़ सीरीन हाईनेस से भेंट करने जाऊँगा।' (लम्बे युवक ने किञ्चित् विजयसूचक मुस्कराहट के साथ कहा 'हिज़ सीरीन हाईनेस'।) 'उनसे मिलकर मैं काम की बातों के बारे में मशवरा करूँगा और इन हरामज़ादों को नेस्तनाबूद करने में सेना की सहायता करने के बारे में भी सलाह करूँगा। हम भी उसमें हिस्सा लेंगे...' यहाँ वाचक रुक गया। (लम्बे युवक ने विजयसूचक मुस्कराहट के साथ कहा—'देखते हो न, वह तुम्हारी ख़ातिर सारा मामला तय करने जा रहे हैं!') 'हम सब

मिलकर इनका नामोनिशान तक मिटा देंगे और सबको शैतान के पास भेज देंगे। मैं भोजन करने के समय वापस आ जाऊँगा और फिर हम काम में लग जायँगे। हम काम करेंगे, काम ख़तम करेंगे, और इन हरामज़ादों को बर्बाद कर डालेंगे।'

अन्तिम शब्द घोर निःस्तब्धता में पढ़े गये। लम्बे युवक ने विषाद के साथ अपना सिर लटका लिया। यह स्पष्ट था कि घोषणा-पत्र के अन्तिम शब्द कोई न समझ सका था। वाचक और श्रोता दोनों को 'मैं भोजन के समय वापस आ जाऊँगा' वाक्य विशेष रूप से खटक रहा था।

सब हताश भाव से चुपचाप खड़े रहे। लम्बा युवक लड़खड़ाने लगा और उसके ओंठ हिले।

'इनसे क्यों नहीं पूछते ? यही तो आ रहे हैं!'...'हाँ, हाँ, तुम पूछोगे ?'...'क्यों, पूछने को क्या है ? यह सब बता देंगे'...भीड़ के पीछे से आवाज़ें आईं और सब का ध्यान एक गाड़ी क़ी ओर आकृष्ट हो गया जो दो घुड़सवारों के साथ सहन में आ लगी थी।

चीफ़ आफ़ पुलिस को उस दिन सुबह बजरे जला डालने को भेजा गया था और उसी सिलसिले में उसे बहुत बड़ी रक़म भी मिली थी जिसके नोट उस समय भी उसकी जेब में मौजूद थे। जब उसने भीड़ को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा तो कोचवान से गाड़ी रोकने को कहा।

उसने आदमियों से—जो उसकी ओर इक्का दुक्का करके डरते डरते बढ़ रहे थे—डाटकर पूछा--'ये लोग कौन हैं ?'

जब उसे कोई उत्तर न मिला तो उसने फिर चिल्लाकर पूछा—'ये लोग कौन हैं ?'

उस मोटे कोट वाले वाचक क्लर्क ने कहा—'महोदय, ये लोग काउण्ट महोदय की घोषणा के अनुसार अपने प्राण रहते सेवा करना चाहते हैं, इनका इरादा कोई दंगा करने का नहीं है। काउण्ट महोदय ने ख़ुद ही लिखा है कि...।'

पुलिस मास्टर ने कहा—'काउण्ट अभी यहीं हैं, गये नहीं हैं, और तुम लोगों के बारे में जल्दी ही हुक्म दिया जायगा।' इसके बाद उसने कोचवान से कहा—'चलाओ गाड़ी !'

लोग गाड़ी की ओर दौड़ने लगे और युवक ने चिल्लाकर कहा—'धोका हुआ ! उनके पास पहुँचो, उनके पास !' भीड़ में से आवाज़ें आने लगीं—'जाने मत दो ! घेर लो ! रोक लो ! उसे जवाब देना पड़ेगा !'

पुलिस मास्टर की गाड़ी के पीछे दौड़ते हुए लोग काउण्ट रोस्टोपचिन के मकान की ओर चले गये।

जन-समुदाय में आवाज़ें कहती सुनाई पड़ रही थीं—'बड़े आदमी और व्यापारी चले गये, हमें यहाँ बर्बाद होने को क्यों छोड़ दिया गया ? क्या हम कुत्ते हैं ?'

———

दसवाँ परिच्छेद

नौ बजते बजते शहर में से सेना का मार्च जारी भी हो गया था, और काउण्ट से आदेश लेने अब कोई न आता था। जो उनसे पूछ सकते थे वे अपनी ही इच्छा से चले गये; जो पीछे रह गये थे, उन्होंने स्वयं ही अपना कर्त्तव्य कर्म निश्चित कर लिया।

काउण्ट ने अपनी गाड़ी तैयार करने की आज्ञा दी। उनका विचार सोकोलनिकी जाने का था। आज्ञा देकर काउण्ट अपनी अध्ययनशाला में हाथ बाँधे चुपचाप तेवर बदले बैठे रहे।

शान्त और कुशलता-पूर्ण समय में हर एक शासक को यह दिखाई पड़ता है कि सारी जनता जो इतनी कुशलता के साथ समय बिता रही है सो उसी के शासन का प्रताप है, और अपनी इसी अनिवार्यता में प्रत्येक शासक को अपने परिश्रम और प्रयत्नों का पुरस्कार मिल जाता है। जब तक इतिहास का समुद्र शान्त रहता है, शासक अपनी जीर्ण-शीर्ण डोंगी में बैठा हुआ नाव के आँकड़े से जनता की नाव को थामे रहता है और, अपने आप चलता हुआ, यह समझता है कि उसी के प्रयत्न से जनता की नाव चल रही है जिसके साथ उस आँकड़े के द्वारा उसका सम्बन्ध है। पर जब तूफ़ान आता है, और लहरें उठने लगती हैं और नाव हिलने-डुलने लगती है, फिर वह भ्रान्ति स्थायी नहीं रहती। नाव स्वच्छन्द भाव से स्वयं ही अपनी प्रबल गति से एक ओर चली

जाती है, आँकड़ा उस तक पहुँच नहीं पाता, और अकस्मात् शासक, एक अधिकारी और शासक की स्थिति से पतित होकर एक नगण्य, निरर्थक दुर्बल आदमी मात्र रह जाता है।

रोस्टोपचिन इस बात की अनुभूति कर रहे थे, और इसी से उनके दिल में आग लग उठती थी।

ऐडजूटेण्ट ने भीतर आकर सूचना दी कि गाड़ी तैयार है, पर उसके साथ ही साथ वह पुलिस मास्टर भी भीतर चला आया था जिसे भीड़ ने रोक लिया था। दोनों के रङ्ग पीले पड़े हुए थे। पुलिस मास्टर ने कहा कि उनकी आज्ञा का तद्वत् पालन किया गया है। फिर यह सूचना दी कि बाहर एक विशाल जन-समुदाय खड़ा हुआ उनकी बाट जोह रहा है।

काउण्ट रोस्टोपचिन बिना कुछ कहे शीघ्रता से उठे और अपने सुन्दर से ड्रायङ्ग-रूम में जाकर छज्जे के दरवाज़े की ओर बढ़े, दरवाज़े का दस्ता घुमाया और फिर वैसा ही बन्द कर दिया, और फिर वह एक खिड़की के पास चले गये जहाँ से वह भीड़ को अधिक अच्छी तरह देख सकते थे। वह लम्बा युवक भीड़ के आगे कठोर मुद्रा बनाये हाथ हिला हिलाकर कुछ कह रहा था। उसकी बग़ल ही में रक्तरञ्जित लोहार विषण्ण मुद्रा बनाये खड़ा था। बन्द खिड़की में से आवाज़ों की गुञ्जाहट सुनाई पड़ती थी।

रोस्टोपचिन ने खिड़की से हटकर कहा—'मेरी गाड़ी तैयार हो गई ?'

ऐडजूटेण्ट ने कहा—'जी हाँ महोदय।'

काउएट रोस्टोपचिन फिर छज्जे के दरवाज़े के पास पहुँचे और पुलिस मास्टर से पूछने लगे—'ये लोग चाहते क्या हैं ?'

'श्रीमन्, वे लोग कहते हैं कि वे आपकी आज्ञा के अनुसार फ्रेंचों से लड़ने के लिए एकत्र हुए हैं। महोदय, बड़ा अशान्त समुदाय है। मैं उसके बीच में से बड़ी कठिनता से आ सका। महोदय, मैं तो यह सलाह देने की अनुमति... ।'

काउएट रोस्टोपचिन ने क्रुद्ध भाव से कहा—'तुम जा सकते हो। मुझे तुमसे पूछने की ज़रूरत नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिए।'

उन्होंने फिर पूछा—'गाड़ी तैयार है न ?'

ऐडजूटेएट ने कहा—'जी हाँ महोदय ! वेराश्चेगिन पोर्च में खड़ा हुआ है; क्या हुक्म होता है ?'

'आह !' रोस्टोपचिन बोल उठे, मानों उन्हें किसी बात का अचानक स्मरण हो आया हो। उन्होंने शीघ्रता से दरवाज़ा खोला और दृढ़ गति से वह छज्जे पर पहुँचे। बातचीत तत्काल बन्द हो गई, सबने अपने सिरों पर से टोप और टोपियाँ उठाईं और सबकी दृष्टि छज्जे पर खड़े हुए काउएट की ओर लग गई।

काउएट ने फुर्ती के साथ ज़ोर से कहा—'सलाम, जवानो ! तुम्हारे यहाँ आने पर धन्यवाद ! मैं तुम्हारे पास अभी एक मिनट में पहुँचा, पर पहले हमें एक हरामज़ादे का निपटारा कर लेना चाहिए। हमें इस हरामज़ादे को ज़रूर दण्ड देना चाहिए। इसी की बदौलत मास्को को यह दिन देखना पड़ा है। ठहरो, मैं

आता हूँ !' और उतनी ही शीघ्रता से काउण्ट पीछे हट आये और उन्होंने ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

सारे समुदाय में सन्तोष और प्रशंसा की लहर दौड़ गई।

भीड़ में लोग—मानो एक दूसरे को उनकी विश्वासहीनता पर धिक्कारते हुए—कह रहे थे—'देखो न, वह सारे हरामज़ादों का निपटारा करेंगे ! और तुम कह रहे थे कि फ़्रेंच...देखो, वह अभी दिखाये देते हैं कि क़ानून क्या चीज़ है !'

कुछ मिनटों के बाद एक अफ़सर सामने के दरवाज़े से दौड़ता हुआ आया। उसने कुछ आदेश दिया और घुड़सवार लाइन बनाकर खड़े हो गये। जन-समुदाय उत्सुकता के साथ छज्जे के नीचे से पोर्च की ओर बढ़ा। रोस्टोपचिन ने वहाँ से शीघ्रगामी क्रुद्ध चाल से आकर आतुरता के साथ चारों ओर दृष्टि दौड़ाई मानो किसी को खोज रहे हों।

उन्होंने पूछा—'कहाँ है ?'

यह कहते हुए उन्होंने देखा कि भवन के कोने की ओर से एक युवक घुड़सवारों के बीच में घिरा हुआ उनकी ओर आ रहा है। उसकी गर्दन पतली थी और उसका सिर आधा मुँडा हुआ था, पर उस पर दुबारा बाल जम आये थे। यह युवक नीले रङ्ग का पुराना कोट पहने हुए था जिसके चारों ओर लोमड़ी के बालों की गोट लगी हुई थी। उसका पाजामा क़ैदियों का था जिसके ऊपर उसके कुचले हुए मैले और पतले ऊँचे बूट चढ़े हुए थे। उसकी

पतली दुबली टाँगों में भारी ज़ंजीरें पड़ी हुई थीं जो उसकी असंयत चाल में बाधा पहुँचाती थीं।

काउण्ट ने उस युवक की ओर से दृष्टि हटाकर पोर्च की निचली सीढ़ी की ओर संकेत करते हुए कहा—'आह! इसे वहाँ खड़ा करो!'

युवक अपने एक हाथ से कोट का मुड़ा हुआ कालर—जिससे उसकी गर्दन फँस रही थी—ठीक करता हुआ लम्बी साँस लेकर उस निर्दिष्ट स्थान पर ज़ंजीरें बजाता हुआ भद्दे ढङ्ग से जा खड़ा हुआ और फिर काम करने में अनभ्यस्त दुबले पतले हाथों को आगे की ओर मोड़ते हुए, अपनी पतली गर्दन इधर-उधर घुमाने फिराने लगा।

अनेक क्षणों तक चारों ओर निःस्तब्धता छाई रही। केवल भीड़ के पीछे, जहाँ के आदमी बराबर धक्के देकर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे, कराहट, झुँझलाहट और गति के शब्द सुन पड़ते थे।

युवक के सीढ़ी पर आ खड़े होने की प्रतीक्षा करते हुए रोस्टोपचिन अपने मुँह पर हाथ फेर रहे थे और उनके तेवर चढ़े हुए थे।

उन्होंने अपनी गूँजती हुई आवाज़ में कहा—'सज्जनो, यह आदमी वैराश्चेगिन हरामज़ादा है जिसकी करतूतों से मास्को को यह बुरा दिन देखना नसीब हुआ है। इसने ज़ार और उनके देश के साथ विश्वासघात किया है। यह बोनापार्ट से मिल गया है। सारे रूसियों में यही एक ऐसा है जिसने रूसी नाम को

कलङ्कित किया है; इसी की बदौलत आज मास्को बर्बाद हो रहा है। रोस्टोपचिन ने तीव्र संयत स्वर में कहा, पर अकस्मात् उन्होंने वैराश्चेगिन की ओर देखा जो उसी प्रकार आत्मसमर्पण-पूर्ण स्थिति में खड़ा था; और—मानो उसकी ओर देखते ही उत्तेजित होकर—उन्होंने अपना हाथ उठाया और, लगभग चिल्लाते हुए, जनसमुदाय से कहा—

'मैं इसे तुम्हारे हाथों सौंपता हूँ। जो मुनासिब समझो करो। इस पर टूट पड़ो! इस हरामज़ादे को नेस्त-नाबूद कर दो जिससे इसका रूसी नाम कलङ्कित न हो। इसकी बोटी बोटी काट डालो।'

रोस्टोपचिन के शब्दों को नहीं—क्रुद्ध स्वर को सुनकर भीड़ कराह उठी और आगे बढ़ने लगी, पर फिर रुक गई।

'काउएट!' उस क्षणिक निःस्तब्धता को भेदकर वैराश्चेगिन की भीत, पर अभिनयपूर्ण, आवाज़ ने कहा—'काउएट! हमारे ऊपर परमात्मा भी है।' उसने फिर सिर उठाया, और फिर उसके गले की नस रक्त से भर गई और चेहरा लाल हो उठा, पर तत्काल ही वह रक्त फिर अदृश्य हो गया।

वह अपना इच्छित वाक्य समाप्त न कर सका।

अकस्मात् रोस्टोपचिन ने वैराश्चेगिन की भाँति पीले ज़र्द पड़कर ज़ोर से कहा—'इसकी बोटी बोटी अलग कर दो। मैं हुक्म देता हूँ...'

घुड़सवारों के अफ़सर ने चिल्लाकर कहा—'तलवारें निकाल लो!' और उसने स्वयं भी अपनी तलवार निकाल ली।

जनसमुदाय में एक दूसरी--और पहले से प्रबलतर—लहर फैल गई और सैनिकों की पंक्ति तक जा पहुँची और उसे बहाकर सीढ़ियों तक ले गई। वह लम्बा युवक वैराश्चेगिन के पास खड़ा था और उसका चेहरा पीला और कठोर बना हुआ था और एक हाथ ऊपर उठा हुआ था।

एक सैनिक का चेहरा अकस्मात् रोष से विकृत हो उठा, और उसने अपनी तलवार की उल्टी ओर से वैराश्चेगिन के सिर पर आघात किया।

'आह!' वैराश्चेगिन ने कातर विस्मय के साथ चिल्लाकर कहा और अपने चारों ओर भयभीत दृष्टि से देखा मानो उसकी समझ में न आ रहा हो कि यह आघात उस पर क्यों किया गया है। और इसी प्रकार की विस्मय और भीति की कराहट सारे समुदाय में दौड़ गई। एक शोकपूर्ण स्वर ने कहा—'हे भगवान्!'

पर वैराश्चेगिन के मुँह से निकले हुए उस विस्मय भरे चीत्कार के बाद पीड़ा का शोकपूर्ण रोदन-चीत्कार सुनाई देने लगा, और वह रोदन-चीत्कार सांघातिक था। जिस मानवोचित भावना के बाँध ने अब तक इस समुदाय को रोक रक्खा था, वह अधिक ज़ोर पड़ने पर अकस्मात् टूट गया। अपराध जब आरम्भ कर दिया गया था तो उसका अन्त होना भी आवश्यक था। वैराश्चेगिन के भर्त्सनापूर्ण रोदन-चीत्कार की ध्वनि जनसमुदाय के क्रुद्ध गर्जन में विलीन हो गई। सातवीं और अन्तिम लहर की तरह, जिससे नाव टूट जाती है, एक अन्तिम प्रबल लहर भीड़ के

पिछले भाग में दौड़ी, आगे के भाग में पहुँची और उनके पर उखाड़ती हुई उनके सिरों के ऊपर से निकल गई। वह सिपाही अपना आघात दुहरानेवाला था। वैराश्चेगिन भीति के चीत्कार के साथ, अपने हाथों से अपना सिर ढककर, जनसमुदाय की ओर झपटा। वह उस लम्बे युवक के ऊपर जा पड़ा और वह युवक उसकी पतली गर्दन पकड़कर उन्मत्त की तरह चिल्लाता हुआ उसे लेकर ज़मीन पर धक्का-मुक्की करती हुई और आगे बढ़ती हुई भीड़ के आगे गिर पड़ा।

भीड़ में से कुछ वैराश्चेगिन को पीटने और खींचने लगे--कुछ उस लम्बे युवक को। और जो लोग कुचले जा रहे थे उनके, और जो उस लम्बे युवक को बचाना चाहते थे उनके, सम्मिलित चीत्कार से जनसमुदाय का क्रोध अधिकाधिक बढ़ता गया। सैनिक उस मरणासन्न लम्बे युवक को जल्दी ही न निकाल सके। उनके ऊपर भीड़ चारों ओर से टूट रही थी और अपनी प्रबल बाढ़ में उन्हें वहाँ से बहा ले जाती थी। इस प्रकार उनके लिए उसे मार डालना या छोड़ देना, दोनों असम्भव थे।

'कुल्हाड़ा मारो कुल्हाड़ा !...कुचल गया ?...दग़ाबाज़, धर्म को बेच दिया ! अभी जीता है...बड़ा जीवट है...इसकी अक़्ल दुरुस्त कर दो ! पीड़ा पहुँचाने से चोट्टे के होश-हवास ठीक हो जाते हैं। कुल्हाड़ा मारो !...क्या—अभी तक जीता है !'

जब अपराधी का उछलना-कूदना बन्द हो गया और उसका चीत्कार मृत्यु की लगातार नपी-तुली कराहट में परिणत हो गया

तब कहीं जनसमुदाय उसकी .खून से लथपथ लाश के पास से शीघ्रतापूर्वक हटने लगा। उनका स्थान दूसरों ने लिया, हर एक आगे बढ़ा, इस वीभत्स व्यापार पर दृष्टिपात किया, और रोमाञ्च, भर्त्सना और विस्मय की मुद्रा के साथ झट पीछे हट गया।

जनसमुदाय में से आवाज़ें आ रही थीं—'हे भगवान्, आदमी भी क्या हैं, जङ्गली जानवर हैं! जीता ही किस तरह बच सकता था! और अभी लड़का ही था...शायद किसी सौदागर का बेटा था। आदमी भी क्या हैं!...और कहते हैं कि असली आदमी यह नहीं था?...क्यों, असली आदमी यह कैसे नहीं था?...हे भगवान्, और दूसरे को भी तो देखो, कितना मारा है; कहते हैं मरनहार पड़ा है!...हे भगवान्, कैसे आदमी हैं!...पाप करते किसको डर नहीं लगता?...' अब जनसमुदाय उस लाश के .खून से ढके हुए सफ़ेद चेहरे और आधी कटी हुई लम्बी गर्दन की ओर दया भाव से देखता हुआ कह रहा था।

एक कष्टसहिष्णु पुलिस अफ़सर ने यह समझकर कि हिज़ ऐक्सीलेंसी के सहन में लाश का पड़ा रहना अनुचित है, सिपाहियों को उसे वहाँ से हटा ले जाने की आज्ञा दी। सिपाहियों ने लाश की क्षत-विक्षत टाँगों को पकड़कर ज़मीन पर खचेड़ना शुरू किया। लाश का रक्त-लिप्त, धूल से सना हुआ अधमुण्डा सिर अपनी लम्बी गर्दन से खिंचता हुआ ज़मीन पर इधर उधर मुड़ने लगा। जनसमुदाय लाश के पास से काँपकर पीछे हट गया।

आधे घण्टे बाद काउण्ट अपने तेज़ घोड़ों की गाड़ी में सवार हुए सोकोलनिकी रोड पर जा रहे थे। अब उन्हें जो कुछ हो बीता था उसकी तनिक भी चिन्ता न थी, अब वह केवल होनेवाली बातों की चिन्ता में रत थे। वह चाउज़ा पुल की ओर जा रहे थे। उन्होंने सुना था कि कुटूज़ोव वहीं हैं। काउण्ट रोस्टोपचिन ने मन ही मन कुछ रोषपूर्ण और चुभती हुई भर्त्सनाएँ तैयार कर ली थीं जिन्हें वह कुटूज़ोव को उनके दग़ा देने पर सुनानेवाले थे।

सोकोलनिकी का मैदान जन-शून्य पड़ा हुआ था। उसके अन्त में एक अन्नक्षेत्र और पागलख़ाने के सामने सफ़ेद कपड़े पहने आदमी दिखाई पड़ रहे थे, और वैसे ही आदमी इक्का-दुक्का करके चीख़ते चिल्लाते और तरह तरह के संकेत करते हुए मैदान में जा रहे थे।

उनमें से एक आदमी रोस्टोपचिन की गाड़ी का रास्ता पार करने दौड़ा, और काउण्ट, उनका कोचवान, और उनके घुड़सवार इन छोड़े गये विक्षिप्तों की ओर, और विशेष कर अपनी ओर भागकर आनेवाले विक्षिप्त की ओर अस्पष्ट भीति और कौतूहल के साथ देखने लगे।

यह विक्षिप्त अपनी पतली टाँगों से इधर उधर झूमकर भागता हुआ और इधर उधर उड़ते हुए ड्रेसिङ्ग गाउन को लपेटे, अबाध रूप से काउण्ट रोस्टोपचिन की ओर एकटक देखता हुआ और अपनी भर्राई हुई आवाज़ में कुछ चिल्लाकर कहता हुआ और उन्हें

गाड़ी रुकवाने का इशारा करता हुआ भागता आ रहा था। इस विक्षिप्त का शोक-मग्न गम्भीर चेहरा, जिस पर छोटे बड़े गुच्छों में दाढ़ी उगी हुई थी, दुर्बल और पीला दिखाई देता था। उसकी काली पुतलियाँ अपने पीले रङ्ग के गुल्लों में निचली पलकों के पास चञ्चल गति से घूम रही थीं।

उसने तीव्र स्वर में चिल्लाकर कहा—'रोको! रोको! मैं कहता हूँ, रोको!' और फिर साँस लेने के लिए मुँह फैलाते हुए उसने ज़ोरदार संकेतों और अर्थहीन शब्दों में चिल्लाकर कुछ कहा।

गाड़ी के पास आकर वह उसकी बग़ल में भागने लगा।

'उन्होंने मुझे तीन दफ़ा क़त्ल किया, और मैं तीनों दफ़ा जी उठा। उन्होंने मुझे पत्थरों से मारा, मुझे सूली पर लटका दिया... मैं जी उठूँगा.. जी उठूँगा ...जी उठूँगा...। उन्होंने मेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये। ईश्वर के राज्य को पलट दिया जायगा... मैं उसे तीन दफ़ा पलटूँगा और तीनों दफ़ा फिर क़ायम कर दूँगा!' उसने अधिकाधिक ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा।

काउण्ट रोस्टोपचिन अकस्मात् पीले ज़र्द पड़ गये, उसी प्रकार जिस प्रकार उस वैरेश्चेगिन के चारों ओर भीड़ के घिरने के समय पीले पड़ गये थे। उन्होंने मुँह फेर लिया और कम्पित स्वर में कोचवान से चिल्लाकर कहा—'जल्दी...जल्दी चलाओ!' गाड़ी उड़ चली और घोड़ों में जितना दम था उसके साथ वे भागने लगे, पर काउण्ट रोस्टोपचिन के कानों में बहुत देर तक उस विक्षिप्त के

हताशा-व्यञ्जक मर्मभेदी चीत्कार आते रहे और उनके नेत्रों के आगे केवल उस लोमड़ी की गोटवाला कोट पहने 'हरामज़ादे' का विस्मित, भयविकृत और रक्तरञ्जित चेहरा फिरने लगा।

वैसे उनके मस्तिष्क में यह चित्र ताज़ा तो था ही, उन्हें बोध हुआ कि वह उनके हृदय में बहुत गहरा अंकित हो गया है और उससे रक्त निकलने लगा है। अब उन्हें स्पष्टतया प्रतीत होने लगा कि उस स्मृति के रक्त-रञ्जित क्षत चिह्न समय के साथ साथ आराम न होते जायँगे, बल्कि वह भयङ्कर स्मृति उनके हृदय में घर बनाकर अधिकाधिक निष्ठुरता और व्यथाकारिता के साथ वास करेगी। उनके कानों में उस समय भी वे शब्द आते सुनाई पड़े—'इसकी बोटियाँ बोटियाँ काट डालो!'

चाऊज़ा के पुल पर सेना की भीड़ अभी तक लग रही थी। गर्मी पड़ रही थी। कुटूज़ोव पुल के किनारे एक बेंच पर विषण्ण भाव से भृकुटी बदले बैठे हुए अपने घोड़े को रेत में घुमा घुमाकर मनोरञ्जन कर रहे थे कि इसी समय एक गाड़ी शीघ्रता के साथ खड़खड़ाहट करके आ लगी। एक आदमी—जनरल की पोशाक पहने और टोप में कलगी लगाये—उतरा और चञ्चल नेत्रों से, जो या तो क्रुद्ध मालूम होते थे या भीत, इधर उधर देखता हुआ आगे बढ़ा और फ्रेंच में कुछ बोला। यह काउण्ट रोस्टोपचिन थे। इन्होंने कुटूज़ोव से कहा कि वह इसलिए आये हैं कि राजधानी मास्को अब राजधानी न रही, और वहाँ केवल सेनाएँ बाक़ी रह गई हैं।

उन्होंने कहा—'यदि आप यह न कहते कि आप बिना युद्ध किये मास्को न छोड़ेंगे तो दशा दूसरी ही दिखाई देती—फिर यह सब कुछ न होता।'

कुटूज़ोव ने रोस्टोपचिन की ओर देखा, मानो उनकी बात का अर्थ समझने में असमर्थ होकर, वह उनके मुखमण्डल पर अंकित कुछ विचित्र सी मुद्रा का अध्ययन कर रहे हों। रोस्टोपचिन क्षुब्ध हो गये और अधिक कुछ न बोले। कुटूज़ोव ने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया, और रोस्टोपचिन के चेहरे की ओर से अपनी मर्मभेदिनी दृष्टि हटाये बिना मृदुल स्वर में धीरे से बोले—

'नहीं, मैं मास्को बिना लड़ाई के न छोड़ूँगा!'

कुटूज़ोव ने यह बात जान-बूझकर कही थी या उस समय वह किसी और ही विचार-धारा में निमग्न थे—कुछ भी हो, कम से कम रोस्टोपचिन ने उसे अनर्गल समझकर कोई उत्तर न दिया और वह वहाँ से शीघ्रता से हट गये। और—कितनी विचित्र बात थी!—मास्को के कमाण्डर-इन-चीफ़ ने—गर्वीले काउण्ट रोस्टोपचिन ने—एक क़ज्ज़ाक़ का कोड़ा लेकर पुल पर जाकर चिल्ला-चिल्लाकर रास्ते में रुकी हुई गाड़ियों को हटाना शुरू कर दिया!

——

ग्यारहवाँ परिच्छेद

तीसरे पहर चार बजे के समय नैपोलियन के सेनापति मुरात की सेनाएँ मास्को में आनी प्रारम्भ हो गईं। सबसे आगे वर्टम्बर्ग हुसार सेना की एक टुकड़ी जा रही थी, और उसके पीछे बड़े भारी अमले के साथ स्वयं नैपल्स का बादशाह आ रहा था।

मुरात के पीछे आती हुई सेना में से चार तोपें शीघ्रता के साथ अर्बट स्ट्रीट पर लाई गईं। जब वे वोज्ड्यूवीज़ेन्का स्ट्रीट के अन्त तक जा पहुँचीं तो उन्हें स्क्वेयर में लगा दिया गया। कुछ फ्रेंच अफ़सर तोपों के नियुक्त करने और क्रेमलिन को दूरबीन से देखने में लग गये।

क्रेमलिन में सन्ध्या की प्रार्थना करने के लिए घण्टियाँ बज रही थीं और यही फ्रेंचों के क्षोभ का कारण हुआ। उन्होंने समझा कि यह लोगों के सशस्त्र हो जाने का संकेतचिह्न है। कुछ पैदल सिपाही कूटाफ़ीव द्वार तक दौड़कर पहुँचे। द्वार में लकड़ियों के गट्ठे और तख़्ते पड़े हुए थे। एक अफ़सर और दो सिपाहियों के वहाँ पहुँचते ही दरवाज़े में से बन्दूक़ के दो फ़ायर गूँज उठे। जो जनरल तोप के पास खड़ा था उसने चिल्लाकर उस अफ़सर को कुछ हुक्म दिया और वह अपने दोनों सिपाहियों के साथ वापस भाग आया।

दरवाज़े में से तीन फ़ायर और सुनाई पड़े।

एक गोली सिपाही के पैर में आकर लगी और उन तख़्तों के पीछे से आदमियों के ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। अकस्मात्—मानों उन्हें आदेश मिला हो—.फ्रेंच जनरल, अफ़सरों, और सैनिकों के चेहरे की प्रफुल्लतापूर्ण शान्त मुद्रा सङ्घर्ष और पीड़ा के लिए कटिबद्धता की मुद्रा में परिणत हो गई। उन सबके लिए वह स्थान अब एक ऐसे युद्ध-क्षेत्र में परिणत हो गया था जिसके रक्त-प्लावित होने की सम्भावना थी। सब लड़ाई के लिए कटिबद्ध हो गये। दरवाज़े में से चिल्लाहट का आना बन्द हो गया। तोपें आगे बढ़ाई गईं, और गोलन्दाज़ों ने तोपों में बत्ती दिखाने के सूराख़ों में से राख झाड़ दी। आज्ञा दी गई 'फ़ायर!' इसके बाद ही एक के बाद दूसरा गोला तोपों में से सनसनाता हुआ निकला। दोनों गोले दरवाज़े के पत्थर और गड्ढों और तख़्तों पर जाकर टकराये, और स्क्वेयर के ऊपर धुएँ के दो उड़ते हुए बादल छा गये।

इन फ़ायरों के कुछ क्षण बाद, जिसकी प्रतिध्वनि क्रेमलिन के पाषाण द्वार पर हुई, .फ्रेंचों को अपने सिरों पर विचित्र सी आवाज़ सुनाई देने लगी। कौओं का बड़ा सा झुण्ड दीवारों के ऊपर से उठकर हज़ारों पङ्खों से उड़ता हुआ ज़ोर ज़ोर से काँव काँव करता हुआ आकाश में फैल गया। इस कलरव के साथ ही दरवाज़े पर से एक अकेले आदमी की चीत्कारध्वनि सुनाई पड़ी, और धुँआ ऊपर उठ जाने पर देहाती कोट पहने नंगे सिर एक आदमी दिखाई दिया। उसने बन्दूक़ पकड़ी और .फ्रेंचों की

ओर निशाना साधा। अफ़सर ने दूसरी बार आज्ञा दी, 'फ़ायर!' और उसकी आवाज़ के साथ ही बन्दूक़ के दो फ़ायर और तोपों के दो बार गर्जने की आवाज़ सुन पड़ी। द्वार फिर धुएँ से ढक गया।

तख़्तों के पीछे फिर कोई गति करता दिखाई न दिया और फ्रेंच पैदल सिपाही और अफ़सर द्वार की ओर बढ़े। प्रवेश-द्वार में तीन आहत और चार मरे हुए आदमी पड़े थे। दो आदमी देहाती कोट पहने हुए ज़नामेन्का की ओर दीवारों के किनारे किनारे भाग निकले। अफ़सर ने गट्ठों और लाशों की ओर संकेत करके कहा—'इन्हें हटाओ'; और फ्रेंच सिपाहियों ने आहतों का काम समाप्त करके लाशों को दीवार के ऊपर से फेंक दिया। ये लोग कौन थे, यह कोई न जान सका। उनके विषय में केवल 'इन्हें हटाओ', ही कहा गया था, और बस। इसके बाद उन्हें दीवार के ऊपर से फेंक दिया गया, और बाद को वहाँ से उठाकर ले जाया गया जिससे उनके सड़ने की बू फ्रेंचों की नाकों में न आये। हाँ, इतिहासकार थियर्स ने अवश्य इनकी स्मृति में दो चार प्रभावोत्पादिनी पंक्तियाँ लिखने की उदारता दिखाई है। 'इन बदज़ातों ने पवित्र क्रेमलिन में मोर्चा बाँधकर सार्वजनिक शस्त्रागार से बन्दूक़ें लेकर फ्रेंचों पर फ़ायर किया। (बदज़ातों ने?) उनमें से कुछ को तलवार के घाट उतार दिया गया, और क्रेमलिन को उनकी उपस्थिति से साफ़ कर दिया गया।'

मुरात को सूचना दी गई कि मार्ग साफ़ हो गया। फ़्रेंच द्वार में घुसे और सीनेट के सहन में तम्बू गाड़ दिये गये। सिपाहियों ने सीनेट भवन की कुर्सियाँ खिड़कियों में से बाहर फेंकीं और सहन में आग जलाई।

दूसरी टुकड़ी क्रेमलिन से होती हुई मोरोसेक्या, लुबान्क्या, और पोकरोव्का में जाकर ठहरो। घरों में स्वामी तो कहीं थे ही नहीं, अतः फ़्रेंच सैनिक नगरनिवासियों के अतिथि होकर न रहे—जैसा कि शहरों में स्वाभाविक है—बल्कि मास्को में इस प्रकार रहे जिस प्रकार तम्बुओं में रहा करते थे।

फ़्रेंच सेना ध्वस्त, बुभुक्षित और पहले से आधी संख्या में होने पर भी मास्को में ठीक मार्च के साथ संगठित रूप में प्रविष्ट हुई। वह भ्रान्त और क्षुधा-पीड़ित होने पर भी अभी भयङ्कर और युद्ध करनेवाली सेना थी। पर यह केवल उस समय तक सेना रही जब तक वह नगर के विभिन्न स्थानों में रहने के लिए तितर बितर न हो गई। मास्को के परित्यक्त और समृद्धिशाली भवनों में इन अनेकानेक रेजीमेंटों के फैलते ही सेना सदैव के लिए नष्ट हो गई, और अब वे फ़्रेंच आक्रमणकारी न सैनिक रहे न नागरिक, बल्कि उनके स्थान पर सैनिक लुटेरे बन गये। जब पाँच सप्ताह बाद यही सेना मास्को से रवाना हुई तो वह सेना न थी, बल्कि लुटेरों का एक गिरोह था जिनमें से हर एक के पास बहुत सी ऐसी चीज़ें थीं जो उसे बहुमूल्य या उपयोगी

दिखाई दी थीं। जब ये लोग मास्को से वापस गये तो इनका लक्ष्य अब विजय करना न था, बल्कि जो कुछ प्राप्त हो चुका था उसे अपने पास बने रहने देना था। फ्रेंच सेना को—एक ऐसे बन्दर की तरह जो किसी तङ्ग मुँहवाली सुराही में हाथ डाल देता है और मुट्ठी में अखरोट भरकर उसे इस आशङ्का से नहीं खोलता कि अखरोट उसके हाथ से निकल जायँगे, और फलतः वहीं नष्ट हो जाता है—मास्को से वापस जाने के बाद स्पष्टतया ही इसलिए नष्ट हो जाना पड़ा कि उसके सैनिक लूट का माल अपने साथ लिये जा रहे थे; और उसे छोड़ जाना उनके लिए उतना ही असम्भव था जितना उस बन्दर के लिए मुट्ठी खोलकर अखरोटों से वञ्चित हो जाना। उसी दिन फ्रेंच कमाण्डरों ने आर्डर पर आर्डर जारी किये कि सैनिक नगर में तितर बितर न हो जायँ, नगर-निवासियों के ऊपर किसी प्रकार का अत्याचार न करें, लूट मार न करें, और शाम के वक्त हाज़िरी में सब मौजूद रहें; पर इन सारे उपायों का कोई फल न निकला। वे लोग जिनसे सेना बनती थी सारे सुसमृद्ध शहर में फैल गये।

मास्को में कोई नगर-निवासी न रहा था, और सैनिक—रेणुका में प्रविष्ट होते हुए जल की तरह—सारे नगर में, क्रेमलिन से लेकर उस स्थान तक जहाँ से उन्होंने शहर में प्रवेश किया, अपना प्रकाश फैलाते फिरे। घुड़सवार सेना किसी सौदागर के परित्यक्त घर में घुसकर अपने घोड़ों के लिए आवश्यकता से अधिक सामान

पाकर भी सन्तुष्ट न होकर अन्य घरों पर अधिकार करने दौड़ गईं। उनमें से अनेक ने एक से अधिक घर क़ब्जे में कर लिये, उन पर खड़िया से अपने नाम लिख दिये और उन पर दूसरी टुकड़ियों से लड़ाई-झगड़ा किया और मार-पीट तक की। निवासस्थान पा सकने के लिए समय मिलने से पहले ही वे शहर में दौड़ गये, और जब उन्हें पता चला कि शहर ख़ाली है तो उन स्थानों पर दौड़ पड़े जहाँ बहुमूल्य वस्तुएँ केवल उठाने भर से अपनी हो जाती थीं। सैनिकों को रोकने के लिए अफ़सर गये और स्वयं भी वही करने में लग गये। गाड़ियों के बाज़ार में दूकानों पर गाड़ियाँ ज्यों की त्यों छोड़ दी गई थीं। उनमें से अच्छी अच्छी गाड़ियाँ छाँटने के लिए जनरलों की भीड़ लग गई। जो कुछ थोड़े-बहुत नगरनिवासी नगर में रह गये थे उन्होंने अपने घरों को लूटमार से बचाने के लिए कमाण्डरों को आमन्त्रित किया। सम्पत्ति की अतुल राशि लगी हुई थी और उसका अन्त दिखाई न देता था। इस प्रकार मास्को इस सेना को अपने अन्तराल में अधिकाधिक लुप्त करता गया। जिस प्रकार किसी सूखी ज़मीन पर पानी डालने पर वह सूखी ज़मीन और वह पानी दोनों ग़ायब हो जाते हैं, उसी प्रकार उस सम्पन्न और परित्यक्त नगर में बुभुक्षित सेना के प्रवेश करने से वह सेना और वह सम्पन्न नगर दोनों नष्ट हो गये। और जिस प्रकार पहली दशा में कीचड़ उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार दूसरी दशा में अग्निकाण्ड और लूट-मार का जन्म हुआ।

फ़्रेंच मास्को के अग्निकाण्ड का भार रोस्टोपचिन की भीषण देशभक्ति पर रखते हैं; रूसी फ़्रेंचों के जङ्गलीपन पर। परन्तु मास्को इसलिए जला कि उसके जैसी परिस्थिति में कोई भी लकड़ी का बना नगर—इस बात को बिना उठाये भी कि नगर में उस समय १३० निकम्मे फ़ायर ऐंजिन मौजूद थे या नहीं थे—जल उठता। मास्को इसलिए जला कि उसके नगर-निवासियों ने उसे परित्याग कर दिया था। इसका अन्यथा होना सम्भव ही न था—उसी प्रकार जिस प्रकार किसी ऐसे ईंधन के गट्ठे के लिए जिस पर कई दिनों से आग की चिनगारियाँ पड़ रही हों, जल उठने के सिवाय और कोई गति नहीं है। जिस काष्ठ-निर्मित नगर में गृह-स्वामियों और पुलिसवालों के मौजूद रहते कोई दिन ऐसा कठिनता से बीतता है जब कहीं न कहीं आग न लग उठती हो, उसमें जब नगर-निवासी न रहेंगे, और उस पर ऐसे सिपाहियों का अधिकार हो जायगा जो पाइप पीते हों, सीनेट की कुर्सियों से आग सुलगाते हों, और अपने हाथ से दिन में दो बार भोजन पकाते हों, तो उसमें आग न लगेगी तो क्या होगा? इस मामले में रोस्टोपचिन की भीषण देशभक्ति और फ़्रेंचों के जङ्गलीपन को दोष नहीं दिया जा सकता। मास्को में आग लगी पाइपों से, बावर्चीख़ानों से और तम्बुओं की आग से, और उन शत्रुसैनिकों की लापरवाही से जो उन घरों में रहते थे जो उनके नहीं थे। यदि रूसियों के अपने घरों में स्वयं ही आग लगा लेने की बात ठीक भी मान ली

जाय (जो बहुत संदिग्ध बात है, क्योंकि अपने घरों में स्वयं ही आग लगाने का—जो स्वयं ही हर हालत में अत्यन्त कष्टकर और संकटापन्न व्यापार है—किसी के पास कोई विशेष कारण न था) तो भी उसे ही इस बृहत् अग्निकाण्ड का कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि इसके बिना भी यही होता।

——

बारहवाँ परिच्छेद

फ्रेंच सेना का प्रवाह मास्कोरूपी शुष्क भूमि पर यद्यपि तारों की भाँति फैल रहा था, फिर भी जिस भाग में पीरी रहता था वहाँ तक वह २ सितम्बर की संध्या से पहले न पहुँच सका।

ये दो दिन एकान्त में और असाधारण परिस्थिति में बिताने के बाद पीरी की दशा विक्षिप्तों जैसी हो चली थी। उसके मस्तिष्क में केवल एक विचार घूम-फिरकर चक्कर लगा रहा था। वह यह स्वयं नहीं जानता था कि इस विचार ने उस पर कब और किस प्रकार अधिकार कर लिया था।

जब पीरी वह कोट पहने रोस्टोव परिवार से मिला और नटाशा ने कहा—'तुम यहीं रहोगे? कैसी अच्छी बात है!' तो पीरी के दिमाग़ में अकस्मात् एक नया विचार दौड़ गया कि सचमुच—यदि मास्को शत्रु के हाथ में चला जाय तो भी—उसका मास्को में रहना बड़ी अच्छी बात होगी और वह अपने भाग्य-लिखित कार्य्य को पूरा करेगा।

दूसरे दिन अपने प्राणों को हथेली पर रखने के एकमात्र उद्देश से प्रेरित होकर, पीरी थ्रीहिल्सगेड की ओर गया। पर जब वह वापस आया और उसे विश्वास हो गया कि मास्को की रक्षा न की जायगी, तो उसे अकस्मात् बोध हुआ कि जिस बात को वह केवल सम्भावना समझता था वह अब

अनिवार्य्य आवश्यकता बन गई है। उसे मास्को ही में नाम छिपाकर रहना चाहिए और नैपोलियन से मिलकर उसे मार डालना चाहिए। इस प्रयत्न में वह या तो स्वयं नष्ट हो जायगा, और या सारे योरप के उन संकटों का अन्त कर देगा जो, पीरी की सम्मति में, सोलह आने नैपोलियन के कारण थे।

पीरी को वह घटना पूरी तरह मालूम थी जिसके अनुसार १८०९ में वियेना में एक विद्यार्थी ने नैपोलियन की हत्या करने का प्रयत्न किया था और उसे यह भी मालूम था कि किस प्रकार उस विद्यार्थी को गोली मार दी गई थी। और इस विचार से, कि वह अपनी योजना को पूरा करने में अपने प्राणों को कितने घोर संकट में डाल देगा, वह अधिकाधिक उत्तेजित होता गया।

तीसरे पहर के दो का समय था। फ्रेंच मास्को में आ चुके थे। पीरी को यह मालूम था, पर वह कुछ करने की बजाय केवल अपनी योजना को सविस्तर रूप से सोच रहा था। उसने अपनी कल्पना की उड़ान में अपने सामने यह स्पष्ट रूप से चित्रित नहीं किया कि किस प्रकार वह नैपोलियन पर आघात करेगा और किस प्रकार उसकी मृत्यु हो जायगी, बल्कि इसके विपरीत वह असाधारण स्पष्टता और विषादपूर्ण उल्लास के साथ केवल अपना विनाश और अपनी वीरतापूर्ण सहिष्णुता का विचार कर रहा था।

वह सोचने लगा—'हाँ, अकेला! सबके लिए मुझे या तो यह कार्य्य पूरा करना चाहिए या स्वयं नष्ट हो जाना चाहिए!'

हाँ, मैं जाऊंगा...और फिर फ़ौरन ही...मगर पिस्तौल से या छूरे से ? अजी, एक ही बात है ! "यह मैं नहीं हूँ, बल्कि विधाता का हाथ है जो तुझे इस प्रकार समाप्त कर रहा है।" मैं कहूँगा', पीरी ने यह सोचते हुए कि वह नैपोलियन से क्या कहेगा, कहा। 'अच्छी बात है, लो, मुझे पकड़ लो और गोली मार दो,' उसने स्वगत सिर झुकाकर विषादपूर्ण पर दृढ़ मुद्रा के साथ कहा।

जिस समय पीरी कमरे के बीच में खड़ा हुआ इस प्रकार स्वगत वार्तालाप कर रहा था उसी समय अध्ययन-शाला का द्वार खुला और दरवाज़े पर उसके मृत मित्र के पागल भाई मकर ऐलेक्सिच की परिवर्तित शक्ल दिखाई दी जो पहले भीत दिखाई देती थी।

उसका ड्रेसिङ्ग गाउन खुला हुआ था, उसका चेहरा लाल और विकृत था। यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह शराब पीकर आया था। पीरी को देखकर पहले तो वह घबराया, पर पीरी के चेहरे पर क्षोभ के लक्षण देखकर वह तत्काल ढीठ हो गया और अपनी पतली टाँगों से लड़खड़ाकर चलता हुआ कमरे के बीच में आ पहुँचा।

उसने विश्वास भाव के साथ भर्राये हुए स्वर में कहा—'डर गये। मैं कहता हूँ मैं कभी माथा न झुकाऊँगा; मैं फिर कहता हूँ...क्यों साहब, मैं ठीक कहता हूँ न ?'

वह रुका, और फिर अकस्मात् मेज़ पर पिस्तौल रक्खी देखकर उसकी ओर झपटा और उसे लेकर बाहर भाग गया। जेरा-

सिम और दूसरा सेवक उसके पीछे-पीछे आये थे; उन्होंने उसके हाथ से पिस्तौल छीनने की कोशिश की। पीरी बाहर निकलकर इस अर्द्धविक्षिप्त वृद्ध आदमी की ओर करुणा और घृणा के साथ देखने लगा। मकर ऐलेक्सिच अपने प्रयत्न पर तेवर चढ़ाकर पिस्तौल हाथ में पकड़े ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगा। यह स्पष्ट था कि उस पर कोई वीरता की धुन सवार हुई थी।

'हथियार पकड़ो! हथियार लो! नहीं, मैं नहीं दूँगा!' उसने चीख़कर कहा।

जेरासिम ने सावधानता के साथ अपनी कुहनियों से उसे भीतर ढकेलने की चेष्टा करते हुए कहा—'बस जी, बहुत हुआ, बहुत हुआ। अब छोड़ दीजिए!'

मकर ऐलेक्सिच ने चिल्लाकर कहा—'तुम कौन हो?... बोना-पार्ट!...

'महोदय, यह ठीक नहीं है। आप अपने कमरे में चलकर आराम करिए।'

'चला जा यहाँ से ग़ुलाम कुत्ते! मुझे हाथ मत लगाना! देखता है न?' मकर ऐलेक्सिच ने पिस्तौल हिलाते हुए चिल्लाकर कहा।

जेरासिम ने दूसरे सेवक से कहा—'इन्हें पकड़ लो!'

दोनों ने मकर ऐलेक्सिच की बाँहें पकड़ लीं और उन्होंने उसे भीतर की ओर खींचा।

सारा स्थान लड़-झगड़ और एक मदोन्मत्त भराई आवाज़ से भर गया।

अकस्मात् स्त्री के गले की एक ताज़ी चुभती हुई चीख़ पोर्च से गूँज उठी और तत्काल ही वहाँ से बावर्चिन भागती हुई आई।

उसने चिल्लाकर कहा—'लो आ गये! हे भगवान्! चार आदमी हैं, घोड़ों पर सवार!'

जेरासिम ने और दूसरे नौकर ने मकर ऐलेक्सिच को छोड़ दिया और अब प्रवेश-द्वार पर कुछ हाथों के दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ स्पष्टतया सुनाई पड़ने लगी।

पीरी ने निश्चय किया था कि वह जब तक अपना उद्देश पूरा न कर लेगा तब तक न तो अपना नाम प्रकट करेगा और न अपना फ़्रेंच-विषयक ज्ञान। वह अब अधखुले दरवाज़े में खड़ा हुआ था और सोच रहा था कि फ़्रेंचों के आते ही वह छिप जायगा। पर फ़्रेंच आये, और फिर भी पीरी न छिपा—उसे उत्कट कौतूहल ने वहीं रोक रक्खा।

वे लोग दो थे। एक अफ़सर था—एक लम्बा, सुन्दर और रँगीला आदमी, दूसरा कोई प्राइवेट या अर्दली था—मुँह धूप से झुलसा हुआ, नाटा और दुबला, गाल पटके हुए, चेहरा विषाद-पूर्ण। अफ़सर हाथ में छड़ी लिये कुछ लड़खड़ाता हुआ सा आगे बढ़ा। जब उसने निश्चय कर लिया कि रहने के लिए यह स्थान अच्छा है, तो वह रुका, प्रवेश-द्वार पर खड़े सिपाहियों की ओर मुँह फेरकर देखा, और ऊँची आदेशपूर्ण आवाज में

बोला कि घोड़े वहीं ठहराये जायँ। जब वह यह आज्ञा दे चुका तो उसने फुर्तीले इशारे के साथ अपनी कुहनी ऊपर उठाई, मूँछें ऐंठीं, और थोड़ा सा टोप छुआ।

उसने उल्लसित भाव से मुस्कराते हुए चारों ओर देखकर कहा —'सलाम, भाइयो!'

किसी ने उसकी बात का उत्तर न दिया। अब अफ़सर ने जेरासिम से फ़्रेंच में पूछा—'क्या यह आपका मकान है?'

जेरासिम उसकी ओर भीत और प्रश्नात्मक दृष्टि से देखता रहा।

अफ़सर ने उस नाटे वृद्ध सेवक की ओर कृपा-भाव और मृदुलता के साथ देखते हुए कहा—'रहने को जगह, रहने को जगह! फ़्रेंच बड़े भले आदमी होते हैं। क्या आफ़त है! बुड्ढे आदमी, इतने हठी मत बनो।' उसने भीत और मूक जेरासिम का कंधा थपथपाते हुए कहा। इसके बाद उसने फिर फ़्रेंच ही में चारों ओर देखते हुए और फिर पीरी से निगाह मिलाते हुए पूछा—'क्या इस घर में कोई फ़्रेंच नहीं जानता?' पीरी दरवाज़े के पास से चल दिया।

अफ़सर फिर जेरासिम की ओर मुड़ा और उससे उसने घर के कमरे दिखाने को कहा।

जेरासिम ने अपनी भाषा के शब्दों को तोड़-मरोड़कर बोलते हुए कहा (उसने समझा कि इस प्रकार फ़्रेंच की समझ में उसकी बात आ जायगी)—'मालिक नहीं, नहीं समझता... मैं आपको...'

.फ्रेंच अफ़सर ने उसी प्रकार मुस्कराते हुए अपना हाथ जेरासिम की नाक के पास फैलाकर प्रदर्शित किया कि उसकी समझ में भी उसकी बात न आई, और फिर लँगड़ाता हुआ पीरी की ओर बढ़ा। पीरी वहाँ से हटकर छिप जाना चाहता था। पर उसी समय उसे मकर ऐलेक्सिच हाथ में पिस्तौल लिये बावर्चीख़ाने के दरवाज़े पर दिखाई दिया। मकर ऐलेक्सिच ने विक्षिप्तों के कौशल के साथ .फ्रेंच अफ़सर को देखा, पिस्तौल उठाई और निशाना साधा।

मदोन्मत्त वृद्ध ने तमंचे का घोड़ा दबाते हुए ज़ोर से चिल्लाकर कहा—'टूट पड़ो!' इस चिल्लाहट को सुनकर .फ्रेंच अफ़सर उसकी ओर मुड़ा और उसी समय पीरी भी उस वृद्ध शराबी की ओर दौड़ पड़ा। पीरी उसके हाथ से पिस्तौल छीनता ही रहा। उसने किसी प्रकार घोड़ा दबा ही दिया, एक ज़ोर की आवाज़ हुई, और सब धुएँ में ढक गये। .फ्रेंच अफ़सर पीला पड़ गया और दरवाजे. की ओर झपटा।

पीरी अपने .फ्रेंच-विषयक ज्ञान का बात को छिपाये रखने की बात भूलकर पिस्तौल छीनकर ज़मीन पर फेंकते हुए, अफ़सर से .फ्रेंच में बोला।

उसने उससे पूछा—'आपके चोट तो नहीं आई?'

.फ्रेंच अफ़सर ने उत्तर दिया—'नहीं तो। मगर भाग्य ही ने मुझे बचा लिया।' और उसने दीवार के टूटे हुए प्लास्टर की ओर संकेत किया। 'यह आदमी है कौन?' उसने पीरी की ओर कठोर दृष्टि से देखकर पूछा।

पीरी ने शीघ्रतापूर्वक कहना आरम्भ किया—'मुझे सचमुच बड़ा खेद हो रहा है। यह बेचारा एक अभागा पागल है। यह सब करते समय इसे कुछ होश न था।'

अफ़सर मकर ऐलेक्सिच के पास पहुँचा और उसकी गर्दन पकड़ ली।

मकर ऐलेक्सिच दीवार के सहारे झूमता हुआ खड़ा था और उसके ओंठ खुले हुए थे, मानो वह सोने की तैयारी में हो।

फ़्रेंच ने उसे छोड़कर कहा—'पाजी कहीं का! देख, तुझे इसका क्या नतीजा मिलता है! हम फ़्रेंच लोग विजय के बाद दया का व्यवहार करते हैं, पर विद्रोहियों को हम कभी क्षमा नहीं करते।' उसने विषादपूर्ण रोब-दाब और परिष्कृत फुर्तीले संकेत के साथ कहा।

पीरी ने अफ़सर से फ़्रेंच में कहा कि वह इस मदोन्मत्त विक्षिप्त को इसका दण्ड न दे। फ़्रेंच उसकी बात बराबर उसी विषाद-भाव से सुनता रहा, पर अकस्मात् उसने मुस्कराकर पीरी की ओर देखा। कुछ क्षण तक वह उसकी ओर चुपचाप ताकता रहा। उसके सुन्दर चेहरे पर विषादपूर्ण मृदुल मुद्रा आ विराजी और उसने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

उसने कहा—'आपने मेरे प्राणों की रक्षा की है। आप फ़्रेंच हैं।'

और एक फ़्रेंच के लिए यह निष्कर्ष संशय-रहित था। केवल एक फ़्रेंच ही कोई बड़ा काम कर सकता है, और उसके प्राणों

की—मोशियो रामबाल, १३वीं घुड़सवार सेना के कैप्टिन के प्राणों की—रक्षा करना निस्संदेह एक बहुत बड़ा काम था।

पर यह निष्कर्ष कितना ही संशय-रहित और उसके आधार पर उस अफ़सर की धारणा कितनी ही दृढ़ सही, पीरी ने उसे निर्भ्रान्त करना अपना कर्त्तव्य समझा।

उसने शीघ्रता से कहा—'मैं रूसी हूँ।'

अफ़सर ने उसकी नाक के सामने अपनी अँगुली नचाते हुए मुस्कराकर कहा—'रर, रर, रर! यह चाल दूसरों से चलना। सब कुछ अभी कह सुनाओगे। मुझे अपने देशवासी से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अच्छा, तो बताओ, इस आदमी के साथ कैसा बर्ताव किया जाय?' उसने पीरी को अपने भाई की तरह सम्बोधित करते हुए कहा।

अफ़सर की दृष्टि और स्वर व्यंजित कर रहे थे कि यदि पीरी सचमुच फ्रेंच न हो, तो भी एक बार इस सर्व्वोच्च मानवी उपाधि का भागी बनने पर उसका परित्याग करने का उसमें साहस न होगा। अफ़सर के अंतिम प्रश्न के उत्तर में पीरी ने फिर समझाया कि वास्तव में मकर ऐलेक्सिच कौन है, और किस प्रकार उसके आने के क्षण ही भर पहले उसने भरी हुई पिस्तौल उठा ली थी जिसे उससे छीनने का अवसर नहीं मिला था, और अंत में उससे अनुरोध किया कि वह उस मदोन्मत्त विक्षिप्त को छोड़ दे।

फ्रेंच ने अपना सीना निकाला और अपने हाथ से शाहाना ढंग से संकेत करके कहा—

'तुमने मेरे प्राण बचाये हैं! तुम फ्रेंच हो। तुम इसे क्षमा कराना चाहते हो? अच्छा, मंज़ूर! इस आदमी को यहाँ से ले जाओ!' अफ़सर ने शीघ्रता और स्फूर्ति के साथ कहा, और पीरी का—जिसे उसने अपने प्राण बचाने के पुरस्कार में फ्रेंच के पद पर अभिषिक्त कर दिया था—हाथ पकड़कर वह उसके साथ एक कमरे में चला गया।

सिपाहियों ने गोली की आवाज़ सुनी तो वे भीतर आ गये और अपराधी को दण्ड देने में अपनी तत्परता दिखानें लगे। पर अफ़सर नें कठोरता के साथ उन्हें रोककर कहा, 'जब तुम्हारी ज़रूरत होगी तो बुला लिया जायगा।'

सिपाही बाहर चले गये, और अर्दली, जो इस बीच में बावर्चीख़ाने का चक्कर लगा आया था, अपने अफ़सर के पास आकर बोला—

'कैप्टिन, बावर्चीख़ाने में शोरबा और भेड़ की टाँग है। लाऊँ क्या?'

कैप्टिन ने कहा—'हाँ, और कुछ शराब भी।'

——

तेरहवाँ परिच्छेद

जब .फ्रेंच अफ़सर पीरी के साथ कमरे में पहुँचा तो पीरी ने उसे एक बार फिर आश्वस्त करना अपना कर्त्तव्य समझा कि वह .फ्रेंच नहीं है। उसने वहाँ से जाने की इच्छा प्रकट की, पर अफ़सर ने उसकी एक न सुनी। वह इतना विनम्र, सहृदय और मृदुलस्वभाव का था, और अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए पीरी का इतना कृतज्ञ था, कि पीरी उसके निमंत्रण को अस्वीकार न कर सका और उसके साथ बैठक में बैठ गया। पीरी के बार-बार यह कहने पर कि वह .फ्रेंच नहीं है, कैप्टिन हैरान हो गया कि कोई ऐसी लुभावनी उपाधि को किस प्रकार अस्वीकार कर सकता है। अंत में उसने अपने कंधे उचकाये और कहा कि यदि पीरी रूसी बनने पर ही तुला हुआ है तो यही सही, पर कुछ भी हो, वह पीरी का उसके उपकार के लिए हमेशा कृतज्ञ रहेगा।

यदि इस आदमी में दूसरों के भावों को ताड़ने की तनिक सी भी क्षमता होती, और वह ज़रा भी जान पाता कि पीरी के भाव क्या हैं, तो सम्भवतः पीरी उसे छोड़कर चला आता। पर अपने से विपरीत वस्तुओं की ओर से अफ़सर की सजीव उदासीनता ने उसे निःशस्त्र कर दिया।

अफ़सर ने पीरी की मैली, पर बढ़िया कमीज़ और उसकी अँगुली की अँगूठी की ओर देखते हुए कहा—'बस, बस, मैं ताड़

गया, या तो कोई .फ्रेंच हो, या कोई वेश बदले रूसी प्रिंस हो। मेरे प्राण तुमने ही बचाये हैं और मैं तुम्हारा मित्र बनना चाहता हूँ। एक .फ्रेंच अपमान या उपकार कभी नहीं भूलता। बस, मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मैं तुम्हारा मित्र बनना चाहता हूँ।'

जब भेड़ का मांस, अंडों के चीले, चाय, कुछ वोडका और थोड़ी सी शराब जो एक रूसी घर में उनके हाथ लग गई थी, परोसी गई, तो रामबाल ने पीरी को भोजन के लिए आमन्त्रित किया, और .खुद बड़े चाव के साथ किसी बुभुक्षित व्यक्ति की तरह जल्दी जल्दी खाने लगा। वह अपने मज़बूत दाँतों से अपना भोजन कुतरता और हर दफ़ा चटख़ारे ले-लेकर कहता—'वाह, क्या कहने हैं! क्या ज़ायक़ा है!' उसने रूमाल से बोतल की गर्दन तक लपेटा और उसमें से अपने और पीरी के लिए शराब उँडेलनी आरम्भ की। क्षुधा-तुष्टि और मदिरा ने कैप्टिन को और भी सजीव कर दिया और वह सारे भोजन के समय लगातार बातचीत करता रहा।

'हाँ, महाशय, तुमने उस पागल से मेरे प्राणों की रक्षा की, इसके लिए मैं तुम्हारा बेदामों का .गुलाम हो गया। देखो न, मेरे शरीर में वैसे ही काफ़ी गोलियाँ मौजूद हैं। यह देखो, यह वाग्राम की निशानी है।' और उसने अपनी कोख छुई। 'और यह स्मोलेन्स्क में लगी।' उसने गाल का चिह्न दिखाया। 'और यह देखो, यह टाँग अब चलने से इंकार करती है; यह बोरोडिनो की भीषण लड़ाई की निशानी है। हे भगवान्! बड़ी बढ़िया लड़ाई

थी। वह गोले, गोलियों का तूफ़ान बस देखने से संबंध रखता था। वहाँ तुमने हमारे लिए बड़ा कठिन काम कर दिया था; अपनी क़सम! तुम इस पर गर्व कर सकते हो! और, अपने सम्मान की शपथ, वैसे मुझे उस दिन ज़ुकाम हो गया था, पर मौक़ा आ जाय तो मैं फिर उसके लिए कूदकर तैयार हो जाऊँ। मुझे उन लोगों पर तरस आता है जो उसमें हिस्सा न ले सके।'

पीरी ने कहा—'मैं वहीं था।'

कैप्टिन इतने सहज और मृदुल भाव से उल्लसित हो रहा था, और अपने आप पर इतना हृदय से प्रसन्न हो रहा था कि पीरी ने भी उसकी ओर उल्लसित भाव से देखकर पलक मारा।

'और हाँ, यह तो बताओ, क्या यह ठीक है कि सारी स्त्रियाँ मास्को छोड़-छोड़कर चली गई हैं? वाह, क्या सूझी! उन्हें डर किस बात का था?'

पीरी ने पूछा—'अगर रूसी पेरिस में पहुँचते तो क्या फ़्रेंच महिलाएँ उसे न छोड़ जातीं?'

'हा, हा, हा!' फ़्रेंच ने पीरी के कंधे पर हाथ मारकर उल्लास-पूर्ण प्रफुल्लित ढंग से अट्टहास करके कहा—'वाह, तुमने भी क्या बात कही है! पेरिस?...मगर पेरिस, पेरिस...।'

पीरी ने उनका वाक्य स्वयं पूरा कर दिया—'पेरिस—संसार की राजधानी।'

कैप्टिन ने पीरी की ओर देखा। उसे बात-चीत करते-करते यकायक रुककर अपने प्रफुल्लित नेत्रों से चुपचाप देखने की आदत थी।

'अगर तुम यह न कह देते कि तुम रूसी हो तो मैं शर्त लगाने को तैयार था कि तुम पेरिस-निवासी हो! तुममें वह...मैं कह नहीं सकता क्या...वह....।' और इस प्रकार प्रशंसा करके वह चुपचाप पीरी की ओर देखने लगा।

पीरी ने कहा—'मैं पेरिस हो आया हूँ, मैं वहाँ सालों रहा हूँ।'

'और क्या! यह देखते ही मालूम पड़ जाता है। पेरिस!.... जो आदमी पेरिस को नहीं जानता वह जङ्गली है। पेरिसवाले को दो कोस दूर से देखकर बताया जा सकता था। पेरिस टाल्मा है, डुशेनो है, पोटियर है, सोरबोन है, भ्रमण-स्थान है'; और यह देखकर कि उसका निष्कर्ष पहले निष्कर्षों की अपेक्षा दुर्बल है, उसने शीघ्रता से कहा—'पेरिस का सानी दुनिया भर में कोई नहीं है। तुम पेरिस हो आये और फिर भी रूसी ही बने रहे। ख़ैर, तिस पर भी मैं तुम्हारा उतना ही मान करता हूँ।'

पीरी स्वयं अपने ही विचारों के संसर्ग में अपने एकाकी जीवन बिताने के बाद, और शराब के प्रभाव से उन्मत्त होकर इस प्रफुल्लित और मृदुलस्वभाव विदेशी की बातचीत इच्छा न रहते हुए भी बड़े आनन्द के साथ सुनने लगा।

'हाँ, तुम्हारी महिलाओं का ज़िक्र हो रहा था—मैंने सुना है कि वे बड़ी सुन्दर हैं। यह फ़्रेंच सेना के मास्को आने पर देहातों में जा छिपने की उन्हें क्या धुन सवार हुई? उन्होंने कैसा अच्छा अवसर हाथ से निकाल दिया! तुम्हारी देहाती रय्यत की बात दूसरी है, पर तुम लोगों को—सभ्य लोगों को—तो हमसे अच्छी

तरह परिचित हो जाना चाहिए था। हमने वियेना लिया, बर्लिन लिया, मैड्रिड लिया, नैपल्स लिया, रोम लिया, वारसा लिया—दुनिया भर की राजधानियाँ लीं...हमारी धाक चारों ओर बैठी हुई है, पर फिर भी सब लोग हमें प्यार करते हैं। हमसे परिचित होना कुछ मानी रखता है। और, फिर, सम्राट्...' उसने कहना आरम्भ किया, पर पीरी ने बाधा दी।

पीरी ने कहा—'सम्राट्', पर अकस्मात् वह विषण्ण और क्षुब्ध हो उठा। 'क्या सम्राट्... ?'

'सम्राट् ? वह उदारता, दया, न्याय, व्यवस्था, प्रतिभा के मूर्तिमान् अवतार हैं ! बस, हमारे सम्राट् ऐसे हैं ! मैं रामबाल यह बात कह रहा हूँ, कोई दूसरा नहीं। अब से आठ साल पहले मैं ही उनका जानी दुश्मन था—मेरी बात पर यक़ीन करो। मेरे पिता एक काउण्ट थे जो सम्राट् से बचकर विदेश भाग गये थे। पर इस आदमी ने मेरे ऊपर जादू कर दिया। इसने मुझे क़ाबू में कर लिया। सम्राट् ने फ़्रांस को जिस गौरव और विभूति से ढक दिया था उसके दृश्य को देखकर मैं संयत न रह सका। जब मैंने अच्छी तरह समझ लिया कि वह क्या चाहते हैं—जब मैंने देखा कि वह हमारे गलों में विजय की मालाओं पर मालाएँ पहना रहे हैं, तो मैंने मन ही मन कहा—'यह सचमुच सम्राट् है !' और उसी दिन से मैं उनका भक्त बन गया ! समझे ! दोस्त, सम्राट् अतीत और भविष्य के सब से महान् पुरुष हैं !'

पीरी ने अपराधी मुद्रा से हकलाकर कहा—'तो वह मास्को ही में हैं न ?'

फ़्रेंच ने उसके अपराधी चेहरे की ओर देखा और मुस्कराकर कहा—'न, वह मास्को में कल प्रवेश करेंगे।' और इसके बाद उसने बातचीत का सिलसिला फिर जारी कर दिया।

नौकर क़न्दील और एक बोतल उठा लाया। कैप्टिन ने क़न्दील के प्रकाश में पीरी की ओर देखा और उसके चेहरे की व्यथित मुद्रा को देखकर प्रभावित हुआ। रामबाल के चेहरे पर भी हार्दिक व्यथा और सहानुभूति के चिह्न उदित हो गये। वह अपने मित्र के पास जाकर उसके ऊपर झुककर और उसका हाथ छूकर बोला—

'यह लो, हम तो दुःखित हो रहे हैं। क्या मैंने तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाया है ? नहीं, सच बताओ, क्या तुम्हारे जी में मेरी ओर से किसी तरह का मैल है ? शायद आजकल की दशा देखकर दुःखित हो रहे हो ?'

पीरी ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर उसके नेत्रों में सहृदयता के साथ देखता रहा, और उसकी सहानुभूति उसे सुखकर प्रतीत हुई।

'दोस्त, दिल की बात तो यह है कि अगर तुम्हारे अहसान की बात छोड़ भी दी जाय, तो भी मैं तुम्हें अपना मित्र समझता हूँ। मैं तुम्हारी कोई सेवा कर सकता हूँ ? बताओ। क्या जीवन मृत्यु का प्रश्न है ? लो, मैं अपने हृदय पर हाथ रख-

कर वचन देता हूँ।' उसने अपने सीने पर ज़ोर से हाथ मारकर कहा।

पीरी ने कहा—'धन्यवाद।'

कैप्टिन ने उसकी ओर बड़े मनोयोग से देखा, उसी प्रकार जिस प्रकार उसने उस समय देखा था जब उसे मालूम हुआ था कि आश्रय के लिए जर्मन में 'अण्टर कुम्फट' शब्द है, और अकस्मात् उसका मुखमण्डल उज्ज्वल हो उठा।

उसने उल्लास के साथ दो गिलास भरकर कहा—'अच्छी बात है, तो अपनी मित्रता के नाम पर!'

पीरी ने एक गिलास उठाकर ख़ाली कर दिया। रामबाल ने भी अपना गिलास ख़ाली कर दिया, उसका हाथ दबाया और चिंतित मुद्रा से मेज़ पर झुककर खड़ा हो गया।

'हाँ दोस्त, सच बात है, यह सब भाग्य का खेल है। यह कौन कह सकता था कि मैं बोनापार्ट की नौकरी में—पहले हम सब सम्राट् को इसी नाम से पुकारते थे—घुड़सवार सेना का सैनिक और कैप्टिन होऊंगा? और, फिर भी तुम देख ही रहे हो, उनके साथ आज मास्को में मौजूद हूँ। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ', उसने एक ऐसे आदमी की तरह विषण्ण और नपे तुले स्वर में कहना आरम्भ किया जो एक लम्बी कहानी कहने जा रहा हो, 'कि हमारा नाम फ्रांस में सबसे पुराने नामों में समझा जाता है।'

और कैप्टिन ने फ्रेंच-सुलभ सहज और सरल स्पष्टवादिता के साथ अपने पूर्वजों की और शैशवावस्था, युवावस्था, परिपक्वावस्था सारी कहानियाँ कह सुनाईं और फिर अपनी रिश्तेदारियों, और आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का भी—बीच-बीच में 'मेरी प्यारी माँ' का पुट देते हुए--विशद विवरण सुना डाला।

उसने अधिकाधिक सजीव होते हुए कहा—'पर यह सब तो जीवन का चक्र है, अस्ल चीज़ है प्रेम--प्रेम! क्यों मोशिये पीरी, मैं ठीक कहता हूँ न? एक गिलास और?'

पीरी ने दूसरा गिलास भी ख़ाली कर दिया और तीसरा अपने हाथ से भरा।

अब कैप्टिन ने पीरी की ओर चमकते हुए नेत्रों से देखते हुए और अपने प्रेम-सम्बन्धों का ज़िक्र छेड़ते हुए कहा—'ओह, औरत—औरत!'

और ऐसी कहानियों की कमी न थी, यद्यपि रामवाल की सारी प्रेम-गाथाओं में एक ऐसा गर्हित चरित्र निहित था जिसमें फ्रेंच लोग प्रेम की अनूठी मनोमोहकता और कविता समझते हैं, फिर भी उसने वे कहानियाँ ऐसी हार्दिक धारणा से कह सुनाईं कि वही एक ऐसा व्यक्ति है जिसने प्रेम की सम्पूर्ण मनोमोहकता की अनुभूति की है, और स्त्रियों का वर्णन इतने हृदयहारी ढंग से किया कि पीरी उसकी बात कौतूहल के साथ सुनता रहा।

यह स्पष्ट था कि जिस प्रेमवासना पर उक्त फ्रेंच जान देता था वह न उस निम्न और सरल श्रेणी की प्रेमवासना थी जिसको

अनुभूति पीरी ने एक बार अपनी पत्नी के सम्बन्ध में की थी, और न उसके ही द्वारा उद्दीप्त की हुई कल्पनाविशिष्ट प्रेमवासना थी जिसकी अनुभूति वह नटाशा के सम्बन्ध में करता था। रामबाल उक्त दोनों प्रकार के प्रेमों को एक जैसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता था—पहले ढंग की प्रेमवासना को वह 'गाँववालों के प्रेम' के नाम से पुकारता था, और दूसरे ढंग के प्रेम को 'बुद्धुओं के प्रेम' के नाम से अभिहित करता था। जिस ढंग की प्रेमवासना की वह फ्रेंच आराधना करता था वह विशेष कर स्त्री-सम्बन्धी सम्पर्क की अस्वाभाविकता में, और ऐसे एक से अधिक असामंजस्य के सम्मिश्रण में सन्निहित था जिससे भावुकता को मनोहारिता प्राप्त हो जाती थी।

इस प्रकार कैप्टिन ने एक पैंतीस वर्ष की मार्शिनेस, और साथ ही मनोहारिणी मार्शिनेस की सत्रह वर्ष की लावण्यमयी निर्दोष बच्ची के साथ अपने प्रेमसम्पर्क का मर्मस्पर्शी वर्णन सुनाया। जब माता और पुत्री के परस्पर उदारहृदयता के संघर्ष का—जिसका अन्त माता के अपनी पुत्री को पत्नी रूप से अपने प्रेमी के हवाले करने में तत्पर होने में हुआ—वर्णन करने का अवसर आया तो—बात दूरस्थ अतीत की होने पर भी—कैप्टिन उद्वेलित हो उठा। इसके बाद उसने ऐसी घटना सुनाई जिसके अनुसार पति को प्रेमी का, और उसे—प्रेमी को—पति का पार्ट अदा करना पड़ा था।

अन्त में पोलैण्ड की हाल की घटना—जो कैप्टिन के स्मृति-पटल पर ताज़ी अंकित थी और जिसे उसने फुर्तीले हाव भाव

और तमतमाये हुए मुखमण्डल के साथ सुनाया था—इस आशय की थी कि किस प्रकार उसने एक पोल के प्राणों की रक्षा की थी। (साधारणतया कैप्टिन की कहानियों में किसी न किसी की प्राण-रक्षा का ज़िक्र बार-बार आ जाता था), और किस प्रकार वह पोल अपनी बहलावे फुसलावे में आ जानेवाली बीवी को (जो हृदय से पेरिसवाली थी) उसके सिपुर्द करके स्वयं फ्रेंच सेना में भर्ती हो गया था—किस प्रकार कैप्टिन के आनन्द का वारापार न था—और किस प्रकार उक्त पोलिश महिला ने उसके साथ 'उड़ चलने की' अभिलाषा प्रकट की थी—पर किस प्रकार उसने उदाराशयता के वशीभूत होकर बीवी को स्वामी के हवाले कर दिया था—और किस प्रकार उसे हवाले करते समय उसने उस पोल से कहा था—'मैंने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की, और मैं तुम्हारे मान की रक्षा करता हूँ !' इन शब्दों को दुहराकर कैप्टिन ने अपने नेत्र पोंछे और एक फुरहरी ली मानो वह इस मर्मस्पर्शिनी स्मृति से उत्पन्न हुई दुर्बलता के आक्रमण का निराकरण करना चाहता हो।

फिर कैप्टिन ने पीरी से पूछा कि क्या उसने भी कभी प्रेम के ऊपर आत्मबलिदान की भावना की अनुभूति की है, और क्या उसके हृदय में भी वैध पति के विरुद्ध ईर्ष्या का संचार हुआ है ?

अब इस प्रकार चुनौती दिये जाने पर पीरी ने अपना सिर उठाया और अपने मस्तिष्क में प्रस्रवित होती हुई विचारधारा को व्यक्त करना आवश्यक समझा। उसने कहना आरम्भ किया कि वह स्त्री-विषयक प्रेम को किन्हीं दूसरे ही अर्थों में ग्रहण करता

है। उसने कहा कि उसने अपने जीवन में केवल एक स्त्री को प्रेम किया है, और वह स्त्री उसकी कभी न हो सकेगी।

कैप्टिन ने कहा—'यह लो!'

इसके बाद पीरी ने समझाना आरम्भ किया कि इस स्त्री को वह बहुत दिनों से प्रेम करता आ रहा था, पर वह उसके विषय में सोचने का साहस न कर सका क्योंकि वह अभी निरी अयानी थी, और वह नामरहित अवैध पुत्र था। फिर जब उसे नाम और धन मिले तो वह उसके विषय में सोचने का साहस इसलिए नहीं कर सका कि वह उसे बेहद प्रेम करता था और उसने उसे संसार की सारी वस्तुओं से—और फलतः विशेषकर अपने आपसे भी—बहुत ऊँचे पद पर अधिष्ठित कर रक्खा था।

जब पीरी यहाँ तक आ पहुँचा तो उसने कैप्टिन से पूछा कि क्या वह उसका आशय समझ गया? कैप्टिन ने एक संकेत करके प्रदर्शित किया कि यद्यपि वह समझ नहीं सका, पर फिर भी वह उससे कथा जारी रखने की प्रार्थना करेगा।

उसने बड़बड़ाकर कहा—'प्लेटोनिक प्रेम, बादल ..'

पीरी की सारी कहानी में कैप्टिन इस बात से विशेष प्रभावित हुआ कि पीरी बड़ा मालदार है, मास्को में उसके दो भवन हैं, और उसने सब कुछ त्याग दिया है और मास्को छोड़कर जाने की बजाय अपना नाम और स्थान छिपाकर वह वहीं रह रहा है।

जब दोनों बाहर सड़क पर निकले तो बहुत रात जा चुकी थी। रात गर्म्म और सुन्दर थी। उस भवन के बाईं ओर

पोकरोव्का सड़क पर आग जलती दिखाई दे रही थी—और मास्को का अग्निकांड इसी आग से आरम्भ हुआ था। दाहिनी ओर उच्च आकाश में चन्द्रमा की रेखा थी; और उसके सामने वह उज्ज्वल पुच्छल तारा लटका हुआ था जो पीरी के हृदय में उसके प्रेम के साथ सम्बद्ध था। दरवाज़े पर जेरासिम, बावर्चिन और दो फ्रेंच सिपाही खड़े थे। उनका हास-परिहास और उनका परस्पर अविदित रूसी-फ्रेंच वार्तालाप सुनाई पड़ रहा था। वे सब उस अग्नि के प्रकाश की ओर देख रहे थे।

और उस विशाल-नगर में किसी दूरस्थ छोटे से स्थान में आग लग उठना कोई अजूबा बात नहीं थी।

उस उच्चतारिका-खचित आकाश की ओर, पुच्छल तारे की ओर, और उस अग्निज्वाला की ओर देखते हुए पीरी ने अपने हृदय में उल्लासपूर्ण भावावेश की अनुभूति की। वह सोचने लगा – 'अहा, कैसा सुन्दर दृश्य है! क्या इसके बाद और किसी बात की भी आवश्यकता रह जाती है? और अकस्मात् उसे अपना उद्देश याद आ गया और उसके नेत्रों के आगे अँधेरा छा गया और वह बाड़े का सहारा लेकर खड़ा हो गया जिससे गिर न पड़े।

पीरी अपने नये मित्र से बिदा लिये बिना असंयत चाल से दरवाज़े पर से भीतर चला आया और अपने कमरे में आकर सोफ़ा पर लेटकर फ़ौरन सो गया।

——

चौदहवाँ परिच्छेद

जब नटाशा को बताया गया कि प्रिंस एण्ड्रयू सांघातिक रूप से घायल हैं, और उनके साथ ही यात्रा कर रहे हैं तो उसने उसी क्षण कई प्रश्न कर डाले थे—'वह कहाँ जा रहे हैं? वह कैसे घायल हुए? क्या घाव बहुत संगीन है? और क्या वह उनसे मिल सकती है?' पर जब उसे बताया गया कि वह उनसे नहीं मिल सकती और घाव संगीन होने पर भी प्राणों पर सङ्कट नहीं है, तो उसने—इन सारी बातों पर अविश्वास करके, और यह धारणा करके वह चाहे जो कुछ कहे, उसे वही उत्तर मिलेगा—फिर कुछ न पूछा। वह सारे रास्ते भर गाड़ी के एक कोने में आँखें फाड़े निश्चेष्ट भाव से बैठी रही। उसके चेहरे पर जो मुद्रा आ विराजी उसका अर्थ काउण्टेस अच्छी तरह जानती थीं और उससे अत्यन्त शङ्कित हो जाती थीं। अब पड़ाव पर आकर भी वह बेंच पर उसी प्रकार आ बैठी और बराबर वहीं बैठी रही। वह मन ही मन कुछ योजना स्थिर कर रही थी। उसने या तो किसी बात का निश्चय कर लिया था, या वह निश्चय करने में तल्लीन थी। काउण्टेस इस बात को ताड़ गईं। पर वह योजना क्या हो सकती है, यह वह न जानती थीं, और यही बात उन्हें सशङ्कि और व्यथित कर रही थी।

'नटाशा, उठ मेरी दुलारी; कपड़े उतार, और चल मेरे बिछौने पर पड़ रह।'

वहाँ केवल काउण्टेस ही के लिए चारपाई पर बिछौना लगाया गया था। दोनों लड़कियों के सोने का प्रबन्ध फ़र्श पर पुआल पर किया गया था।

नटाशा ने चिढ़कर कहा—'नहीं मामा, मैं ज़मीन पर ही सोऊँगी।' और वह खिड़की के पास गई और उसे खोला।

काउण्टेस ने कोमलता के साथ नटाशा के कन्धे छूकर कहा—'लेट जा मेरी दुलारी, मेरी लाड़ो, चल, लेट जा। उठ, चलकर लेट।'

नटाशा ने कहा—'लो, मैं सोने को चल दी।' और उसने झटपट अपने पेटीकोट के फ़ीते नोचने आरम्भ किये।

जब उसने अपनी पोशाक उतारकर फेंक दी और एक ड्रेसिंग जाकट पहन ली तो वह अपने पैर अपने नीचे करके बैठ गई। उसने अपने बालों की तह को झटका देकर बखेर लिया और फिर वह उसे सँवारने में लग गई। उसकी लम्बी पतली अभ्यस्त अँगुलियाँ जल्दी-जल्दी बाल सँवारने और बिगाड़ने लगीं और अन्त में उसने अपने बाल बाँध लिये। अभ्यास के अनुसार उसका सिर इधर से उधर और उधर से इधर होने लगा, पर उसके नेत्र—जलते हुए और खुले हुए—बराबर अपने सामने की ओर देख रहे थे। जब उसका रात का बनाव-सिंगार ख़तम हो गया तो वह पुआल पर बिछी हुई चादर पर दरवाज़े के बिलकुल पास-वाले स्थान में धीरे से बैठ गई।

नटाशा बहुत देर तक कमरे के भीतर और बाहर से आनेवाली आवाज़ों को ध्यान से सुनती रही और हिली-डुली नहीं। सबसे पहले उसने अपनी माँ के प्रार्थना करने, लम्बी साँस लेने, और उनके लेटने पर उनकी चारपाई के चरचराने की आवाज़ सुनी; फिर उसे सोनिया के मृदुल भाव से साँस लेने की आवाज़ सुनाई दी। फिर काउएटेस ने नटाशा को आवाज़ दी। नटाशा चुप रही।

सोनिया ने धीरे से कहा—'मामा, वह सो गई मालूम होती है।'

कुछ देर बाद काउएटेस फिर बोलीं, पर अबकी बार किसी ने उत्तर न दिया।

इसके बाद ही नटाशा के कानों में अपनी माँ के इकसार साँस की आवाज़ पहुँची। नटाशा अब भी बिना हिले-डुले पड़ी रही, यद्यपि उसका नन्हा सा नङ्गा पैर रज़ाई के बाहर नङ्गी ज़मीन पर पड़ा हुआ ठण्डा होने लगा था।

नटाशा उठ बैठी।

उसने धीरे से कहा—'सोनिया, सो गईं क्या? मामा!'

किसी ने उत्तर न दिया। नटाशा सावधानी के साथ धीरे से उठ खड़ी हुई, क्रास चिह्न बनाया और उस ठण्डे और गन्दे फ़र्श पर सतर्कता के साथ अपने पतले, फुर्तीले और नंगे पैर रक्खे। फ़र्श का तख़्ता चटख़ा। वह होशियारी के साथ एक के बाद दूसरा क़दम रखती हुई कुछ क़दम दरवाज़े तक बिल्ली के बच्चे की तरह भागी, और दरवाज़े पर पहुँचकर उसने दस्ता पकड़ लिया।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई भारी सी चीज़ कमरे की सारी दीवारों से ताल सुर के साथ बज रही है—यह स्वयं उसी का हृदय था, आशङ्का और भीति से म्रियमाण, और प्रेम-वेदना से विह्वल।

उसने दरवाज़ा खोला, चौखट के बाहर क़दम रक्खा और फिर ठण्डे, गीले मिट्टी के फ़र्श पर पैर रक्खा। इस शीत की अनुभूति से उसमें एक नई सजीवता आ गई। उसने अपने नंगे पैर से एक सोते हुए आदमी को छुआ और उसे फलाँगकर झोंपड़ी के उस भाग का द्वार खोला जिसमें प्रिंस एण्ड्रयू लेटा हुआ था। अँधेरा छाया हुआ था। दूर कोने में एक बिछौने के पास, जिस पर कोई चीज़ पड़ी हुई थी, बेंच पर एक लम्बा चर्बीला क़न्दोल रक्खा हुआ था जिसमें एक लम्बी मोटी और पिघलती हुई बत्ती लगी हुई थी।

सुबह जिस समय से उसे बताया गया था कि प्रिंस एण्ड्रयू आहत है और उन्हीं के साथ यात्रा कर रहा है उसी समय से उसने उससे मिलने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। वह यह नहीं जानती थी कि उसे क्यों मिलना चाहिए, पर इतना वह अवश्य जानती थी कि मिलन दुःखद होगा, और इसी लिए उसने और भी दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह मिलन आवश्यक है।

उसने अपना सारा दिन उससे मिल सकने की आशा में बिताया था। पर जब वह समय आ पहुँचा तो उसका हृदय इस भीत आशङ्का से भर गया कि उसके नेत्रों के सामने क्या

दृश्य आयगा। वह किस प्रकार आहत हुए होंगे ? उनका क्या कुछ अवशिष्ट रह गया होगा ? क्या वह उस ऐडजूटेण्ट की उस निरन्तर कराहट की तरह होंगे ? हाँ, उसका सब कुछ इसी ढङ्ग का था। उसकी कल्पना में वह उस दारुण कराहट का व्यक्त रूप था। जब उसने उस कोने में एक अस्पष्ट आकृति देखी और उसके रज़ाई में उठे हुए घुटनों को कंधे समझा तो उसे ख़याल हुआ कि वह शरीर कितना भयंकर होगा, और भय-चकित होकर वहीं खड़ी रह गई। पर एक अज्ञात प्रवल शक्ति उसे आगे की ओर खींचती गई। वह सतर्कता के साथ एक के वाद दूसरा क़दम रखती हुई छोटे से कमरे के बीचोबीच जा पहुँची। उसे प्रिंस एण्ड्र्यू अच्छी तरह दिखाई देने लगा—और उसी प्रकार जिस प्रकार वह उसे पहले देखा करती थी।

वह अब भी पहले ही जैसा था; पर उसके मुखमण्डल की ज्वराक्रांत अवस्था, नटाशा पर जमी हुई उसकी हर्षातिरेक-पूर्ण प्रोज्ज्वल आँखों और विशेषकर क़मीज़ के उल्टे हुए कालर में से दिखाई देती हुई उसकी बच्चों जैसी सुकोमल गर्दन ने उसे एक विशेष प्रकार की निर्दोषितापूर्ण शिशुसुलभ मुद्रा प्रदान कर दी थी--ऐसी जैसी नटाशा ने उसके मुखमण्डल पर पहले कभी न देखी थी। वह उसके पास चली गई और शीघ्र, सजीव और युवावस्था-सुलभ स्फूर्ति के साथ अपने घुटनों पर गिर पड़ी।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने मुस्कराकर उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

बोरोडिनो के शफ़ाखाने में सचेत होने के बाद से प्रिंस एण्ड्रयू ने सात दिन बिता दिये थे। उसकी ज्वराक्रांत अवस्था और उसकी आहत अँतड़ियों की सूजन के कारण डाक्टर की सम्मति में उसके प्राणों के बचने की कोई सम्भावना न थी। पर सातवें दिन उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ रोटी का एक टुकड़ा खाया और कुछ चाय पी, और डाक्टर ने देखा कि उसका बुखार नीचा पड़ गया है। सुबह से वह होश में था। मास्को छोड़ने के बाद पहली रात काफ़ी गर्म थी और उसे गाड़ी में ही छोड़ दिया गया, पर मिटिश्ची आने पर आहत व्यक्ति ने स्वतः ही बाहर ले जाये जाने की इच्छा प्रकट की और थोड़ी चाय पीने को माँगी। झोंपड़ी में ले जाये जाते समय उसे जो दारुण कष्ट हुआ उससे वह ज़ोर से चीत्कार करके बेसुध हो गया। जब उसे बिछौने पर लिटा दिया गया तो वह बहुत देर तक नेत्र बन्द किये निश्चेष्ट पड़ा रहा। इसके बाद उसने अपने नेत्र खोले और धीरे से कहा—'और चाय ?' दैनिक जीवन-सम्बन्धी विवरण को इस प्रकार याद रखने ने डाक्टर को चकित कर दिया। उसने प्रिंस एण्ड्रयू की नब्ज़ देखी और उसे क़ायदे में चलता देखकर उसे आश्चर्य और असंतोष हुआ। उसे असंतोष इसलिए हुआ कि उसके अनुभव ने उसे विश्वास दिला दिया था कि यदि वह अब न मरेगा तो कुछ दिनों बाद मरेगा, और अधिक क्लेश के साथ।

प्रिंस एण्ड्रयू की मानसिक स्थिति साधारण गति में नहीं थी। एक स्वस्थ मनुष्य अकसर असंख्य बातों को एक साथ

सोचता, अनुभूति करता और स्मरण करता है और उसमें विचारों या घटनाओं की एक शृङ्खला-बद्ध श्रेणी बना लेने और उस पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति होती है। एक स्वस्थ मनुष्य किसी आगन्तुक से कुछ शिष्ट शब्द कहने के लिए गहन से गहन विचारधारा से निस्तार पा सकता और फिर उसी प्रकार उसमें तन्मय हो सकता है। पर प्रिंस एण्ड्र्यू की मानसिक स्थिति इस दृष्टि से स्वाभाविक गति में नहीं थी। उसकी सारी मानसिक शक्तियाँ पहले से कहीं अधिक तीव्र और सजीव थीं, पर उनका कार्य-क्रम उसकी इच्छा से स्वतंत्र सत्ता रखता था। उसके मस्तिष्क में अत्यन्त विभिन्न विचार और प्रतिमाएँ एक ही साथ चक्कर लगा रही थीं। किसी क्षण उसका मस्तिष्क ऐसी सजीवता, स्पष्टता और गहनता के साथ कार्य करने लगता जैसी सजीवता, स्पष्टता और गहनता वह अपनी साधारण स्वस्थ अवस्था में कभी प्राप्त न कर सका था; पर तत्काल ही अकस्मात् उस कार्य-शीलता के बीच में उसकी वह सजीवता, स्पष्टता और गहनता नष्ट हो जाती, और कोई अप्रत्याशित प्रतिमा उसका स्थान ले लेती, और फिर उस खोई हुई विचार-शृङ्खला का सिरा पा सकने की उसमें सामर्थ्य न रह जाती।

वह उस शान्त झोंपड़ी के प्रच्छन्न अन्धकार में लेटा हुआ अपने जलते हुए खुले नेत्रों से अपने सामने देखता हुआ सोचने लगा—'हाँ, मुझे एक ऐसी सुख-शान्ति का मार्ग दीख पड़ा था जिससे मनुष्य कभी वंचित किया ही नहीं जा सकता। वह सुख

शान्ति जिसकी सत्ता इन भौतिक शक्तियों से परे है, जो उन भौतिक प्रभावों के राज्य से बाहर है जिनसे प्रभावित होकर मनुष्य काम करता है—वह सुख-शान्ति आत्मा की सम्पत्ति है, वह सुख-शान्ति प्रेम के राज्य से सम्बद्ध है। और इस सुख-शान्ति को हर कोई समझ सकता है, पर उसे जन्म देना और पृथ्वी पर उतारना केवल भगवान् ही के लिए सम्भव था। पर भगवान् ने वह विधान किस प्रकार उतारा? और उनका पुत्र ईसा क्यों...?'

अकस्मात् विचार-शृङ्खला टूट गई। यह दरवाजे पर खड़ी हुई कुछ सफ़ेद सी चीज़ क्या है?

उसने सोचा—'पर शायद यह मेज़ पर रक्खी हुई मेरी क़मीज़ है और यह मेरी टाँगें हैं, और वह दरवाज़ा रहा; पर यह फैलना और फिर फैलना और फिर फैलना कैसा? बस, बहुत हुआ, अब कृपा करके यहाँ से चली जाओ!' प्रिंस एण्ड्र्य ने व्यथा के साथ किसी से अनुनय की। और अकस्मात् उसके सारे विचार और भाव उसके मस्तिष्क की तह पर एक ख़ास स्पष्टता और सजीवता के साथ तैरकर आ पहुँचे।

वह फिर पूर्ण स्पष्टता के साथ सोचने लगा—'हाँ; प्रेम। पर वह प्रेम नहीं जो कोई विशिष्ट वस्तु के लिए, किसी विशिष्ट गुण के लिए, किसी विशिष्ट उद्देश के लिए और किसी विशेष कारण के लिए प्रेम करता है, बल्कि वह प्रेम जिसकी अनुभूति मैंने सब से पहले तब—मरते समय—की थी जब मैंने अपने शत्रु को देखा था और इतने पर भी उसे स्नेह की दृष्टि से देखा था। मैंने

उस प्रेम की अनुभूति की थी जो आत्मा की सार वस्तु है और जिसके लिए किसी विशिष्ट पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती। अब फिर मेरे हृदय में वही स्वर्गीय अनुभूति उद्दीप्त हो रही है। अपने पड़ोसियों को प्यार करना, अपने शत्रुओं को प्यार करना, हर एक वस्तु को प्यार करना—भगवान् को उसकी समस्त अभिव्यक्तियों में प्यार करना है। अपने किसी प्रियजन को मानवी प्रेम से प्यार करना सम्भव है, पर शत्रु को केवल स्वर्गीय प्रेम के साथ ही प्यार किया जा सकता है। बस, यही कारण था जो मैंने उस समय ऐसे आह्लाद की अनुभूति की जब मैंने बोध किया कि मैं उस आदमी को प्यार करता हूँ। हाँ, तो उसका क्या हुआ? क्या वह अभी जीवित है...?

'मानवी प्रेम से प्यार करने पर कोई व्यक्ति प्रेम के स्थान पर घृणा कर सकता है, पर स्वर्गीय प्रेम कभी नहीं बदलता। उसे न मृत्यु नष्ट कर सकती है, न और कोई चीज़। बस, यही आत्मा की सार वस्तु है। पर मैंने अपने जीवन में कितने लोगों के साथ घृणा की है? और जितना प्रेम और जितनी घृणा मैंने उससे की उतनी और किसी से नहीं की।' और अपने नेत्रों के सामने नटाशा का स्पष्ट चित्र खींचा, वैसा चित्र नहीं जैसा वह पहले खींचा करता था जिसमें वह केवल उसकी उस रूप-राशि को ही चित्रित किया करता जो उसे प्रेमोन्मत्त कर देती थी, बल्कि ऐसा चित्र जिसमें उसने उसकी आत्मा को—और आज पहली बार—चित्रित किया। और उसकी समझ में

तत्काल ही नटाशा के भाव, उसकी वेदनाएँ, उसकी आत्मग्लानि और उसका अनुताप-संताप आ गया। और अब पहली बार उसे उसके साथ अपना सम्बन्ध-विच्छेद करने, उससे अपना नाता तोड़ लेने की अपनी निर्ममता समझ में आई। 'हाय, जो कहीं उसे मैं एक बार और देख पाता! एक बार, केवल एक बार, उसके नेत्रों में झाँकते हुए....।'

अकस्मात् उसका ध्यान एक दूसरे लोक में—वस्तु-स्थिति और अचेतनता के लोक में पहुँच गया जहाँ कुछ और ही व्यापार हो रहा था। उस लोक में कोई प्रासाद सी वस्तु अभी तक निर्मित हो रही थी और अभी तक नहीं गिरी थी, कोई वस्तु अभी तक उसी प्रकार फैल रही थी, और लाल घेरे वाला क़न्दील अभी तक जल रहा था, और दरवाज़े पर वह क़मीज़ जैसी मूर्ति अभी तक पड़ी हुई थी। पर इन सारी बातों के अलावा कोई चीज़ चटख़ी, ठंडी हवा का एक झोंका आया, और एक नई श्वेत मूर्ति—बिलकुल सीधी—दरवाज़े पर दिखाई दी। और उसकी मूर्ति में उसी नटाशा का पीला चेहरा और चमकते हुए नेत्र लगे हुए थे जिसके विषय में वह अभी-अभी सोच रहा था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने होश में आने के लिए अपनी सारी शक्ति एकत्र की; वह कुछ हिला, और अकस्मात् उसके कान में कोई चीज़ गूँजने लगी, आँखों के आगे अँधेरा छा गया, और वह किसी पानी में छलाँग मारते हुए आदमी की तरह फिर बेसुध हो गया। जब वह होश में आया तो वही नटाशा—वही हाड़-मांस की नटाशा

जिसे वह अपने उस नवीन पवित्र स्वर्गीय प्रेम से प्यार करने के लिए बेतरह उत्कण्ठित हो रहा था—उसके सामने घुटने टेके मौजूद थी। वह जान गया कि यह सचमुच नटाशा ही है, और वह विस्मित नहीं हुआ, आनन्दित हुआ। नटाशा, घुटनों के बल बैठी हुई निश्चेष्ट भाव से (उसमें गति करने की सामर्थ्य ही नहीं थी) अपने भीत नेत्रों के साथ, सुबकियाँ रोके उसकी ओर एकटक देख रही थी। उसका चेहरा पीला और निर्जीव था। केवल उसके मुखमण्डल के नीचे का कोई विशिष्ट स्थान कम्पित हो रहा था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने दीर्घ निःश्वास परित्याग किया मानो किसी विपत्ति से छुटकारा मिला हो, और उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

वह बोला—'तुम? कैसा सौभाग्य है!'

नटाशा अपने घुटनों के बल शीघ्रता, पर सावधानी, के साथ आगे बढ़कर उसके निकटतर हो गई और उसका हाथ सावधानता के साथ पकड़कर अपना चेहरा उस पर झुकाकर ओंठ छुआ-छुआकर लगातार चुम्बन करने लगी।

उसने अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखते हुए कहा—'मुझे क्षमा करो! मुझे क्षमा करो!'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।'

'क्षमा...!'

'क्षमा किस बात की?'

'जो...कुछ...मैंने...किया है।' नटाशा ने टूटे हुए स्वर में बड़ी धीमी आवाज़ में फुसफुसाकर कहा, और तत्काल ही उसने फिर उसका हाथ ओठों से छू-छूकर चूमना शुरू कर दिया।

प्रिंस एराड्रय्यू ने उसके नेत्रों में झाँकने के लिए अपने हाथ से उसका चेहरा उठाकर कहा--'मैं तुझे पहले से कहीं अधिक प्यार करता हूँ।'

और वे नेत्र, हर्षाश्रुओं से भरे हुए, उसकी ओर भीत, समवेदना-पूर्ण और उल्लसित प्रेम के साथ देख रहे थे। नटाशा का पतला-दुबला और पीला चेहरा, अपने सूजे ओठों के साथ, केवल हत-श्री ही नहीं था--भयङ्कर भी दिखाई देता था। पर प्रिंस एराड्रय्यू उस चेहरे की ओर नहीं देख रहा था, उन चमकती हुई आँखों में देख रहा था जो बड़ी सुन्दर थीं। उन्हें अपने पीछे से आवाज़ें आती सुनाई दीं।

पीटर वैलेट अब पूरी तरह जाग गया था। उसने डाक्टर को जगाया।

डाक्टर ने अपने बिछौने पर से उठते हुए कहा—'यह क्या? महोदया, चली जाइए!'

इसी समय काउराटेस की भेजी दासी भी आ पहुँची। उसने दरवाज़ा खटखटाया। काउराटेस ने अपनी लड़की की अनुपस्थिति देख पाई थी।

नटाशा, एक ऐसे उन्निद्र व्यक्ति की तरह जिसे नींद से जगा दिया गया हो, कमरे से बाहर चली गई और अपनी

झोपड़ी में वापस आकर सुबकियाँ लेती हुई बिछौने पर जा पड़ी।

उस दिन से रोस्टोव परिवार की सारी यात्रा में सारे पड़ावों पर, और जहाँ कहीं उन्होंने रात व्यतीत की, नटाशा ने आहत बोल्कोन्सकी को कभी न छोड़ा और डाक्टर को स्वीकार करना पड़ा कि उसे इतनी अयानी लड़की से इतनी दृढ़ता और शुश्रूषा करने में इतनी दक्षता की आशा न थी।

वैसे काउन्टेस के लिए डाक्टर की यह बात बड़ी भयङ्कर थी कि प्रिंस एण्ड्रयू यात्रा ही में किसी दिन उनकी लड़की के हाथों में देह छोड़ जायगा, पर वह नटाशा का विरोध न कर सकीं। आहत प्रिंस एण्ड्रयू और नटाशा के बीच में अब अन्तरङ्ग सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर यह विचार कई बार उठा कि यदि वह अच्छा हो गया तो उनका पहला सम्बन्ध फिर स्थापित हो जायगा। पर किसी ने इस बात की चर्चा न चलाई। जीवन और मरण की अनिश्चित समस्या ने—जो न केवल बोल्कोन्सकी के सिर पर ही, बल्कि सारे रूस के सिर पर लटकी हुई थी—अन्य सारे विचारों पर पर्दा डाल दिया था।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

तीन सितम्बर की सुबह को पीरी देर से उठा। उसके सिर में दर्द हो रहा था, उसके कपड़े, उसके शरीर पर बोझल मालूम हो रहे थे, और उसे कुछ धुँधली सी चेतनता थी कि उसने गत दिवस कोई लज्जाजनक काम किया था। यह लज्जाजनक काम उसका कैप्टिन रामबाल के साथ वार्तालाप था।

कोई ग्यारह बजने का समय होगा, पर घर के बाहर कुछ विशेष ढङ्ग की अँधियारी सी दिखाई देती थी। पीरी उठा, अपने नेत्र मले, और लिखने की मेज़ पर रक्खी हुई पिस्तौल को देखकर उसे याद आ गया कि वह कहाँ है और उस दिन उसे क्या करना है। जेरासिम ने वह पिस्तौल उठाकर वहाँ रख दी थी।

पीरी सोचने लगा—'मुझे देर तो नहीं हो गई? नहीं; शायद वह मास्को में तीसरे पहर से पहले प्रवेश न करेगा।'

पीरी इस चिन्ता में तल्लीन न हुआ कि उसे क्या कुछ करना है, बल्कि काम करने को कटिबद्ध हो गया।

अपने कपड़े ठीक करके पीरी ने पिस्तौल उठाई और जाने के लिए क़दम बढ़ाया। पर तब उसे पहली बार ख़याल आया कि वह सड़क पर हाथ में हथियार लेकर न जा सकेगा। और उस बड़ी सी पिस्तौल को अपने ढीले ढाले देहाती कोट में छिपा लेना भी असम्भव था। और अपनी पेटी में खोंसकर या बगल में

दबाकर बिना किसी के देखे हुए ले जाना भी असम्भव था। इसके अलावा पिस्तौल ख़ाली थी और उसे भरने का पीरी के पास समय न था। 'अच्छी बात है, कोई हर्ज की बात नहीं; छुरे से ही काम चल जायगा', उसने स्वगत कहा; यद्यपि अपनी योजना के विषय में चिंतन करते हुए उसने एक से अधिक बार यह निष्कर्ष निकाला था कि १८०९ में विद्यार्थी ने सबसे बड़ी भूल यह की थी कि उसने नैपोलियन को छुरे से मारने की चेष्टा की थी। पर—मानों उसका प्रधान लक्ष्य अपनी योजना पूरी करने के स्थान पर अपने आपको यह विश्वास दिला देने में हो कि वह अपना इरादा नहीं पलट सकता, और उसे पूरा करने के लिए जो कुछ कर सकता है, कर रहा है—पीरी ने एक खुटले मरे हुए छुरे को उसकी हरी मियान में रक्खा और अपनी वास्कट में छिपा लिया। यह छुरा उसने सुखारेव के बाज़ार में पिस्तौल के साथ ही ख़रीद लिया था।

पीरी अपने देहाती कोट पर पेटी कसकर बाहर जा पहुँचा।

उसने गत रात्रि के समय जिस अग्नि-कारड की ओर इतनी उपेक्षा से देखा था वह रात भर में बहुत फैल गया था। मास्को में अनेक स्थानों पर आग लग उठी थी। गाड़ी-बाज़ार, पोवार्स्-काया की इमारतें, मोस्क्वारिवर की बार्जें, और डोरोगोमिलोव पुल के लकड़ी-बाज़ार सब आग के हवाले हो चुके थे।

पीरी अपना सिर हिलाकर आगे बढ़ गया। एक गली में एक हरे बाक्स के पास खड़े हुए एक संतरी ने उसे देखकर ललकारा,

पर जब वह ललकार एक डपट के साथ दुहराई गई और उसने उसे अपनी बंदूक़ उठाकर घोड़ा चढ़ाते हुए देखा तब कहीं उसकी समझ में आया कि उसे सड़क के दूसरी ओर से जाना चाहिए। उसे अपने चारों ओर होनेवाला व्यापार कुछ देख सुन न पड़ रहा था। उसने अपने निश्चय को अपने हृदय में बड़ी शीघ्रता और भीति के साथ स्थान दिया मानो वह कोई बड़ी भयंकर और विचित्र बात हो, क्योंकि गत रात्रि के अनुभव से शिक्षित होकर वह शंकित हो रहा था कि कहीं वह उस निश्चय को खो न बैठे। पर अपनी उस प्रवृत्ति को लेकर उस उद्दिष्ट स्थान तक पहुँच सकना उसके भाग्य में न बदा था। इसके अतिरिक्त यदि उसके मार्ग में किसी प्रकार की बाधा न भी पड़ती तो भी वह अपना उद्देश पूरा न कर पाता; क्योंकि नैपोलियन अब से चार घण्टे पहले ही क्रेमलिन को जानेवाले डोरोगोमिलोव के मार्ग से अर्बट स्ट्रीट से गुज़र चुका था और अब क्रेमलिन में ज़ार की अध्ययनशाला में अत्यन्त शोकमग्नता के साथ बैठा हुआ आग बुझाये जाने, लूट -मार रोकने और नगर-निवासियों को आश्वस्त करने के सविस्तर आदेश जारी कर रहा था। पर पीरी को इसका कुछ पता न था। वह अपने सामने पड़े हुए काम की चिन्ता में पूर्णतया तल्लीन हुआ इस आशङ्का से व्यथित हो रहा था।

पोवास्काया के निकट पीरी को जन-समुदाय दिखाई पड़ा। इन्हीं में एक आर्मीनियन या जार्जियन परिवार दिखाई पड़ा जिसमें नये कपड़ेवाला भेड़ का कोट और नये बूट पहने एशियाई

सूरत-शक्ल का एक अत्यन्त वृद्ध सुन्दर पुरुष, उसी ढंग की एक वृद्धा स्त्री और एक युवती स्त्री थी। वह अत्यन्त युवती स्त्री पीरी को एशियाई सौन्दर्य की जीवित प्रतिमा दिखाई दी। उसकी सुन्दर, स्पष्टतया खचित काली ढकी हुई भवें, उसका लम्बा, अत्यन्त सुन्दर भावहीन मुखमण्डल, और उसका मृदुल खिला हुआ रङ्ग सुन्दरता की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे। वह चारों ओर बिखरे हुए असबाब के, और सहन में फैले हुए जनसमुदाय के बीच में बढ़िया रेशमी पोशाक पहने और सिर पर नारंगी रंग का शाल ओढ़े ऐसी दिखाई देती थो मानों बर्फ़ में से एक सुकोमल पैादा उग आया हो। वह उस वृद्धा स्त्री के ज़रा पीछे बण्डलों पर बैठी हुई अपने सामने पृथ्वी की ओर अपनी लम्बी पलकों वाली बादाम जैसे आकार की, बड़ी-बड़ी निश्चेष्ट आँखों से देख रही थी। यह स्पष्ट था कि वह अपने सौन्दर्य की ओर से सचेत थी और उसके कारण भयभीत हो रही थी। उसका चेहरा पीरी के हृदय में चुभ गया और उसने बाड़े के सहारे शीघ्रता से जाते हुए पीछे फिरकर कई बार देखा।

उसका लम्बा-चौड़ा शरीर अब कुछ और भी विशिष्टता व्यक्त करता था। उसके चारों ओर बहुत से रूसी स्त्री पुरुष एकत्र हो गये।

उन्होंने पूछा—'क्यों भाई, क्या तुम्हारा कोई अपना नहीं मिलता? तुम भी तो शहरियों में से हो—हो न?'

पर पीरी उनकी बात नहीं सुन रहा था। वह कुछ क्षणों से अपने कुछ क़दम पीछे होते हुए व्यापार को देख रहा था। वह

उस आर्मीनियन परिवार और उसके पास पहुँचनेवाले दो फ़्रेंच सिपाहियों की ओर देख रहा था। उनमें से एक सिपाही—फुर्तीला सा नन्हा आदमी—एक नीला कोट पहने हुए था जिसकी कमर रस्से से बँधी हुई थी। उसके सिर पर नोकदार टोपी थी और पैर नंगे थे। दूसरे सिपाही की ओर पीरी का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। यह लम्बा, झुका हुआ, सुन्दर बालोंवाला गोल कंधों का सुस्त सा आदमी था जिसके चेहरे से बौड़मपन टपकता था। वह स्त्रियों का ढीला-ढाला गाउन, नीले मोज़े, और फटे हुए हैसियन जूते पहने हुए था। वह नन्हा सा नंगे पैरवाला फ़्रेंच सैनिक आर्मीनियन परिवार के पास पहुँचा और कुछ बात कहकर फ़ौरन् उस वृद्ध के पैर से लिपट गया और वह वृद्ध तत्काल ही अपना बूट निकालने लगा। दूसरा—गाउनवाला—सैनिक उस सुन्दरी आर्मीनियन बालिका के सामने जाकर रुक गया और अपनी जेबों में हाथ डालकर चुपचाप उसकी ओर देखने लगा।

वृद्ध अब नंगे पैर बैठा हुआ था। उस नन्हें फ़्रेंच ने दूसरा बूट भी निकलवा लिया था और अब वह दोनों जूतों को बजा रहा था। वृद्ध अश्रुओं से अवरुद्ध कण्ठ से कुछ कह रहा था—पर पीरी ने इस व्यापार की ओर अधिक ध्यान न दिया; उसका सारा ध्यान उस गाउनवाले लम्बे फ़्रेंच की ओर लगा हुआ था जो अब इधर-उधर झूमता हुआ उस युवती स्त्री के निकटतर पहुँच गया था। अकस्मात् उसने अपनी जेब से हाथ निकालकर उस युवती की गर्दन पकड़ ली।

सुन्दरी आर्मीनियन उसी प्रकार निश्चेष्ट भाव से बैठी थी, और उसकी लम्बी पलकें ज़मीन की ओर झुक गई थीं, मानों उस फ्रेंच सैनिक के इस कार्य को उसने न देखा हो, या देखकर भी न समझा हो।

जब तक पीरी उस परिवार की ओर झपटे, तब तक उस लम्बे सैनिक लुटेरे ने उस युवती के गले से हार को खींचना आरम्भ भी कर दिया था, और वह युवती स्त्री अपने गले को पकड़े हृदयभेदी स्वर में चीख़ रही थी।

पीरी ने भर्राये हुए भीषण स्वर में चिल्लाकर, उस सिपाही के गोल कन्धे को पकड़कर उसे एक ओर फेंकते हुए, कहा—'इस औरत को छोड़ दो!'

सिपाही गिर पड़ा, उठा, और भाग गया। पर उसका साथी अपने हाथ से बूट फेंककर तलवार निकालते हुए, पीरी की ओर तेज़ी से झपटा।

उसने चिल्लाकर कहा—'तुम्हारी इतनी मजाल!'

पीरी उस समय क्रोध की उस अवस्था में था जब उसे किसी बात का ज्ञान न रहता था और उसका बल दस गुना बढ़ जाता था। वह उस नंगे पैरवाले फ्रेंच की ओर झपटा, और उसके अपनी मियान से तलवार निकालते-निकालते उसने उसे ज़मीन पर दे मारा और घूँसों से पीटना शुरू कर दिया। चारों ओर से प्रशंसात्मक ध्वनि उठ खड़ी हुई। उसी समय मोड़ पर से घुड़सवार फ्रेंच उहलान सेना चक्कर लगाती हुई आ निकली। उहलान घोड़े

तेज़ करके पीरी और .फ्रेंच के पास आ पहुँचे और दोनों को घेरकर खड़े हो गये। पीरी को यह कुछ स्मरण न रहा कि इसके बाद क्या हुआ। उसे केवल इतना याद रहा कि उसने किसी को पीटा और किसी ने उसे पीटा, और फिर उसके हाथ बाँध दिये गये और उसके चारों ओर उहलान सैनिक खड़े हो गये और उसकी जामातलाशी लेने लगे।

पीरी के कान में पहले शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई पड़े—'लैफ्टिनेण्ट, इसके पास तो छुरा है।'

'अच्छा, हथियार है!' अफ़सर ने कहा और फिर वह उस नंगे पैरवाले सिपाही की ओर, जिसे पीरी के साथ ही गिरफ़्तार कर लिया गया था, मुड़कर बोला—'अच्छी बात है। यह बात तुम कोर्ट मार्शल में कह सकते हो।' इसके बाद वह पीरी की ओर फिरा—'तुम .फ्रेंच जानते हो?'

पीरी ने अपने चारों ओर लाल-लाल आँखों से देखा और कोई उत्तर न दिया। शायद उसका चेहरा बड़ा भयङ्कर दिखाई दे रहा था क्योंकि उहलान ने धीरे से कुछ कहा और चार और उहलान सैनिक पंक्ति छोड़कर उसके दोनों तरफ़ हो गये।

अफ़सर ने उससे दूर रहकर कहा—'तुम .फ्रेंच बोल सकते हो? दुभाषिये को बुलाओ।'

एक नन्हा सा आदमी रूसी नागरिक कपड़े पहने पंक्ति में से निकल आया। पीरी उसके कपड़ों और उसकी बातचीत के रङ्ग-

ढङ्ग से फ़ौरन जान गया कि यह मास्को में व्यापार करनेवाला कोई व्यापारी है ।

दुभाषिये ने पीरी को सिर से पैर तक अनुसन्धानात्मक दृष्टि से देखकर कहा--'यह कोई साधारण आदमी दिखाई नहीं देता।'

अफ़सर ने कहा--'ओह, ओह, पक्का आग लगानेवाला दिखाई देता है । और इससे यह तो पूछो कि यह है कौन।'

दुभाषिये ने टूटी-फूटी रूसी भाषा में पूछा—'तुम कौन हो ? तुम्हें अफ़सर की बात का जवाब देना पड़ेगा।'

अकस्मात् पीरी फ़्रेंच में कह उठा—'मैं नहीं बताऊँगा कि मैं कौन हूँ। मैं तुम्हारा क़ैदी हूँ—मुझे ले चलो !'

अफ़सर ने तेवर बदलकर कहा--'आह, आह ! अच्छी बात है, चलो !'

——

सोलहवाँ परिच्छेद

काउण्टेस के मन में निकोलस का विवाह किसी धनी उत्तराधिकारिणी से करने की बात अधिकाधिक जगह पकड़ती जाती थी। वह जानती थीं कि इसमें प्रधान अड़चन सोनिया है। फलत: काउण्टेस के घर में सोनिया का जीवन अधिकाधिक कष्टमय होता गया, और उस समय से और भी, जब से उन्हें निकोलस का वह पत्र मिला था जिसमें उसने बोगूचेरोवो में प्रिंसेज़ मेरी के साथ अपनी भेंट का वर्णन किया था। काउण्टेस सोनिया को लांछित करने या अनेकानेक निर्मम निर्देश करने का कोई अवसर हाथ से न जाने देती थीं।

पर मास्को से बिदा होने के कुछ दिनों पहले काउण्टेस ने इस सारे विनाशकारी व्यापार से उद्वेलित और उत्तेजित होकर अपने पास सोनिया को बुलाया और उसे डाटने-डपटने और उसे आदेश देने के स्थान पर अश्रुपूरित स्वर में अनुनय की कि वह अपना त्याग दिखाये, और इस प्रकार निकोलस के साथ अपना सम्बन्ध विच्छेद करके इस परिवार के उपकारों का मूल्य चुकाये।

'जब तक तू मुझसे वादा न कर लेगी तब तक मुझे शान्ति न मिलेगी।'

सोनिया फफक-फफककर रोने लगी और सुबकियाँ ले-लेकर बोली कि वह सब कुछ करने को तैयार है; पर उसने वास्तव में कोई वचन न दिया, और वह मन ही मन वह कार्य करने के लिए कभी कटिबद्ध न हो सकी जिसकी उससे आशा की जा रही थी। उसे उस परिवार के मंगल के लिए जिसने उसे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, अवश्य आत्मत्याग करना चाहिए। दूसरों के लिए आत्मत्याग करना सोनिया की आदत में दाख़िल था। इस परिवार में उसकी स्थिति ही ऐसी थी कि वह केवल आत्मत्याग के द्वारा ही अपना वास्तविक मूल्य दिखा सकती थी। उसे इसका अभ्यास पड़ गया था, और वह ऐसा आत्मत्याग बड़ी तत्परता के साथ कर डालती थी। पर अपने सारे पहले आत्मत्यागों में वह इस बात की ओर से सचेत थी कि उनके द्वारा वह अपनी और दूसरों की निगाह में उठती जा रही है और इस प्रकार वह निकोलस के—जिसे वह संसार में सबसे अधिक चाहती थी—अधिकाधिक योग्य होती जा रही है। अब उसका आत्मत्याग उस एक मात्र पदार्थ का परित्याग करने में सन्निहित था जो उसके पहले सारे आत्मत्यागों का पुरस्कार स्वरूप था और जिसमें उसके जीवन की सार-वस्तु निहित थी। अब पहली बार इस आश्रयदाता परिवार के विरुद्ध उसने अपने हृदय में तीव्रता को स्थान दिया। उसे नटाशा पर डाह हुआ कि उसे आज तक कोई त्याग न करना पड़ा, बल्कि उसने दूसरों को उल्टे अपने लिए त्याग करने को विवश किया, और फिर भी

सब उसे उसी प्रकार स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। अब पहली बार सोनिया को अनुभूति हुई कि वह अब तक निकोलस को जिस शान्त और पवित्र भाव से प्रेम करती रही थी, उसमें से शनैः शनैः वासनामय भावना का जन्म हो रहा है जो सिद्धान्त, धर्म और पवित्रता से प्रबलतर है। इस भावना से प्रेरित होकर सोनिया ने —जिसे अपने इस आश्रित जीवन के द्वारा अनायास ही गोपनीयता की कला आ गई थी—काउन्टेस को अस्पष्ट शब्दों में उत्तर देने के बाद से उनसे बातचीत करने के अवसर की जान-बूझकर अवज्ञा की और निश्चय किया कि चाहे कुछ हो, वह निकोलस के आने तक प्रतीक्षा करेगी, और फिर उसे बन्धन-मुक्त न करेगी, बल्कि उसे सदैव के लिए बाँध लेगी।

मास्को-निवास के अन्तिम दिनों की चहल-पहल और आशङ्का-भीति ने सोनिया के इन विषादकारी विचारों को दबा दिया था। उसे प्रसन्नता हो रही थी कि वह इस प्रकार उस विचार-धारा से छुटकारा पाकर प्रकृत कार्यशीलता में भाग ले सकेगी। पर जब उसने सुना कि प्रिंस एण्ड्र्यू उन्हीं के मध्य में मौजूद है तो—प्रिंस एण्ड्र्यू और नटाशा के प्रति उसकी समवेदना रहने पर भी—उसे यह उल्लासकारिणी भ्रान्त धारणा हो गई कि ईश्वर उसे निकोलस से अलग करना नहीं चाहता। वह जानती थी कि नटाशा ने प्रिंस एण्ड्र्यू के सिवाय और कभी किसी को प्यार नहीं किया और इतना सब होने पर भी एक क्षण के लिए उसका हृदय उसके प्रेम से शून्य नहीं हुआ। वह जानती थी कि इस भीषण परि-

स्थिति में दोनों का मिलन हो जाने पर फिर एक दूसरे को प्रेम करने लगेंगे, और फिर निकोलस प्रिंसेज़ मेरी के साथ विवाह न कर सकेगा क्योंकि वे परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध की निषिद्ध परिधि के भीतर रह जायँगे। फलतः सोनिया इस विचार से हमेशा उत्फुल्लित रही कि स्वयं विधाता ही उसके हितों की रक्षा कर रहा है।

ट्राइट्सा के मठ में रोस्टोव परिवार यात्रा भर में पहली बार दिन भर के लिए रुका।

इस मठ में रोस्टोव परिवार को विश्रामशाला के तीन बड़े-बड़े कमरे दे दिये गये, जिनमें एक में प्रिंस एण्ड्र्यू था। उस दिन आहत व्यक्ति बहुत अच्छी दशा में था। नटाशा उसके पास बैठी हुई थी। दूसरे कमरे में काउण्ट और काउण्टेस बैठे हुए बड़े आदर के साथ महन्त से बातें कर रहे थे। महन्त उनसे अपने पूर्व परिचितों की तरह वार्तालाप कर रहा था। रोस्टोव परिवार इस मठ को बहुत पहले से दान-दक्षिणा देता चला आ रहा था। सोनिया भी वहीं मौजूद थी, पर वह इस कौतूहल से उद्वेलित हो रही थी कि नटाशा और प्रिंस एण्ड्र्यू क्या बातें कर रहे होंगे। उसे दरवाज़े में से उनकी आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं। अब दरवाज़ा खुला और नटाशा उत्तेजित अवस्था में बाहर निकल आई। उसे देखकर महन्त उसका अभिवादन करने के लिए उठ खड़ा हुआ, पर उसे न देख नटाशा ने सोनिया के पास जाकर उसका हाथ पकड़ लिया।

काउण्टेस ने कहा—'नटाशा, तेरा ध्यान किधर है ? इधर आ !'

नटाशा आशीर्वाद ग्रहण करने महन्त के पास पहुँची, और महन्त ने उसे परमात्मा की और उस मठ के महात्मा की शरण लेने का उपदेश दिया।

महन्त के जाते ही नटाशा सोनिया का हाथ पकड़कर ख़ाली कमरे में ले गई।

उसने पूछा—'सोनिया, इनके प्राण बच जायँगे न ? सोनिया, मैं इस समय कितने सुख में हूँ, और कितने दुःख में !... सोनिया, मेरी रानी, सब कुछ पहले ही जैसा है। हाय, जो कहीं इनके प्राण बच जाते ! पर इनके प्राण न बचेंगे...क्योंकि...क्योंकि... उनके...' और नटाशा फफक-फफककर रोने लगी।

सोनिया ने ओठों में कहा—'देखो, मैंने जान लिया न ! भगवान् का धन्यवाद है ! उनके प्राण बच जायँगे।'

सोनिया अपनी सखी से कम उत्तेजित न थी; वह नटाशा की आशंका और दुःख से भी उत्तेजित थी और अपने निजी भावों से भी। पर अपने इन निजी भावों को वह किसी के आगे व्यक्त न करती थी। उसने सुबकियाँ लेते हुए नटाशा का चुम्बन किया और उसे सांत्वना दी। वह सोचने लगी —'जो कहीं इनके प्राण बच जाते !' इस प्रकार रो-धोकर, बातचीत करके, और आँसू पोंछकर दोनों सखियाँ प्रिंस एण्ड्र्यू के दरवाज़े पर पहुँचीं।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने घण्टी बजाई और नटाशा भीतर चली गई; पर सोनिया अस्वाभाविक रूप से उत्तेजित हुई खिड़की के पास खड़ी रही।

उस दिन सेना को पत्र भेजने का अवसर मिला, और काउण्टेस ने अपने पुत्र को पत्र लिखा। उसी समय काउण्टेस ने सोनिया को उधर से गुज़रते देखा। उन्होंने पत्र पर से दृष्टि उठाकर सोनिया की ओर देखा और मीठे और प्रकम्पित स्वर में कहा—'सोनिया, तो तू निकोलस को पत्र न लिखेगी?' और काउण्टेस इन शब्दों के द्वारा जो कुछ व्यक्त करना चाहती थीं वह सब उसने उनकी चश्मे पर से अपनी ओर ताकती हुई थकी हुई आँखों से जान लिया। उन नेत्रों में अनुनय, अस्वीकारोक्ति की आशंका, अनुरोध करने की लज्जा, और अस्वीकारोक्ति की दशा में तीव्र घृणा करने की तत्परता निहित थी।

सोनिया काउण्टेस के पास पहुँची और घुटने टेककर उसने उनके हाथ का चुम्बन किया। उसने कहा—'हाँ, मामा, मैं लिखूँगी।'

सोनिया उस दिन के सारे व्यापार से उद्वेलित और उत्तेजित हो उठी थी। वह यह तो जानती ही थी कि नटाशा और प्रिंस एण्ड्र्यू के पारस्परिक अंतरंग संबंध की पुनःस्थापना के कारण निकोलस प्रिंसेज़ मेरी के साथ विवाह न कर सकेगा, अतः वह अपने उस आत्मत्याग का कुछ न्याय्य पुरस्कार पाने की आशा से आशान्वित हो उठी। वैसे, आत्मत्याग से उसका जीवन ही

बना था। अतः उसने अश्रुपूरित नेत्रों से, इस उल्लासकारी भावना के साथ कि वह अत्यंत उदाराशयता-पूर्ण कार्य कर रही है—(और उसके इस उदाराशयता-पूर्ण कार्य में उसके सुन्दर काले नेत्रों से झड़ते हुए आँसुओं के कारण बीच बीच में व्याघात भी पड़ता गया)—एक मर्म-स्पर्शी पत्र लिखा।

सत्रहवाँ परिच्छेद

जिस बन्दीगृह में पीरी को रक्खा गया था वहाँ अफ़सरों और सैनिकों ने उसके साथ उद्दण्डता का, पर साथ ही आदर का, व्यवहार किया। उसके साथ वे जिस आचरण से पेश आते थे उससे उनका अनिश्चय और उद्दण्डता दोनों व्यक्त होती थीं; अनिश्चय इसलिए कि वे अभी तक यह निश्चय न कर सके थे कि यह व्यक्ति कौन है (क्या यह सम्भवत: कोई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं है ?), और उद्दण्डता इसलिए कि उन दोनों में व्यक्तिगत मुठभेड़ हो चुकी थी।

पर जब दूसरे दिन सुबह को वह पहरा हटा और दूसरा पहरा आया तो पीरी ने देखा कि ये लोग उसके साथ उस संलग्नता से पेश नहीं आते जिस संलग्नता के साथ उसे गिरफ़्तार करनेवाले पेश आते थे। और सचमुच दूसरे दिनवाले पहरेवालों ने यह न पहचान पाया कि यह देहाती कोट पहने मोटा-ताज़ा लम्बा-चौड़ा आदमी वही प्रबल मनुष्य है जो फ़्रेंच लुटेरों से और घुड़सवारों से इतने भयङ्कर रूप से लड़ा था। उन्होंने केवल यह देखा कि यह १७ नम्बर का पकड़ा हुआ रूसी है जिसे किसी अज्ञात कारण से पकड़कर क़ैद कर दिया गया है। यदि पीरी में कोई विशेष बात दीख पड़ती थी तो वह उसकी निर्भीक विचार-संलग्नता और फ़्रेंच बोलने का सहज ढङ्ग था जिससे फ़्रेंच सैनिक

विशेष रूप से प्रभावित हुए थे। पर इतने पर भी उस दिन पीरी को अन्य क़ैदियों के साथ ही रक्खा गया क्योंकि उसके कमरे की एक अफ़सर को ज़रूरत थी।

पीरी को अब जिन रूसी क़ैदियों के साथ रक्खा गया वे सब निम्न श्रेणी के आदमी थे। उन्होंने पीरी को सम्भ्रान्त व्यक्ति जानकर उसकी अवज्ञा की और उसे फ़्रेंच बोलते देखकर क्षुब्ध भाव से उसकी दिल्लगी उड़ाई।

उस दिन शाम को पीरी को पता चला कि सारे क़ैदियों पर (जिनमें शायद वह भी शामिल था) आग लगाने का मामला चलाया जायगा। तीसरे दिन पीरी को और सब के साथ एक घर में ले जाया गया, जहाँ एक सफ़ेद मूछोंवाला जनरल दो कर्नलों और कुछ अन्य फ़्रेंचों के साथ बैठा हुआ था। पीरी से सवाल किये गये कि वह कौन है, वह कहाँ गया था, किस उद्देश से, और आदि इत्यादि।

ये प्रश्न प्रधान वस्तु-स्थिति की सार वस्तु, और उस सार वस्तु के प्रकट होने की सम्भावना, की अवमानना करके अन्य अदालती प्रश्नों की तरह ही एक ख़ास ढंग से सजाये गये थे जिसके द्वारा विचारक अभियुक्त के मुँह से कुछ ख़ास ढंग के उत्तर निकलवा-कर अपने इच्छित परिणाम—अपराध-सिद्धि—तक पहुँच जाना चाहते थे। ज्यों ही वह कोई ऐसी बात कहता जो उस निश्चित विधान से असम्बद्ध होती, तो वह उत्तर-जल प्रश्नों के निश्चित प्रवाह-मार्ग से च्युत होकर इधर-उधर बहने लगता। इसके अतिरिक्त

अन्य अभियुक्तों की तरह पीरी को भी एक प्रकार की अस्त-व्यस्तता की अनुभूति हुई कि उससे ये प्रश्न क्यों किये जा रहे हैं। उसे प्रतीत हुआ कि यह न्याय विधान का ढोंग केवल दयाभाव से, या केवल सौजन्य के वशोभूत होकर रचा गया है। वह जानता था कि वह उन लोगों की शक्ति में है, वहाँ वे लोग उसे केवल शक्ति ही के द्वारा खींच लाये हैं, इस शक्ति ही ने इन्हें उससे इस प्रकार के प्रश्न करने का अधिकार प्रदान किया है, और इस सारे समुदाय का एकमात्र उद्देश उसे दण्ड देना है। और चूँकि वे शक्ति-सम्पन्न थे और उसे दण्ड देना चाहते थे, इसलिए उसे यह अभियोग चलाने का स्वांग अनावश्यक प्रतीत हुआ। यह स्पष्ट था कि वह चाहे जो कुछ उत्तर दे, फल वही होगा—दण्ड।

जब पीरी से पूछा कि वह लुटेरे सैनिक से क्यों लड़ा तो पीरी ने उत्तर दिया कि वह 'एक स्त्री की रक्षा कर रहा था। किसी स्त्री का अपमान होते देखकर उसकी रक्षा करना प्रत्येक पुरुष का कर्त्तव्य है!'...पर उन्होंने बाधा दी, क्योंकि यह बात प्रसंगेतर थी। वह कौन है ? उन्होंने अपना पहला प्रश्न दुहराया जिसका उत्तर देने से पीरी ने इन्कार कर दिया था। उसने फिर दुहराया कि वह इसका उत्तर न दे सकेगा।

उस सफ़ेद मूछों और गुलाबी चेहरेवाले जनरल ने कठोर भाव से कहा—'लिख लो...यहा बुरी बात...।'

चौथे दिन आग लग गई।

पीरी को तेरह और .क़ैदियों के साथ क्रीमीन फोर्ड के पास एक व्यापारी के अस्तबल में रक्खा गया। रास्ते में सड़कों पर से गुज़रते हुए पीरी का दम धुएँ से घुटने लगा जो सारे मास्को पर छाया हुआ दिखाई देता था। चारों ओर अग्निकाण्ड दिखाई देता था। उस समय इस अग्निकाण्ड की महत्ता उसकी समझ में अधिक न आई और वह चारों ओर लगती हुई आग को भीत विस्मय के साथ देखता चला गया।

वह इस स्थान पर चार दिन और रहा और इस बीच में उसे पता चला कि वहाँ पर .क़ैद किये गये सारे .क़ैदियों का .फ़ैसला मार्शल करेंगे जो आज-कल में आने ही वाले हैं। इन मार्शल का क्या नाम था ?—यह पीरी उन सिपाहियों से न जान सका। यह स्पष्ट था कि उनके लिए मार्शल अतुल और रहस्यपूर्ण शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति था।

८ सितम्बर को इन .क़ैदियों का आख़िरी मुआयना होनेवाला था। चार दिन पीरी बड़े कष्ट के साथ बिता सका।

८ सितम्बर को एक बड़ा भारी अफ़सर—जैसा कि पहरेदारों के अदब क़ायदे से मालूम पड़ता था—उस अस्तबल में आ पहुँचा जहाँ पीरी को .क़ैद किया गया था। सम्भवतः वह स्टाफ़ अफ़सर था। उसने अपने हाथ में एक काग़ज़ पकड़े हुए सारे रूसी .क़ैदियों के नाम पढ़कर सुनाये जिनमें से पीरी को "वह आदमी जो अपना नाम नहीं बताना चाहता" वाक्य से अभिहित किया गया। उसने उपेक्षा और अलस भाव से सारे .क़ैदियों को एक

निगाह देखकर तैनात अफ़सर को इन सब को मार्शल के सामने भेजने से पहले साफ़-सुथरे कपड़े पहनाने की आज्ञा दी। एक घण्टे बाद सिपाहियों का एक दस्ता आ पहुँचा और अपने साथ तेरह अन्य रूसी बन्दियों के साथ पीरी को भी ले चला।

पीरी विनष्ट मकानों की ओर देखता गया पर मास्को के जाने-पूछे हिस्सों को पहचान न सका। यत्र-तत्र गिरजे खड़े हुए दिखाई पड़ते थे जो अग्निकाण्ड से बच गये थे। क्रेमलिन भी नहीं जला था और उसकी सुफ़ेद बुर्जियाँ और महान् इवान् का घण्टाघर दूर से चमकते दिखाई देते थे।

साफ़ ज़ाहिर था कि रूसी घोंसला नष्ट हो गया था।

पीरी को अन्य क़ैदियों के साथ एक बड़े से बाग़ में स्थित एक श्वेत भवन में ले जाया गया। यह प्रिंस शैट् पैटोव का भवन था जहाँ पीरी पहले कई बार आ चुका था। पीरी को सैनिकों से मालूम हुआ कि इस समय यह मार्शल—ड्यूक आफ़ ऐकमुल (डेवोट)—के अधिकार में था।

उन्हें प्रवेशद्वार में ले जाया गया, और फिर एक-एक करके भीतर ले जाया गया। पीरी के जाने की छठी बारी थी। उसे जानी-पूछी शीशे की गैलेरी, हॉल, और मुलाक़ाती कमरे में से होते हुए एक लम्बी सी नीची छत की अध्ययनशाला में ले जाया गया।

डेवोट चश्मा लगाये कमरे के दूसरे कोने में एक मेज़ पर सिर झुकाये बैठा था। पीरी उसके पास तक जा पहुँचा। डेवोट

शायद अपने सामने रक्खे हुए काग़ज़ पर ग़ौर कर रहा था। अत: उसने सिर उठाकर न देखा। उसने बिना निगाह उठाये धीमी आवाज़ में कहा—

'तुम कौन हो?'

पीरी चुप था, उसके मुँह से कोई शब्द निकल ही न सका। उसके लिए डेवोट न केवल एक फ्रेंच जनरल ही था, बल्कि अपनी निष्ठुरता के लिए एक कुख्यात व्यक्ति भी था। डेवोट नैपोलियन के लिए वही था जो आर्कचीव ज़ार ऐलेक्ज़ण्डर के लिए था—वह आर्कचीव की तरह कायर तो न था, पर ठीक उसी की तरह नाप-तोलकर क़दम रखनेवाला, ठीक उतना ही निष्ठुर, और निष्ठुरता के सिवाय और किसी प्रकार से अपनी राजभक्ति प्रकट करने में ठीक उसी की तरह असमर्थ था।

किसी राज्य के शासन-यंत्र में ऐसे आदमी आवश्यक हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्रकृति की प्राणि-व्यवस्था में भेड़िये आवश्यक हैं; और वे सदैव से हैं, सदैव प्रकट होते रहते हैं, और सदैव अपना पैर जमा लेते हैं—चाहे शासन-व्यवस्था के प्रधान पुरुष के साथ उनका सान्निध्य और उनकी उपस्थिति कितनी ही असम्बद्ध क्यों न हो। केवल इसी एक अनिवार्य आवश्यकता के द्वारा इस समस्या को हल किया जा सकता है कि निष्ठुर आर्कचीव ऐलेक्ज़ण्डर के साथ—जो स्वयं अत्यन्त सहृदय और सज्जन थे—इतनी अतुल शक्ति अपने हाथ में किस प्रकार रख सका। आर्कचीव स्वयं एक ऐसा व्यक्ति था जो सिपाहियों की

मूछें अपने हाथों से उखाड़ डालता था, पर समय आने पर दुर्बल मानसिक स्थिति के कारण संकट का सामना करने में असमर्थ था।

मार्शल डेवोट उन लोगों में से था जो जान-बूझकर अपने-आप शोक-मग्न स्थिति में फँस जाते हैं जिससे वे अपनी विषण्णता का कोई बहाना बता सकें। इसी कारण वे हमेशा जल्दी में, और कार्य में संलग्न भी रहते थे। ऐसे मनुष्यों को जब कभी जीवन-सम्बन्धी आमोद्-प्रमोद से सामना करना पड़ता है तो उनका आमोद-प्रमोद और प्रधान जीवनोल्लास अपनी विषण्णता-पूर्ण निरन्तर कार्य्यशीलता के द्वारा उसका विरोध करने में निहित रहता है।

पीरी ने डेवोट के शुष्क चेहरे की ओर देखकर जान लिया कि उत्तर देने में विलम्ब करने का प्रत्येक क्षण उसके जीवन का मूल्य होगा; पर वह यह निश्चय कर सका कि वह क्या कहे। डेवोट किसी शिक्षक की तरह उत्तर पाने के लिए कुछ क्षण प्रतीक्षा करने को उद्यत दिखाई देता था। पीरी अपने पहले बयान को दुहराने का साहस न कर सका, पर अपना पद और सामाजिक स्थिति प्रकट करना संकटापन्न होता और झंझटों से ख़ाली न होता। अतः वह चुप रहा। पर उसके कुछ निश्चय करने से पहले ही डेवोट ने अपना सिर उठाया, चश्मे को माथे पर रख लिया और आँखें सिकोड़कर उसकी ओर बड़े ध्यान से देखा।

उसने शुष्क नपे-तुले स्वर में कहा—'मैं इस आदमी को जानता हूँ।' यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह पीरी को डराना चाहता था।

पीरी की कमर में जो कम्प हो रहा था अब उसने अकस्मात् शैतान की तरह उसके सिर पर अधिकार जमा लिया।

'जनरल, आप मुझे न जानते होंगे; मैंने आपको कभी नहीं देखा...।'

'यह एक रूसी जासूस है' डेवोट ने पीरी के कथन में बाधा देकर एक दूसरे जनरल को सम्बोधित करते हुए कहा। पीरी ने अब तक इस दूसरे जनरल को वहाँ न देखा था।

और इतना कहकर डेवोट ने मुँह फेर लिया। पीरी के स्वर में अकस्मात् कम्प उत्पन्न हो गया और उसने शीघ्रता के साथ कहा—

'नहीं महोदय' अकस्मात् उसे याद आया कि डेवोट ड्यूक है। 'नहीं महोदय, आप मुझे कभी न जानते होंगे। मैं नागरिक सैनिक अफ़सर हूँ, और मैं मास्को से बाहर कभी नहीं गया।'

डेवोट ने पूछा—'तुम्हारा क्या नाम है?'

'बैज़ूखोव।'

'मेरे पास इस बात का क्या सबूत है कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो?'

'महोदय!' पीरी ने रुष्ट स्वर में नहीं, प्रार्थना-पूर्ण स्वर में कहा।

डेवोट ने सिर उठाया और उसकी ओर ध्यान से देखा। कुछ क्षणों तक दोनों एक दूसरे की ओर देखते रहे, और उस देखने ने ही पीरी के प्राण बचा दिये। इस दृष्टि-विनिमय ने इन

दोनों मनुष्यों में—युद्ध और क़ानून की शर्तों से बिल्कुल स्वतन्त्र—मानवी सम्पर्क स्थापित कर दिया। उस क्षण दोनों के मस्तिष्कों में अनेकानेक विचार घूम गये और उन्हें बोध हुआ कि वे मानव जाति के शिशु हैं, और फलतः भाई भाई हैं।

जिस समय डेवोट ने आरम्भ में उस काग़ज़ पर से—जहाँ मानवी समस्याएँ और मनुष्यजीवन केवल संख्याओं द्वारा प्रदर्शित किये गये थे—दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा था उस समय पीरी केवल एक आकस्मिक परिस्थिति मात्र था, और डेवोट अपनी आत्मा को बिना किसी प्रकार के जघन्य कृत्य का दोषी ठहराये उसे गोली मार सकता था; पर अब उसने उसमें एक मनुष्य के दर्शन किये। वह कुछ क्षण सोचता रहा।

डेवोट ने शुष्क स्वर में कहा—'तुम यह किस तरह साबित करोगे कि तुम ठीक ही कह रहे हो?'

पीरी को रामबाल की याद आ गई और उसने उसका नाम लिया और उसकी रेजीमेण्ट का नम्बर बताया और जिस स्थान पर वह ठहरा हुआ था उसका पता बताया।

डेवोट ने कहा—'तुम जो कुछ कह रहे हो वास्तव में वह नहीं हो।' पीरी ने कम्पित टूटे स्वर में अपने कथन की वास्तविकता के प्रमाण देने आरम्भ किये।

पर इसी समय ऐडजूटेण्ट आ गया और उसने डेवोट से कुछ कहा। डेवोट ऐडजूटेण्ट के लाये हुए समाचार से खिल उठा

और अपनी वर्दी के बटन देने लगा। यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह पीरी की बात बिल्कुल भूल गया था।

जब ऐडजूटेण्ट ने उसे बन्दी का स्मरण कराया तो उसने तेवर बदले और पीरी की ओर सिर झटकाकर उसे वहाँ से ले जाने की आज्ञा दी। पर वे लोग उसे कहाँ ले जायँगे, पीरी यह न जान सका—अस्तबल में वापस, या वध-स्थान में, जिसकी ओर अन्य क़ैदियों ने आते हुए संकेत किया था।

उसने सिर घुमाया और देखा कि ऐडजूटेण्ट डेवोट से दूसरा सवाल कर रहा है।

डेवोट ने कहा—'हाँ, ज़रूर!' पर इस 'हाँ' का क्या आशय था, पीरी न जान सका।

बाद को पीरी स्मरण न कर सका कि वहाँ से वह किस प्रकार, कहाँ, और कितनी दूर गया। उसकी सारी कार्यकारिणी शक्तियाँ विलुप्त हो गई थीं; वह हतप्रभ हो गया था, और अपने चारों ओर देखता हुआ औरों की देखादेखी अपने पैर भी हिलाता-हिलाता उस समय तक चलता रहा जब तक वे सब न रुक गये, और उनके रुकने पर वह भी रुक गया। उसके मस्तिष्क में उस समय केवल एक प्रश्न चक्कर लगा रहा था—उसे मृत्यु-दण्ड देने-वाला वास्तव में कौन था? वे लोग तो हर्गिज़ नहीं थे, जिन्होंने उसका सबसे पहले बयान लिया था—उनमें से एक की भी यह इच्छा न थी, और न कोई उनमें से ऐसा कर सकता था। डेवोट भी वह व्यक्ति नहीं है, उसने उसकी ओर कितने मानवोचित ढङ्ग

से देखा था। एक क्षण बाद डेवोट को बोध हो जाता कि वह अन्याय कर रहा है, पर उसी समय ऐडजूटेण्ट ने आकर उसका ध्यान भंग कर दिया। वैसे ऐडजूटेण्ट ने यह सब किसी कुत्सा से प्रेरित होकर नहीं किया था, पर वह कुछ देर भीतर और न आता। तब फिर उसे कौन प्राणदण्ड दे रहा है, उसकी कौन हत्या कर रहा है, उसे—पीरी को—उसके प्राणों से--जिसमें अनेकानेक आशा-आकांक्षाएँ, स्मृतियाँ और विचार निहित हैं-- कौन वंचित कर रहा है? यह कौन है? और पीरी को प्रतीत हुआ कि, कोई नहीं।

वह केवल एक व्यवस्था थी और अनेक परिस्थितियों के एक साथ घटित होने का परिणाम था।

एक विशिष्ट ढङ्ग की व्यवस्था उसकी—पीरी की—हत्या कर रही थी; उसे उसके जीवन से, उसके सर्वस्व से वञ्चित कर रही थी; उसका विनाश कर रही थी।

——

अठारहवाँ परिच्छेद

प्रिंस शरबैटोव के भवन से बन्दियों को रसोईघर के उद्यान के पास ले जाया गया जहाँ एक तख़्ता खड़ा किया गया था। उस तख़्ते के पीछे ताज़ा खोदा हुआ गड्ढा दिखाई पड़ता था, और उस तख़्ते और उस गड्ढे के पीछे अर्द्धचन्द्राकार रूप से एक भीड़ खड़ी थी। इस जन-समुदाय में कुछ रूसी थे, और बहुत से नैपोलियन के सिपाही--जर्मन, इटालियन, और फ्रेंच--तरह-तरह की वर्दियाँ पहने खड़े थे। उस समय उनकी ड्यूटियाँ न थीं। इस तख़्ते के दाहिने-बायें नीली वर्दी, लाल बिल्ले, नोकदार टोपियाँ और बूट पहने हुए फ्रेंच सिपाहियों की पंक्तियाँ खड़ी थीं।

क़ैदियों को सूची के अनुसार एक विशेष संख्या-बद्ध रूप से खड़ा किया गया। (पीरी की छठीं संख्या थी), और फिर उन्हें उस तख़्ते के पास ले जाया गया। उनके आगे पीछे से कुछ ढोल बजने आरम्भ हो गये, और उनकी आवाज़ के साथ ही पीरी को ऐसी अनुभूति हुई मानो उसकी आत्मा का एक अंश नुच गया हो। उसमें सोचने-समझने की शक्ति का ह्रास हो गया। वह केवल देख सकता था और सुन सकता था। उसकी केवल एक अभिलाषा थी, और वह यह कि वह भयावह

घटना शीघ्र घटित हो जाय। पीरी ने और .क़ैदियों की तरफ़ देखा और उन पर अनुसंधानात्मिका दृष्टि डाली।

पीरी ने .फ्रेंचों को पूछते सुना कि वे उन्हें अलग-अलग करके गोली मारें, या दो-दो करके। चीफ़ अफ़सर ने शान्त संयत स्वर में उत्तर दिया—"एक-एक जोड़ा।" सिपाहियों की पंक्तियों में स्पन्दन उत्पन्न हुआ और वे जल्दी करते हुए दिखाई दिये।

एक .फ्रेंच अफ़सर .क़ैदियों की क़तार के दाहिनी ओर आया और उसने .फ्रेंच और रूसी भाषा में उनके अपराधों की दण्ड-योजना पढ़ सुनाई।

फिर अफ़सर की आज्ञा के अनुसार चार .फ्रेंच सिपाही दो-दो का गुट्ट बनाकर आगे बढ़े और उन्होंने क़तार के शुरू में खड़े हुए दो .क़ैदियों को पकड़ लिया। ये .क़ैदी तख़्ते के पास पहुँच-कर रुक गये और मुँह बन्द करने की टोपियों के आने तक मूकभाव से चारों ओर इस प्रकार देखने लगे जिस प्रकार कोई आहत पशु अपनी ओर आते हुए शिकारी की ओर देखता है। एक बार-बार क्रास चिह्न बना रहा था, और दूसरा अपनी कमर खुजाता हुआ मुस्कराने के ढंग में अपने ओंठ हिला रहा था। सिपाहियों ने जल्दी-जल्दी उनकी आँखें बाँधीं, और तख़्ते से बाँध दिया।

.फ्रेंच सेना की पंक्ति में से बारह गोली चलानेवाले दृढ़ निश्चित क़दम उठाते हुए आगे बढ़े और तख़्ते से आठ हाथ के फ़ासले पर रुक गये। पीरी ने उस आसन्न व्यापार से निगाह बचाने के लिए मुँह फेर लिया। अकस्मात् एक कड़कता हुआ

निनाद सुनाई पड़ा जो पीरी को अत्यन्त भयावह गर्जन से भी अधिक भीषण प्रतीत हुआ, और उसने मुँह फेरकर देखा। कुछ धुआँ दिखाई देता था और फ्रेंच सैनिक पीले चेहरों और काँपते हुए हाथों से उस गड्ढे के पास कुछ कर रहे थे। दो और क़ैदियों को ले जाया गया। इन दोनों ने भी उसी मुद्रा के साथ अपने चारों ओर खड़े हुए दर्शकों पर सहायता की निष्फल याचना की दृष्टि डाली, और उनकी समझ में न आ सका या वे जान-बूझकर विश्वास न कर सके कि उनके साथ अब क्या होनेवाला है। वे उस पर इसलिए विश्वास न कर सके कि एक-मात्र वही ऐसे थे जो यह जानते थे कि उनके जीवन का उनके निकट कितना महत्त्व है। न वे यह समझ ही सके, और न विश्वास ही कर सके कि उन्हें उस जीवन से वंचित भी किया जा सकता है।

पीरी ने फिर देखने की इच्छा नहीं की, और उसने फिर मुँह फेर लिया; पर फिर एक भयावह प्रस्फोटन ने उसके कानों पर आघात किया, और तत्क्षण उसने धुआँ, किसी का रक्त, और फ्रेंचों को एक दूसरे के कार्य में बाधा डालते हुए, पीले चेहरे के साथ तख़्ते के पास कम्पित हाथों से कुछ करते देखा। पीरी के श्वास की गति भारी हो चली। उसने अपने चारों ओर देखा, मानो यह पूछने के लिए कि यह सब क्या हो रहा है। और उसे और सारे चेहरों पर भी वैसी ही मुद्रा अंकित दिखाई दी।

उसने सारे रूसियों और फ्रेंचों तथा उनके अफ़सरों के चेहरों पर एक जैसे रोमांच, हताशा और अंतर्द्वंद्व के दर्शन किये। पीरी के मस्तिष्क में क्षण भर के लिए प्रश्न दौड़ गया—'पर फिर यह सब कौन कर रहा है? ये सब भी तो मेरी ही तरह व्यथित हो रहे हैं। फिर वह कौन है? कौन?'

किसी ने चिल्लाकर कहा—'८६ नम्बर के निशाना बाँधने-वाले आगे बढ़ें!' पाँचवाँ—पीरी के पासवाला—क़ैदी ले जाया गया—अकेला। पीरी यह न समझ सका कि उसके प्राण बच गये हैं। वह उत्तरोत्तर बढ़ते हुए रोमांच के साथ उस सारे व्यापार की ओर देखता रहा। उसे किसी प्रकार के आह्लाद या निवारण की अनुभूति न हुई। वह पाँचवाँ आदमी एक ढीले-ढाले चोग़े-वाला मज़दूर लड़का था। फ्रेंच सैनिकों ने ज्यों ही उस पर हाथ रक्खा, वह भीति के साथ उछल पड़ा और पीरी से चिपट गया। (पीरी के शरीर में कम्प दौड़ गया और उसने झँझोरे देकर अपना पीछा छुड़ाया।) वह लड़का चल सकने में असमर्थ था। सिपाहियों ने उसकी बग़ल में हाथ डालकर खींचा और वह चीख़ मार उठा। जब वे लोग उसे किसी प्रकार तख़्ते तक खींचकर ले गये तो वह अचानक शान्त हो गया। ऐसा दिखाई पड़ता था कि उसकी समझ में अकस्मात् कोई बात आ गई है।

पीरी में अब पहले की तरह अपना मुँह फेरने और नेत्र बन्द कर लेने की शक्ति न रही। जनसमुदाय के अन्य लोगों की तरह उसका कौतूहल और उत्तेजन भी इस पाँचवीं हत्या पर

अन्तिम सीमा तक जा पहुँचा था। यह पाँचवाँ आदमी भी औरों की तरह शान्त दिखाई दिया; और उसने अपना ढीला-ढाला चोग़ा अपने चारों ओर लपेटा और एक पैर से दूसरा पैर खुजाया।

जब उन लोगों ने उसकी आँखें बाँध दीं तो उसने अपने ही हाथों से अपने सिर के पीछे की गाँठ ठीक कर दी जो उसे कष्ट पहुँचा रही थी, पर जब उन्होंने उसे रक्त-रंजित तख़्ते के साथ चिपटा दिया तो उसने कमर के बल सहारा लिया, और उस दशा में असुविधा बोध करने पर उसने सीधे होकर अपने पैर ठीक किये। फिर वह पहले से अधिक सुविधाजनक स्थिति में पीछे की ओर झुक गया। पीरी ने उस पर से अपनी दृष्टि न हटाई। वह उसकी प्रत्येक गति को ध्यान के साथ देखता रहा।

सम्भवत: आदेश दिया जा चुका था, और सम्भवत: तत्क्षण आठ बन्दूक़ें भी निनाद कर उठी थीं, पर पीरी ने बाद को चाहे कितना ही स्मरण करने का प्रयत्न किया, उसे फ़ायरिंग का तनिक सा भी शब्द सुनने की याद न आ सकी। उसने केवल यह देखा कि किस प्रकार वह मज़दूर अकस्मात् उन रस्सियों के ऊपर झुक गया जिनसे वह बँधा हुआ था, किस प्रकार उसके दो स्थानों पर रक्त दिखाई दिया, किस प्रकार उसके भार से रस्सियाँ ढीली पड़ गईं, किस प्रकार उसका सिर अस्वाभाविक रूप से एक ओर को लटक गया, और किस प्रकार एक टाँग उसके नीचे दब गई। पीरी भागकर सीधा उस तख़्ते के पास जा पहुँचा। पीले भीत चेहरे लिये फ्रेंच सिपाही उस मज़दूर के चारों ओर कुछ

कर रहे थे। एक वृद्ध फ्रेंच का नीचे का जबड़ा, रस्सियाँ खोलते हुए, काँप रहा था। रस्सी खुलने पर वह शव धँसकर गिर पड़ा। सैनिकों ने उसे भद्दे ढङ्ग से तख़्ते के पास से खदेड़ा, और उस गड्ढे में ठूँसना आरम्भ कर दिया।

वे सब स्पष्ट और निश्चयात्मक रूप से जानते थे कि वे अपराधी हैं और उन्हें अपने अपराध के चिह्न यथासम्भव शीघ्रता के साथ छिपा डालने चाहिएँ।

पीरी ने उस गड्ढे में निगाह डाली और देखा कि मज़दूर लड़का अपने घुटनों को सिर तक उठाये पड़ा है और उसका एक कन्धा दूसरे कन्धे से ऊँचा चला गया है। उसका कन्धा लगातार कम्प के साथ उठ-बैठ रहा था। एक सैनिक ने भर्राये हुए क्रुद्ध स्वर में चिल्लाकर--जिससे स्पष्ट प्रतीत होता था कि वह भी व्यथित हो रहा है--पीरी को अपने स्थान पर वापस जाने की आज्ञा दी। पर पीरी उसकी बात न समझ सका और उसी प्रकार गड्ढे के पास खड़ा रहा। किसी ने उसे वहाँ से खदेड़ा भी नहीं।

जब गड्ढा भर गया, तो आदेश दिया गया। पीरी को उसके स्थान पर ले जाया गया, और तख़्ते के दोनों ओर खड़ी हुई सैन्य-पंक्तियाँ कुछ घूमकर तख़्ते के पास से चल दीं। जिन चौबीस गोली चलानेवालों ने क़ैदियों का वध किया था, वे अपनी ख़ाली बन्दूक़ें लिये अब तक उस अर्द्धचन्द्राकार चक्र के बीच में खड़े थे। अब पंक्तियों को जाते देखकर वे भी अपने स्थानों पर झपटकर जा पहुँचे।

पीरी अब इन गोली चलानेवालों की ओर चकित नेत्रों से देख रहा था। वे लोग उस चक्र में से दो-दो करके अपने स्थान पर भागकर वापस आ रहे थे। वे सब अपने-अपने स्थानों पर जा पहुँचे थे—केवल एक युवक सैनिक, पीले ज़र्द चेहरे के साथ, अपनी टोपी सिर के पीछे खसकाये और बन्दूक़ ज़मीन पर टेके अब भी उस गड्ढे के पास खड़ा हुआ था। वह किसी मदोन्मत्त व्यक्ति की तरह इधर-उधर झूमता, और गिरने से बचने के लिए आगे-पीछे क़दम रखता। एक वृद्ध अफ़सर क़तार में से निकलकर उसकी ओर झपटा, और उसकी कुहनी पकड़कर उसे क़तार में खींचकर ले गया। रूसियों और फ्रेंचों का समुदाय छिन्न-भिन्न होना आरम्भ हो गया। सब सिर झुकाये वहाँ से चल दिये।

एक फ्रेंच ने कहा—'इससे उन्हें नसीहत तो मिलेगी कि किस तरह आग लगाई जाती है।'

पीरी ने मुँह फेरकर वक्ता की ओर देखा और ताड़ लिया कि उक्त सिपाही इस सारे व्यापार से किसी प्रकार की सांत्वना पाने का निष्फल प्रयत्न कर रहा है। उसने अपनी बात अध-कही छोड़कर अपने हाथ से हताशा-व्यंजक गति की, और वहाँ से चला गया।

——

उन्नीसवाँ परिच्छेद

इस हत्याकाण्ड के बाद पीरी को बाक़ी कैदियों से अलग करके एक ध्वस्त और अपवित्र किये गये गिर्जे में अकेला छोड़ दिया गया।

सन्ध्या समय उसके पास एक अफ़सर दो सैनिकों के साथ आया और उसने पीरी को बताया कि उसे क्षमा कर दिया गया है, और अब उसे युद्ध के कैदियों की बारक में ले जाया जायगा। पीरी को समझ में यह सब कुछ न आया; वह उठकर सैनिकों के साथ हो लिया।

जिस घड़ी से पीरी ने वह भीषण हत्याकाण्ड देखा था—तभी से उसे ऐसा बोध हो रहा था मानो उसकी आत्मा की वे स्प्रिंगें नोचकर निकाल ली गई हों जिन पर सारे पदार्थ अवस्थित थे, और जिनके परिणाम-स्वरूप वे सारे पदार्थ एक अव्यवस्थित अर्थहीन समूह के रूप में खसखसाकर गिर पड़े हों, और इस प्रकार उसकी सारी सजीवता नष्ट हो गई हो। यद्यपि उसने इस बात को स्पष्ट रूप से हृदयङ्गम नहीं किया था फिर भी विश्व की सुव्यवस्था में, भगवान् में और स्वयं अपनी आत्मा में उसकी आस्था नष्ट हो गई थी। इसी प्रकार के भावों की अनुभूति उसने पहले भी की थी, पर इतनी प्रबलता के साथ नहीं। पहले जब कभी उसके हृदय में ऐसे भावों का उद्रेक होता था, वह

स्वयं उसी के दुराचरण का परिणाम होता था; और वह आन्तरिक हृदय से इस बात की अनुभूति करता था कि उस हताशा और उन सन्देहों से निस्तार पाने का साधन स्वयं उसी के अन्तराल में निहित है। पर उसे अनुभूति होने लगी कि जीवन की व्याख्या में पहले ही की तरह आस्था उत्पन्न कर लेना अब उसकी शक्ति में नहीं है।

पीरी दीवार के सहारे सूखी घास के ऊपर बैठकर बार-बार अपने नेत्र खोलने और बंद करने लगा। पर ज्योंही वह अपने नेत्र बंद करता, उसके सामने उस मज़दूर लड़के का भयंकर चेहरा—जो अपनी सरलता के कारण और भी भीषण दिखाई देता था—और संकोचपूर्ण हत्यारों के चेहरे—जो अपने क्षोभ के कारण और भी भीषण दिखाई देते—आ खड़े होते। और वह झटपट आँखें खोलकर अंधकार भेदकर अवाक् रूप से अपने चारों ओर देखने का प्रयत्न करता।

उसके पास ही एक छोटा-सा आदमी झुका हुआ बैठा था। पीरी को उसकी उपस्थिति का बोध उस समय हुआ जब उसके प्रत्येक बार गति करने से उसके पसीने की गंध फैलने लगी। यह आदमी अंधकार में अपनी टाँगों के साथ कुछ कर रहा था, और यद्यपि पीरी उसका चेहरा देखने में असमर्थ था, उसे बोध होता था कि वह बार-बार उसकी ओर निगाह उठाकर देख लेता था। जब पीरी के नेत्र अंधकार में देखने के अभ्यस्त हो गये तो उसने देखा कि वह आदमी अपने पैरों पर से पट्टियाँ खोल रहा है, और

जिस ढंग से वह पट्टियाँ खोल रहा था, उसे देखकर पीरी को कौतूहल हुआ। जब उसने अपने एक पैर की पट्टी की डोरी खोल ली तो उसकी गुल्ली बनाकर वह तत्काल दूसरे पैर की पट्टी खोलने में, पीरी को देखता हुआ, लग गया। वह एक हाथ से एक पैर की डोरी पकड़े हुए था, और दूसरे हाथ ने उसकी दूसरी पट्टी खोलनी आरम्भ भी कर दी थी। इस प्रकार अबाध रूप से एक के बाद दूसरी चक्करदार गति करते हुए जब उसने बड़ी ख़ूबी के साथ अपने दोनों पैरों की पट्टियाँ खोल लीं, तो उन्हें उसने अपने सिर के ऊपर गढ़ी हुई खूँटियों पर लटका दिया, एक चाकू निकाला, कुछ चीज़ काटी, उसे बंद किया, और अपने सिरहाने रख दिया, और तनिक अधिक सुविधा के साथ बैठकर अपने उठे हुए घुटनों को अपनी बाँहों में बाँध लिया और पीरी की ओर एकटक देखना आरम्भ किया। पीरी को उसके इस चुस्त रंग-ढंग में, उसके इस कोने में इस ख़ूबी के साथ स्थापित होने में, और उसकी सुगंधि तक में एक प्रकार की प्रसन्नता, सांत्वना और सचिक्कणता का बोध होने लगा, और वह भी उसकी ओर एकटक देखने लगा।

अकस्मात् वह छोटा-सा आदमी बोल उठा—'सरकार, तुम्हें बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं—ऐं न ?'

और उसकी उस सुरीली सुकुमार आवाज़ में इतनी सहृदयता और सरलता भरी हुई थी कि पीरी ने उत्तर देने की चेष्टा की; पर उसका जबड़ा काँप उठा और उसे अपने नेत्रों में आँसू आते दिखाई दिये। उस नन्हे आदमी ने—पीरी को अपना उद्वेलन

व्यक्त करने का अवसर दिये बिना—वही पहले जैसी सुन्दर आवाज़ के साथ—जिसका व्यवहार वृद्ध रूसी देहाती स्त्रियाँ किया करती हैं—कहना आरम्भ किया—

'मेरे जवान—दोस्त, घबराने की कोई बात नहीं है—"घड़ा भर कष्ट उठा लो तो उठा लो, पर जुग जुग जीते रहो !"—बस, यही बात है। इन लोगों में भी अच्छे, बुरे—सभी तरह के आदमी हैं।' और इसी प्रकार बोलता हुआ फुर्ती के साथ उठा और खाँसता हुआ उस झोंपड़े के दूसरी ओर चला गया।

पीरी को वही दयालुतापूर्ण स्वर उस झोंपड़े के दूसरी ओर से आता हुआ सुनाई दिया—'आ गई ?—आ गई ?—लुच्ची कहीं की ! याद रखती है...बस, बस, बहुत हुआ !'

और वह सिपाही अपने ऊपर कूदते हुए कुत्ते को हटाकर अपनी पहली जगह पर आकर बैठ गया। वह अपने साथ चीथड़े में बँधी हुई कोई चीज़ लाया था।

उसने चीथड़ा खोलकर कुछ भुने हुए आलू निकाले और उन्हें पीरी की ओर बढ़ाते हुए अपने पहले आदरपूर्ण स्वर में कहा—'लो सरकार, थोड़ा सा खा लो। हमें खाने को शोरवा मिला था, और आलुओं की तो कुछ पूछो ही मत ! लाजवाब हैं !'

उस दिन पीरी ने सारे दिन कुछ न खाया था, और उसे आलुओं की सुगन्धि बड़ी अच्छी लगी। उसने सिपाही को धन्यवाद दिया और खाना आरम्भ किया।

सिपाही ने मुस्कराकर कहा—'कहो, अच्छे लगते हैं न? देखा, ऐसे करो।'

उसने एक आलू लिया, चाकू निकाला, आलू को हथेली पर रक्खा, उसके ठीक दो टुकड़े किये, चीथड़े में से निकालकर उस पर थोड़ा सा नमक बुरका, और उसे पीरी को पकड़ा दिया। उसने एक बार फिर कहा—

'आलू लाजवाब हैं! कुछ थोड़े-से खाकर तो देखो—हाँ, बस इसी तरह से!'

पीरी को मालूम पड़ा कि उसने इतना स्वादिष्ठ भोजन पहले कभी न खाया था।

पीरी बोला—'ओह, मैं तो अच्छा ख़ासा हूँ, पर इन लोगों ने उन बेचारे ग़रीबों को क्यों मार डाला? आख़िरी तो अभी बीस का भी न होगा।'

नन्हा-सा आदमी बोला—'टस्स, टस्स...! कितना पाप है! कितना पाप है!' उसने शीघ्रता से कहा, मानो ये शब्द उसकी ज़ुबान पर हमेशा मौजूद रहते हों, और इस समय अनायास भाव से निकल पड़े हों—'सरकार, तुम मास्को में कैसे रुक गये?'

पीरी ने उत्तर दिया—'मैंने कोई यह थोड़े ही समझा था कि वे इतनी जल्दी आ धमकेंगे, मैं तो इत्तफ़ाक़ से रह गया।'

'और प्यारे जवान, तुम्हें इन्होंने गिरफ़्तार कैसे किया? तुम्हारे घर ही पर?'

'नहीं, मैं एक जगह आग देखने गया था, और उन्होंने मुझे पकड़कर मुझ पर आग लगाने का मामला चलाया।'

नन्हे आदमी ने कहा—'और जहाँ क़ानून होगा, वहाँ झूठ भी ज़रूर होगा।'

पीरी ने आलू चबाते-चबाते कहा—'और तुम्हें यहाँ बहुत दिन हो गये क्या?'

'मुझे? मुझे इन्होंने पिछले ही रविवार को मास्को के एक अस्पताल में से ले लिया था।'

'अच्छा, तो तुम सिपाही हो?'

'हाँ, हम लोग ऐपशरू की रेजीमेण्ट के सिपाही हैं। मैं बुख़ार के मारे मर रहा था। हमें कोई क़सूर न बताया गया। वहाँ हममें से बीस सिपाही पड़े थे। हम सोच ही न सके कि... !'

पीरी ने पूछा—'तो तुम्हारा यहाँ पर जी नहीं लगता?'

'जी भी कैसे लगे? मेरा नाम है प्लैटोव, और बोल का नाम है काराटेव।' उसने पीरी की सुविधा के लिए अपना नाम बताते हुए कहा। 'सेना में मुझे "नन्हा शिकरा" कहते हैं। हाँ, तो जी भी कैसे लगे? मास्को शहरों की माँ ठहरी। फिर उसकी ऐसी दशा देखकर जी में उबाल पैदा न हो तो क्या हो? पर बन्दगोभी का कीड़ा बन्दगोभी का तो सत्यानाश करता ही है, उसका सत्यानाश उससे पहले हो जाता है; हम तो बड़े बूढ़ों से यही सुनते आ रहे हैं', उसने शीघ्रता के साथ कहा।

पीरी ने कहा—'तुमने अभी-अभी क्या बात कही ?'

काराटेव बोला—'किसने ? मैंने ? मैंने यही कहा कि भगवान् की इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिलता, हमारी बुद्धि की क्या बिसात है ?' उसने कहा, और सोचा कि सचमुच उसने पहले यही बात कही थी।

उसने फिर कहना आरम्भ किया—'हाँ, तो सरकार, तुम्हारी जायदाद भी है ? और घरबार भी है ? तो परमात्मा का दिया सब कुछ है ? और घरवाली ? और तुम्हारे बड़े-बूढ़े अभी जीते हैं न ?'

और पीरी अँधेरा होते हुए भी देख सका कि उक्त प्रश्न करते हुए सिपाही के ओठों पर स्नेह-स्निग्ध मुस्कराहट थिरकने लगी। जब काराटेव को पता चला कि उसके माता-पिता जीवित नहीं हैं तो वह दुःखित-सा दिखाई दिया, विशेषकर इसलिए कि उसकी माता जीवित न थी।

उसने कहा—'बीबी सलाह के लिए, सास ख़ातिरदारी के लिए; पर माँ से प्यारी कोई चीज़ नहीं है ! अच्छा, और बाल गोपाल भी हैं ?'

और जब इसके उत्तर में भी पीरी ने नकारोक्ति-सूचक उत्तर दिया तो वह फिर क्षुब्ध दिखाई दिया, और उसने साथ ही शीघ्रता के साथ कहा—

'ख़ैर, परवाह मत करो ! अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है ! ईश्वर करे बच्चों से तुम्हारी गोद भर जाय। सबसे बड़ी बात है मेल-जोल के साथ रहना... ।'

पर इसी समय पीरी से कहे बिना न रहा गया—'पर, अब तो मेरे लिए सब कुछ एक ही जैसा है।'

काराटेव ने उत्तर दिया—'देखो, जेल से और भिखारी की झोली से कभी मुँह न मोड़ना चाहिए!'

और वह पहले से अधिक आराम के साथ बैठ गया।

जिस झोंपड़ी में पीरी को रक्खा गया था और जहाँ उसे चार सप्ताह काटने पड़े थे उसमें तेईस सिपाही, तीन अफ़सर और दो नागरिक अफ़सर भी क़ैद थे।

जब पीरी ने बाद को इस ज़माने की याद की तो उसे बाक़ी सब एक प्रकार के कुहासे से ढके हुए दिखाई दिये, पर प्लेटोव काराटेव उसके स्मृति-पटल पर हमेशा एक अत्यन्त स्पष्ट और मूल्यवान् चित्र की तरह अंकित रहा, और वह उसे बराबर रूसी सहृदयता और उल्लास की सजीव प्रतिमा समझता रहा।

——

बीसवाँ परिच्छेद

जिस समय प्रिंसेज़ मेरी को पता चला कि प्रिंस एण्ड्रथ् रोस्टोव परिवार के साथ चारोस्लेव में है तो वह उसी दम रवाना हो गई।

इस कठिन यात्रा में प्रिंसेज़ मेरी की स्फूर्ति और अध्यवसाय को देखकर मेडेम बोरीन, डेसाले, और उसके नौकर-चाकर चकित रह गये। वह सबसे अन्त में सोती, और सबसे पहले उठती और किसी प्रकार के कष्ट से विचलित न होती। उसकी कार्य्य-शीलता और सजीवता का प्रभाव उसके सहयात्रियों पर भी पड़ता रहा, और फलतः दूसरे सप्ताह के अन्त तक सब चारोस्लेव के निकट जा पहुँचे।

जैसा कि यात्रा में अक्सर हुआ करता है, प्रिंसेज मेरी केवल यात्रा ही में तन्मय रही और उस यात्रा के उद्देश को भूल गई। पर चारोस्लेव पहुँचने पर, इस विचार ने कि अब—बहुत दिनों के बाद नहीं बल्कि अभी-अभी उसी दम—उसे किस परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, उसके हृदय में एक बार फिर खलबली मचा दी, और उसका उत्तेजन अपनी चरम सीमा तक जा पहुँचा। उसने नन्हे निकोलस की ओर दृष्टिपात किया। वह इस समय उसके सामने बैठा हुआ नगर के दृश्य को बड़ी मौज के साथ देख रहा था। प्रिंसेज़ मेरी ने अपना सिर झुका लिया और

उस समय तक न उठाया जब तक गाड़ी झूमती-झामती, हिलती-डुलती, और आवाज़ करती हुई अन्त में एक स्थान पर आकर रुक न गई। गाड़ी की सीढ़ियाँ बिछाई गईं और वे ज़ोर का खनाका कर उठीं।

दरवाज़ा खुला। बाईं ओर जलराशि थी—एक बड़ी-सी नदी—और दाहिनी ओर एक पोर्च था। पोर्च में अनेक व्यक्ति खड़े हुए थे—नौकर-चाकर, और गुलाबी चेहरे और काले बालों की लम्बी माँगवाली एक बालिका जो कृत्रिम भाव से क्षोभकारी मुस्कराहट मुस्करा रही थी—प्रिंसेज़ मेरी को यही प्रतीत हुआ। (यह सोनिया थी।) प्रिंसेज़ मेरी सीढ़ियों पर दौड़ गई। उस कृत्रिम मुस्कराहट से मुस्करानेवाली बालिका ने कहा—'इधर को, इधर को!' और अंत में प्रिंसेज़ मेरी एक हाल में एशियाई ढंग की सूरतवाली एक वयस्का महिला के सामने जा पहुँची। उक्त महिला भावावेश के साथ उससे मिलने के लिए उसकी ओर शीघ्रता के साथ बढ़ीं। यह काउण्टेस थीं। उन्होंने प्रिंसेज़ मेरी को छाती से लगा लिया और उसका चुम्बन किया।

वह धीरे से बोलीं—'मेरी बच्ची, मैं तुझे प्यार करती हूँ और तुझे बहुत दिनों से जानती हूँ।'

वैसे प्रिंसेज़ मेरी उस समय बड़ी उत्तेजित हो रही थी, पर इतने पर भी उसने जान लिया कि यह काउण्टेस हैं, और उसने उनसे कुछ कहना आवश्यक समझा। उसने काउण्टेस ही के लहजे में फ्रेंच भाषा में कुछ शिष्टता-सूचक वाक्य कहे (और वह स्वयं न

जान सकी कि वह यह सब करने में किस प्रकार समर्थ हो सकी), और अंत में पूछा—'कैसे हैं ?'

काउण्टेस बोली—'डाक्टर कहता है कि ख़तरे की कोई बात नहीं है।' पर यह कहते हुए उन्होंने आकाश की ओर दृष्टि उठाई, और उनके संकेत से उन्हीं की बात का खण्डन हो गया !

प्रिंसेज़ ने पूछा—'कहाँ हैं ? मैं जाऊँ, देख आऊँ ? देख आऊँ न ?'

'प्रिंसेज़, अभी रुको; मेरी दुलारी, अभी रुको। और यह उसका बच्चा है ?' काउण्टेस ने डेसाले के साथ प्रवेश करते हुए नन्हे निकोलस की ओर देखकर कहा। 'यहाँ जगह की कोई कमी थोड़े ही है। बहुतेरा बड़ा घर है। अहा, कैसा गुलाब-सा बच्चा है !'

काउण्टेस प्रिंसेज़ मेरी को ड्रायंगरूम में ले गईं। सोनिया मेडेम बोरीन से बात-चीत कर रही थी। काउण्टेस ने लड़के को छाती से लगा लिया। वृद्ध काउण्ट ने आकर प्रिंसेज़ का स्वागत किया। जब से प्रिंसेज़ मेरी ने उन्हें देखा था, तब से उनमें बहुत परिवर्त्तन हो गया था। तब वह चुस्त, उल्लास-पूर्ण, आत्माश्वासन-युक्त वृद्ध पुरुष थे; अब वह एक करुणा-पूर्ण, हतप्रभ-व्यक्ति दिखाई देते थे। वह प्रिंसेज़ मेरी के साथ वार्तालाप करते समय बार-बार पीछे फिरकर देख लेते, मानो यह पूछने के लिए कि वह यह सब ठीक तरह से कर रहे हैं न ? जब से मास्को का, और फलतः उनकी सम्पत्ति का, सर्वनाश हुआ था तब से वह अपने अभ्यस्त संसार

से बलात् जागृत होकर अपने महत्त्व की धारणा को खो बैठे थे और यह अनुभूति करते दिखाई देते थे कि इस जीवन-चक्र में अब उनके लिए कोई स्थान नहीं है।

काउएट ने सोनिया का परिचय देते हुए कहा—'यह मेरी भतीजी है। प्रिंसेज़, तुम इसे नहीं जानतीं ?'

प्रिंसेज़ मेरी सोनिया की ओर मुड़ी और उसे देखते ही उसके हृदय में जो उद्दंड भाव उठ खड़े हुए थे उन्हें दबाकर उसने उसका चुम्बन किया। पर इस बात से उसे विशेष संताप हुआ कि उसके हृदय में उस समय जो कुछ हो रहा है उससे इन सबकी मनोवृत्ति बिल्कुल विभिन्न है।

उसने उन सबको संबोधित करके एक बार फिर पूछा—'वह कहाँ हैं ?'

सोनिया ने लजाते हुए कहा—'वह नीचे हैं। नटाशा उनके पास है। पूछने के लिए दासी को भेजा है। प्रिंसेज़, तुम थक गई होगी।'

प्रिंसेज़ मेरी के नेत्र अस्त-व्यस्तता के अश्रुओं से भर गये। उसने मुँह फेर लिया, और वह काउण्टेस से दुबारा पूछने ही वाली थी कि वह अपने भाई के पास किस प्रकार पहुँचे, कि इसी समय उसके कानों में दरवाज़े पर से हल्के, प्रबल और—जैसा प्रिंसेज़ मेरी को प्रतीत हुआ—उल्लसित पैरों की आहट आई। उसने मुँह फेरा और नटाशा को—उसी नटाशा को जो अब से कुछ दिनों पहले उसे इतनी कम रुची थी—कमरे में लगभग दौड़कर आते देखा।

पर प्रिंसेज़ ने नटाशा के चेहरे की ओर कठिनता से देखा होगा कि उसने जान लिया उसके शोक-संताप में वही एक संगिनी है, और फलतः वही एक उसकी सखी है ! वह उससे मिलने दौड़ी, उसका आलिंगन किया, और उसके कंधे पर सिर रखकर रोने लगी।

नटाशा ने प्रिंस एगड्र्यू के सिरहाने बैठे-बैठे ज्यों ही सुना कि प्रिंसेज़ मेरी आई है, वह चुपचाप कमरे से निकल आई और उन शीघ्रतापूर्ण पगों के साथ—जो मेरी को उल्लासपूर्ण प्रतीत हुए थे—उसके पास आ पहुँची।

जिस समय वह ड्रायङ्ग में दौड़ती हुई आई तो उसके उत्तेजित मुख-मण्डल पर केवल एक मुद्रा अंकित थी—प्रेम की मुद्रा—एक ऐसी मुद्रा, जिससे करुणा, और वेदना व्यंजित होती थी। यह स्पष्ट था कि उस समय नटाशा के हृदय में अपना कोई विचार न था।

भावुक प्रिंसेज़ मेरी ने नटाशा के चेहरे पर दृष्टिपात करते ही यह सब जान लिया। वह उसके कन्धे पर सिर रखकर वषाद-पूर्ण उल्लास के आँसू बहाने लगी।

नटाशा उसे दूसरे कमरे में ले जाती हुई बोली—'आओ, आओ मेरी, उनके पास चलो।'

प्रिंसेज़ मेरी ने सिर उठाया, नेत्र पोंछे, और नटाशा की ओर मुँह फेरा। उसे बोध हुआ कि उससे वह सब कुछ जान-बूझ सकेगी।

उसने एक प्रश्न आरम्भ किया—'किस तरह...।' पर वह रुक गई।

उसे बोध हुआ कि शब्दों के द्वारा कुछ पूछना या कहना असम्भव है। नटाशा का चेहरा और उसके नेत्र उससे कहीं अधिक स्पष्टता और गम्भीरता के साथ बता देते। फिर भी उसने आशा का पीछा न छोड़ा, और जिस बात पर स्वयं उसका विश्वास न था वह उसने शब्दों के द्वारा पूछी—

'उनका घाव कैसा है ? वैसे कैसा जी है ?'

नटाशा किसी प्रकार कह सकी—'तुम...तुम....ख़ुद देख लोगी।'

वे कुछ देर तक प्रिंस एण्ड्रथ् के कमरे के बाहर बैठी रहीं, और अन्त में उन्होंने रोना-चिल्लाना बन्द कर दिया और संयत मुद्रा के साथ उसके पास जाने में समर्थ हो गईं।

प्रिंसेज़ मेरी ने पूछा—'इनकी बीमारी अब तक कैसी रही ? क्या इनका जी बहुत दिनों से इतना ही ख़राब है ? यह कब हुआ ?'

नटाशा ने सुबकियाँ रोकने की चेष्टा करते हुए कहा—'दो दिन से यह हो गया। मैं कैसे बताऊँ, तुम ख़ुद देख लोगी वह कितने दुर्बल हो गये हैं।'

प्रिंसेज़ ने पूछा—'दुर्बल ? पतले ?'

'न, यह सब कुछ नहीं है, इससे भयङ्कर बात है। तुम ख़ुद देख लोगी। ओह, मेरी, वह देवता हैं, वह जीते नहीं रह सकते, नहीं रह सकते, क्योंकि...।'

जब नटाशा ने अभ्यस्त भाव से दरवाज़ा खोला और प्रिंसेज़ मेरी ने कमरे में पैर रक्खा तो उसके गले में आँसू फिर उमड़ आये। वह बहुतेरा जी कड़ा करती और बहुतेरा शान्त रहने का प्रयत्न करती; पर वह जान गई कि रोगी की ओर वह बिना आँसुओं के न देख सकेगी।

प्रिंसेज़ मेरी ने सोचा कि वह नटाशा के शब्दों (दो दिन से यह हो गया) का अर्थ समझ गई है। उसने समझा कि वह अकस्मात् पसीज उठे हैं और यह सुकुमारता और सहृदयता आसन्न मृत्यु की द्योतक है। द्वार के भीतर पग रखते हो उसकी कल्पना में प्रिंस एण्ड्रयू का वह चेहरा घूम गया जिसे वह शैशव काल में देखा करती थी, एक मृदुल, विनीत और समवेदनापूर्ण चेहरा जो एण्ड्रयू बहुत कम धारण करता था, और फलतः जिसका मेरी पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता था। वह भीतर चली। वह उसके शरीर को जितनी अधिक स्पष्टता के साथ देखती गई, और उसके अवयवों को स्पष्ट रूप से देख पाने का उसने जितना अधिक प्रयास किया, उसका कण्ठ अश्रुओं से उतना ही अवरुद्ध होता गया। अब उसने उसका चेहरा देखा और दोनों के नेत्र मिल गये।

वह एक मसनद पर गिलहरी के बालोंवाले ड्रेसिंग गाउन पर तकियों के सहारे लेटा हुआ था। वह दुबला और पीला था। अपने एक स्वच्छ श्वेत हाथ में एक रूमाल पकड़े हुए था, और, दूसरे हाथ से धीरे-धीरे अँगुलियाँ हिलाते हुए अपनी नई

उगी हुई मूछों को मरोड़ा दे रहा था। उसके नेत्र उन दोनों की ओर जमे हुए थे।

जब प्रिंसेज़ मेरी ने उसका चेहरा देखा और उससे दृष्टि मिलाई तो अकस्मात् उसकी चाल ढीली पड़ गई और उसे प्रतीत हुआ कि उसके वे आँसू सूख गये हैं और सुबकियाँ बंद हो गई हैं। जब उसने उसके चेहरे और नेत्रों की मुद्रा की ओर ध्यान दिया तो उसने भीत भाव से अनुभूति की कि उसने कोई अपराध किया है।

उसने मन ही मन कहा—'पर मैंने क्या अपराध किया है?' पर इसी समय प्रिंस एण्ड्र्यू की शुष्क कठोर दृष्टि ने उत्तर दिया—'जीते रहने का, और जीते रहने की इच्छा करने का, इधर मैं...।'

जिस समय वह अपनी बहन और नटाशा की ओर—धीरे-धीरे घुमा-फिराकर अपने नेत्र जमा रहा था, तो उस मर्मभेदिनी दृष्टि से—जो बाहरी संसार की ओर नहीं, अन्तराल की ओर जमी हुई दिखाई देतीं थी—लगभग वैपरीत्य भाव प्रदर्शित होता था।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने सदैव के अनुसार प्रिंसेज़ मेरी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसका चुम्बन किया।

उसने कहा (और उसकी आवाज़ उसकी दृष्टि की तरह ही शांत और असम्पृक्त थी)—'कहो मेरी, अच्छी हो न। यहाँ तक कैसे आ गई?'

यदि वह व्यथित स्वर में चीत्कार कर उठता तो प्रिंसेज़ इतनी भयभीत न होती जितनी वह उसके इस स्वर से हो उठी।

उसने उसी शांत धीमे स्वर में—और स्पष्टतया ही अपनी स्मरण-शक्ति पर ज़ोर डालकर—कहा—'और नन्हे निकोलस को भी साथ लाई हो क्या ?'

प्रिंसेज़ मेरी ने पूछा—'तुम्हारा जी अब कैसा है ?' और उसे इस प्रश्न पर स्वयं ही आश्चर्य हुआ।

प्रिंस एण्ड्रयू ने उत्तर दिया—'बहन, यह बात तुम डाक्टर से पूछो।' और उसने फिर प्रेम भाव धारण करने के लिए अपने ओठों-ओठों में फ्रेंच में कहा (और यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह जो कुछ कह रहा था हृदय से नहीं)—'बहन, तुम्हारे आने के लिए धन्यवाद।'

प्रिंसेज़ मेरी ने उसका हाथ दबाया। इससे प्रिंस एण्ड्रयू ने व्यथित भाव प्रदर्शित किया। वह चुप रहा और यह निश्चय न कर सका कि वह क्या कहे। प्रिंसेज़ मेरी की समझ में अब आया कि इन दो दिनों में उसे क्या हो गया। उसके शब्दों में, उसके लहजे में, और विशेषकर उसकी उस शान्त प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण दृष्टि में इहलौकिक सारी वस्तुओं से पूर्ण वैपरीत्य भाव प्रदर्शित होता था—और यही एक जीवित मनुष्य के लिए अत्यन्त भयङ्कर बात है।

प्रिंस एण्ड्रयू ने निःस्तब्धता भङ्ग करके नटाशा की ओर संकेत करते हुए कहा—'देख रही हो, भाग्यचक्र ने हम दोनों को किस विचित्र ढङ्ग से मिला दिया है! मेरी सारी देख-भाल यही किया करती हैं।'

प्रिंसेज़ मेरी ने उसकी बात सुनी और उसकी समझ में न आ सका कि उसके मुँह से यह बात किस प्रकार निकल सकी। वह, भावुक, सहृदय प्रिंस एण्ड्र्यू यह बात उसके सामने किस प्रकार कह सका जिसे वह प्रेम की दृष्टि से देखता था, और जो उसे प्रेम की दृष्टि से देखती थी ? यदि उसे जीवित रहने की आशा होती तो वह यह बात और सो भी ऐसे शुष्क क्षोभकारी स्वर में कभी न कहता। इसका एकमात्र कारण यह हो सकता था कि उसे कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण रहस्य ज्ञात हो गया था।

वार्तालाप शुष्क और असम्बद्ध था और बीच-बीच में टूट जाता था।

नटाशा ने कहा—'मेरी रयाज़न के रास्ते से आई हैं।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने इस बात की ओर कोई ध्यान न दिया कि नटाशा उसकी बहिन को मेरी कहती है; और स्वयं नटाशा को भी इसका बोध केवल इसी समय उसके सामने उच्चारण करने पर हुआ।

प्रिंस एण्ड्र्यू ने कहा—'फिर, बात क्या हुई ?'

'इन्हें बताया गया था कि सारा मास्को जला दिया गया था; और...।'

नटाशा रुक गई—बात-चीत करना असम्भव था। यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह उसकी बात सुनने का निष्फल प्रयत्न कर रहा है।

वह बोला—'हाँ, सुना है, मास्को जल गया। कैसे दुःख की बात है !' और वह अन्यमनस्क भाव से अपने सामने की ओर देखता हुआ मूछें मरोड़ने लगा।

अकस्मात् प्रिंस एण्ड्र्यू (शायद उन्हें प्रसन्नता प्रदान करने के लिए) बोल उठा—'और मेरी, काउण्ट निकोलस से भी तुम्हारी भेंट हुई थी? उन्होंने यहाँ पत्र में लिखा कि वह तुम पर बेतरह रीझ गये हैं।' वह शान्त और सरल भाव से कहता रहा, और अपने इन शब्दों का वह जटिल मर्म न समझ सका जो जीवित प्राणियों की दृष्टि में हो सकता था। उसने पहले से अधिक शीघ्रता के साथ—मानों इन शब्दों की खोज में बहुत देर से हो और उन्हें पा सकने पर हर्षित हो उठा हो—कहा—'अगर तुम भी उन्हें प्रेम की दृष्टि से देखती हो तो तुम्हारा विवाह बड़ा अच्छा रहे।'

प्रिंसेज़ मेरी ने उसके शब्द सुने। वे इस बात का प्रमाण थे कि वास्तव में वह इहलौकिक पदार्थों से कितनी दूर जा पहुँचा है।

प्रिंसेज़ मेरी ने शान्त भाव से कहा—'मेरी बात छोड़ो।' और उसने नटाशा की ओर दृष्टिपात किया।

नटाशा को उसकी दृष्टि की अनुभूति तो हुई, पर उसने उसकी ओर न देखा। तीनों फिर चुप हो गये।

अकस्मात् प्रिंसेज़ मेरी ने कम्पित स्वर में कहा—'एण्ड्र्यू, तुम...। तुम नन्हे निकोलस को देखोगे? वह हमेशा तुम्हारी ही बात करता रहता है।'

प्रिंस एण्ड्र्यू के ओठों पर मुस्कराहट की क्षीण रेखा दौड़ गई, और उसके मुस्कराने का यह पहला अवसर था, पर प्रिंसेज़ मेरी उसके चेहरे को अच्छी तरह जानती थी, और उसे यह देख

अत्यन्त भीति हुई कि वह हर्ष के साथ, या अपने पुत्र के प्रति अपने स्नेह के कारण न मुस्कराया था, बल्कि एक शान्त मृदुल व्यंग्य-विद्रूप के साथ मुस्कराया था क्योंकि उसने ताड़ लिया था कि वह उसे जागृत करने के अन्तिम साधन का उपयोग कर रही है।

वह बोला—'हाँ, बुलाओ तो, उसे देखकर मुझे बड़ा हर्ष होगा। अच्छा है न?'

जब नन्हा निकोलस प्रिंस एण्ड्र्यू के कमरे में लाया गया तो उसने अपने पिता की ओर भीत-चकित दृष्टि से देखा, पर वह रोया-चिल्लाया नहीं, क्योंकि और कोई रो-चिल्ला नहीं रहा था। प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसका चुम्बन किया। यह स्पष्ट था कि वह यह न जान सका कि उससे वह क्या कहे।

जब निकोलस को बाहर ले जाया गया, तो प्रिंसेज़ मेरी अपने भाई के पास फिर पहुँची, उसका उसने चुम्बन किया, और अपने आँसुओं को और अधिक न रोक सकने के कारण वह रोने-चिल्लाने लगी।

'प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसकी ओर मनोयोग के साथ देखा।

उसने कहा—'क्यों, क्या निकोलस की बात पर?'

प्रिंसेज़ मेरी ने रोते हुए अपना सिर हिलाया।

'मेरी, तुमने तो धर्म-पुस्तक...' पर उसने वाक्य पूरा न किया।

'भय्ये, तुमने क्या बात कही?'

'कुछ नहीं। तुम यहाँ मत रोओ-चिल्लाओ।' उसने उसकी ओर उसी शुष्क भाव के साथ देखते हुए कहा।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

कई दिन पहले नटाशा ने प्रिंस एण्ड्र्यू से पूछा था:—

'तुम सोये नहीं ?'

'नहीं, मैं तुम्हारी तरफ़ बहुत देर से देख रहा हूँ। मुझे तुम्हारा आना भी मालूम हो गया था। तुमसे मुझे जो मीठी मीठी शान्ति, जो प्रकाश मिलता है वह और किसी से नहीं मिलता। ऐसा जी करता है कि आनन्द के मारे रो पड़ूँ।'

नटाशा उसके और पास पहुँच गई। एण्ड्र्यू का चेहरा हर्षातिरेक से दमदमा उठा।

'नटाशा, मैं तुझे बेहद प्यार करता हूँ! संसार की सारी चीज़ों से ज़्यादा।'

'और मैं ?'—उसने क्षण भर के लिए मुँह फेर लिया।—'बेहद क्यों ?' उसने पूछा।

'बेहद क्यों ?...अच्छा बताओ, तुम्हारी आत्मा क्या कहती है, क्या मैं जिऊँगा ? बताओ, तुम्हारा क्या ख़याल है ?'

'मुझे इसका पक्का विश्वास है, पक्का!' नटाशा भावावेश के साथ उसके दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर चिल्ला उठी।

वह कुछ देर चुप रहा।

'आह, क्या ही अच्छा होगा!' और उसने नटाशा का हाथ पकड़कर चूमा।

नटाशा का हृदय आनन्द और उद्वेलन से भर गया, पर तत्काल ही उसे याद आया कि इस तरह काम न चलेगा, और रोगी को शान्ति मिलनी चाहिए।

उसने अपने आनन्द को दबाते हुए कहा—'पर तुम सोये नहीं हो। सोने की चेष्टा करो... ।'

प्रिंस एण्ड्र्यू ने उसका हाथ दबाया और छोड़ दिया। उसने दो बार सिर घुमाकर देखा और दोनों बार एण्ड्र्यू के दमकते हुए नेत्र उसके नेत्रों से आ मिले। वह मोज़ा बुनने में तल्लीन हो गई और उसने निश्चय किया कि जब तक वह समाप्त न हो जायगा, वह मुँह फेरकर न देखेगी।

और प्रिंस एण्ड्र्यू भी सचमुच ही नेत्र बन्द करके सो गया। वह अभी देर तक न सोया था कि अकस्मात् वह चौंक-कर उठ बैठा और ठंडे पसीने से नहा गया।

सोते हुए भी उसके मस्तिष्क में वही एक विचार काम कर रहा था जिसके विषय में वह हर समय सोचता रहता था—जीवन और मृत्यु, और मुख्यतः मृत्यु। और अब उसे अनुभूति हुई कि वह मृत्यु के निकटतर जा पहुँचा है।

उसने सोचा—'प्रेम? प्रेम क्या है?'

'प्रेम मृत्यु में बाधा डालता है। प्रेम जीवन है। मैं यह सब—सब—केवल इसलिए समझ रहा हूँ कि मैं प्रेम करता हूँ। ये सारी चीज़ें इसलिए हैं, इन सारी चीज़ों का अस्तित्व इसलिए है कि मैं प्रेम करता हूँ।' और वह फिर सो गया।

उसने स्वप्न में देखा कि वह उसी कमरे में पड़ा है पर उसके घाव वग़ैरह कोई नहीं है और वह अच्छा ख़ासा है। उसे अनेक विभिन्न, नगण्य और अरोचक व्यक्ति दिखाई पड़े। उसने उनसे बातचीत की और किसी अनावश्यक बात की चर्चा की। वे सब यात्रा करने की तैयारी कर रहे थे। प्रिंस एण्ड्र्यू को प्रच्छन्न रूप से बोध था कि यह सब क्षुद्र व्यापार है और उसे अधिक महत्त्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान देना है, पर फिर भी वह उसी प्रकार बातचीत करता, और अपनी थोथी व्युत्पन्नमति से उन्हें आश्चर्य-चकित करता रहा। इसके बाद धीरे धीरे अलक्षित रूप से सारे आदमी एक एक करके वहाँ से अदृश्य होने लगे और प्रिंस एण्ड्र्यू के सामने अब केवल एक समस्या रह गई—द्वार बन्द था। वह उठा और चटख़नी और ताला लगाने के लिए दरवाज़े के पास गया। अब सारी बात इसी पर निर्भर थी कि वह समय रहते ताला बन्द कर सकेगा या नहीं। वह आगे बढ़ा और झपटकर, पर उसकी टाँगों ने हिलने-जुलने से इन्कार कर दिया, और वह समझ गया कि वह समय रहते द्वार में ताला न लगा सकेगा, पर फिर भी उसने व्यथाकारी ढंग से अपनी सारी शक्तियों का ज़ोर लगाया। उस पर एक प्रकार की वेदनाकारी प्रबल भीति ने अधिकार कर लिया था। और वह भीति थी मृत्यु की भीति—दरवाज़े के पीछे वह खड़ी थी। पर जिस समय वह इस प्रकार भद्दे ढंग से घिसटता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ रहा था; दूसरी ओर से उस विभीषिका ने भी दरवाजे को धक्का देकर बलात् भीतर घुसना आरम्भ कर

दिया था। कोई मनुष्येतर वस्तु—मृत्यु—दरवाज़ा तोड़कर भीतर घुस रही थी और उसे बाहर रखना आवश्यक था। उसने दरवाज़ा पकड़ लिया, और उसे जकड़कर पकड़े रहने का अन्तिम प्रयत्न किया—ताला लगाना अब सम्भव न था—पर उसके वे प्रयत्न निःशक्त और भद्दे थे। अन्त में उस दरवाज़े को दूसरी ओर से उस विभीषिका ने धक्का देकर खोल दिया, और वह फिर बन्द हो गया।

एक बार फिर बाहर से धक्का आया। प्रिंस एण्ड्र्यू का अन्तिम दैवी प्रयत्न व्यर्थ गया और दरवाज़े के दोनों पट निःशब्द गति से खुल गये। विभीषिका ने प्रवेश किया, वह साक्षात् मृत्यु ही थी। प्रिंस एण्ड्र्यू मर गया।

पर जिस क्षण वह मरा, उसे याद आया कि वह सो रहा है—और ज्योंही वह मरा, उसी क्षण वह—प्रयत्न करके—जाग उठा।

'हाँ, यह मृत्यु थी! मैं मर गया—और जाग उठा। हाँ, मृत्यु एक प्रकार का जागरण है'—और तत्काल ही उसकी आत्मा आलोकित हो गई, और जिस आवरण ने अब तक उस अज्ञेय पदार्थ को छिपा रक्खा था, वह उसकी अन्तर्दृष्टि से उठ गया। उसे मालूम पड़ा मानो अब तक उसके भीतर जो शक्तियाँ बन्द पड़ी हुई थीं, वे स्वतन्त्र हो गई हैं। उसे एक ऐसी विचित्र भारहीनता की अनुभूति हुई जिससे उसकी आत्मा फिर शून्य न हुई।

जब प्रिंस एण्ड्र्यू ने पसीने से तर होकर मसनद पर करवट ली तो नटाशा ने उसके पास जाकर पूछा कि क्या बात है। उसने

उसकी बात का कोई उत्तर न दिया और बिना कुछ समझे हुए, उसकी ओर विचित्र दृष्टि से देखा।

बस, प्रिंसेज़ मेरी के आगमन के दो दिन पहले यही बात हुई थी। उस दिन से—डाक्टर के कथनानुसार—क्षयकारी ज्वर ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया, पर डाक्टर की बात में नटाशा कोई रुचि न दिखाती थी; वह उन भयावह मानसिक लक्षणों को देख रही थी। ये लक्षण अधिक विश्वासकारी थे।

उसके अन्तिम दिन और अन्तिम घड़ियाँ स्वाभाविक सहज रूप से व्यतीत हुईं। प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा उसके पास से हिलती तक न थीं। वे न उसके सामने रोतीं, न अलग। वे एकान्त में भी उसके विषय में एक दूसरी से बात न करतीं। वे समझती थीं कि वे जो कुछ समझती हैं उन्हें शब्दों द्वारा व्यक्त न कर सकेंगी। वे दोनों देख रही थीं कि वह शनैः शनैः शान्त भाव से उत्तरोत्तर गहराई में प्रविष्ट होता हुआ प्रतिक्षण उनसे दूर होता चला जा रहा है। वे दोनों जानती थीं कि यही होना था और यही ठीक भी है।

अन्त में उसने धार्मिक दीक्षा ग्रहण की, अपराध स्वीकार किये; सब उससे बिदा लेने आये। जब वे लोग उसके पास उसके पुत्र को लाये तो उसने बालक के ओंठों से अपने ओठ छुआये और मुँह फेर लिया, इसलिए नहीं कि उसे यह व्यापार कठिन और दुःखदायक लगा (नटाशा और प्रिंसेज़ मेरी ने यही समझा), बल्कि केवल इसलिए कि उसने समझा कि सब उससे

यही चाहते हैं। जब उन्होंने उस बच्चे को आशीर्वाद देने को कहा, तो उसने वह भी किया, और चारों ओर देखा, मानों यह पूछ रहा हो कि क्या उसे कुछ और भी करना है ?

जिस समय आत्मा के देह-त्याग के अवसर पर शरीर में अन्तिम कम्पन उत्पन्न हुआ, तो प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा मौजूद थीं।

जब उसका शरीर कुछ क्षण तक निश्चेष्ट भाव से पड़ा पड़ा ठण्डा होने लगा तो प्रिंसेज़ मेरी ने पूछा—'क्या हो बीते ?' नटाशा शरीर के पास पहुँची, उसने निर्जीव नेत्रों की ओर देखा, और झटपट उन्हें बन्द कर दिया। उसने उन्हें बन्द कर दिया और उनका चुम्बन न किया, बल्कि वह उस पदार्थ से लिपट गई जो उसकी स्मृति का निकटतम चिह्न था—उसका शरीर।

'हाय, यह कहाँ चले गये ? अब कहाँ होंगे ?...'

जब शव को स्नान कराकर और कपड़े पहनाकर कफ़न में सजाने के बाद मेज़ पर रख दिया गया तो सब उससे विदा लेने आये, और सब रोये।

नन्हा निकोलस इसलिए रोया-चिल्लाया कि उसका हृदय वेदनाकारी क्षोभ से फटा जा रहा था। काउण्टेस और सोनिया नटाशा के ऊपर तरस खाकर रोईं-चिल्लाईं और इसलिए भी कि वह अब जीवित न था। वृद्ध काउण्ट इसलिए रोये-चिल्लाये कि उन्हें याद आया कि शीघ्र ही उनका भी ऐसा ही भयावह अन्त होना है।

और अब नटाशा और मेरी भी रोईं, पर अपने व्यक्तिगत दुःख-शोक के कारण नहीं, बल्कि उस भक्ति और मृदुलता-पूर्ण भावावेश से अभिभूत होकर जिसने उनकी आत्माओं पर उस क्षण से अधिकार कर लिया था जब से उन्होंने अपनी आँखों से मृत्यु का सरल और गम्भीर रहस्य-सम्पादन देखा था।

बाईसवाँ परिच्छेद

घटनाओं के आधारभूत कारणों का योग मानवी बुद्धि के परे की बात है। पर उन आधारभूत कारणों को खोज निकालने की इच्छा मानवी अन्तःकरण में सदैव वास करती रहती है। और मानवी बुद्धि उन परिस्थितियों के बाहुल्य और जटिलता की तह में जाये बिना, जिनमें से प्रत्येक परिस्थिति प्रत्येक घटना का एक आधारभूत कारण दिखाई दे सकता है, किसी प्रारम्भिक, अत्यन्त बोधगम्य कल्पना को ले लेती है, और कह उठती है—'यही आधारभूत कारण है!' ऐतिहासिक घटनाओं में—जहाँ निरीक्षण-विवेचन का विषय मानवी कार्य-कलाप होता है—इस तथ्य को निर्णय करने का प्राचीनतम नैकट्य देवताओं की इच्छा था; फिर उन लोगों की इच्छाओं की बारी आई जो ऐतिहासिक दृष्टि से परम महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करते हैं—ऐतिहासिक योद्धा। पर किसी ऐतिहासिक घटना के निष्कर्ष पर तनिक अधिक मनोयोग के साथ ध्यान देते ही (और ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ उस व्यापक जन-समुदाय के कार्य-कलाप पर अवलम्बित रहती हैं जो उसमें भाग लेता है।) हमें यह धारणा अत्यन्त सहज रूप से हो सकती है कि जन-समुदाय के कार्य-कलाप का शासन ऐतिहासिक योद्धाओं की इच्छा नहीं करती, बल्कि इसके विपरीत वह स्वयं ही उसके द्वारा निरन्तर शासित होती रहती है। साधारणतया कहा

जा सकता है कि किसी ऐतिहासिक घटना के अर्थ चाहे इस ढङ्ग से समझे जायँ, चाहे उस ढङ्ग से, कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। पर उस आदमी में जो यह कहता है कि पश्चिम के राष्ट्र पूर्व की ओर इसलिए बढ़े कि नैपोलियन की यही इच्छा थी, और उसमें जो यह कहता है कि यह सब इसलिए हुआ कि ऐसा होना ही था, वही अन्तर है जो उस आदमी में जो यह कहता है कि पृथिवी अपने स्थान पर स्थिर रहती है और नक्षत्र उसकी परिक्रमा किया करते हैं, और जो यह कहता है कि वह यह तो नहीं जानता कि पृथिवी किस वस्तु पर अवस्थित है, पर वह इतना अवश्य जानता है कि किन्हीं निश्चत विधानों के द्वारा ही पृथिवी और अन्य नक्षत्रों का सञ्चालन होता है। किसी ऐतिहासिक घटना का आधारभूत कारण एकमात्र वही हो सकता है जो अन्य कारणों का भी कारण हो। पर एक या एक से अधिक घटनाओं का सञ्चालन करनेवाले कुछ विशिष्ट विधान होते हैं—जो अंशतः हमारी समझ से परे रहते हैं, और अंशतः हमारे लिए बोधगम्य होते हैं। और इन विधानों का खोज निकालना हमारे लिए केवल तभी सम्भव है जब हम आधारभूत कारण को किसी विशिष्ट व्यक्ति की इच्छा में पा सकने का प्रयास छोड़ दें, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार नक्षत्रों की गति के विधानों का खोज निकालना केवल तभी सम्भव है जब कि आदमी पृथिवी की स्थिति की धारणा को छोड़ दे।

बोरोडिनो के युद्ध के बाद मास्को पर शत्रु-सेना का अधिकार हुआ और उसके बाद शत्रु-सेना बिना कोई नवीन युद्ध किये भाग निकली—और यह सारी घटना-शृङ्खला इतिहास की परम शिक्षादायिनी घटनाओं में से है।

इस बात पर सारे इतिहासकार सहमत हैं कि राष्ट्रों और राज्यों का पारस्परिक संघर्ष युद्ध के रूप में व्यक्त होता है, और युद्ध में जो न्यूनाधिक सफलता होती है उसका प्रत्यक्ष प्रभाव किसी राष्ट्र या राज्य की राजनीतिक शक्ति के विकास या पतन पर पड़ता है।

चाहे ऐसे ऐतिहासिक विवरण कितने ही दिखाई दें कि किस प्रकार किसी बादशाह या सम्राट् ने दूसरे बादशाह या सम्राट् से लड़-झगड़कर एक सेना एकत्र की, अपने शत्रु की सेना से युद्ध किया, विजय प्राप्त की, तीन, पाँच या दस हज़ार आदमी क़त्ल किये और फलतः कई करोड़ जनता के एक समूचे राष्ट्र और राज्य को अपने अधीन कर लिया—चाहे यह कितना ही दुर्बोध दिखाई दे कि एक सेना के—किसी देश की शतांश शक्ति के—पराभव ने पूरे देश भर को आत्म-समर्पण करने पर विवश कर दिया, पर सारे ऐतिहासिक तथ्य (जहाँ तक हमें मालूम है) इसी बात की सत्यता की पुष्टि करते हैं कि एक राष्ट्र की सेना के विरुद्ध किसी दूसरे राष्ट्र की सेना की न्यूनाधिक सफलता ही राष्ट्रों की शक्ति की वृद्धि या पतन का कारण है—या कम से कम आवश्यक द्योतन है। एक सेना विजय प्राप्त करती है और

तत्काल ही विजित राष्ट्र के हित के विरुद्ध विजेता राष्ट्र के अधिकार बढ़ जाते हैं। एक सेना का पराभव होता है, और तत्काल ही उस पराभव की कठोरता के परिमाण में एक राष्ट्र अपने अधिकार खो बैठता है, और यदि उस राष्ट्र की सेना पूर्णतया पराजित हो जाती है तो वह राष्ट्र भी पूर्णतया दलित हो जाता है।

इतिहास के अनुसार परम प्राचीन काल से हमारे ज़माने तक यही होता आ रहा है। नैपोलियन के सारे युद्ध इस व्यापक विधान की पुष्टि करते हैं। आस्ट्रियन सेना के पराभव के परिमाण ही में आस्ट्रिया अपने अधिकारों से वंचित हो जाता है, और फ्रांस के अधिकार और बल में वृद्धि हो जाती है। फ्रेंच सेना की जेना और आस्टेंड की विजय से प्रूशिया के स्वतन्त्र अस्तित्व का नाश हो जाता है।

अकस्मात् १८१२ में फ्रेंच सेना मास्को के निकट एक विजय प्राप्त करती है, मास्को अधिकार में आ जाता है, और इसके बाद फिर कोई युद्ध नहीं होता, पर फल-स्वरूप रूस का अस्तित्व नहीं मिटता, बल्कि छः लाख विदेशी सेना का, और बाद को स्वयं नैपोलियन की सत्ता का अस्तित्व मिट जाता है। इतिहास के नियम पर लागू करने के लिए वस्तु-स्थिति में खींचातानी करना—यह कहना कि बोरोडिनो का मैदान रूसियों के हाथ में रहा, या यह कि मास्को के बाद और भी कई युद्ध हुए थे जिनसे नैपोलियन की सेना का विनाश हो गया—असम्भव है।

बोरोडिनो का मैदान फ़्रेंचों के हाथ में आने के बाद फिर किसी बड़े युद्ध के होने की तो बात ही क्या, कोई साधारण सा भी घमासान युद्ध न हुआ; पर फिर भी फ़्रेंच सेना का अस्तित्व मिट गया। इससे क्या निष्कर्ष निकलता है? यदि यह चीन के इतिहास का कोई उदाहरण होता तब तो हम कह देते कि वह कोई ऐतिहासिक घटना न थी (जहाँ कहीं इतिहासकारों के निश्चित विधानों के अनुकूल कोई घटना नहीं होती वहाँ वे इसी उपाय का अवलम्बन करते हैं); यदि बात केवल छोटी सी मुठभेड़ तक ही सीमित रहता जिसमें दोनों ओर से थोड़ी थोड़ी सेनाओं ने भाग लिया होता तो हम इसे व्यापक नियम का अपवाद मात्र समझकर सन्तुष्ट हो जाते—पर वास्तव में बात ऐसी नहीं थी, यह घटना हमारे पिताओं के आँखों देखते घटित हुई, और इसी घटना ने उनके जीवन और मरण के प्रश्न का निर्णय किया। यह युद्ध अब तक के सारे युद्धों से महान् युद्ध था।

बोरोडिनो के युद्ध से फ़्रेंच सेना के निकल भागने तक का सारे १८१२ का युद्ध-काल प्रदर्शित करता है कि केवल युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने ही से विजय प्राप्त नहीं हो जाती। वह विजय की निरन्तर द्योतक तक भी नहीं होती। वह प्रदर्शित करता है कि राष्ट्रों के भाग्यों का निर्णय करने की शक्ति विजेताओं में नहीं रहती, सेनाओं और युद्धों में भी नहीं रहती, बल्कि किसी दूसरी ही वस्तु में रहती है।

फ्रेंच इतिहासकार मास्को से विदा होने से पहले फ्रेंच सेना की दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शाही सेना में पूर्ण व्यवस्था थी; केवल घुड़सवार सेना, गोलन्दाज़ सेना और खच्चरों में यह बात न थी—घोड़ों और खच्चरों के लिए घास अलभ्य थी। और फ्रेंच सेना के इस अभाग्य का अन्यथा किया जाना भी सम्भव न था; क्योंकि आसपास के देहातियों ने अपनी घास फ्रेंचों को देने के बजाय जला डाली थी।

कल्पना कीजिए कि दो आदमी द्वन्द्व युद्ध करने के लिए अपने हाथों में पतली पतली तलवारें लेकर मैदान में उतरते हैं और युद्ध कुछ देर तक पटेबाज़ी की कला के नियमों के अनुसार चलता रहता है। अकस्मात् उनमें से एक को बोध होता है कि वह आहत हो गया है, और मामला कोई हँसी-दिल्लगी का नहीं है बल्कि उसकी जान से ताल्लुक़ रखता है, और वह उस पतली तलवार को फेंककर जो सोंटा हाथ में पड़ता है उसी को उठाकर हिलाने लगता है। पर साथ ही हमें यह भी कल्पना कर लेनी चाहिए कि उसका प्रतिपक्षी—जिसने अपनी लक्ष्य-सिद्धि के लिए अत्यन्त सहज और उत्तम साधनों का उपयोग इतनी समझदारी के साथ किया था—उदाराशयता के पैतृक भावों से प्रेरित होकर वस्तु-स्थिति को छिपाने की इच्छा करता है और हठपूर्वक प्रतिपादन करता है कि युद्ध-कला के अनुसार उसी ने तलवार से मैदान जीता है। यदि उस द्वन्द्व युद्ध का इसी प्रकार वर्णन किया जाय तो कितनी भ्रान्ति और अस्पष्टता घटित होनी सम्भव होगी!

जिस पटेबाज़ ने पटेबाज़ी के नियमों के अनुसार युद्ध करना चाहा था वह फ़्रेंच थे—जिस प्रतिद्वन्द्वी ने तलवार फेंककर सोंटा उठा लिया था वह रूसी जनता थी—जो लोग सारी बातों को पटेबाज़ी के नियमों के अनुसार समझाने का प्रयत्न करते हैं वे इतिहासकार हैं जिन्होंने इस युद्ध-व्यापार के विषय में कुछ लिखा है।

स्मोलेन्स्क के अग्निकाण्ड के बाद से एक ऐसे युद्ध का बीजारोपण हो गया जिसने अपने पूर्ववर्ती किसी युद्ध का अनुसरण नहीं किया। नगरों, क़स्बों और गाँवों का जलना, युद्धों के बाद स्थान-परित्याग कर जाना, बोरोडिनो के युद्ध का आघात, और उसके बाद को बराबर पीछे हटते रहना, मास्को का अग्निकाण्ड, फ़्रेंच सैनिक लुटेरों का पकड़ा जाना, शत्रु के माल-असबाब पर टूट पड़ना, और छापे मारना—यह सारा व्यापार नियम के विपरीत था।

नैपोलियन ने इसकी अनुभूति की, और जिस क्षण से वह मास्को में ठीक पटेबाज़ों की तरह खड़ा हुआ, और जिस क्षण से उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी के हाथ में तलवार के स्थान पर अपने सिर पर एक सोंटा हिलता देखा, उस क्षण से वह कुटूज़ोव और सम्राट् से बराबर शिकायत करता रहा कि यह सारा युद्ध नियम के विपरीत चल रहा है (मानो मनुष्यों की हत्या करने का भी कोई नियम हो सकता है)। और इस नियम के भङ्ग करने के विषय में फ़्रेंचों की सारी शिकायतों पर भी, और उच्चपदस्थ रूसी व्यक्तियों के इस प्रकार सोंटा हाथ में लेकर लड़ने में आत्मग्लानि

का बोध करने और नियम के अनुसार तलवार हाथ में लेकर ठीक पटेबाज़ी की कला के अनुसार मैदान में उतरकर हाथ दिखाने की इच्छा करने पर भी—सार्वजनिक युद्ध का सोंटा उठा—और बड़े भयङ्कर प्रबल वेग के साथ—और किसी की रुचि या नियमों का परामर्श लिये बिना, भोंडी सरलता के साथ, पर साथ ही अपने उद्देश की निरन्तर गति के साथ, उठा और गिरा और फ्रेंचों की उस समय तक मरम्मत करता रहा जब तक सारा आक्रमण नष्ट न हो गया।

और यह उस जनता के लिए अच्छा ही हुआ जिसने पटेबाज़ी के नियमों के अनुसार फ्रेंचों की तरह अभिवादन करने और उदाराशय विजेता के आगे तलवार की मूठ बड़ी सुन्दरता और विनयशीलता के साथ पेश करने के स्थान पर सङ्कट के समय बिना यह पूछे-ताछे कि ऐसी ही परिस्थितियों में दूसरों ने किस नीति का अनुसरण किया था, बड़े सरल और सहज ढङ्ग से जो सोंटा हाथ में आया उसे उठाकर उस समय तक मारना जारी रक्खा जब तक उसके हृदय में क्रोध और प्रतिहिंसा के स्थान पर घृणा और करुणा उत्पन्न न हो गई।

युद्ध-सम्बन्धी तथाकथित नियमों का भङ्ग जिन अनेक ढङ्गों से किया जाता है उनमें से एक अत्यन्त उपयोगी और स्पष्ट ढङ्ग है अलग-अलग झुण्डों का किसी एकत्र समुदाय पर छापा मारना। और इस ढङ्ग का अवलम्बन उन सारे युद्धों में किया जाता है जिन्हें राष्ट्रीय रूप मिल जाता है। इसकी कार्य-शैली यह होती

है कि किसी समुदाय का सामना समुदाय के रूप में न करके आदमी तितर-बितर होकर इक्का-दुक्का हमले करते हैं, और जहाँ उन पर प्रबल सेना आक्रमण करती है वहाँ वे भाग जाते हैं, और मौक़ा मिलते ही फिर सिर पर सवार हो जाते हैं। इस प्रकार की शैली का अनुकरण स्पेन में, काकाशेस में, और १८१२ में रूस में किया गया था*।

इस प्रकार के युद्ध का जन्म फ़्रेंचों के स्मोलेन्स्क प्रान्त में प्रवेश करने के साथ हुआ था। सरकार ने तो इस शैली को बाद को पसन्द किया, उससे पहले ही पीछे छूट जानेवाले, लूट-मार करनेवाले, और घास की तलाश में फिरनेवाले शत्रु सैनिकों को हज़ारों की तादाद में कज़्ज़ाकों और देहातियों ने मृत्यु के घाट उतार दिया। ये लोग उन्हें उसी प्रकार प्रेरणा के साथ मार डालते जिस प्रकार कुत्ते किसी पागल कुत्ते को दिक़ कर कर के मार डालते हैं। यही वह भयङ्कर सोंटा था जिसने सैनिक विज्ञान के नियमों की अवमानना करके फ़्रेंच सेना का विध्वंस कर डाला था। और इसकी उपयोगिता सबसे पहले डेनिस डेवीडोव की समझ में आई, और सरकार द्वारा इस शैली के स्वीकृत कराने का श्रेय इसी को प्राप्त है। २४ अगस्त को सरकार ने पहला—डेवीडोव

---

* मराठों ने भी मुग़ल शक्ति का मुख्यतः और मुस्लिम शक्ति का साधारणतः सामना करने के लिए इसी शैली का अवलम्बन किया था। —अनुवादक।

का—दल स्वीकार किया और फिर आये दिन दल स्वीकृत होने लगे। युद्ध-व्यापार के साथ ही इन दलबन्दियों की संख्या भी अधिकाधिक बढ़ने लगी। इन दलों ने विशाल फ्रेंच सेना के एक के बाद दूसरे दल को पूर्णतया नष्ट कर दिया। ये लोग सूखे हुए वृक्ष—फ्रेंच सेना—से गिरी हुई पत्तियों को बटोर लेते, और कभी कभी स्वयं भी उस वृक्ष को हिला डालते। अक्टूबर में फ्रेंच सेना के स्मोलेन्स्क की ओर भागते भागते ऐसे अनेक छोटे बड़े दल पैदा हो गये थे। उनमें कुछ ऐसे थे जो सैनिक विधानों के अनुसार ही कार्य करते थे और क़ायदे के साथ पैदल, गोलन्दाज़ और अमले रखते और सैनिक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते थे। अन्य दलों में केवल कज़्ज़ाक घुड़सवार थे। फिर ऐसे दल थे जिनमें पैदल और घुड़सवार दोनों थोड़ी-थोड़ी संख्या में सम्मिलित थे।

—

तेईसवाँ परिच्छेद

पीटिया अपने परिवार के मास्को के विदा होने के बाद से डेनीज़ीव की रेजीमेंट में आ पहुँचा था और शीघ्र ही एक बड़ी सी सेना के जनरल का अर्दली नियुक्त हो गया था। जिस समय से उसकी नियुक्ति हुई थी, और मुख्यतः जिस समय से उसे युद्ध-संलग्न सेना में प्रविष्ट होकर व्याज़्मा के युद्ध में भाग लेने का अवसर मिला था, पीटिया वयस्क होने के उल्लासपूर्ण उत्तेजन से आलोड़ित हो रहा था, और कोई सचमुच वीरतापूर्ण कार्य कर दिखाने का अवसर हाथ से न निकालने के लिए सदैव भावावेशपूर्ण आतुरता में तल्लीन रहता था। वह सेना में जो कुछ देखता और जो कुछ अनुभव करता उससे उसे बड़ी प्रसन्नता होती, पर साथ ही उसे हमेशा यही दिखाई देता कि वास्तविक वीरतापूर्ण कार्य वहीं हो रहे हैं जहाँ वह नहीं है। और वह उस स्थल पर जा पहुँचने के लिए सदैव आतुर रहता जहाँ वह संयोग से मौजूद न होता।

२१ अक्टूबर को फ़्रेंचों पर छापा मारा जानेवाला था। डोलोखोव भी दल बनाकर डेनीज़ोव के साथ काम कर रहा था।

सेना में पीटिया ने डोलोखोव की असाधारण वीरता और फ़्रेंचों के साथ उसकी निष्ठुरता की बहुत-सी कहानियाँ सुनी थीं, अतः जिस क्षण से वह झोंपड़ी में घुसा पीटिया ने उस पर से

अपनी दृष्टि न हटाई, बल्कि वह अपनी पेटी को अधिकाधिक कसता गया और उसका सिर अधिकाधिक तनता गया, जिससे वह डोलोखोव तक के संसर्ग के लिए अनधिकारी प्रमाणित न हो।

डोलोखोव ने कहा—'अँधेरा छा गया है। पहले हमें यह पता लगा लेना चाहिए कि यह कौन सी सेना है और कितने आदमी हैं। किसी न किसी को वहाँ ज़रूर जा पहुँचना चाहिए। जब तक हमें यह ठीक तरह मालूम न हो जायगा कि वे कितने हैं तब तक हम कोई काम शुरू न कर सकेंगे। मैं नाप-तोलकर क़दम उठाना पसन्द करता हूँ। हाँ, तो आप लोगों में से कोई मेरे साथ फ्रेंचों के तम्बू तक न चल सकेगा? मेरे पास एक फ़ालतू वर्दी है।'

पीटिया चिल्ला उठा—'मैं, मैं...मैं चलूँगा।'

डेनीज़ोव ने डोलोखोव को संबोधित करके कहा—'आपके जाने की ज़रूरत ही क्या है? रहा मैं, सो इसे मैं किसी हालत में न जाने दूँगा।'

पीटिया बोला—'वाह, अच्छे रहे! मैं क्यों न जाऊँ?'

'तुम्हारा जाना फ़ज़ूल है।'

'आप...आप मुझे क्षमा कीजिए क्योंकि...क्योंकि...मैं ज़रूर जाऊँगा, बस इतनी सी बात है। आप मुझे ले चलेंगे न?' उसने डोलोखोव की ओर मुड़कर कहा।

डोलोखोव ने अन्यमनस्क भाव से कहा, 'क्यों नहीं?'

फिर डोलोखोव ने पूछा—'क़ैदियों को आप कहाँ रखते हैं?'

'कहाँ ? मैं उन्हें भेज देता हूँ और उनकी रसीद ले लेता हूँ।' डेनीज़ोव लाल होकर चिल्ला उठा 'और मैं कह सकता हूँ कि मेरी गर्दन पर आज तक एक भी आदमी का ख़ून नहीं है। क्या एक सिपाही के नाम को—मैं साफ़-साफ़ कहूँगा—नाम को धब्बा लगाने के बजाय तीस या तीन सौ क़ैदियों को कुछ आदमियों के साथ शहर की तरफ़ रवाना कर देना मुश्किल है ?'

डोलोखोव ने शुष्क व्यंग्य के साथ कहा—'इस तरह की सहृदयता-पूर्ण बातें इस सोलह बरस के काउण्ट को शोभा देती हैं, आपको नहीं।'

पीटिया ने सलज्ज भाव से कहा—'मैंने तो कुछ भी नहीं कहा; मैं तो सिर्फ़ यही कहता हूँ कि मैं आपके साथ ज़रूर जाऊँगा।'

'पर दोस्त, आपको और मुझे ऐसी सहृदयता की बातें नहीं सोहतीं।' डोलोखोव ने कहना जारी रक्खा मानो उसे उस विषय को और आगे बढ़ाने में कुछ विशेष आनन्द आ रहा हो जिससे डेनीज़ोव को चिड़चिड़ाहट लगती थी। 'आपको उन पर तरस आता है ? हम क्या आपकी उन रसीदों को नहीं जानते ? आप सौ क़ैदियों को रवाना करेंगे, और कठिनता से तीस पहुँच सकेंगे। बाक़ी या तो भूखे मर जायँगे या उन्हें कोई मार डालेगा। बस, उन्हें ले जाना और न ले जाना एक ही जैसा है।'

पास बैठे हुसार कैप्टिन ने अपने नेत्र सिकोड़कर सहमति-सूचक सिर हिलाया।

डेनीज़ोव बोला—'हाँ, एक ही जैसा है—अब इस बात को यहीं छोड़ देना अच्छा है। मैं उनका ख़ून अपनी गर्दन पर नहीं लेना चाहता। आप कहते हैं कि वे मर जायँगे। मरने दीजिए। पर मेरे दोष से तो न मरेंगे!'

डोलोखोव हँसने लगा।

उसने कहा—'वे लोग मुझे बीस दफ़ा पकड़ लें, उन्हें रोकनेवाला कौन है? पर अगर उन्होंने मुझे सचमुच पकड़ पाया, या आपके जैसे उदारहृदय आदमी ही को पकड़ लिया, तो वे हमें किसी ज़हरीले पेड़ के तने से बाँधे बिना रहेंगे।' वह रुका। 'ख़ैर, अब काम का वक़्त हो गया। कज़्ज़ाक से मेरा थैला मँगवा दीजिए। उसमें दो फ़्रेंच वर्दियाँ हैं। अच्छा, तो तुम मेरे साथ चल रहे हो न?' उसने पीटिया से पूछा।

'मैं? हाँ, हाँ ज़रूर!' पीटिया ने चिल्लाकर कहा और लज्जा के कारण उसके नेत्रों में आँसू आ गये। उसने डेनीज़ोव की ओर देखा।

जिस समय डोलोखोव डेनीज़ोव से इस तरह बात पर झगड़ रहा था कि क़ैदियों का क्या करना चाहिए, पीटिया एक बार फिर क्षुब्ध और चंचल हो उठा था; पर इस सारे वार्तालाप का आशय उसकी समझ में अच्छी तरह न आ सका था। उसने सोचा—'अगर सयाने आदमी इसी तरह की बातें करते हैं तो सचमुच ही ये बातें आवश्यक और ठीक होंगी। पर ख़ास बात यह है कि डेनीज़ोव को यह सोचने की मजाल कैसे हुई कि मैं उनका

हुक्म बजा लाऊँगा और उनके इशारों पर नाचूँगा; मैं डोलोखोव के साथ फ्रेंच तम्बुओं में ज़रूर जाऊँगा—चाहे कुछ हो जाय। अगर वह जा सकते हैं तो मैं भी जा सकता हूँ!'

डेनीज़ोव ने उसे बहुतेरा समझाया बुझाया कि उसका जाना ठीक नहीं है, पर इन सारी बातों के उत्तर में उसने कहा 'मैं भी नाप तोलकर क़दम उठाता हूँ, और संकट को तो मैं जानता भी नहीं कि किस चिड़िया का नाम है। क्योंकि आप यह तो मानेंगे ही कि अगर हमें यह ठीक ठीक मालूम न होगा कि वे कितने आदमी हैं...तो सैकड़ों जानें यों ही चलीं जायँगी, फिर हम तो दो ही ठहरे। और इसके अलावा मैं वहाँ जाना ही चाहता हूँ, और ज़रूर जाऊँगा; आप मुझे रोकिए मत। इससे मामला बिगड़ जायेगा...।'

फ्रेंच लबादे और टोप पहनकर पीटिया और डोलोखोव उस खुले हुए स्थान पर आये जहाँ से डेनीज़ोव ने शत्रु-सेना का हाल-चाल ताड़ा था, और घने अंधकार में उस जंगल से निकलकर ढाल पर उतरे। नीचे पहुँचकर डोलोखोव ने अपने कज़्ज़ाकों को वहीं ठहरने का आदेश दिया और स्वयं पुल की ओर घोड़ा शीघ्रता से बढ़ाया। पीटिया उसके साथ-साथ था। उत्तेजना के मारे उसका हृदय उसके मुँह तक आ पहुँचा था।

पीटिया ने फुसफुसाकर कहा—'अगर हम पकड़े भी गये तो मैं जीते जी पकड़ाई न दूँगा। मेरे पास पिस्तौल है।'

डोलोखोव ने शीघ्रतापूर्ण फुसफुसाहट के साथ कहा—'रूसी में बात मत करो।' और उसी क्षण उनके कानों में अंधकार में से ललकार आई—'कौन जाता है?' और साथ ही बन्दूक़ का घोड़ा चढ़ाने का चटाखा हुआ।

पीटिया के चेहरे पर ख़ून दौड़ गया और उसने पिस्तौल जकड़कर पकड़ ली।

डोलोखोव ने बिना किसी प्रकार की शीघ्रता के, और बिना घोड़े की गति मन्द किये, कहा—'छठी रेजीमेण्ट के घुड़सवार।'

एक संतरी का काला शरीर पुल पर खड़ा दिखाई दिया।

'संकेत-चिह्न?'

डोलोखोव ने घोड़ा रोका और उसे मन्द गति से आगे बढ़ाया।

उसने कहा—'बताओ, कर्नल जरार्ड यहीं हैं?'

संतरी ने उसकी बात का उत्तर दिये बिना आगे का अवरोध करके कहा—'संकेत-चिह्न?'

अकस्मात् डोलोखोव ने रोब के साथ अपने घोड़े को उस पर चढ़ाकर कहा—'जब अफ़सर गश्त लगाते हैं तो संतरी उनसे संकेत-चिह्न नहीं पूछते...। बताओ, कर्नल यहीं हैं?'

सन्तरी उछलकर अलग खड़ा हो गया, और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना डोलोखोव मन्द गति से एक ढाल पर बढ़ा चला गया। इसी समय उसने सड़क पार करते हुए एक मनुष्य की काली आकृति को देखा और उसे रोककर पूछा कि अफ़सर और कमाण्डर कहाँ हैं। वह आदमी एक सिपाही था और कन्धे

पर थैला डाले हुए था। उसने रुककर और डोलोखोव के घोड़े को छूकर सरल सहज ढङ्ग में बताया कि अफ़सर लोग पहाड़ी के ऊपर दाहिनी ओर एक घर के सहन में बैठे हुए हैं। डोलोखोव सड़क पार करके—जिससे दोनों ओर से अग्नि के सामने बैठे हुए फ्रेंच सैनिकों का वार्तालाप सुनाई पड़ता था—उस किसान के घर के सहन में जा पहुँचा। भीतर पहुँचकर वह उतर पड़ा और एक बड़ी सी आग के पास पहुँचा जहाँ कई आदमी बैठे हुए ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। उस आग के एक ओर एक देगची में कुछ चीज़ पक रही थी और एक सिपाही चोंचदार टोपी और नीला ओवरकोट पहने उस देगची के पदार्थ को घोट रहा था। आग के प्रकाश से उसका चेहरा चमक रहा था।

डोलोखोव ने अपने घोड़ों की लगामें एक सिपाही को पकड़ा दीं और इसके बाद वह एक लम्बी गर्दनवाले अफ़सर के पास आग के सामने बैठ गया। अफ़सरों ने डोलोखोव पर से अपनी दृष्टि न हटाई और पूछा कि वह कौन सी रेजीमेण्ट का है। डोलोखोव ने कोई उत्तर न दिया मानो उसने बात ही न सुनी हो, और एक फ्रेंच पाइप निकालकर पीते पीते अफ़सरों से पूछा कि इस सड़क पर कज्ज़ाकों का तो कोई ख़तरा नहीं है।

उस आग के पीछेवाले अफ़सर ने कहा—'वे हरामज़ादे हर जगह मौजूद हैं।'

डोलोखोव ने कहा कि कज्ज़ाकों का ख़तरा केवल उसके और उसके साथी जैसे पीछे छूट जानेवाले सैनिकों को ही है—'पर

शायद बड़ी-बड़ी टुकड़ियों पर छापा मारने की उन्हें हिम्मत न होगी ?' उसने प्रश्नात्मक भाव से कहा। किसी ने उत्तर न दिया।

पीटिया आग के पास खड़ा खड़ा बातचीत सुनता हुआ प्रतिक्षण सोचने लगा—'बस, अब उठे, अब चले।'

पर डोलोखोव ने इस अधूरे छूटे हुए वार्तालाप को फिर आरम्भ किया और पूछा कि एक-एक बटालियन में कितने आदमी हैं, कितनी बटालियनें हैं, कितने क़ैदी हैं। इस टुकड़ी के साथवाले रूसी क़ैदियों के विषय में पूछते हुए उसने कहा—

'इन लाशों को खचेड़ना भी कितना बुरा काम है! इससे तो गोली से इस बादी बलग़म को साफ़ ही कर देना ठीक है।' और वह ठहाका मारकर हँस पड़ा। पीटिया को उसका हँसना इतना विचित्र दिखाई दिया कि पीटिया ने समझा कि बस, फ्रेंच लोग अब ज़रूर पहचान लेंगे। उसने अचेत भाव से आग के पीछे क़दम रक्खा।

डोलोखोव की हँसी का किसी ने उत्तर न दिया, और एक अफ़सर, जो लबादे में ढका हुआ पड़ा रहने के कारण दिखाई न दिया था, उठा और अपने एक साथी के कान में कुछ बोला। डोलोखोव उठा और उस सिपाही को बुलाने लगा जो घोड़े पकड़े हुए था।

पीटिया किसी प्रेरणा के वश-वर्ती होकर डोलोखोव के पास जा पहुँचा और सोचने लगा—'ये लोग घोड़े लायँगे या नहीं?'

घोड़े आ गये।

डोलोखोव ने कहा—'सज्जनो, सलाम।'

पीटिया भी 'सलाम' कहना चाहता था, पर उसके मुँह से आवाज़ न निकल सकी। अफ़सर लोग आपस में कानाफूँसी कर रहे थे। डोलोखोव को घोड़े पर चढ़ने में देर लगी, घोड़ा खड़ा ही न होता था; अंत में वह सवार होकर धीरे-धीरे सहन के बाहर हो गया। पीटिया उसके साथ-साथ था, उसे पीछे फिर-कर यह देखने की कि कहीं फ़्रेंच तो पीछा नहीं कर रहे हैं बड़ी इच्छा हो रही थी, पर साहस न होता था।

जब दोनों सड़क पर निकल आये तो डोलोखोव पहलेवाले मैदान के रास्ते से न गया बल्कि गाँव में से होकर निकला। एक स्थान पर खड़ा होकर वह कुछ सुनने लगा। उसने पीटिया से कहा—'तुम्हें सुनाई पड़ता है?' पीटिया को रूसी आवाज़ें सुनाई पड़ीं और अग्नि के चारों ओर रूसी क़ैदियों की आकृतियाँ दिखाई दीं। इसके बाद दोनों पुल पार करके संतरी के पास से निकल गये। संतरी कुछ न बोला; केवल पुल पर खिन्न भाव से इधर-उधर टहलता रहा।

डोलोखोव ने कहा—'अच्छा भाई सलाम। डेनीज़ोव से कह देना "सुबह होते ही गोली की पहली आवाज़ पर"।' और वह जाने ही वाला था कि पीटिया ने उसे पकड़ लिया।

उसने चिल्लाकर कहा—'सचमुच, आप बड़े बहादुर हैं! अहा, कैसी अच्छी बात हुई! कैसी बढ़िया बात हुई! मैं आपको बड़ा प्यार करता हूँ!'

डोलोखोव ने कहा—'अच्छा, अच्छा।'

पर पीटिया ने उसे न छोड़ा। डोलोखोव ने अँधेरे में देखा कि पीटिया उसकी ओर झुका हुआ है। वह उसका चुम्बन करना चाहता था। डोलोखोव ने उसका चुम्बन किया, हास्य-ध्वनि की, घोड़े का मुँह फेरा, और इसके बाद वह अंधकार में विलीन हो गया।

चौबीसवाँ परिच्छेद

सिपाहियों ने प्रातःकालीन प्रच्छन्न प्रकाश में अपने-अपने घोड़े खोज निकाले, ज़ीनें कसीं, और क़ायदे के साथ सिलसिलेवार खड़े हो गये। पीटिया अपने घोड़े की लगाम पकड़े उत्कण्ठा के साथ चढ़ने की आज्ञा पाने की बाट देख रहा था। उसने अपना मुँह ठण्डे पानी से धो लिया था, पर इस समय उसका चेहरा और विशेषकर नेत्र तमतमा रहे थे। उसके शरीर में कम्प दौड़ रहा था और उसका सारा शरीर धड़धड़ धड़क रहा था।

डेनीज़ोव ने पूछा—'सब मामला तैयार है न? घोड़े लाओ।'

घोड़े लाये गये। डेनीज़ोव एक कज़्ज़ाक पर नाराज़ हुआ क्योंकि उसने घोड़े की ज़ीन बहुत ढीली रहने दी थी, उसे सख़्त-सुस्त कहा, और घोड़े पर सवार हो गया। पीटिया ने रकाब में पैर रक्खा। उसके घोड़े ने अभ्यासवश इस प्रकार मुँह चलाया मानो वह उसका पैर काट खायगा, पर अपने भार से स्वयं ही अनभिज्ञ पीटिया घोड़े पर झट से जा कूदा और रवाना होते हुए हुसारों की ओर मुड़कर देखता हुआ डेनीज़ोव की ओर बढ़ा।

तमाम रास्ते डेनीज़ोव ने पीटिया से कुछ न कहा बल्कि वह चुपचाप घोड़ा बढ़ाये चला गया। जिस समय वे जङ्गल के अन्त पर पहुँचे तो मैदान में काफ़ी प्रकाश फैल चुका था। डेनीज़ोव ने कैप्टिन से फुसफुसाकर कुछ बात कही और कज़्ज़ाक पीटिया

और डेनीज़ोव के पास से निकल गये। जब सब कज्ज़ाक आगे बढ़ गये तो डेनीज़ोव ने घोड़े को एँड़ लगाई और घोड़ा पहाड़ी के नीचे उतरने लगा। घोड़े अपने सवारों को लिये आगे की टाँगों पर भचकते हुए नीचे उतरने लगे। पीटिया डेनीज़ोव के साथ-साथ जा रहा था। उसके शरीर की धड़कन लगातार बढ़ रही थी। प्रकाश अधिकाधिक फैल रहा था, पर कुहासे में अभी सारी चीज़ें ढकी हुई थीं। ग़ार में पहुँचकर डेनीज़ोव ने पीछे फिरकर देखा और एक कज्ज़ाक की ओर सिर हिलाया।

उसने कहा--'इशारा !'

कज्ज़ाक ने अपना हाथ उठाया और बन्दूक़ की आवाज़ गूँज उठी। क्षण भर के भीतर-भीतर सामने की ओर भागते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई देनी शुरू हो गई और चारों दिशाएँ चिल्लाने और बन्दूक़ों की आवाज़ों से गूँज उठीं।

और ज्योंही टापों की और चिल्लाने की आवाज़ आई कि पीटिया ने अपने घोड़े को कोड़ा मारा और लगाम ढीली करके घोड़े को सरपट छोड़ दिया। डेनीज़ोव के चिल्लाने की ओर उसने कोई ध्यान न दिया। पीटिया को ऐसा प्रतीत हुआ कि गोली की आवाज़ करते ही अकस्मात् पूरा दिन निकल आया है। वह पुल की ओर दौड़ा। उसके आगे-आगे बहुत-से कज्ज़ाक घोड़े दौड़ा रहे थे। पुल पर पहुँचकर पीटिया एक पीछे छूटे हुए कज्ज़ाक से टकरा गया, पर वह आगे बढ़ा चला गया। उसके सामने सिपाही—सम्भवतः फ्रेंच—सड़क के इधर-उधर दौड़

रहे थे। एक सिपाही कीचड़ में पीटिया के घोड़े के नीचे गिर पड़ा।

कज्ज़ाक एक झोंपड़ी के पास घिरे हुए कुछ कर रहे थे। इस जन-समुदाय के बीच में से दारुण चीत्कार की आवाज़ें आ रही थीं। पीटिया घोड़ा दौड़ाता हुआ इस भीड़ के पास पहुँचा। उसने पहली बात यह देखी कि एक फ्रेंच काँपते हुए जबड़े और पीले ज़र्द चेहरे के साथ अपनी ओर साधे गये एक नेजे को पकड़े हुए था।

पीटिया चिल्ला उठा—'हुर्रे!...जवानो...हमारे जवानो!' और अपने उत्तेजित घोड़े को एँड़ लगाकर वह गाँव की सड़क पर दौड़ गया। उसके बिल्कुल सामने ही गोलियों की आवाज़ें आ रही थीं। कज्ज़ाक, हुसार और फटे-पुराने कपड़े पहने हुए रूसी क़ैदी—जो सड़कों की दोनों ओर से निकल भागे थे—ज़ोर-ज़ोर से असम्बद्ध रूप में कुछ चिल्ला रहे थे। एक छैल-सा फ्रेंच नीले रङ्ग का लम्बा कोट पहने, तेवर बदले लाल चेहरे के साथ, एक बन्दूक़ के द्वारा हुसारों से अपनी रक्षा कर रहा था। पीटिया के उसके पास पहुँचते-पहुँचते वह गिर पड़ा। पीटिया के दिमाग़ में दौड़ गया—'फिर देर से पहुँचा!' और वह घोड़ा दौड़ाता हुआ उस स्थान की ओर बढ़ा जहाँ से बड़ी तेज़ फ़ायरिङ्ग की आवाज़ सुनाई दे रही थी। बन्दूक़ों की आवाज़ें सहन में से आ रही थीं जहाँ कुछ देर पहले पीटिया डोलोखोव के साथ गया था। फ्रेंच बाड़े के पीछे बाग़ की घनी झाड़ियों में मोर्चेबन्दी

कर रहे थे, और कज्ज़ाक दरवाज़े पर एकत्र थे। जब पीटिया दरवाजे के पास पहुँचा तो उसे धुएँ में से डोलोखोव दिखाई पड़ा। वह अपने सिपाहियों से चिल्लाकर कह रहा था—

'उधर से पहुँचो! पैदलों को आ जाने दो!' इतने ही में पीटिया उसके पास जा पहुँचा।

पीटिया ने चिल्लाकर कहा—'अजी रुकना कैसा! हुर्रे!' और फिर बिना क्षण भर रुके वह उस ओर को दौड़ गया जहाँ से गोलियों की आवाज़ आ रही थी और जहाँ धुँआ सबसे घना था। गोलियों की एक बाढ़ आई जिसकी कुछ गोलियाँ सन-सनाती हुई निकल गईं और बाक़ी किसी चीज़ से टकराईं। कज्ज़ाक और डोलोखोव पीटिया के पीछे-पीछे भीतर दौड़ गये। उस घने चञ्चल धुएँ में फ्रेंचों ने अपने हथियार फेंक दिये और उनमें से कुछ झाड़ियों में से निकलकर कज्ज़ाकों की ओर बढ़े और कुछ पहाड़ी के नीचे तालाब की ओर दौड़ गये। पीटिया ने सहन की ओर घोड़ा दौड़ाया, पर लगाम पकड़ने के बजाय उसने अपने दोनों हाथ इधर-उधर शीघ्रतापूर्वक और विचित्र ढङ्ग से हिलाये और वह ज़ीन के एक ओर को प्रतिक्षण खिसकने लगा। उसका घोड़ा प्रातःकालीन प्रकाश में मन्द मन्द जलती हुई अग्नि के पास पहुँचकर खड़ा हो गया। पीटिया उस गीली ज़मीन पर धमाके के साथ गिर पड़ा। कज्ज़ाकों ने उसकी बाँहों और टाँगों को शीघ्रता के साथ लचकते देखा। उसका सिर बिल्कुल निर्जीव था। उसके शरीर में एक गोली घुस गई थी।

प्रधान फ्रेंच अफ़सर अपनी तलवार में सफ़ेद रूमाल बाँधकर डोलोखोव से बातचीत करने आया, और उससे बात करने के बाद डोलोखोव घोड़े पर से उतरा और निर्जीव पड़े हुए पीटिया के पास पहुँचा।

उसने भृकुटी चढ़ाकर कहा—'ख़तम हो गया!' और इतना कहकर वह दरवाज़े की ओर बढ़ा जहाँ से डेनीज़ोव उसकी ओर आ रहा था।

डेनीज़ोव ने पीटिया को निश्चेष्ट भाव से पड़े देख चिल्लाकर कहा—'क्या मारा गया?'

'ख़तम हो गया!' डोलोखोव ने दुबारा कहा, मानो इन शब्दों के उच्चारण में उसे कुछ ख़ास प्रसन्नता होती हो। इसके बाद वह तुरन्त ही क़ैदियों की ओर मुड़ा जिन्हें चारों ओर से कज्ज़ाकों ने घेर लिया था। उसने डेनीज़ोव से चिल्लाकर कहा—'हम इन्हें न ले जायँगे!'

डेनीज़ोव ने कोई उत्तर न दिया। वह पीटिया के पास पहुँचा, घोड़े से उतरा, और फिर उसने कम्पित हाथों से उसके रक्त-सिक्त और कीचड़ में लिपटे हुए सिर को अपनी ओर फेरा। उसका चेहरा सफ़ेद हो चला था।

कज्ज़ाकों ने आश्चर्य के साथ देखा कि वह पीटिया के पास से कुत्ते के भोंकने का शब्द निकालता हुआ बाड़े के पास जाकर और उसे पकड़कर खड़ा हो गया।

डेनीज़ोव और डोलोखोव ने जिन रूसी क़ैदियों का छुटकारा किया था उनमें एक पीरी बैज़ूखोव भी था।

———

पचीसवाँ परिच्छेद

जिन रूसी क़ैदियों के साथ पीरी क़ैद था उनके विषय में सारी यात्रा भर में कोई नया आदेश न दिया गया। २२ अक्टूबर को इस दल की निगरानी के लिए वह सेना न थी जिसके साथ वह मास्को से रवाना हुआ था। लाव-लश्कर भी वह न था। आधी गाड़ियाँ, जिनमें बिस्कुट भरे हुए थे, पहले पड़ाव में उनके साथ हो ली थीं और उन्हें कज़्ज़ाकों ने लूट लिया था, बाक़ी आधी गाड़ियाँ आगे-आगे जा रही थीं। क़ैदियों के आगे आगे जो घुड़सवार सैनिक पैदल जा रहे थे, वे अब तक सब ग़ायब हो गये थे।

पीरी ने अपने पहले पड़ाव पर जिस अव्यवस्था के दर्शन किये थे वह अब पराकाष्ठा को पहुँच गई थी। जिस सड़क पर से सेना यात्रा कर रही थी उसके दोनों किनारे मुर्दा घोड़ों से ढके हुए थे; जीर्ण-शीर्ण सैनिक अनेक सेनाओं में से पीछे रह जाते, फिर दूसरी सेनाओं के साथ हो लेते; और फिर पीछे रह जाते। शुरू में तो साज़-सामान से १२० गाड़ियाँ भरी हुई थीं, अब केवल साठ रह गई थीं; बाक़ी या तो लूट ली गई थीं या ख़ुद छोड़ दी गई थीं। पीरी को फ्रेंचों की बातचीत से पता चला कि क़ैदियों की अपेक्षा सामान की निगरानी के लिए अधिक सैनिक नियुक्त किये गये हैं। उनके एक साथी फ्रेंच सैनिक को मार्शल ने स्वयं गोली से केवल

इसलिए मरवा दिया था कि मार्शल का एक चाँदी का चम्मच उसके पास से निकल आया था।

.कैदियों का दल सबसे अधिक लोप होता जा रहा था। मास्को से ३३० .कैदी चले थे, अब उनमें से सौ से भी कम रह गये थे। रक्षक सेना के लिए घुड़सवार सेना की ज़ीनों या जूनोट के सामान की अपेक्षा .कैदियों की निगरानी अधिक भार-सम लगती थी। उनकी समझ में ज़ीनें और जूनोट के चम्मच तो किसी काम में आ भी सकते थे, पर जाड़े-पाले में मरते हुए बुभुक्षित सैनिकों को अपने ही जैसे जाड़े-पाले में मरते हुए बुभुक्षित .कैदियों की—जो आये दिन ठिठरकर सड़क पर रह जाते थे (और इस हालत में गोली से मार दिये जाते)—रक्षा करनी चाहिए, यह बात न उनकी समझ में आती थी और न ठीक जँचती थी।

डोरोगोबज़ में .कैदियों के सैनिक अपने .कैदियों को एक अस्तबल में बन्द करके अपने खाद्य पदार्थ स्वयं ही लूटने के लिए निकल गये। इस अवसर पर कई सैनिक बन्दी मौक़ा देखकर दीवार के नीचे सेंध लगाकर निकल भागे। पर बाद को उन्हें .फ्रेंच सैनिकों ने पकड़कर गोली से मार दिया।

यात्रा के आरम्भ में व्यवस्था की गई थी कि अफ़सर-बन्दियों को अलग रक्खा जाय, पर वह व्यवस्था बहुत पहले ही नष्ट कर दी गई थी। जो-जो चल सकते थे उन सबको साथ ही साथ यात्रा करनी पड़ती थी। तीसरे पड़ाव के बाद पीरी फिर काराटेव

और उसके बैंगनी कुत्ते के साथ हो लिया। मास्को से बिदा होने के तीसरे दिन काराटेव को फिर वैसा ही ज्वर आने लगा जिससे पीड़ित होकर वह मास्को के शफ़ाख़ाने में पड़ा था। वह ज्यों-ज्यों अधिक दुर्बल होने लगा, पीरी उससे बचने लगा। पीरी स्वयं नहीं जानता था कि क्यों, पर जब से काराटेव दुर्बल होने लगा पीरी उसके पास बड़े कष्ट के साथ पहुँच पाता। और जब कभी वह जाता, और काराटेव को किसी पड़ाव पर दबी हुई कराहट के साथ कराहते सुनता और उससे निकलती हुई गन्ध सूँघता—जो पहले से तीव्रतर हो चली थी—तो उससे उसके पास खड़ा न रहा जाता। वह वहाँ से चल देता और उसकी बात तक न सोचता।

जिस समय पीरी मास्को में झोंपड़े में क़ैद था, उसने शिक्षा ग्रहण की थी—और अपनी बुद्धि से नहीं, बल्कि अपने सारे व्यक्तित्व से, स्वयं अपने जीवन से—कि मनुष्य की सृजना सुख के लिए हुई है, वह सुख स्वयं उसी में निहित है, और उसका रूप है मानवी आशा-आकांक्षाओं की स्वाभाविक तुष्टि, और ये सारे दुःख किन्हीं कष्टों का परिणाम नहीं है, बल्कि कृत्रिमता से उद्भूत होते हैं। पर अब इन तीन सप्ताहों की यात्रा में उसने एक दूसरा ही—और बिल्कुल नवीन और सांत्वनादायक—सत्य मालूम किया था—उसे मालूम हुआ कि संसार में कोई वस्तु भयंकर नहीं है। उसे मालूम हुआ था कि जिस प्रकार मनुष्य के सुखी और पूर्ण स्वच्छंद रहने की कोई निश्चित परिस्थिति नहीं है, उसी प्रकार ऐसी

भी कोई परिस्थिति नहीं है जिसमें मनुष्य अवश्य ही दुखी रहे और स्वच्छंदता की अनुभूति न कर सके। उसे मालूम हुआ कि कष्ट और स्वच्छंदता की सीमाएँ होती हैं, और वे सीमाएँ एक दूसरी के अत्यन्त निकट हैं; किसी आदमी को गुलाब के फूलों की सेज पर किसी पंखुड़ी के मुड़ जाने पर उतना ही कष्ट होता है जितना कष्ट उसे सीली हुई ठण्डी ज़मीन पर एक करवट के सहारे सोने में होता है—जिससे उसकी एक करवट ठण्डी हो जाती है और दूसरी गर्म; और जब वह नाचने के तङ्ग जूते पहना करता था तब उसे उतना ही कष्ट होता था जितना अब उसे क्षत-विक्षत नंगे पैरों यात्रा करने में होता है (उसका जूता बहुत पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गया था)। उसे पता चला कि जब उसने अपनी पत्नी के साथ—अपनी धारणा के अनुसार—स्वेच्छानुसार विवाह किया था तब भी वह उतना ही स्वतन्त्र था जितना अब रात को अस्तबल में ताले-कुञ्जियों से बन्द किये जाने पर है। जिन-जिन बातों को वह कष्टों के नाम से अभिहित करता था—पर जिनकी अनुभूति वह शायद ही करता हो—उनमें उसके क्षत-विक्षत नंगे पैरों की दशा सबसे अधिक दारुण थी। घोड़े का मांस भूख और बल बढ़ाता था; बारूद—जिसे वे लोग नमक की जगह इस्तेमाल करते थे—बड़ी स्वादिष्ट थी; अधिक जाड़ा भी न था, दिन में यात्रा करते समय काफ़ी गर्मी हो जाती थी, रात को आग जलती ही थी; उसके शरीर पर चढ़कर कीड़े-मकोड़े उसे गर्म करते थे। आरम्भ में केवल पैरों की दशा ऐसी थी जिसे वह सहन न कर सका।

दूसरे दिन की मार्च के बाद पीरी ने एक पड़ाव पर आग के सामने अपने पैरों की परीक्षा करके निर्णय किया कि अब वे काम न दे सकेंगे; पर जब सब उठे तो वह भी लँगड़ाता हुआ चल पड़ा, और जब थोड़ी दूर चलकर उसके शरीर में गर्मी आ गई तो वह बिना किसी कष्ट के चलने लगा, यद्यपि रात को उसके पैरों की दशा और भी भयङ्कर हो गई। पर उसने उनकी तरफ़ नहीं देखा और दूसरी बातों में अपना ध्यान लगा लिया।

अब कहीं जाकर पीरी मनुष्य की महाप्राणता को जान सका, और अब कहीं जाकर उसे पता चला कि उसके भीतर एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर ध्यान ले जाने की जो संरक्षिका शक्ति निहित है वह एक स्टीम ऐंजिन के सेफ्टी वाल्व के समान है जिसके द्वारा वाष्प की उष्णता निश्चित मात्रा से अधिक बढ़ जाने पर निकाल दी जाती है।

जो क़ैदी पीछे रह जाते थे उनका गोली से मारा जाना उसने न देखा न सुना, यद्यपि इस ढङ्ग से सौ से अधिक क़ैदी समाप्त किये जा चुके थे। उसे काराटेव की ओर भी कुछ ध्यान न था, यद्यपि वह दिन पर दिन दुर्बल होता जाता था और उसे भी अनिवार्य्यतया इसी प्रकार समाप्त होना था। स्वयं अपने विषय में पीरी और भी कम सोचता। उसकी दशा जितनी कष्टकर होती जाती, उसका भावी जीवन जितना भयावह बनता जाता, उसके मस्तिष्क में उठनेवाली हर्षपूर्ण और सान्त्वनादायक विचारधारा, स्मृतियाँ और कल्पनाएँ भी उस दशा और

उस भावी जीवन से उतने ही असम्पृक्त रूप से प्रबलता पकड़ती जातीं।

गत दिवस के पड़ाव पर पीरी एक बुझती हुई आग के पास से उठकर जाड़ा दूर करने के लिए कुछ ही दूर पर ज़रा अच्छी तरह जलती हुई आग के पास जा बैठा था। वहाँ प्लेटोन काराटेव सिर से पैर तक लबादा ढके बैठा हुआ अपने स्वाभाविक प्रभावोत्पादक और सुन्दर, पर अब क्षीण, स्वर में सिपाहियों को एक कहानी सुना रहा था जिसे पीरी ने उसके मुँह से पहले ही से सुन रक्खा था। आधी रात बीत चुकी थी। इस समय प्लेटोन का बुख़ार उतर जाता था और वह ख़ास तौर से सजीव हो उठता था। जब पीरी आग के पास पहुँचा और उसने प्लेटोन की रोग-क्षीण आवाज़ सुनी और आग के प्रकाश से जगमगाता हुआ उसका कातर चेहरा देखा तो उसके हृदय में व्यथाकारी चुभन उत्पन्न हो उठी। उसकी प्लेटोन संबंधी करुणा ने उसे भयभीत कर दिया और उसने वहाँ से लौट जाने की इच्छा की, पर और कहीं आग दिखाई न देती थी, अतः वह प्लेटोन की ओर से पीठ फेरकर वहीं बैठ गया।

उसने पूछा—'कहो, कैसे हो?'

प्लेटोन ने उत्तर दिया—'कैसा हूँ? हम रोग-धोग से जी चुरायँगे तो भगवान् हमें मौत न भेजेगा।' और उसने तत्काल ही कहानी फिर शुरू कर दी।

प्रातःकाल हुआ, यात्रा आरम्भ हुई।

अकस्मात् आवाज़ आई—'अपनी-अपनी जगह पर !'

सारे क़ैदी एक जगह इकट्ठे हो गये। कुछ देर बाद पीरी को काराटेव दिखाई पड़ा। वह एक छोटे से ओवरकोट में एक शीशम के पेड़ के तने के सहारे बैठा हुआ था। उसके चेहरे पर कल वाले हर्ष-पूर्ण भाववेश की मुद्रा के साथ ही शांत गम्भीरता की मुद्रा भी विराज रही थी। काराटेव ने पीरी की ओर अपने सहृदयता-पूर्ण गोल नेत्रों से देखा। इन नेत्रों में इस समय अश्रु भरे हुए थे। पीरी आगे बढ़ा। अकस्मात् उसके कानों में गोली दगने और चीत्कार की आवाज़ें आईं।

दूसरे पड़ाव पर रूसियों ने छापा मारा।

पीरी सूर्योदय होने के पहले ज़ोर की और शीघ्रतापूर्वक होती हुई फ़ायरिङ्ग से जाग पड़ा। फ़्रेंच सैनिक उसके पास से होकर भाग रहे थे।

उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा—'कज़्ज़ाक !' और क्षण भर बाद ही बहुत से रूसियों ने आकर पीरी को घेर लिया। पीरी बहुत देर तक न समझ सका कि यह सब क्या हो रहा है। उसके चारों ओर सारे बन्दी खड़े हुए हर्ष के मारे सुबकियाँ ले रहे थे।

पुराने बन्दी सैनिक कज़्ज़ाकों और हुसारों का आलिङ्गन करते हुए कह रहे थे—'भाइयो ! मेरे प्यारे भाइयो !'

हुसार और कज़्ज़ाक क़ैदियों को घेरे खड़े थे। उनमें से एक उन्हें कपड़े दे रहा था, दूसरा रोटी, तीसरा बूट। पीरी उन

सबके बीच में बैठा हुआ सुबकियाँ ले रहा था, और उसके मुँह से शब्द तक न निकलता था। उसके पास जो सिपाही सबसे पहले पहुँचा उसी का उसने आलिंगन किया, चुम्बन किया, और वह रोने लगा।

डोलोखोव उस ध्वस्त घर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ निःशस्त्र फ्रेंच सैनिकों के समुदाय को बाहर निकाल रहा था। फ्रेंच इस सारे व्यापार से उत्तेजित हुए ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए बाहर निकल रहे थे, पर जब उन्होंने डोलोखोव को अपने चाबुक से धीरे-धीरे जूता खरोंचते हुए अपनी ओर शुष्क निर्मम नेत्रों से ताकते पाया—जिनसे उनका अमंगल सूचित होता था—तो सब चुप हो गये। दरवाज़े के दूसरी ओर डोलोखोव का कज़्ज़ाक फ्रेंच सैनिकों को गिनता जा रहा था और हर सैकड़े पर दरवाज़े पर चाक का एक चिह्न बना देता था।

डोलोखोव ने कज़्ज़ाक से पूछा—'कितने हैं?'

कज़्ज़ाक ने उत्तर दिया—'दूसरा सैकड़ा।'

डोलोखोव कहता चला—'चले चलो, चले चलो!' और जब उसके नेत्र क़ैदियों के नेत्रों से मिलते तो वे निष्ठुर प्रकाश से चमक उठते।

डेनीज़ोव नंगे सिर, शोकमग्न चेहरे के साथ कज़्ज़ाकों के पीछे-पीछे जा रहा था जो बाग़ में खोदे हुए एक गड्ढे की ओर रोस्टोव पीटिया का शव लिये जा रहे थे।

——

छब्बीसवाँ परिच्छेद

प्रिंस एराड्रयू की मृत्यु के बाद से नटाशा और सबके प्रति जिस अन्यता की भावना की अनुभूति कर रही थी उसके अतिरिक्त वह अपने पारिवारिक जनों के प्रति एक विशेष विपरीत भावना की अनुभूति कर रही थी। वे सब—उसके पिता, माता, और सोनिया —उसके इतने निकट थे, इतने परिचित और इतने जाने-पूछे, कि उनके सारे शब्द और भाव उसे उस संसार के लिए अपमानजनक लगते जिसमें वह रह रही थी। वह उनकी ओर से न केवल उदासीन ही थी, बल्कि सचमुच उनके साथ शत्रुता का भाव दिखाती थी।

एक दिन वह नृत्य-शाला में घुसी तो उसे अपनी माता के कमरे में से अपने पिता शीघ्रता के साथ आते दिखाई दिये। उनका मुँह फूला हुआ था और आँसुओं से तर था। यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह उस कमरे से इसलिए भाग आये थे जिससे वह अपना कराठ अवरुद्ध करती हुई सुबकियाँ निकाल सकें। जब उन्होंने नटाशा को देखा तो उन्होंने घोर हताशा-व्यंजक ढंग से अपने हाथ हिलाये और फफक-फफककर रो उठे। उनका सुकुमार गोल चेहरा विकृत हो गया।

'पी...पीटिया...जा, जा, वह...बुला रही हैं...।' और वह बच्चों की तरह रोते हुए और अपनी दुर्बल टाँगों से लड़खड़ाते

हुए कुर्सी की ओर बढ़े और हाथों से मुँह ढके उस पर लगभग गिर पड़े।

अकस्मात् नटाशा के सारे शरीर में एक विद्युत्प्रवाह दौड़ गया। एक भयङ्कर असह्य-वेदना से उसका हृदय व्यथित हो उठा; उसे भीषण पीड़ा हुई और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके भीतर कोई चीज़ नुची जा रही है और उसके प्राण निकल रहे हैं। पर इस पीड़ा के कारण उसे तत्काल ही प्रतीत हुआ कि वह जीवन में भाग लेने के उस भयंकर निषेध से मुक्ति पा गई है जिसने अब तक उसे शोकमग्न कर रक्खा था। अपने पिता को देखते ही, और दरवाज़े में से अपनी माँ के दारुण चीत्कार को सुनते ही, वह अपने आपको और अपने दुःख को भूल गई।

वह अपने पिता की ओर झपटी, पर उन्होंने दुर्बल भाव से अपना हाथ हिलाया और उसकी माँ के द्वार की ओर संकेत किया। प्रिंसेज़ मेरी पीली, और कम्पित ठोड़ी के साथ, उस कमरे में से आई और नटाशा का हाथ पकड़कर कुछ कहने लगी। नटाशा ने न उसे देखा, न उसकी कोई बात सुनी। वह शीघ्र गति के साथ उस दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी, क्षण भर रुकी, मानो अन्तर्द्वन्द्व में तल्लीन हो, और फिर सीधी अपनी माँ के पास दौड़ गई।

काउण्टेस एक आराम-कुर्सी पर पड़ी हुई विचित्र और भद्दे ढङ्ग से अपना सिर आगे बढ़ा-बढ़ाकर दीवार से टकरा रही थीं। सोनिया और दासियाँ उनकी बाहें पकड़े हुए थीं।

काउण्टेस चीख़ उठीं—'नटाशा ! नटाशा !...यह बात झूठी है...यह बात सरासर झूठी है...वह झूठ बोलते हैं...नटाशा !' वह अपने पास खड़ी हुई स्त्रियों को धक्का देकर चीत्कार कर उठीं—'तुम सब यहाँ से अपनी सूरतें ले जाओ; यह बात झूठी है ! मारा गया !...हा, हा, हा !...झूठी बात है !'

नटाशा ने अपना एक घुटना आराम-कुर्सी पर रक्खा, अपनी माँ के ऊपर झुकी, उनका आलिङ्गन किया, और अपूर्व बल के साथ उन्हें उठाया, उनका मुँह अपनी ओर किया, और फिर वह उनसे लिपट गई ।

'ममी !...मेरी प्यारी...! मैं यह रही, मेरी प्यारी ममी !' वह लगातार धीमे स्वर में कहती रही ।

उसने अपनी माँ को छोड़ा नहीं, वह सुकुमार भाव से उनसे चिपटी रही । उसने तकिया और पानी माँगा, और उनकी पोशाक खोलकर उतार फेंकी ।

'मेरी प्यारी ...ममी, मेरे कलेजे की फाँक !...।' और इस प्रकार निरन्तर फुसफुसाती हुई वह उनका सिर, उनके हाथ, उनका मुँह चूमती रही और उसे बोध हुआ कि किस प्रकार अश्रुओं का प्रवाह उसकी नाक और गालों को भिगो रहा है ।

काउण्टेस ने अपनी पुत्री का सिर ज़ोर से दबाया, अपने नेत्र बन्द किये, और वह क्षण भर के लिए शान्त हो गईं । अकस्मात् वह अप्रत्याशित शीघ्रता के साथ उठ बैठीं, और अपने चारों ओर शून्य भाव से देखने लगीं, और अन्त में नटाशा को देखकर उन्होंने

उसका सिर पूरी शक्ति के साथ भींचना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने अपनी पुत्री का मुँह अपनी ओर किया, जो पीड़ा से विकृत हो रहा था, और वह उसकी ओर निर्निमेष नेत्रों से देखती रहीं।

उन्होंने मृदुल विश्वास-पूर्ण स्वर में धीरे से कहा—'नटाशा, तू मुझे प्यार करती है न? तू मुझे बहकायगी तो नहीं? सच्ची सच्ची बात बतायेगी न?'

नटाशा ने उनकी ओर अश्रुपूरित नेत्रों से देखा। उस दृष्टि में और कुछ न था, केवल प्रेम था और क्षमा की याचना थी।

उसने अपने प्रेम की सारी शक्ति के साथ अपनी माँ को कुचलते हुए शोक-भार को किसी प्रकार अपने ऊपर ले लेने की चेष्टा करते हुए बार-बार कहा—

'मेरी प्यारी ममी!'

और उसकी माँ—इस बात में विश्वास न करके कि जब उनका लाड़ला पुत्र उठती जवानी में मारा गया है तो वह उसके बाद जीवित रह सकेंगी—वस्तु-स्थिति से व्यर्थ का संघर्ष करती हुई, वास्तविकता से मूर्च्छना के संसार में जा पहुँचीं।

नटाशा को कभी याद न आ सका कि वह दिन और वह रात, और उसके बादवाला दिन, और उसके बादवाली रात कैसे गुज़री। उसकी पलकें बन्द न हुईं और उसने अपनी माँ का साथ न छोड़ा। उसके हठ-पूर्ण और शांत-संयत प्रेम ने—किसी समझौते या सांत्वना की तरह नहीं, बल्कि जीवन में पुनःप्रवेश

करने का आह्वान करने के लिए—काउएटेस को चारों ओर से निरन्तर रूप से ढाँप रक्खा था।

तीसरे दिन रात को काउएटेस कुछ क्षण के लिए शांत हो गईं और नटाशा ने कुर्सी के हत्थे पर सिर रख अपने नेत्र बन्द कर लिये। पलंग चटखा, और नटाशा के नेत्र खुल गये। काउएटेस पलंग पर बैठी हुई धीमे स्वर में कुछ कह रही थीं।

'कैसे सुख की बात है कि तू आ गया! तू थक गया है, चाय पियेगा?' नटाशा उनके पास जा पहुँची। 'तू पहले से सुन्दर दिखाई देता है और तेरा चेहरा मर्दों जैसा दिखाई देता है।' काउएटेस नटाशा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहती रहीं।

'मामा! तुम क्या कह रही हो?...'

'नटाशा, वह नहीं रहा!'

और अपनी पुत्री को छाती से लगाकर काउएटेस पहली बार रोईं।

प्रिंसेज़ मेरी ने अपनी यात्रा स्थगित कर दी। सोनिया और काउएट ने नटाशा का स्थान लेना चाहा, पर न ले सके। उन्होंने देखा कि नटाशा ही एक ऐसी है जो अपनी माँ को निरर्थक शोक-संताप से रोक सकती है। तीन सप्ताह तक नटाशा बराबर अपनी माँ के पास बनी रही, वह उस कमरे में पड़ी हुई आराम-कुर्सी पर सो रहती, उन्हें खिलाती पिलाती, और उनसे लगातार बातें करती रहती, क्योंकि उसका मृदुल स्नेह-स्निग्ध स्वर ही एक ऐसा था जिससे उसकी माँ को सांत्वना मिलती थी।

माँ के हृदय का घाव फिर न भर सका। पीटिया की मृत्यु ने उनका आधा जीवन नोंचकर फेंक दिया था। जिस समय पीटिया की मृत्यु का समाचार आया था तो काउण्टेस पचास बरस की हँसमुख सजीव स्त्री थीं; एक महीने बाद वह अपने शयनागार से एक ऐसी अधमरी वृद्धा स्त्री बनकर निकलीं जिनका जीवन से अब किसी प्रकार का सम्पर्क न था। पर जिस घाव ने काउण्टेस को अधमरा कर दिया था, उसी ताज़े घाव ने नटाशा में नव जीवन संचरित कर दिया।

मानसिक शरीर के विक्षत होने से जो मानसिक घाव उत्पन्न होता है उसकी समता भौतिक घाव के साथ की जा सकती है, और—चाहे यह बात विचित्र दिखाई दे—कोई गहरा घाव चाहे आराम होता दिखाई दे, और चाहे उसके किनारे भी मिलने लगें, पर—घाव मानसिक हो या भौतिक—वह उस समय तक पूर्ण रूप से अच्छा नहीं होता जब तक भीतर ही से उठते हुए प्राण-रस का उस पर प्रभाव न पड़े।

अत: नटाशा का घाव अच्छा होने लगा। उसने सोचा था कि जीवन का अन्त हो गया। पर अकस्मात् उसके माँ सम्बन्धी प्रेम ने उसे बता दिया कि उसके जीवन का सार—प्रेम—उसके भीतर अब तक जीवित है। प्रेम जागृत हो उठा, और फलत: जीवन भी।

प्रिंस एण्ड्र्यू के अंतिम दिनों ने प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा को एक रज्जु में बाँध दिया था। इस नवीन शोक से वे दोनों

और भी निकटतर हो गईं। प्रिंसेज़ मेरी ने अपनी यात्रा स्थगित कर दी, और तीन सप्ताह तक वह बच्चों की तरह नटाशा को शुश्रूषा करती रही। नटाशा ने अपनी माँ के शयनागार में जो दिन व्यतीत किये थे, उनके अन्तिम सप्ताहों में उसके शारीरिक बल पर बुरा प्रभाव पड़ा था।

एक दिन दोपहर के समय प्रिंसेज़ मेरी ने नटाशा को ज्वर से काँपते देखा, और वह उसे अपने कमरे में ले गई और वहाँ उसने उसे अपने पलँग पर लिटा दिया। नटाशा लेट गई, और जब प्रिंसेज़ मेरी खिड़की के पर्दे गिराकर जाने लगी तो नटाशा ने उसे अपने पास बुलाया।

'मेरी, सोने को मेरा जी नहीं करता; थोड़ी देर मेरे पास बैठ जाओ।'

'तुम थकी हुई हो—सो जाओ।'

'नहीं, नहीं। और तुम मुझे यहाँ क्यों लिवा लाईं? वह मुझे पूछ रही होंगी।'

'उनका जी पहले से बहुत अच्छा है। आज उन्होंने कैसी अच्छी तरह बातें की थीं?' प्रिंसेज़ मेरी ने कहा।

नटाशा पलंग पर लेट गई और कमरे के धुँधले प्रकाश में प्रिंसेज़ मेरी का चेहरा देखने लगी।

नटाशा ने सोचा—'यह उन्हीं जैसी हैं न? हैं भी, और नहीं भी हैं। पर यह बिल्कुल मौलिक, विचित्र, नवीन, और अ-परिचित हैं। और यह मुझे प्यार करती हैं। इनके हृदय में क्या

होगा ? सब अच्छी ही बातें होंगी। पर कैसे ? मेरे बारे में यह अपने जी में क्या सोचती होंगी ? हाँ, यह बड़ी अच्छी हैं।'

उसने संकोच के साथ प्रिंसेज़ मेरी का हाथ अपनी ओर खींचते हुए कहा—'मेरी, मुझे बुरी न समझना। नहीं ? मेरी, प्यारी, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ ! आओ, हम पक्की, पक्की सहेली हो जायँ।'

और नटाशा उसे आलिंगन करके उसके हाथ और मुँह चूमने लगी, और प्रिंसेज़ मेरी नटाशा के भावों की इन अभिव्यक्तियों को देख-देखकर लज्जित और हर्षित हो उठी।

उस दिन के बाद से प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा के बीच में एक ऐसी सुकुमार और दृढ़ मित्रता स्थापित हो गई जो केवल दो स्त्रियों ही के बीच में होनी सम्भव है। अब वे निरन्तर एक दूसरी का चुम्बन करतीं और एक दूसरी के लिए प्रिय संबोधनों का प्रयोग करतीं, और दोनों का अधिकांश समय साथ ही कटता। जब एक बाहर चली जाती तो दूसरी आतुर हो उठती और स्वयं भी उसके पीछे-पीछे चल देती। एकान्त में अकेली रहने पर दोनों को इतनी मृदुल सांत्वना न मिलती जितनी साथ-साथ रहने पर मिलती। दोनों में एक ऐसा भाव उत्पन्न हो उठा था जो मित्रता से कहीं प्रबल था; वह भाव यह था कि एक दूसरी के सामने रहने पर ही जीवन सम्भव है।

वे एण्ड्रयू के विषय में कभी ज़बान न खोलतीं, जिससे (उनकी धारणा के अनुसार) उनके भावों की उच्चता को आघात न पहुँचे;

पर उसके विषय में दोनों के इस मौनावलम्बन का यह प्रभाव पड़ा कि वे—अचेत भाव से, और बिना इस पर विश्वास किये—उसे भूलने लगीं।

नटाशा शारीरिक दृष्टि से इतनी पीली, दुर्बल और कृश हो गई थी कि सब उसके स्वास्थ्य की चिन्ता करते, और इससे उसे प्रसन्नता होती। पर कभी-कभी उस पर भय का आतङ्क सवार हो जाता; मृत्यु के भय का नहीं, बल्कि रोग, दुर्बलता और सौन्दर्य-विहीन होने के भय का, और कभी उसकी दृष्टि अपनी नंगी बाँहों की ओर स्वतः ही आकृष्ट हो जाती, और वह उनकी दुर्बलता पर स्वयं ही चकित रह जाती; या सुबह के समय वह शीशे में अपने सुँते हुए और—अपनी धारणा के अनुसार—करुणोत्पादक चेहरे की ओर देखकर विस्मित हो जाती। उसे ऐसा प्रतीत होता कि ऐसा होना अनिवार्य्य था, और फिर भी उसके हृदय में क्षोभ और भीति का संचार हो जाता।

एक दिन वह शीघ्रता के साथ ज़ीने पर चढ़ी और ऊपर पहुँचने पर उसका दम फूल उठा। उसने तत्काल ही अचेत रूप से नीचे जाने का एक और कारण खोज निकाला, और फिर, अपनी सामर्थ्य की परीक्षा करने के लिए, वह फिर ऊपर दौड़ी और उसका प्रभाव देखने लगी।

एक दूसरे अवसर पर जब उसने डुन्याशा को आवाज़ दी तो उसका स्वर कम्पित हो उठा, और उसने उसे फिर आवाज़ दी—यद्यपि उसे डुन्याशा के आने की आहट सुनाई दे रही थी—और

अब की बार उसने उसे उस गम्भीर गूँजती हुई आवाज़ में पुकारा जिसमें वह गाया करती थी, और आवाज़ देते समय वह स्वयं ही उसे ध्यान के साथ सुनने लगी।

वह इस बात को स्वयं न जानती थी, और शायद इस पर विश्वास भी न करती, पर उसकी आत्मा को जिस घने लेसदार आवरण ने ढक रक्खा था और जो इतना अभेद्य दिखाई देता था, उसमें घास की सुन्दर सुकोमल कलियाँ उगनी शुरू हो गई थीं, और इस बात की पूरी सम्भावना थी कि वे जड़ पकड़कर अपनी सजीव हरियाली से उसके घुला-घुलाकर मारनेवाले शोक को ढक लेंगी जिससे शीघ्र ही न वह दिखाई पड़ेगा, न उसकी ओर किसी का ध्यान ही आकृष्ट होगा। घाव भीतर से भरना आरम्भ हो गया था।

जनवरी के अन्त में प्रिंसेज़ मेरी मास्को को रवाना हो गई, और काउण्ट ने ज़िद करके नटाशा को भी डाक्टरों का मशवरा लेने के लिए उसके साथ भेज दिया।

——

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

जैसा कि साधारणतया होता है, पीरी को अपने बन्दी जीवन में सहे गये शारीरिक कष्टों और दुःखों का पूरा प्रभाव उस समय मालूम हुआ जब उन कष्टों और दुःखों का अन्त हो गया। अपने उद्धार के बाद वह ओरील पहुँचा और वहाँ तीसरे दिन, कीव को जाने की तैयारी करते-करते, बीमार पड़ गया और तीन महीने तक पड़ा रहा। अपने निस्तार के बाद से बीमारी तक जो कुछ हुआ उसकी कोई बात उसे शायद ही याद रही हो। उसे केवल भद्दे मौसम—कभी वर्षा, कभी बर्फ़—आंतरिक भौतिक कष्ट, और पैरों और कोख के दर्द की बात याद रही। उसे लोगों के कष्टों और दुःखों के विषय में भी साधारण-सी याद थी, और वह प्रश्न पर प्रश्न करनेवाले अफ़सरों और जनरलों के कौतूहल से तङ्ग होने की बात भी न भूला था। घोड़े और गाड़ी पा सकने के लिए उसे जो कुछ असुविधा हुई थी उसे भी वह न भूला था; पर सबसे अधिक याद उसे इस बात की थी कि उस समय वह सोचने-समझने में पूर्णतया अशक्त था। अपने छुटकारे के दिन उसने पीटिया रोस्टोव का शव देखा था। उसी दिन उसे यह भी मालूम हुआ था कि प्रिंस एण्ड्र्यू बोरोडिनो के युद्ध के बाद एक महीने तक ज़िन्दा रहा था, और अभी मारोस्लेव में रोस्टोव परिवार के भवन में मरा है। उसी दिन डेनीज़ोव ने उपर्युक्त समाचार के साथ

ही हैलेन की मृत्यु का समाचार भी सुनाया था और समझा था कि पीरी को इसकी ख़बर पहले ही से होगी। उस समय यह सब कुछ पीरी को विचित्र-सा दिखाई पड़ा। उसे ऐसा दिखाई पड़ा कि वह इन सारे समाचारों का मर्म ग्रहण करने में असमर्थ है। उस समय उसे केवल उस स्थान से जहाँ लोग एक दूसरे की हत्या कर रहे थे, बच निकलने और ऐसे स्थान में जा पहुचने की जल्दी पड़ी हुई थी जहाँ वह आराम ले सके, संयत हो सके और इन दिनों में उसने जो यह सारा विचित्र और नवीन वस्तु-स्थिति-जाल देखा था, उस पर विचार कर सके। पर ओरील में पहुँचते ही वह बीमार पड़ गया। जब बीमारी के बाद उसके होश-हवास दुरुस्त हुए तो उसने अपने पास अपने दो नौकरों—टैरेन्टी और वास्का—को और अपनी चचेरी बहन—बड़ी प्रिंसेज़ को देखा जो उस समय उसकी इलेट्सवाली जायदाद में रहती थी और उसके उद्धार और बीमारी की बात सुनकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करने आ पहुँची थी।

अपने आरोग्य-लाभ की अवस्था में पीरी अपने पिछले कई महीने के अभ्यस्त जीवन की धारणाओं से कहीं धीरे-धीरे जाकर छुटकारा पा सका, और इस बात से परिचित हो सका कि कल को उसे कोई कहीं जाने को विवश न करेगा, कोई उसका गर्म बिछौना न छीनेगा और उसे दिन का भोजन, चाय, और रात का भोजन अवश्य मिलेगा। पर अपने स्वप्नों में वह बहुत दिनों तक अपने आपको बन्दी जीवन व्यतीत करते देखता रहा। इसी

प्रकार अपने उद्धार के बाद उसने जो समाचार सुने थे, उनका वास्तविक मर्म भी वह धीरे-धीरे समझ सका—प्रिंस एण्ड्र्यू की मृत्यु, और अपनी स्त्री की मृत्यु, और फ्रेंचों का विनाश।

पहले जो एकमात्र वस्तु उसे हरदम व्यथित किये रहती थी और जिसकी खोज में वह सदैव लगा रहता—जीवन का लक्ष्य—अब उसके लिए उस बात का अस्तित्व तक लुप्त हो गया था। जीवन के लक्ष्य की खोज का आकस्मिक अथवा अस्थायी रूप से अन्त हो गया था, पर उसे अनुभूति होती कि उसका अस्तित्व ही लुप्त हो गया और अन्यथा सम्भव ही न था। जीवन-सम्बन्धी लक्ष्य के इसी अभाव ने उसे स्वच्छन्दता की उल्लासपूर्ण सचेतनता प्रदान की थी।—उस समय यही उसके जीवन का एकमात्र सुख था।

उसका कोई लक्ष्य हो ही न सकता था; क्योंकि अब उसे आस्था थी—किसी नियम-उपनियम में, शब्दों में, या विचारों में नहीं, बल्कि नित्य, अमर, सर्वव्यापक भगवान् में। उस जीवन सम्बन्धी लक्ष्य की खोज वस्तुतः भगवान् की खोज थी। और अकस्मात् अपने बन्दी जीवन में उसे वह बात मालूम हो गई जिसे बहुत दिन पहले उसकी धाय उसे बताया करती थी—और किन्हीं शब्दों या बुद्धि सम्बन्धी तर्कों के द्वारा नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभूति के द्वारा—कि भगवान् यहाँ है और हर जगह मौजूद है। उसने अपने बन्दी जीवन में जान पाया था कि भगवान् एक विश्व-निर्माता की अपेक्षा काराटेव की व्यष्टि में अधिक

असीम, अधिक अगम्य और अधिक महान् है। उसे एक ऐसे आदमी जैसी अनुभूति हो रही थी जो इधर-उधर बहुत दूर तक दृष्टि फेंकने के बाद अपनी उद्दिष्ट वस्तु को अपने पैरों के पास ही पड़ा पा गया हो। वह अपने जीवन भर लोगों के सिरों के ऊपर से चारों ओर ताकता रहा था, यद्यपि उसे अपने नेत्रों को इस प्रकार थकाने की आवश्यकता न थी; बस, उसका अपने सामने देख लेना भर अलम् होता।

अब उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसे न द्विधा का सामना करना पड़ता है, न अस्तव्यस्तता का। अब उसके भीतर एक निर्णायक बैठा हुआ था जो एक अविदित विधान के द्वारा निश्चय कर डालता था कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। वैसे वह रुपए-पैसे के मामले में पहले ही की तरह उदासीन था, पर अब उसे एक प्रकार का निश्चय था कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए। उसने अपने इस निर्णायक से सबसे पहले उस अवसर पर काम लिया जब एक फ्रेंच कर्नल क़ैदी उसके पास आया और अपनी वीरता की लम्बी-चौड़ी डींग हाँकने के बाद खुले शब्दों में कहने लगा कि वह उसे उसके बीवी-बच्चों के पास भेजने के लिए ४००० फ्रेंक दे दे। पीरी ने बिना किसी कठिनता या प्रयास के साफ़ इंकार कर दिया और बाद को स्वयं ही उसे आश्चर्य हुआ कि पहले जो बात उसे इतनी कठिन दिखाई देती थी वह अब इतनी सहज और सरल कैसे हो गई।

उसका प्रधान थनैत उसके पास ओरील आया और उसके साथ पीरी ने अपनी घटी हुई आय का हिसाब लगाया। प्रधान थनैत के हिसाब के अनुसार मास्को के अग्नि-काण्ड से पीरी को लगभग बीस लाख रूबल की क्षति उठानी पड़ी थी।

प्रधान थनैत ने पीरी को इस क्षति के लिए दिलासा देते हुए कहा कि इन क्षतियों पर भी, यदि वह अपनी स्त्री का क़र्ज़ चुकाने से इंकार कर दे—क्योंकि वह उक्त क़र्ज़ा चुकाने के लिए बाध्य नहीं है—और मास्को और उसके आसपास देहातों में भवन दुबारा न बनवाये; क्योंकि इससे उसे व्यर्थ ही ८०००० रूबल प्रतिवर्ष ख़र्च करने पड़ते हैं और आय एक पैसे की नहीं होती – तो उसे घाटे की जगह उल्टे कुछ आय बढ़ ही जायगी।

पीरी ने उल्लसित भाव से मुस्कराकर कहा—'हाँ ठीक है, ठीक है। मुझे इस सारे धन्धे की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है। मैं बर्बाद होकर पहले से कहीं अधिक मालदार हो गया हूँ।'

पर जनवरी में सावेलिच मास्को से आया और वहाँ का हाल सुनाने के बाद उसने बताया कि किस प्रकार एक मिस्तरी ने मास्को के और देहात के भवनों के निर्माण का अनुमान लगा लिया है, और इन सारी बातों का ज़िक्र उसने इस प्रकार किया मानो वह सब पहले से ही तय हो गया हो। उन्हीं दिनों में उसके पास प्रिंस वैसिली और पीटर्सबर्ग के अन्य परिचित व्यक्तियों के पत्र आये जिनमें उसकी स्त्री के क़र्ज़ की बात लिखी हुई थी। पीरी ने निर्णय किया कि प्रधान थनैत की योजनाओं से उसे उस समय

इतनी प्रसन्नता तो हुई थी, पर वे हैं सब ग़लत, और उसे पीटर्सबर्ग जाकर अपनी स्त्री का हिसाब साफ़ करना चाहिए और मास्को में भवन बनवाने चाहिए। उसे यह सब क्यों करना चाहिए, यह वह .खुद न जानता था, पर वह यह अवश्य जानता था कि यह सब आवश्यक है। इससे उसकी आय तीन चौथाई रह जायगी, पर उसे बोध हुआ कि इसके सिवाय अन्यथा सम्भव ही नहीं है।

——

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

जनवरी के अन्त में पीरी मास्को आ पहुँचा और अपने भवन के एक बचे हुए भाग में ठहर गया। वह काउण्ट रोस्टोपचिन से और अन्य कई परिचित व्यक्तियों से मिला जो अब तक मास्को आ पहुँचे थे। उसका इरादा तीसरे दिन पीटर्सबर्ग को रवाना होने का था। चारों ओर विजयोत्सव मनाये जा रहे थे; उस ध्वस्त और पुनर्जीवित नगर में चारों ओर जीवन के लक्षण दिखाई दे रहे थे। सब पीरी से मिलकर प्रसन्न हुए, सबने उससे भेंट करने की उत्कण्ठा प्रकट की।

उसे मालूम हो गया था कि रोस्टोव परिवार आजकल कोस्ट्रोमा में है, पर नटाशा का ख़याल उसे शायद ही कभी आया हो। यदि उसे ख़याल आता भी तो दूरस्थ अतीत की एक मृदुल स्मृति के रूप में। वह अपने आपको न केवल सामाजिक बन्धनों से ही स्वतंत्र समझता था, बल्कि उस भावना से भी स्वतंत्र समझता था जिसे उसने—अपनी धारणा के अनुसार—स्वयं ही जान-बूझकर जागृत कर लिया था।

अपने आगमन के तीसरे दिन उसे ड्रुबेट्स्काय परिवार से पता चला कि प्रिंसेज़ मेरी मास्को ही में है। वह उसी दिन शाम को उससे भेंट करने गया।

पीरी अत्यन्त गम्भीर मनोवृत्ति के साथ वृद्ध प्रिंस के भवन में जा पहुँचा। यह घर अग्निकाण्ड से बच गया था। उसमें टूट-फूट के चिह्न तो दिखाई देते थे, पर वैसे साधारण तौर से वह पहले ही जैसा था। वृद्ध अर्दली पीरी के सामने कठोर मुद्रा के साथ आ खड़ा हुआ, मानो वह आगन्तुक को जता देना चाहता हो कि वृद्ध प्रिंस की अनुपस्थिति से भवन की पहली व्यवस्था में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। उसने पीरी को सूचना दी कि प्रिंसेज़ अपने निजी कमरे में हैं और वह केवल रविवार को मिलती हैं।

पीरी बोला—'मेरी सूचना तो दो, शायद बुला ही लें।'

आदमी ने कहा—'जो हुक्म। कृपा करके चित्रशाला में पधारिए।''

कुछ मिनट बाद अर्दली डेसाले के साथ आ पहुँचा। डेसाले ने पीरी से कहा कि प्रिंसेज़ पीरी से मिलकर बड़ी प्रसन्न होंगी यदि वह शिष्टता का विचार न करके उन्हीं के कमरे में ऊपर चले चलेंगे।

एक क़न्दील से प्रकाशित निचली-सी छत के कमरे में प्रिंसेज़ मेरी बैठी थी और उसके पास ही काले वस्त्र पहने हुए एक दूसरी स्त्री बैठी थी। पीरी को याद आया कि प्रिंसेज़ मेरी के पास हमेशा सखियाँ रहती हैं, पर वे सखियाँ क़ौन होती हैं और कैसी होती हैं यह वह न जानता था, या यह कहिए कि उसे याद न थी। उसने काले वस्त्र पहने बैठी महिला की ओर दृष्टिपात करते हुए मन ही मन कहा—'बस, उन्हीं सखियों में से कोई होगी।'

प्रिंसेज़ मेरी उसे भेंटने के लिए शीघ्रता-पूर्वक उठी और उसकी ओर उसने अपना हाथ बढ़ाया।

जब पीरी उसके हाथ का चुम्बन कर चुका तो प्रिंसेज़ ने उसके परिवर्तित चेहरे की ओर देखते हुए कहा—'तो आज हमारी भेंट इस ढंग की है। दम निकलते तक वह तुम्हारा ही नाम लेते रहे।' उसने पीरी की ओर से अपनी संगिनी की ओर इस सलज्ज भाव से देखा कि पीरी क्षण भर के लिए चकित हो गया। 'मुझे तुम्हारे उद्धार की बात सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। इन बहुत दिनों में हमने यही एक सुसमाचार सुना है।'

और प्रिंसेज़ ने फिर अपनी संगिनी की ओर देखा, और अब की बार पहले से अधिक उद्विग्नता के साथ। वह कुछ और कहनेवाली थी पर पीरी ने बाधा दी।

उसने कहा—'तुम्हें सुनकर अचरज होगा,—मुझे उनकी कानों-कान ख़बर न हुई! मैंने तो सोचा था कि वह मारे गये। मुझे जो कुछ मालूम हुआ, दूसरों की ज़बानी। मुझे तो सिर्फ़ इतना पता चला कि वह रोस्टोव परिवार में जा मिले थे...कैसा विचित्र संयोग था!'

पीरी शीघ्रता और सजीवता के साथ बोल रहा था। उसने एक बार उस सखी के चेहरे की ओर भी दृष्टिपात किया, और उसने देखा कि उसकी ओर उसकी मनोयोग और सहृदयता-पूर्ण दृष्टि लगी हुई है।

पर जब उसने रोस्टोव परिवार का नाम लिया तो प्रिंसेज़ मेरी के चेहरे पर अस्तव्यस्तता के लक्षण पहले से भी अधिक दिखाई देने लगे। उसने एक बार फिर पीरी के चेहरे की ओर से शीघ्रता-पूर्वक नेत्र हटाकर उस काले वस्त्रोंवाली महिला की ओर देखा, और कहा—

'सचमुच तुम इसे नहीं पहचानते ?'

पीरी ने उस सखी के काली आँखों और विचित्र-से मुँहवाले पीले, सुकुमार चेहरे की ओर एक बार फिर देखा; और पीरी की ओर उन मनोयोग-पूर्वक लगे हुए नेत्रों में से किसी ऐसी वस्तु ने देखा जो उसके लिए निकटतर थी, जिसे उसने बहुत दिनों से विस्मृत कर दिया था, और जो मृदुलता से भी कुछ अधिक मृदुल वस्तु थी।

वह सोचने लगा—'नहीं जी, यह हो ही नहीं सकता! यह कठोर, शुष्क, दुर्बल, पीला चेहरा जो इतना वयातीत दिखाई देता है! यह वह हो ही नहीं सकती! यह उसकी कुछ समता करती है, और बस!' पर उसी क्षण प्रिंसेज़ मेरी ने कहा 'नटाशा!' और उन मनोयोग-पूर्वक लगे हुए नेत्रोंवाले चेहरे पर कठिनता, प्रयास और चेष्टा के साथ—किसी ऐसे खुलते हुए द्वार की तरह जिसकी चूलों में ज़ङ्ग लग गई हो—एक मुस्कराहट दौड़ गई और उस खुले हुए दरवाज़े में से एक ऐसा सुगंधित निःश्वास निकला जिसने पीरी के हृदय में उस दीर्घकालीन विस्मृत आनन्द का उद्रेक कर दिया जिसका उसे ख़याल तक न था—कम से कम उस समय नहीं।

जब वह मुस्कराई तो सन्देह की गुञ्जायश ही न थी—वह नटाशा थी, और वह उसे प्यार करता था।

वह लजा उठा, हर्षातिरेक के साथ, और वेदनाकारी व्यथा के साथ। उसने अपना उत्तेजन छिपाने की चेष्टा की। पर उसने उसे जितना ही अधिक छिपाने की चेष्टा की उतनी ही अधिक स्पष्टता के साथ—अत्यन्त से अत्यन्त निश्चयात्मक शब्दों से भी अधिक स्पष्टता के साथ घोषणा कर दी कि वह उसे प्यार करता है।

पीरी ने सोचा—नहीं जी, अचानक भेंट होने के कारण ऐसा हो गया है! पर ज्यों ही उसने प्रिंसेज़ मेरी के साथ उस टूटे हुए वार्तालाप का सिल्सिला छेड़ने की कोशिश की कि उसकी दृष्टि एक बार फिर नटाशा की ओर उठ गई, और उसके चेहरे पर पहले से भी गहरी लाली छा गई। उसकी आत्मा पर हर्ष और भय के मिश्रित वेग ने पहले से भी अधिक प्रबलता के साथ अधिकार जमा लिया। वह बोलने में लड़खड़ाने लगा और जो कुछ वह कह रहा था उसे अधकहा छोड़कर रुक गया।

——

उन्तीसवाँ परिच्छेद

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'मेरे साथ रहने को आ गई है। काउण्ट और काउण्टेस भी कुछ दिनों में आने ही वाले हैं। काउण्टेस की बड़ी नाज़ुक हालत है। पर नटाशा के लिए डाक्टरी चिकित्सा कराना आवश्यक था; उन्होंने इसे हठ करके मेरे साथ भेज दिया।'

पीरी ने नटाशा को सम्बोधित करके कहा—'हाँ जी, आज-कल ऐसा घर ही कौन-सा है जिसमें किसी न किसी तरह का रञ्ज न हो ? और यह सब उसी दिन हुआ था जिस दिन हमारा छुटकारा हुआ था। मैंने भी उसे देखा था। कैसा सुन्दर लड़का था !'

नटाशा ने उसकी ओर देखा, और उसके उत्तर में उसके नेत्र विकसित और आलोकित हो उठे।

पीरी ने कहा—'और धीरज भी क्या कहकर बँधाया जाय ? कुछ भी नहीं ! ऐसे सुन्दर लड़के को इस उभरती जवानी में क्यों मरना पड़ा ?'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'हाँ, धर्म के बिना जीना कठिन हो जाता।'

नटाशा ने कुछ बोलने के लिए मुँह खोल लिया था, पर अकस्मात् वह चुप हो गई। पीरी ने शीघ्रता-पूर्वक मुँह फेर लिया और पुनः प्रिंसेज़ मेरी को सम्बोधित करके अपने मित्र के अन्तिम दिनों के विषय में पूछने लगा।

पीरी की अस्तव्यस्तता अब नष्ट हो गई थी; पर साथ ही उसे बोध हो रहा था कि उसकी स्वतन्त्रता भी पूरी तरह नष्ट हो गई है। उसे अनुभूति हो रही थी कि वहाँ एक निर्णायक मौजूद है जो उसके प्रत्येक शब्द और कार्य का मूल्य निर्धारित करेगा, जिसका निर्णय उसके लिए सारे संसार के निर्णय से अधिक मूल्यवान् होगा। और वह बोलता जाता था और साथ ही यह भी सोचता जाता था कि उसके शब्दों का नटाशा पर क्या प्रभाव पड़ेगा। उसने जान-बूझकर उसे प्रसन्न करने के लिए कोई बात नहीं कही; पर फिर भी वह जो कुछ कहता, उसका निर्णय उसके दृष्टिकोण से करता।

भोजन के समय पीरी को विशाल जगमगाती हुई भोजनशाला में ले जाया गया; कुछ क्षण बाद पैरों की आहट सुनाई दी, और प्रिंसेज़ मेरी ने नटाशा के साथ प्रवेश किया। नटाशा शान्त थी, पर उसके चेहरे पर अब फिर पहले जैसी कठोर, मुसकान-विहीन मुद्रा विराज रही थी। प्रिंसेज़ मेरी, नटाशा और पीरी, सबको उस अस्तव्यस्तता का एक जैसा बोध हो रहा था जो हार्दिक और गम्भीर वार्तालाप के बाद अक्सर उत्पन्न हो जाती है।

सब चुपचाप मेज़ के पास पहुँचे। अर्दलियों ने मेज़ें खींचीं और यथास्थान सजा दीं। प्रिंसेज़ मेरी ने निःस्तब्धता भङ्ग करते हुए कहा—'और तुम अब फिर क्वारे हो गये।'

पीरी के चेहरे का रङ्ग लाल हो उठा और उसने पहली बार नटाशा की ओर से दृष्टि चुरानी शुरू की। जब उसने उसकी

ओर फिर देखने का साहस किया तो उसका चेहरा शुष्क, कठोर, और—उसकी कल्पना के अनुसार —घृणा-व्यञ्जक तक था।

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'और क्या सचमुच तुम नैपोलियन से मिले थे और उससे बात की थी? हमें तो यही सुनाई पड़ा है।'

पीरी हँसा।

'एक बार भी नहीं! सब हमेशा यही सोचते दिखाई देते हैं कि क़ैद होना क्या है, नैपोलियन का अतिथि बनना है। मैं उसे देखता तो क्या, उसकी ख़बर तक मैंने कभी नहीं सुनी। मैं बहुत नीची श्रेणी में रक्खा गया था।'

भोजन समाप्त हो गया और पीरी ने अपने बन्दी जीवन का हाल सुनाना शुरू कर दिया। शुरू-शुरू में उसने इस विषय पर बोलने से इन्कार कर दिया था।

नटाशा ने क्षीण मुस्कराहट के साथ कहा—'पर यह बात सच्ची है कि तुम मास्को में नैपोलियन की हत्या करने के लिए रह गये थे? मैंने यह बात तभी उसी सुखारेव को जल-कल की भेंट-वाले दिन ताड़ ली थी—क्यों याद है न?'

पीरी ने स्वीकार किया कि बात ऐसी ही थी, और इस प्रश्न के बाद प्रिंसेज़ मेरी और विशेष कर नटाशा के प्रश्नों का उत्तर देते-देते वह आपबीती का सविस्तर वर्णन सुनाने को विवश हो गया।

प्रिंसेज़ मेरी मृदुल मुस्कराहट के साथ कभी पीरी की ओर देखती कभी नटाशा की ओर। इस सारे विवरण में उसे केवल

पीरी और उसकी भलमनसाहत दिखाई दी। नटाशा अपनी कुहनियों पर झुकी हुई घोर मनोयोग के साथ सुन रही थी। उसके चेहरे का भाव बीच-बीच में बदल जाता था, और यह स्पष्ट था कि पीरी के साथ ही वह भी उसकी घटनाओं का अनुभव कर रही है। उसकी दृष्टि से ही नहीं, बीच-बीच में वह जो छोटे-छोटे प्रश्न कर बैठती थी उन प्रश्नों से भी पीरी अच्छी तरह जान गया कि वह बात को जिस रूप में कहना चाहता था नटाशा ने उसे उसी रूप में ग्रहण किया है। यह स्पष्ट था कि वह न केवल उसकी कही हुई बातों को ही समझ रही थी, बल्कि उन बातों को भी जिन्हें वह कहना तो चाहता हो, पर शब्दों में व्यक्त न कर सकता हो।

नटाशा बोली—'तुम सारी बात नहीं बताते ..तुमने उस समय अवश्य कुछ न कुछ किया होगा · ' नटाशा रुकी और बोली—'कुछ अच्छा काम।'

पीरी ने फिर कहना आरम्भ किया। जब वह मृत्यु-दण्ड के वर्णन पर आया तो उसने रोमांचकारिणी घटनाओं को छोड़ जाना चाहा, पर नटाशा ने हठ पकड़ा कि कोई बात न छूटे। पीरी अब काराटेव का वर्णन करने लगा। इस समय तक वह उठकर कमरे में इधर-उधर चहलक़दमी करने लगा था और नटाशा की निगाह उसकी ओर बराबर लगी हुई थी। इसके बाद पीरी बोल उठा—

'नहीं, नहीं, तुम्हारी समझ में न आयगा कि मैंने उस गँवार आदमी से, उस सीधे-सादे मनुष्य से, क्या-क्या सीखा।'

नटाशा ने कहा—'हाँ, हाँ, कहे जाओ। वह अब कहाँ है ?'

'उसे मार दिया गया, लगभग मेरी आँखों के सामने।'

और पीरी ने अपनी यात्रा के अन्तिम दिन का, कारटेव की बीमारी का (उसका स्वर बार-बार काँप उठता था) और उसकी मृत्यु का हाल सुनाया।

प्रिंसेज़ मेरी ने भी उसकी कहानी सुनी और उसके साथ सहानुभूति प्रकट की। पर इस समय वह किसी और ही बात में तल्लीन हो रही थी। वह नटाशा और पीरी में परस्पर प्रेम और आनन्द की सम्भावना देख रही थी। और यह विचार आते ही उसका हृदय उत्फुल्लित हो उठा।

सुबह के तीन बज गये थे। अर्दली बीच-बीच में कठोर और शोक-मग्न मुद्रा के साथ आ आकर क़न्दील बदल जाते थे, पर किसी ने उनकी ओर ध्यान न दिया।

पीरी ने अपनी कहानी समाप्त कर दी। नटाशा अब भी उसकी ओर अपने उज्ज्वल स्फूर्ति-पूर्ण नेत्रों से ध्यान और मनोयोग के साथ देख रही थी मानो वह किसी ऐसी बात को समझ पाने की चेष्टा कर रही हो जिसे पीरी ने सम्भवतः न कहा हो। पीरी लज्जित और आनन्द-पूर्ण अस्तव्यस्तता के साथ बीच-बीच में उसकी ओर दृष्टिपात कर लेता था और विषय बदलने के लिए कोई बात सोच रहा था। यह किसी को ध्यान न आया कि तीन बज गये हैं और अब सोने का समय है।

पीरी ने कहा—'आदमी दुर्भाग्यों और कष्टों की बात करते हैं; पर यदि मुझसे कोई इस घड़ी पूछे—'तुम पकड़े जाने से पहले जो थे वह होना पसन्द करोगे, या फिर भुगतना पसन्द करोगे ?' तो मैं यह जवाब दे उठूँगा कि ईश्वर के वास्ते मुझे फिर वही बन्दी-जीवन और वही घोड़े का मांस प्रदान कर दो ! हम समझते हैं हैं कि जब हम अपने स्वाभाविक कोने से निकालकर फेंक दिये जाते हैं तो हमारी विपत्ति का अन्त नहीं रहता; पर वास्तविक बात यह है कि तभी जाकर आदमी ऊँचा और नया हो सकता है। जहाँ जीवन है वहाँ आनन्द भी है। भविष्य में अभी बहुत कुछ--बहुत कुछ है। यह मैं तुमसे कह रहा हूँ।' उसने नटाशा की ओर देखकर कहा

नटाशा ने किसी दूसरी ही बात का उत्तर देते हुए कहा—'हाँ, मैं ख़ुद इस सारे जीवन को आरम्भ से दुहराने के सिवाय और कुछ नहीं चाहती।'

पीरी ने उसकी ओर ध्यान से देखा।

नटाशा –'बस इतना ही, और कुछ नहीं चाहती।'

पीरी चिल्ला उठा—'यह ठीक नहीं है, ठीक नहीं है ! अगर मैं जीवित हूँ और जीवित रहना चाहता हूँ तो इसमें मेरा दोष नहीं है, न तुम्हारा ही।'

अकस्मात् नटाशा ने अपने हाथों से मुँह ढक लिया और वह रोने लगी।

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'नटाशा, क्या बात है ?'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं।' वह आँसुओं में से पीरी की ओर देखकर मुस्कराई—'अच्छा, सोने का समय हो गया।'

पीरी उठा और विदा लेकर चला गया।

सदैव की तरह आज भी प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा शयनागार में मिलीं। पीरी ने जो कुछ कहा था उसके विषय में दोनों ने बातें कीं। प्रिंसेज़ मेरी ने पीरी के विषय में अपनी कोई सम्मति प्रकट नहीं की। नटाशा ने भी उसका कोई ज़िक्र न किया।

नटाशा बोली—'अच्छा मेरी, राम-राम! मुझे आशंका है कि हम अपने भावों के ऊपर अन्याय करने के भय से जो उनकी (प्रिंस एण्ड्र्यू की) चर्चा नहीं करती हैं, उससे कहीं हम उन्हें भूल न जायँ।'

प्रिंसेज़ मेरी ने गहरी साँस ली और इस प्रकार नटाशा की बात की सत्यता स्वीकार की; पर उसने अपनी सहमति शब्दों के द्वारा व्यक्त न की।

'क्या उन्हें भूलना सम्भव है?'

कुछ देर बाद नटाशा बोली—'मैंने उनसे कोई बुरी बात तो नहीं की?'

प्रिंसेज़ मेरी ने उतर दिया—'पीरी से?—नहीं जी! कैसे भले आदमी हैं!'

अब नटाशा ने एक ऐसी शरारत भरी मुस्कराहट के साथ, जिसे मेरी ने उसके चेहरे पर बहुत दिनों से न देखा था, कहा—'मेरी, तुमने देखा...यह कितने साफ़, चिकने, और ताज़े हो गये हैं?—

मानों अभी स्नान करके निकले हों। नैतिक स्नान करके। क्यों, ठीक है न?'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'हाँ। पहले से बहुत बदल गये हैं।'

'छोटा कोट, बाल छँटे हुए; बस, ऐन मेन जैसे स्नान करके निकले हों...पापा कहा करते...।'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा - 'अब मेरी समझ में आ रहा है कि वह (प्रिंस एण्ड्रयू) और सबकी अपेक्षा इनकी ओर इतने क्यों आकृष्ट रहते थे।'

'हाँ, पर उनसे बिल्कुल दूसरे ढङ्ग के हैं। कहावत है कि मित्रता तभी होती है जब दोनों एक दूसरे से असमान होते हैं। मुझे तो यह बात ठीक मालूम होती है। सचमुच यह उनसे बिल्कुल असमान हैं—हर बात में?'

'हाँ, और हैं बड़े आश्चर्य्यजनक।'

नटाशा ने उत्तर दिया—'अच्छा, सलाम।'

और वही शरारत भरी मुस्कराहट उसके चेहरे पर बहुत देर तक नृत्य करती रही, मानो वहाँ वह भुला दी गई हो।

उस दिन रात को पीरी बहुत देर तक न सो सका। वह अपने कमरे में चहलक़दमी करता हुआ कभी भृकुटी बदलता और अपने विचारों को किसी जटिल समस्या की ओर ले जाता, कभी अपने कन्धे उचकाता और चौंक पड़ता, और कभी मृदुल भाव से मुस्कराने लगता। वह प्रिंस एण्ड्रयू और नटाशा और उनके पारस्परिक प्रेम की बात सोच रहा था; और कभी बीती घटनाएँ सोच-

सोचकर डाह करने लगता, कभी आत्म-भर्त्सना से काम लेता, और कभी अपने भावों के लिए अपने आपको क्षमा कर देता था। सुबह के छः बज गये थे और उसकी चहलक़दमी जारी थी।

दूसरे दिन पीरी पर प्रिंसेज़ मेरी के भवन में प्रवेश करते हुए इस सन्देह ने अधिकार कर लिया कि क्या वह पिछली रात को सचमुच नटाशा से बातें कर गया था? 'शायद मुझे वहम हो गया होगा। शायद मैं भीतर पहुँचूँगा, और मुझे कोई दिखाई न देगा।' पर कमरे में पैर रखने की देर थी कि उसके सारे शरीर ने स्वतन्त्रता-हानि के बोध के साथ तत्काल बता दिया कि वह मौजूद है। वह कल की ही तरह काले कपड़े पहने हुए थी, कल की ही तरह उसके बाल सँवारे हुए थे, पर फिर भी वह कल से बिल्कुल दूसरी नटाशा थी। यदि वह कल भी पीरी के प्रवेश के समय ऐसी ही होती तो उसे पहचानने में पीरी को क्षण भर की भी देर न लगती।

वह उस समय ऐसी दिखाई देती थी जैसी बचपन में, और बाद को प्रिंस एण्ड्र्यू की सम्बद्ध वधू के रूप में दिखाई दी थी। एक उज्ज्वल प्रश्नात्मक मुस्कराहट से उसकी आँखें चमक रही थीं; और उसके चेहरे पर मित्रता-पूर्ण और एक अजीब शरारत से भरी हुई मुद्रा विराज रही थी।

यद्यपि प्रिंसेज़ मेरी और नटाशा को अपने मुलाक़ाती से भेंट करके प्रसन्नता हुई थी, और यद्यपि पीरी का सारा स्वार्थ अब इसी घर में केन्द्रित था पर शाम होते-होते सारी बातें समाप्त हो

गईं, और वार्तालाप एक के बाद दूसरे नगण्य विषय पर बदलने और बीच-बीच में टूटने लगा। पीरी उस दिन रात को इतनी देर तक ठहरा रहा कि नटाशा और प्रिंसेज़ मेरी आपस में दृष्टि-विनिमय करके उसके जल्दी जाने की प्रतीक्षा करने लगीं। पीरी ने भी इस बात को ताड़ लिया, पर फिर भी वह न जा सका। वह क्षुब्ध और अस्त-व्यस्त था, पर फिर भी उसी प्रकार बैठा रहा क्योंकि वह उठने और उठकर जाने में अशक्त था।

जब प्रिंसेज़ मेरी ने देखा कि इसका अन्त ही नहीं आता, तो वह उठी और सिर-दर्द का बहाना करके बिदा लेने लगी।

उसने पूछा—'तो कल को तुम पीटर्सबर्ग जा रहे हो?'

पीरी ने शीघ्रतापूर्वक विस्मित और मानो रुष्ट स्वर में कहा—'नहीं, मैं तो नहीं जा रहा हूँ। हाँ...वहीं...पीटर्सबर्ग? कल को? पर मैंने अभी तुमसे बिदा ही कहाँ ली है? मैं जाने से पहले तुम्हारे पास हो जाऊँगा जिससे तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो।' उसने प्रिंसेज़ मेरी के सामने खड़े होकर कहा। उसका चेहरा इस समय लाल हो रहा था। पर अभी उसने प्रिंसेज़ मेरी से बिदा न ली थी।

नटाशा बाहर चली गई। इसके विपरीत प्रिंसेज़ मेरी एक आराम-कुर्सी पर धमाके के साथ बैठ गई और अपने कान्त नेत्रों के साथ उसकी ओर कठोरता और ध्यान के साथ देखने लगी। पहले उसने जो उकताहट प्रकट की थी वह अब ग़ायब हो गई थी। उसने गहरे और गम्भीर भाव से साँस ली मानो वह एक लम्बे-चौड़े वार्तालाप के लिए तैयार हो गई हो।

जब नटाशा कमरे से बाहर चली गई तो पीरी की अस्तव्यस्तता और उद्विग्नता भी तत्काल ही मिट गई और अब उनका स्थान उत्तेजनापूर्ण उत्सुकता ने ले लिया। वह शीघ्रता के साथ प्रिंसेज़ मेरी के पास एक कुर्सी खींचकर बैठ गया और उसकी दृष्टि के उत्तर में—मानो उसने शब्दों में कोई बात प्रकट की हो—बोला :—

'हाँ, मैं तुम्हें बताना चाहता था। प्रिंसेज़, मेरी सहायता करो! मैं क्या करूँ? मैं आशा करूँ? प्रिंसेज़ मेरी, मेरी प्यारी बहन, सुनो। मैं ख़ूब जानता हूँ; मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं उसके योग्य नहीं हूँ; और मैं यह भी जानता हूँ कि इस समय इस तरह की बात उठाना असम्भव है। पर मैं उसका भाई बनना चाहता हूँ। नहीं, यह बात नहीं—तुम मेरा मतलब नहीं समझीं, मैं हो ही नहीं सकता...।'

वह रुका और अपने हाथों से चेहरा और आँखें मलने लगा।

अब उसने आत्मसंयम और सम्बद्धता के साथ वार्तालाप करने की चेष्टा करते हुए कहा—'देखो, मुझे यह तो याद नहीं कि मैंने इसे कब से प्रेम करना आरम्भ किया है, पर मैं इसे अपने जीवन भर में सदैव प्रेम करता आ रहा हूँ, और इसे इतना प्रेम करता हूँ कि इसके बिना अपने जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकता।'

प्रिंसेज़ ने कहा—'फिर भी इस समय उससे अपने प्रेम की बात कहना...ठीक न होगा।'

'तो मुझे क्या करना चाहिए?'

प्रिंसेज़ मेरी ने कहा—'यह बात मेरे ऊपर छोड़ दो। मैं जानती हूँ—।'

पीरी प्रिंसेज़ मेरी के नेत्रों में झाँक रहा था।

उसने कहा—'हाँ, क्या ?.. '

'मैं जानती हूँ कि वह तुमसे प्रेम करती है...करेगी' प्रिंसेज़ मेरी ने वाक्य ठीक किया—'पर अब तुम पीटर्सबर्ग चले जाओ, यही अच्छा रहेगा। और मैं यहाँ से चिट्ठी लिखूँगी।'

— —

परिशिष्ट

पहला परिच्छेद

सात वर्ष बीत गये। योरुप के इतिहास का उत्ताल तरंगों से आलोडित समुद्र अपने तटों के भीतर शान्त हो चला था। वह निःस्तब्ध तो दिखाई देता था, पर मानवता का सञ्चालन करनेवाली रहस्यमयी शक्तियाँ (रहस्यमयी इसलिए कि उनको गति-विधि की व्याख्या करनेवाले विधान हमारे लिए अविदित हैं) अपना काम बराबर कर रही थीं। यद्यपि इतिहास के समुद्र की सतह स्पन्दनहीन दिखाई देती थी, मानवता की गति उसी प्रकार निरन्तर रूप से जारी थी जिस प्रकार समय का प्रवाह।

राष्ट्रों को बाढ़ अपनी स्वाभाविक गति पर उतर आती है। महान् उद्वेलन की तरङ्गें शान्त हो जाती हैं और उस स्पन्दनहीन सतह पर बाह्य रङ्ग-ढङ्ग बहता रहता है जिसमें कूटनीतिज्ञ तैरते हैं और समझते हैं कि बाढ़ों को स्वाभाविक गति पर वही ला सके हैं।

पर शान्त समुद्र एक प्रकार फिर क्षुब्ध हो उठता है। कूट-नीतिज्ञों को दिखाई देता है कि उनके पारस्परिक वैमनस्य के कारण ही प्राकृतिक शक्तियों का यह नवीन संघर्ष हुआ है; वे अपने-अपने सम्राटों में युद्ध की आशा करते हैं, उन्हें परिस्थिति नितान्त जटिल दिखाई देती है। पर वे लोग जिस स्थान से उस तरङ्ग

के उठने की आशंका करते हैं वहाँ से वह नहीं उठतो। उसका उद्‌गम-स्थान वही पहला पेरिस है। अन्तिम परोक्ष प्रक्षालन पश्चिम का आन्दोलन है; और यह परोक्ष प्रक्षालन ऐसा है जो असाध्य-सी राजनोतिक जटिलताओं को सुलझा देता है और तत्कालीन सैनिक आन्दोलन का अन्त कर देता है।

जिस आदमो ने फ़्रांस को ध्वस्त कर डाला था वह फ़्रांस को अकेला वापस आता है, न उसे कोई षड्यन्त्र आमन्त्रण देता है, और न उसके ही पास किसी प्रकार का सैन्य-बल है। एक साधारण-सा प्रहरी तक उसे पकड़ सकता था—पर एक विचित्र संयोग से उसे कोई नहीं पकड़ता, बल्कि सब उस आदमी का अभिवादन करते हैं जिसे वे एक दिन पहले तक अभिशाप देते रहे थे और जिसे एक महीने बाद फिर अभिशाप देंगे।

अन्तिम संव-पूर्ण अभिनय का प्रतिपादन करने के लिए अभी इस आदमी की आवश्यकता थी।

वह अभिनय हो जाता है।

अन्तिम पार्ट खेला जा चुकता है। अभिनेता को अपने कपड़े उतारने और रङ्ग-पाउडर धो डालने की आज्ञा मिलती है। अब फिर उसकी ज़रूरत न पड़ेगी।

और कुछ साल बोत जाते हैं जिनमें यह आदमी एक द्वीप में एकान्त में बैठकर प्रहसन का पार्ट करता है और षड्यन्त्रों और असत्यों के द्वारा अपने कार्य्यों को न्याय्य प्रतिपादित करता है, यद्यपि अब इस प्रतिपादन की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

वह संसार के दिखाता है कि जिस चीज़ को सबने शक्ति समझ रक्खा था—और जब अलक्ष्य हाथ के द्वारा उसके कार्यों का सञ्चालन हो रहा था—वह वास्तव में क्या था।

सूत्रधार अभिनय का अन्त करने के बाद अभिनेता को उसके असली रूप में हमारे सामने खड़ा करता है।

'देखो, इसी में तुमने विश्वास किया था! यह रहा! देखते हो न कि तुम्हारा सञ्चालन करनेवाला यह नहीं था, मैं था?'

पर आन्दोलन की प्रबलता से चकित हुई जनता इस बात को बहुत दिन बाद जाकर समझती है।

और इससे भी अधिक अनिवार्यता और सम्बद्धता ऐलेक्ज़ण्डर प्रथम की जीवनी में देखने को मिलती है जो पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर वाले प्रतिपक्षी आन्दोलन का नेता था। और उस आदमी के लिए क्या आवश्यक था जो दूसरे आदमियों को पीछे डालकर इस आन्दोलन का प्रमुख पुरुष हो उठा था?

अब जिस बात की आवश्यकता थी वह थी न्यायबुद्धि, योरुप के मामलों के साथ सहानुभूति—पर दूरस्थ भी इतनी कि नगण्य स्वार्थों से निश्चेष्ट न हो सके—उन व्यक्तियों के ऊपर नैतिक आधिपत्य जिन्होंने उसके साथ सहयोग किया था—तत्कालीन सम्राट् वर्ग—एक मृदुल और आकर्षक व्यक्तित्व, और नैपोलियन के विरुद्ध व्यक्तिगत उपालम्भ। और ऐलेक्ज़ण्डर प्रथम में ये सभी गुण मौजूद थे—यह सारी सामग्री उसके जीवन के अनेक तथाकथित संयोगों के द्वारा तैयार कर दी गई थी—उसकी शिक्षा-

दीक्षा, अपने प्रारम्भिक शासन-काल में उसकी उदार नीति, उसे घेरे रहनेवाले परामर्शदाता, और आस्ट्रेलिज़, और तिल्सित, और अर्फ़र्ट ।

राष्ट्रीय युद्ध के अवसर पर यह व्यक्ति निश्चेष्ट रहता है, क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती । पर ज्योंही व्यापक योरुपीय युद्ध की आवश्यकता उपस्थित होती है, यह व्यक्ति ठीक समय पर आगे बढ़ता है और योरुप के विभिन्न राष्ट्रों को एकत्र करके लक्ष्य की ओर बढ़ता है ।

लक्ष्य प्राप्त हो जाता है । १८१५ के अन्तिम युद्ध के बाद ऐलेक्ज़ण्डर प्रथम सम्भावित मानवी शक्ति के उच्चतम शिखर पर जा खड़ा होता है । इसका उपयोग यह कैसे करेगा ?

ऐलेक्ज़ण्डर प्रथम—योरुप का शान्ति-प्रस्थापक, वह व्यक्ति जिसने प्रारम्भ ही से अपनी प्रजा के हित में मन लगाया था, और जिसने अपनी मातृभूमि में उदार नीति प्रचलित की थी—अब असीम अधिकारों का उपभोग करने और अपनी जनता का हित कर सकने का अवसर आने पर—जिस समय निर्वासित नैपोलियन भ्रामक और बाल्योचित योजनाएं बना रहा था कि यदि उसके हाथ में अधिकार रहते तो वह मानव-जाति को किस प्रकार सुखी बना देता—ऐलेक्ज़ण्डर प्रथम अपना कार्य्य समाप्त करके और अपने ऊपर ईश्वर का हाथ समझकर, अकस्मात् इस कृत्रिम अधिकार की नगण्यता को पहचान जाता है, उसकी ओर से पीठ फेर लेता है, और उसे उन गर्हित लोगों के हाथ में सौंप

देता है जिन्हें वह घृणा की दृष्टि से देखता है, और सिर्फ़ इतना कह उठता है—

'हमारे लिए नहीं, हमारे लिए नहीं, बल्कि तेरे नाम पर!... मैं भी तेरे अन्य जीवों की भाँति एक साधारण मनुष्य हूँ, और साधारण मनुष्य ही की तरह रहूँगा और केवल भगवान् और अपनी आत्मा के चिंतन में रत रहूँगा।'

जिस प्रकार आकाशस्थ सूर्य्य और प्रत्येक परमाणु एक स्वतन्त्र और पूर्ण स्थिति है, पर जिस प्रकार साथ ही वह उस सम्पूर्णता का परमाणु भी है जो अपनी अनन्तता के कारण मनुष्य की बुद्धि के लिए अगम्य है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर कुछ विशेष लक्ष्यों को प्रश्रय देता है, पर साथ ही वह प्रश्रय इस प्रकार देता है कि वह ऐसे व्यापक उद्देश की पूर्ति कर सके जो स्वयं उसी की बुद्धि के लिए अगम्य है।

एक फूल पर बैठी हुई मधु-मक्षिका ने बच्चे को काट लिया। और बच्चा मधुमक्षिकाओं से डरता है और कहता है कि मधुमक्षिका का काम लोगों को काटना है। एक कवि फूल में से मधु चूसती हुई मधुमक्षिका की प्रशंसा करता है और कहता है कि मधुमक्षिका का काम फूलों की सुगन्धि चूसना है। एक मधुमक्षिका-पालक उन्हें फूलों से पराग एकत्र करके अपने छत्ते में ले जाते देखकर कहता है कि मधुमक्षिका का काम शहद इकट्ठा करना है। एक दूसरे मधुमक्षिका-पालक ने छत्ते के कार्यक्रम का अध्ययन अधिक ध्यान से किया है, और वह कहता है कि मक्षिका पराग अपने बच्चों

को खिलाने और मक्खी रानी का पोषण करने के लिए एकत्र करती है, और उसका काम अपनी नस्ल बनाये रखना है। एक वनस्पतिशास्त्रविशारद देखता है कि मक्षिका किसी नर फूल का पराग गर्भ-केसर में ले जाती है और इस प्रकार गर्भ-केसर को उर्वरा कर देती है, और कह उठता है कि मक्षिका का यही काम है। एक दूसरा विशारद पौदों के भ्रमण का अध्ययन करके कह उठता है कि मधुमक्षिका का काम इसमें सहायता पहुँचाना है। पर मधुमक्षिका के उद्देश का अन्त इस पहली, दूसरी या और किसी भी ऐसी बौद्धिक खोज पर नहीं हो जाता जहाँ तक मानवी मस्तिष्क का पहुँचना सम्भव हो। और इन उद्देशों की खोज की ओर मानवी बुद्धि ज्यों-ज्यों अग्रसर होती जाती है, त्यों-त्यों यह स्पष्टतर होता जाता है कि अन्तिम उद्देश हमारी समझ के बाहर की बात है।

मनुष्य अधिक से अधिक यही जान सकता है कि मधुमक्षिका के जीवन का जीवन के अन्य प्रदर्शनों के साथ क्या सम्पर्क है। और यही बात ऐतिहासिक व्यक्तियों और राष्ट्रों के उद्देशों के विषय में भी है।

———

दूसरा परिच्छेद

नटाशा और बैजूखोव का विवाह १८१३ में हुआ, और वृद्ध रोस्टोव दम्पति के परिवार में यही अन्तिम आनन्ददायिनी घटना थी। काउण्ट इलिया रोस्टोव की मृत्यु भी उसी वर्ष हुई, और—जैसा कि पिता की मृत्यु के बाद हमेशा हुआ करता है—परिवार बिखर गया।

जिस समय काउण्ट की मृत्यु का समाचार पहुँचा तो निकोलस रूसी सेना के साथ पैरिस में था। उसने तत्काल त्यागपत्र दे दिया और उसके स्वीकृत होने की प्रतीक्षा न करके वह छुट्टी लेकर मास्को को रवाना हो गया। काउण्ट की आर्थिक स्थिति उनकी मृत्यु का महीना बीतते-बीतते बिल्कुल स्पष्ट हो गई और जब अनेकानेक छोटे-छोटे क़र्ज़ों को जोड़ा गया तो सब आश्चर्य्य-चकित रह गये। ऐसी छोटी छोटी रक़मों का किसी को गुमान तक न था। क़र्ज़ की रक़म जायदाद के मूल्य से दुगनी निकली।

मित्रों और सम्बन्धियों ने निकोलस को उत्तराधिकार अस्वीकार करने की सलाह दी। पर निकोलस की सम्मति में ऐसी अस्वीकृति उसके पिता की स्मृति के लिए कलङ्क लगानेवाली होती, और उस स्मृति को वह बड़े आदर की दृष्टि से देखता था, अतः उसने एक न सुनी और उत्तराधिकार स्वीकार कर लिया और उसके साथ ही क़र्ज़ चुकाने की बाध्यता भी स्वीकार कर ली।

निकोलस ने जो-जो योजनाएँ स्थिर कीं उनमें से एक भी सफल न हुई। जायदाद नीलाम पर चढ़ गई और आधी क़ीमत पर बिकी, और आधा क़र्ज़ बाक़ी रह गया। निकोलस ने अपने बहनोई बैज़ख़ोव के तीस हज़ार रूबल क़र्ज़ के रूप में स्वीकार कर लिये और उनसे वह क़र्ज़ भुगताया जिसे वह पाई हुई चीज़ों के एवज़ में असली क़र्ज़ समझता था। बाक़ी क़र्ज़ के लिए जेलख़ाने से बचने के लिए—अब क़र्ज़दार उसे इसी बात की धमकी देते थे—उसने नौकरी कर ली।

नटाशा और पीरी उस समय पीटर्सबर्ग में रह रहे थे, अतः उन्हें निकोलस की दशा का ठीक ज्ञान न था। निकोलस ने अपने बहनोई से रुपया उधार लेने के बाद से उससे अपनी शोचनीय दशा भर सक छिपाने की चेष्टा की। उसकी दशा इसलिए और भी कष्टदायिनी थी कि अपने बारह सौ रूबलों में उसे न केवल अपनी माँ और सोनिया का पालन ही करना पड़ता था, बल्कि माँ का इस प्रकार पालन करना पड़ता था जिससे उन्हें अपनी दरिद्रता का बोध न हो। काउण्टेस उस विलासपूर्ण परिस्थिति के बिना जीवन की कल्पना ही न कर सकती थीं जिनकी वह बाल्यकाल से अभ्यस्त थीं। निकोलस की स्थिति दिन पर दिन गिरती गई। वेतन में से कुछ बचा सकने का विचार केवल स्वप्न रह गया। बचाने की बात तो दूर रही, अपनी माँ की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे अनेक छोटे-छोटे क़र्ज़ तक लेने पड़े। इस स्थिति से बचने का उसे कोई मार्ग ही दिखाई

न देता था। उसकी रिश्तेदार स्त्रियों ने उसे किसी धनिक स्त्री से व्याह करने की सलाह दी, और निकोलस केवल धन के लिए विवाह करने के विचार मात्र को घृणा की दृष्टि से देखता था।

शरद् ऋतु के आरम्भ में प्रिंसेज़ मेरी मास्को आई। नगर में प्रचलित किंवदन्तियों के द्वारा उसे पता चला कि रोस्टोव-परिवार की आज-कल क्या दशा है, और बेटा अपनी माँ के लिए क्या कुछ बलिदान कर रहा है। इन समाचारों को सुनकर प्रिंसेज़ ने अपने हृदय में उसके प्रति उसके प्रेम की हर्षपूर्ण पुष्टि की अनुभूति की। 'मैं उनसे ऐसी ही आशा रखती थी।' रोस्टोव-परिवार के साथ प्रिंसेज़ मेरी का जो सम्पर्क था उससे वह उनके परिवार ही की एक व्यक्ति हो गई थी, और इस बात को याद करके उसने उनसे भेंट करना अपना कर्त्तव्य समझा।

सबसे पहले उसकी भेंट निकोलस ही से हुई, क्योंकि काउण्टेस के कमरे का रास्ता उसी के कमरे में से होकर था। प्रिंसेज़ मेरी की ओर दृष्टिपात करते ही निकोलस के चेहरे पर—प्रिंसेज़ मेरी की आशित प्रसन्नता के स्थान पर—एक ऐसी शुष्क, कठोर और गर्विणी मुद्रा आ विराजी जिसे प्रिंसेज़ मेरी ने उसके चेहरे पर पहले कभी न देखा था। निकोलस उससे कुशल-प्रश्न करने के बाद उसे अपनी माँ के कमरे में ले गया, और वहाँ पाँच मिनट बैठकर उठ आया।

जब प्रिंसेज़ मेरी काउण्टेस के कमरे में से आई तो उसे फिर निकोलस मिला और वह उसे बड़ी गम्भीरता और शुष्कता के

साथ बाहर तक पहुँचा आया। प्रिंसेज़ मेरी ने उसकी माँ के स्वास्थ्य के विषय में प्रश्न किया, पर उसने कोई उत्तर न दिया।

उसकी दृष्टि कहती दिखाई देती थी—'तुम्हें इससे क्या सरोकार? मुझे शान्ति से तो रहने दो।'

जब प्रिंसेज़ की गाड़ी चली गई तो फिर वह अपनी अस्त-व्यस्तता को क़ाबू में न रख सका और सोनिया के सामने कह उठा—'यह हमें दिक़ करने क्यों आती हैं? यह चाहती क्या हैं? मुझे ये महिलाएँ और यह शिष्टाचार नहीं भाता!'

सोनिया अपने हर्ष को दबा न सकी और ज़ोर से बोल उठी—'निकोलस कैसी बातें कर रहे हो? देखो, कितनी सहृदय हैं, और मामा उन्हें कितने चाव की दृष्टि के साथ देखती हैं!'

निकोलस ने कोई उत्तर न दिया, और प्रिंसेज़ के विषय में फिर कुछ न कहा। पर प्रिंसेज़ के जाने के बाद काउण्टेस ने उसका कई बार ज़िक्र किया।

उन्होंने कहा—'वह बड़ी सुशील और हीरों में तोलने योग्य लड़की है, और तुझे जाकर उससे ज़रूर मिलना चाहिए। घर से बाहर निकलकर किसी से मिल-जुल तो आयेगा, यहाँ घर में तो हमारी ही सूरतें देख-देखकर उकता गया होगा।'

'पर मामा, मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।'

'पहले तो तू चाहा करता था, और अब नहीं चाहता; बेटे, तेरी माया मेरी समझ में नहीं आती। किसी दिन तू ऊब जाता है, और दूसरे दिन किसी से मिलना ही नहीं चाहता।'

'पर मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं ऊब गया।'

'क्यों, तू अभी-अभी तो कह रहा था कि तू उससे मिलना तक नहीं चाहता। कैसी सुशील लड़की है, और तू तो हमेशा से उसे चाव की दृष्टि से देखता आ रहा था; पर अब न जाने कौन-सी ऐसी बात हो गई। तू अपने जी की बात मुझसे खोलकर थोड़े ही कहता है।'

'नहीं, मामा, यह बात नहीं है।'

'मानों मैं तुझसे तेरी इच्छा के विरुद्ध कोई काम कराना चाहती होऊँ; मैं तो तुझसे केवल यही कहती हूँ कि जब वह .खुद यहाँ तक आई तो तुझे भी एक बार हो आना चाहिए। शिष्टता भी तो कुछ होती...। पर नहीं, मेरी .ज़ुबान एक बार निकली तो निकली, अब मैं तेरी बातों में दख़ल न दूँगी; तू तो अब अपनी माँ से ही भेद रखने लगा।'

'अच्छी बात है, जब तुम कहती हो तो हो आऊँगा।'

'मेरा क्या है, मैं तो तेरे ही भले के लिए कह उठी थी।'

निकोलस ने लम्बी साँस ली, अपनी मूछें दाँतों से कतरीं, और अपनी माँ का ध्यान दूसरी ओर खींचने के लिए ताश की बाज़ी सजाई।

उस दिन फिर यही बात छिड़ी, और फिर दूसरे दिन, और फिर तीसरे और चौथे दिन।

रोस्टोव-परिवार से भेंट करने और निकोलस की अनपेक्षित रूप से शुष्क आवभगत का सामना करने के बाद प्रिंसेज़ मेरी

को स्वीकार करना पड़ा कि शुरू में उसने रोस्टोव-परिवार से भेंट करने न जाने का जो निश्चय किया था, वही ठीक था।

उसने अपनी सहायता के लिए आत्मगरिमा को जागृत करते हुए मन ही मन कहा--'मुझे और आशा ही किस बात की थी? मुझसे निकोलस से क्या सरोकार, मैं तो केवल बड़ी बूढ़ी काउण्टेस से मिलने गई थी, वह मेरे साथ हमेशा से सहृदयता का बर्ताव करती आ रही थीं, और मेरे ऊपर उनके अनेक उपकार हैं।'

पर वह इन विचारों से शान्त न हो सकी; इस भेंट का स्मरण करते ही उसके हृदय में कुछ-कुछ पश्चात्ताप की भावना जागृत हो उठती थी। यद्यपि उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह रोस्टोव-परिवार से भेंट करने फिर न जायगी और सारी बातों को भुला देगी, पर उसके हृदय में सदैव असन्तोष की भावना उद्दीप्त रहती। और जब वह सोचती कि उसे किस बात से क्षोभ हो रहा है, तो उसे स्वीकार करना पड़ता कि वह बात उसका और निकोलस का पारस्परिक सम्बन्ध है। रोस्टोव के हृदय में प्रिंसेज़ के प्रति जो कुछ भाव थे उनकी अभिव्यक्ति वह शुष्क विनम्र व्यवहार न था (वह स्वयं इस बात को जानती थी), किन्तु उसके भीतर कुछ छिपा हुआ था, और प्रिंसेज़ को प्रतीत होता कि जब तक वह उस छिपी हुई बात को न खोज निकालेगी, उसे शान्ति न मिलेगी।

एक दिन—आधे जाड़े बीत जाने पर—प्रिंसेज़ अपने भतीजे की पाठशाला में बैठी हुई उसके पाठ का निरीक्षण कर रही थी,

कि उसे सूचना मिली कि रोस्टोव आये हैं। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह अपने उत्तेजन-उद्वेलन को किसी प्रकार व्यक्त न होने देगी, और मेडेम बोरीन को बुलाकर वह उसके साथ ड्रायंग रूम में गई। निकोलस के चेहरे पर निगाह डालते ही प्रिंसेज़ को मालूम हो गया कि वह केवल शिष्टता की रस्म पूरी करने आया है, अतः उसने भी उससे उसी ढङ्ग से बातचीत करने का निश्चय किया जिस ढङ्ग से वह करेगा।

उन्होंने काउण्टेस के स्वास्थ्य की बातें कीं, परस्पर परिचित व्यक्तियों का ज़िक्र चलाया, युद्ध की ताज़ी ख़बरों का ज़िक्र किया, और दस मिनट बीत जाने पर, जब कोई मुलाक़ाती विदा ले सकता है—निकोलस उठ खड़ा हुआ।

मेडेम बोरीन की सहायता से प्रिंसेज़ ने बातचीत का रङ्ग अच्छी तरह जमाये रक्खा था, पर ठीक अन्तिम अवसर पर—जब निकोलस उठ खड़ा हुआ—प्रिंसेज़ इन सारी अरोचक बातों से इतनी ऊब गई और उसका मस्तिष्क इस एक प्रश्न से कि जीवन में मुझे ही इतने थोड़े सुख भोगने क्यों बदे हैं इतना चकरा गया कि अन्यमनस्कता के उद्रेक में वह चुप बैठी रह गई, और निकोलस के उठ खड़े होने को न देखकर अपने सामने की ओर अपने प्रकाश-प्रोज्ज्वल नेत्रों से देखती रही।

निकोलस ने उस पर निगाह डाली, और उसकी तल्लीनता की ओर ध्यान न देने का भाव जताने के लिए, मेडेम बोरीन से कुछ कहा, और फिर प्रिंसेज़ की ओर देखा। वह उसी प्रकार निश्चेष्ट

भाव से बैठी हुई थी, और उसके मृदुल मुखमण्डल पर वेदना की छाप लगी हुई थी। अकस्मात् निकोलस को उस पर दया हो आई और उसे अस्पष्ट अनुभूति सी हुई कि सम्भव है, उसके उस शोक का कारण वही हो, जो उसके मुखमण्डल से व्यञ्जित होता है। उसने उसकी सहायता करने और कुछ अच्छी सी बात कहने की अभिलाषा की, पर वह निश्चय न कर सका कि क्या कहे।

उसने कहा—'प्रिंसेज़, सलाम !'

प्रिंसेज़ ने मानो जागकर कहा—'ओह, काउण्ट, क्षमा कीजिए। अभी से चल दिये ? अच्छा फिर, सलाम ! हाँ, और काउण्टेस के लिए गद्दा तो रह ही गया !'

मेडेम बोरीन ने कहा—'अब लाई, एक मिनट में।' और वह बाहर चली गई।

दोनों चुप रहे। बीच-बीच में दोनों एक दूसरे की ओर दृष्टि-पात कर लेते थे।

अन्त में निकोलस ने विषण्ण भाव से मुस्कराकर कहा—'हाँ, प्रिंसेज़, देखिए, बात कल ही की सी मालूम होती है, पर बोगूचेरोवो वाली हमारी पहली भेंट को कितने दिन बीत गये ! उस समय हम सब कितने कष्ट में दिखाई देते थे, पर फिर भी मैं उस समय को वापस लाने के लिए क्या कुछ न दे डालूँगा...पर अब उसका वापस आना कैसा !'

जिस समय वह बोल रहा था, प्रिंसेज़ मेरी अपने प्रकाश-प्रोज्ज्वल नेत्रों से उसकी आँखों में बड़े मनोयोग के साथ झाँक

रही थी। ऐसा दिखाई पड़ता था कि वह उन शब्दों में निहित गूढ़ अर्थों को समझने की चेष्टा कर रही थी जिससे उसके प्रति उसके भावों का स्पष्टीकरण हो सके।

वह बोली—'हाँ, हाँ, पर काउण्ट, आपको बीती बातों को याद करने की क्या पड़ी है? आपके वर्तमान जीवन को समझने पर तो यही कहा जा सकता है आप बीती बातों को हमेशा संतोष के साथ याद करेंगे, क्योंकि आपका आत्म-बलिदान आजकल...।'

निकोलस ने उसकी बात में शीघ्रता के साथ बाधा देकर कहा—'मैं आपकी प्रशंसा ग्रहण नहीं कर सकता। उल्टे, मैं बराबर अपने आपको बुरा-भला कहता...। पर यह प्रसङ्ग रोचक और सुन्दर नहीं है।'

और उसके चेहरे पर फिर वही शुष्कता और कठोरता आ विराजी। पर प्रिंसेज़ अब उस पुरुष की झाँकी पा चुकी थी जिसे वह जानती थी और प्रेम करती थी, और अब वह उसी पुरुष के साथ बात-चीत कर रही थी।

उसने कहा—'मैं कुछ कहूँ तो आप बुरा तो न मानेंगे?—मैं आपके...और आपके परिवार के इतनी निकट हो गई थी कि मैंने सोचा था कि आप मेरी सहानुभूति को अनुचित न समझेंगे; पर यह मेरी भूल थी' और अचानक उसका स्वर काँप उठा। उसने फिर संयत होकर कहा—'यह तो मैं नहीं जानती कि क्यों, पर आप पहले से अब इतने बदल गये हैं, और...'

'क्यों के हज़ारों कारण हैं'--निकोलस ने क्यों पर ख़ास ज़ोर दिया--'प्रिंसेज़, आपका धन्यवाद।' उसने मीठे स्वर में कहा—'कभी-कभी बड़ी कड़ी बीतती है।'

प्रिंसेज़ मेरी की अन्तर्ध्वनि कह उठी--'तो यह बात है! यह बात है! नहीं, मैं इनकी उल्लासपूर्ण सहृदय और ओजमयी मुद्रा को ही--इनके सुन्दर भौतिक शरीर को ही प्रेम की दृष्टि से न देखती थी; मैंने इनकी उच्च, दृढ़, आत्म-बलिदान-सन्नद्ध मनोवृत्ति के भी दर्शन किये थे। हाँ, यह अब निर्धन हैं, और मैं धनी हूँ...बस, यही एक कारण है...हाँ, यदि यह बात न होती...' और निकोलस की पहली सहृदयता का स्मरण करके, और इस समय उसके शोकमग्न मृदुल चेहरे को देखकर वह उसकी शुष्कता का अर्थ तत्काल समझ गई।

वह अचेत भाव से उसके निकटतर आकर लगभग चिल्ला उठी—'पर काउण्ट, क्यों? क्यों? बताओ। तुम्हें मुझे बताना पड़ेगा।'

उसने कहना जारी रक्खा--'काउण्ट, मैं तुम्हारे क्यों का अर्थ नहीं जानती, पर मुझसे सहा नहीं जाता...मुझे स्वीकार करना पड़ता है। तुम किसी कारण से मुझे अपनी पहली मित्रता से वञ्चित करना चाहते हो और इससे मुझे कष्ट होता है।' उसके नेत्रों में और स्वर में आँसू थे। 'मुझे अपने जीवन में इतना कम सुख मिला है कि अब मुझसे कोई क्षति सहन नहीं होती... क्षमा, सलाम!' और वह यकायक रोने-चिल्लाने लगी।

निकोलस ने उसे रोकने की चेष्टा करते हुए कहा—'प्रिंसेज़, ईश्वर के वास्ते ! प्रिंसेज़ !'

उसने फिरकर देखा। कुछ क्षणों तक दोनों एक दूसरे की ओर चुपचाप देखते रहे, और जो बात दूरस्थ और असम्भव दिखाई देती थी, वही यकायक निकट, सम्भव, और अनिवार्य्य हो गई।

तीसरा परिच्छेद

१८१३ की शरद्-ऋतु में निकोलस और प्रिंसेज़ मेरी का विवाह हो गया, और निकोलस अपनी पत्नी, माता, और सोनिया के साथ बाल्डहिल्स चला गया।

उसने चार साल के भीतर-भीतर अपनी पत्नी की कोई जायदाद बेचे बिना, अपना सारा बचा हुआ क़र्ज़ चुका दिया, और अपने एक चचेरे भाई की मृत्यु के कारण उसकी थोड़ी-सी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होने के बाद, उसने पीरी का रुपया भी भुगता दिया।

तीन साल बाद, १८२० के लगभग उसने अपनी जायदाद के सुप्रबन्ध की बदौलत, बाल्डहिल्स के पास की एक छोटी-सी जायदाद और भी ख़रीद ली, और ओट्रडनो को दुबारा ख़रीद लेने की बात-चीत शुरू कर दी। यह उसकी आन्तरिक अभिलाषा थी।

निकोलस के विवाह के बाद से सोनिया उसी के घर में रहती थी। विवाह से पहले निकोलस ने अपनी स्त्री को अपने और सोनिया के पारस्परिक सम्बन्ध की सारी बातें बता दी थीं और अपने आप को दोष दिया था, और उसकी प्रशंसा की थी। उसने प्रिंसेज़ मेरी से उसके साथ मृदुलता और सहृदयता का व्यवहार करने की प्रार्थना की थी। उसकी स्त्री अच्छी तरह जान गई कि उसके पति ने सोनिया के साथ कैसा घोर अन्याय किया है, उसने सोनिया के प्रति अपने आपको दोषी समझा,

और कल्पना की कि उसकी सम्पत्ति से प्रभावित होकर ही निकोलस ने उसे चुना था। वह सोनिया को किसी प्रकार का दोष देने में असमर्थ थी, और उसे प्रेम की दृष्टि से देखना चाहती थी, पर प्रेम की दृष्टि से देखना तो एक ओर, कभी-कभी वह उसके प्रति अपने हृदय में कुत्सा पाती और इस कुत्सा को कुचलने में वह असमर्थ रहती।

एक दिन उसने सोनिया के विषय में अपनी सहेली नटाशा के साथ बात-चीत की और बताया कि उसने उसके प्रति किस प्रकार अनुचित आचरण किया है।

नटाशा ने कहा—'तुमने तो धर्म-पुस्तक न जाने कितनी बार पढ़ी होगी—तुम्हें याद है, उसमें एक स्थान पर ऐसा वाक्य आता है जो सोनिया पर पूरी तरह चरितार्थ होता है।'

काउण्टेस मेरी ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा—'कौन-सा?'

''जिसके पास है, उसे दिया जायगा और जिसके पास नहीं है उससे छीन लिया जायगा।'' क्यों, याद है न? यह उनमें से है जिनके पास नहीं है; क्यों, यह मैं नहीं जानती। शायद इसमें बड़ाई मारने के गुण की कमी है। इसके पास से छीन लिया गया है, और इसके पास से हर एक चीज़ छीन ली गई है; क्यों, यह मैं नहीं जानती। कभी-कभी मुझे इस पर बड़ा तरस आता है।

यद्यपि काउण्टेस मेरी ने नटाशा को बता दिया कि धर्म-पुस्तक का उक्त वाक्य दूसरे ही अर्थों में ग्रहण करना चाहिए, पर सोनिया की बात सोचकर उसे नटाशा से सहमत होना पड़ा।

सात वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद पीरी को आनन्द-दायिनी और दृढ़ चेतनता हुई कि वह बुरा आदमी नहीं है, और यह चेतनता इसलिए हुई कि वह अपने आपको अपनी स्त्री में प्रतिबिम्बित पाता। उसे अनुभूति होती कि उसके अन्तराल में अच्छा और बुरा दोनों अविच्छिन्न रूप से मिले हुए हैं और एक दूसरे से बाज़ी मार ले जाने की चेष्टा में हैं। पर जो वास्तव में अच्छा था उसका प्रतिविम्ब उसे अपनी स्त्री में मिलता, और जो पूरी तरह अच्छा न होता उसे अलग छोड़ दिया जाता। और यह प्रतिविम्ब बौद्धिक तर्कवाद का परिणाम न था बल्कि प्रत्यक्ष और रहस्यपूर्ण था।

नवयुवक निकोलस भी पन्द्रह वर्ष का सुन्दर नेत्रोंवाला एक सुकुमार, दुबला-पतला और तीक्ष्णबुद्धि बालक हो उठा था। पीरी चचा को हर्षातिरेकपूर्ण और प्रबल स्नेह की दृष्टि से देखता था। उसकी अभिभाविका काउण्टेस मेरी ने भरसक प्रयत्न किया कि वह उसके पति के साथ भी उतना ही स्नेह करे जितना वह पीरी के साथ करता था, और नन्हें निकोलस ने अपने फूफा को स्नेह किया भी, पर उस स्नेह में घृणा की एक क्षीण रेखा भी मिली हुई थी। पीरी तो उसका उपास्य देव था। वह अपने फूफा की तरह हुसार या सेंट जार्ज का नाइट न बनना चाहता था। वह पीरी की तरह विद्वान्, बुद्धिमान् और दयालु बनना चाहता था। पीरी के सामने उसका चेहरा हर्ष से दमक उठता था।